CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीः

श्री लक्ष्मीनारायणजी
देवप्रयाग
व्यवस्थापक

पं० शिवसहाय कृत

वेदांतरामायण

यह पुस्तक

मुंबईमें

चित्रप्रभाछा० छाप्यो

मिति ज्येष्ठशुक्ल १ संवत् १९४५

शके १८१०

(यह पुस्तक सन १८६७ का आक्ट २५ प्रमाण रजिष्टर करके सर्व हक पुस्तक कर्ता ने स्वाधीन रखे हैं)

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अथ मयास्वकुलप्रस्तावः क्रियते.

श्लोक.- श्रीब्रह्मसरय्युत्तोत्तरतटयेसन्निवेबाह्मणास्तेषाम्पादरजोभि
गाहनरतमेभूल्कुलंनिर्म्मलम्॥ औपाध्यायमितीरितंक्षितितलेतस्मिन्प्रजा
तोबुधोटीकारामइतिप्रवृद्धिविभवस्तस्यात्मजो बुद्धिमान्॥१॥ अर्थ ॥
बहुत सुंदर मानसरोवरसें निकसी जो सरयूनदी तिसकेउत्तरदेशमेयोद्विजबसते
हैं जिन्होकों देशभाषामे सरवरियाब्राह्मण कहतेहै उनसबकोचरण रजकी
सेवामें निपुण मेरा कुल होताभया. भूमितलमें मेरेकुलको उपाध्याय क
हतेहै तिसउपाध्याय कुलमें बडे पंडित और बडाहै ऐश्वर्य जिन्हूका ऐसे
टीकारामजीजन्मते भये. तिनके पुत्र बडे बुद्धिमान् १ ॥श्लोक. ॥ इच्छारा
मेतिविख्यातो बुधस्तस्यात्मजः सुधीः॥ हीरामेतिमतिमान्बुधश्चैवत
दात्मजः॥२॥ ॥अर्थ॥ ॥इच्छारामजी पंडित ऐसे नामसें विख्यात भए.
तिसकेपुत्र सुंदरहै बुद्धि जिनोकी बडे ऐश्वर्यमान् पं० हीरामजीभएः ति
सकेपुत्र ॥२॥ श्लोक. विश्वरामश्चतस्यासन्सुतानिर्म्मलचेतसः॥शिव
नारायणश्रेष्ठस्ततश्चाहंममानुजः॥ श्रीदत्तश्चत्रयाणान्तोषट्पुत्राःपितृ
वल्लभाः॥३॥ ॥अर्थ॥ ॥ पंडितविश्वरामभएउनके तीनपुत्र भए. बडे
प० शिवनारायणजीतिन्होकाकिंकर छोराभाई मैहुं. मेराछोराभाई श्रीद
त्तहै. मेरे तीन भाइयोंकेछपुत्रहै. कैसेपुत्रहै पिताके प्यारेहै ॥३॥ ॥श्लोक
॥ यालक्ष्मणस्यनगरीतत्पूर्वे फलतापुरम्॥ तस्यदक्षिणदिग्भागेक्रोशेयुग्म
मितेमम॥ वासग्रामोतिविमलो लोदीपुरमितीरितम्॥४॥ ॥अर्थ॥ ॥
लक्ष्मणकीनगरी जिस्कूं लखनौ कहतेहै तिसके पूर्व तरफ फलतापुरहै
तिस्के दक्षिणदिशामें दोकोसपर मेराबास करनेवाला ग्रामहै उसका.
लोदीपुरनामहै. ॥४॥ इतिममकुलप्रस्तावः॥

वेदांन्तरामायणरचनेका कारण. ॥ श्लो० ॥ वेदांतार्थानिगूढानिशीघ्रंस
र्वैर्नज्ञायते॥ अतस्सर्वार्थमाहृत्यजीवानांमोक्षहेतवे॥१॥ अर्थ. वेदान्तको
अर्थबहुत कठिणहै सबजीवोंसेंजलदीनहीमालूम होवेगा. जो जीवअनेकज.
न्मसे अभ्यासकियाहोगा उसकोतोकिंचित मालूमभीपडेगा. औरकूं कुछ नही
मालूमपडेगा. इस कारणसें सबग्रंथोंको अर्थलेके आपनी बुद्धि माफिक मोक्षहो
नेवास्ते ॥श्लोक. रचितोयंमयाग्रंथोरामरावणकारणात्॥ टीकाज्ञानाणिवीयुक्तःस
र्वस्माद्मुक्तिदायकः॥२॥ अर्थ. रामरावणके कारणसे यह ग्रंथको मैंने बनायाहै. श्री
रामचरित्रकी कथा सबकों मालूमहै इस्से यह ग्रंथ सबकोंसमजमें आवेगा.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्री

अथ वेदांत रामायण प्रारंभः

श्रीचंद्रशेखरंनुमः

सन्नम्यविश्वेशतनुंस्वमानसेसरवाकरंज्ञानविवे
कसन्तरुम्॥ कामादिवैश्वानरशद्वारिदंवेदान्त
रामायणमादिशास्त्रजम्॥१॥

भाषाटीका- निर्विघ्न पूर्वक ग्रंथकी समाप्ति होने वास्ते ग्रन्थ
कार आदिमे जगदीश्वरको नमस्कार रूप मंगल कर्ताहै· शिवसहा
य पंडित मैं जोहों सो वेदान्त रामायणकों करताहूं क्या करिके
जगतके ईश भगवानकी मूर्त्तिको अपने मनमें नमस्कार करिके·
कैसा वेदान्तरामायणहै मोक्षरूप सरवको करनेवाला ग्यान वि
वेकके दुःखकों नाश करनेमे कल्पवृक्षहै काम क्रोध लोभ आदि
जो अग्निहै तिसको बुझानेवास्ते सन्दर मेघहै आदिशास्त्रजो म
हासांख्य तिस्से उत्पन्नहै॥१॥

श्लोकः कुर्वेजगच्चेतनकारकम्प्रभुंशद्वंसदानन्द
मयभिरंजनम्॥ यदीहयाविश्वमिदञ्चराचरम्प्र
फुल्लितं वारिकणोर्म्मिचञ्चलम्॥२॥

भाषाटीका· जडरूप संसारकूं चेतन करनेवाले प्रभूकों इंद्रिय
के रोगोंसे शद्वकों नित्य आनंदरूपकों प्रपंच रहितकों नमस्का
र करके वेदान्त रामायण करताहूं जिस भगवानकी छायासें य
ह संसार प्रफुल्लित होरहाहै कैसा संसारहै जलबिंदुकी लहरि
सरीके चंचलहै॥२॥

श्लोक॥ तम्वेनमस्कृत्यविभुम्निजाश्रयं सच्चित्

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

समानन्दमयंगुणारणिम्॥ गतानचायान्तिपुन
र्भवन्नरायत्तत्स्वरूपम्पतितावतारकम्॥३॥

भा॰टी॰-बहुत शोभायमान आपने आधीन जीव देह दोनूको संभाल करने में आनंद रूप रजोगुण तमोगुण सतोगुणकों जलाने वास्ते अग्नि स्वरूप ऐसे भगवानकों नमस्कार करिके वेदान्त रामायण कों कर्ताहूं जिस प्रभूके रूपकों प्राप्ति हुवाजो जीव सो संसारको कभी नही आता कैसारूपहै पतितजीवोंकों उद्धार करनेवाला॥३॥

श्लोक॰ निर्द्वन्द्वमत्यद्भुतमुज्ज्वलंशुभंवेदाद्यग
म्यम्मुनियोगिभिर्नुतं॥ स्वेच्छारमन्तन्तनुभावनि
र्गमंस्वानन्दतुष्टंसमवारिधिंहरिम्॥४॥

भा॰टी॰-सुख दुःखसेहीन बहुत अद्भुत असंख्य सूर्यसे दीप्तिमान् शुभरूप चारिहु वेदोंसे नही प्राप्ति होवेजोग्य मुनियोगीजनोंसें नमस्कारयोग्य अपनी इच्छामे रमित देहके लक्षणसे रहित अपने आनंदमें संतोष समको समुद्र जन्मबाधा हरणेवाला ऐसे भगवानकों नमस्कार करिके वेदान्त रामायण करताहूं॥४॥

श्लोक॰ विद्यांच्छिवसहायोऽहंसच्चिदानन्दमद्व
यम्॥ निराकारंनिराधारन्निरुपाधिन्निराश्रयं ५

भा॰टी॰-जीव देहको चैतन्यरूप आनंद देनेवाले आकारसें रहित आधारसे वर्जित संसारके प्रपंचसे हीन आसासे हीन ऐसे भगवान्कों नमस्कारहै॥५॥

श्लोक॰ (पञ्चभिःकुलकं) इतिहासपुराणानास्वे
दवेदान्तयोरपि॥ सर्वशास्त्रमतंगृह्यकुर्वेऽह

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मिदमुत्तमम् ॥ ६॥

भा·टी· इतिहासको पुराणको वेदको वेदान्तको सब शास्त्रको मत ग्रहण करिके यह वेदान्तरामायणकों मै करता हूं ॥ ६॥

श्लोक· वेदान्तरामायण मेतदुज्ज्वलं संसारतापापहमद्भुतंशिवम् ॥ प्रयान्तियच्छ्रुत्यमुमुक्षवःप दन्तद्यत्स्वयंज्योतिमकल्मषंशुभम् ॥ ७॥

भा·टी· - कैसा वेदान्त रामायण है बहुत शोभित संसारके तापको नास करनेवाला अद्भुत है कल्याणको वृद्धि कर्ता है जिस वेदांन्तरामायणकों सुनके संसारसे मोक्षकी इच्छा करनेवाले जो जीव है सो उस स्वरूपमे मिलैंगे कि जो स्वरूप आपसे प्रकास होता है सब पापोंसें रहित है शुभ है ॥ ७॥

श्लोक· गत्वानचायान्ति कदापियोगिनोयद्ध्यानशून्यंगहनंसुदुस्तरम् ॥ अनेकजन्मार्जितचिन्तनापरैस्तदप्यगम्यम्मुनिवृंदसन्नुतम् ॥ ८॥

भा·टी· - कैसा स्वरूप है कि ध्यानमें नही आसक्ता बहुत जन्मसे एकठा कियाजो बिचार जिसमे चतुर जो प्राणी तिनसे भीन ही प्राप्ति होवे योग्य बहुत मुनियों करिके नमस्कार कियाहै ऐसे स्वरूपको गयेहुये योगीजन है सो संसारकों कभी नही आवैंगे ८

श्लोक· पुनर्भवम्मोहजलाभिपूरितं तृष्णोर्म्मिणा चंचलमूहयान्वितम् ॥ वितर्कयुक्तंबहुमानगर्वितं प्रचंडमायार्णवदुस्तरंघनम् ॥ ९॥

भा·टी· - कैसा संसार है मोहरूप जलसे भरा है तृष्णाकी लहरि करके चलायमान है तर्क वितर्कसें युक्त है· बहुत अभिमान अहंकार करिरहा है· बडी जबर्दस्त माया के प्रभाव समुद्र करिके·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दुःखसे पार जावे जोग्य है बडा कठिण है ॥ ९॥

श्लोक. ब्रह्मावर्त्तेसुरम्येविधिकृतविभवेब्रह्मय
ज्ञोबभूव तत्रागुर्भूमिसंस्थाविततलतलगतानाक
लोकाश्रिताद्याः॥ ब्रह्मर्ष्याद्यामुनीशाःसुरपति-
सहितास्सुत्तदेव र्षयोवैराजर्षीशारमेशोविधि
पवनभुजौपार्वतीप्राणलग्नः॥१०॥

भा. टी. - बहुत रमणीय ब्रह्मकी बनाए ऐश्वर्य संयुक्त ऐसे ब्र-
ह्मावर्त क्षेत्रमें सत्संगियोने ब्रह्म निरूपण यज्ञ करते हुए निसयज्ञ
में तीन लोक चौदा भुवन के बसनेवाले जो ब्रह्म ऋषी मुनीश
बडेबडे ग्यानी जो देवर्षि राजर्षि इंद्र आदि देवता सहित भगवा
न् बिधि शेष महादेव ये सब आते हुये ॥१०॥

श्लोक. एतेचान्येसमायाताबहवोधर्मलिप्सवः
॥पूजितादानमानाभ्यां सत्कृताब्रह्मतत्परैः॥ ११

भा. टी. - इन सबसे और भी बहुत धर्मके ग्रहण करणेवाले सज्ज
न आते हुए. ब्रह्मके जाननेवाले मुनियोंने दान मान आदरसें स
बको पूजन करते हुए॥ ११॥

श्लोक. ब्रह्मविज्ञानकुशलाःसर्वेभूपाःसमाययुः
॥आजगाममहाबुद्धिर्विदेहोमिथिलापतिः॥१२

भा. टी. जो भूमितलमे ब्रह्मके जाननेवाले राजा है सो भी सब-
आते हुए. बडे बुद्धिमान जनक भी आए कैसे जनक हैं देहके अ
भिमानसे रहित है॥ १२॥

श्लोक. यथायोग्यंस्थितास्तत्रसमाजेब्रह्मनिर्मि
ते॥ परस्परंकथाश्चक्रुर्विविधाधर्मतत्पराः१३

भा. टी. - ब्रह्मग्यानसे बनाई हुई समाजमे यथा योग्य सब बैठते

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हुए॰ अपने अपने धर्ममे बहुत पुष्ट सब होकरके बहुत प्रकारकी कथा कर्ने लगे ॥१३॥

श्लोक॰ पौराणिकाः पुराणज्ञावैदिकावेदपाठिनः
धार्म्मिकाधर्मशास्त्रज्ञावेदान्तज्ञास्सदुद्भवाः॥१४

भा॰टी॰- पुराणी लोगोने पुराणकी कथा वेदपाठी वेदकी कथा धर्मशास्त्र वाले धर्मशास्त्रकी कथा वेदांत वाले सत्ज्ञानसें उत्पन्न कथा इस प्रकारसें सब कथा करते हुए ॥१४॥

श्लोक॰ एवंसमेधमानेतुमहानन्देसविस्तरे॥ मुनिः
प्रपच्छसम्वर्तोवरतन्तुम्महामतिम्॥१५॥

भा॰टी॰- इसप्रकासें बडा आनंदकी वृद्धि होरहीहै॰ बहुत प्रकारसें ऐसी समयमे संवर्त नाम मुनि जोहै सो बडीहै बुद्धि जिनकी सो वरतंतु मुनीसे पूंछतेहुए॰ ॥१५॥

श्लोक॰ सम्वर्तउवाच कोरावणोतिप्रबलोरिहन्ताकः कुम्भकर्णोमदपानमत्तः॥ किन्तन्मदंयस्तु
सकृत्पपीत्वा भवन्तिमत्तारवलुज्ञानवर्जिताः॥१६

भा॰टी॰- संवर्त मुनि बोलते भए॰ हे गुरु महाराज, बडा बलवान् बैरीको नास करनेवाला रावण कौनहै॰ मदकोपीके रातिदिन मस्त रहना ऐसा कुंभकर्ण कौनहै जिसमदको एकदफेपीकर दैत्यलोग निश्चय करके ज्ञानसे रहित और मस्त होजातेहै॰ सो मदक्या है सो कहो॥१६॥

श्लोक॰ विभीषणः कश्चसुरेशजेताकाकेकसी
कश्चमुनिर्मरीचिः॥ कोवैपुलस्त्यः समचित्तवर्त्ती
कोविश्ववाविश्वसमैकदृष्टिः॥ खरादयः केचप्रचंडवीर्याकास्तूर्पणखाशाभुवनत्रयञ्चकिम्॥१७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- -विभीषण क्याहै, इंद्रजित क्याहै, कैकसी क्याहै, मरीच मुनि कौनहै, सुखदुःखमें बरोबरचित्त जिनको ऐसे पुलस्त्य मुनि कौनहै संसारको भगवानको रूप देषनेवाले विश्रवा मुनि कौनहै, खरआदि करिके संसारमे जितने राक्षसहै सो-कौनहै- शूर्पनखाक्याहै, तीनभुवन क्याहै ॥१७॥

श्लोक- मन्दोदरीरावणवल्लभाचका चान्याःप्रि-
याश्चैवदशाननस्यकाः॥ किन्तच्छिरोयद्दशसंख्य
यान्वितम्भुजाश्चकेविंशमितास्तुतस्यवै॥१८॥

भा-टी- -रावणकी प्यारी मंदोदरी क्याहै, औरजो बहुत रावण कीस्त्रीहैसो क्याहै, रावणको दस मस्तक क्याहै- रावणके वीस हाथ क्याहै ॥१८॥

श्लोक- लंकाचकातत्परिखाचसिन्धुकः कोविरंचि
र्वरदानदाता॥ कावस्त्रशस्त्रोविविधोरथंकिंके
वाजिनोत्युत्तमगर्दभाश्चके॥१९॥

भा-टी०- लंकाक्याहै लंकाकीखांई क्याहै समुद्र कौनहै, रावणको वरदान देनेवाला ब्रह्मा कौनहै, रावणको बहुतप्रकारकेअस्त्रशस्त्रक्याहै, रावणकी रथ घोडे खच्चर ये सबक्याहै ॥१९॥ ॥

श्लोक- शक्तिश्चकाकिंसुमनोविमानं कोवैकुबेरो
जननीचतस्यका॥ कःशंकरोयस्यकरोतिसेवनं द
शाननः कानिमुखानितस्यवै॥२०॥

भा-टी- रावणकी मांग जिस्से लक्ष्मणकुं मारा सोक्याहै पुष्पकविमान क्याहै- कुबेरकी माता क्याहै, कुबेरक्याहै, शंकरक्याहै जिनकीरावण नित्य सेवन करताहै- रावणके दस मुखक्याहै२०

श्लोक- कःसारथिर्वाजिविचालनंचकिं किंवाजिरं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

होतिरजश्चकिम्मुने॥ कौद्वौरथाङ्गौरथकूबरंच
किंकिंरश्मिबद्धंगमनाश्रयञ्चकिम्॥२०॥

भा·टी·- रावणको सारथी घोडोंकों हांकनेवाला, चाबुक, घोडोंकी दौड और धूलिहै मुनिराज, ये सब क्याहै, रथके दो पैया रथमे बैठनेकी जगा रथकूं बांधनेकी रस्सी, रथकु चलाना येसबक्याहै २२

श्लोक· केरावणस्यैवसकतास्सुतानान्तत्पुत्रपौत्रा
गणनानयेषाम्॥ एषांस्त्रियःकाभुवन त्रयार्द्र-
काःहयोरथान्येभुविराक्षसाश्चके॥२२॥

भा·टी· रावणके लडका लडकोंका लडका तिनोके पोता पडपोता आदि जिनोंकी गिनती नहीहै येसब क्याहै· इनसभोकीस्त्रियो क्याहै कुंभकर्णकी स्त्री पुत्रक्याहै और सब राक्षस जोरावणके कुलमेथे इनकीस्त्री पुत्रक्याहै॥२२॥

श्लोक· किमामिषंतद्रुधिरंचतेषांकावारुणीतद्य
ज्ञनञ्चकिम्मुने॥ तेषांगुरुर्वैभृगुनन्दनश्चकोनि
कुंभिलाकाहवनस्थलंचकिम्॥२३॥

भा·टी· राक्षसोकों भोजन मांसरुधिरक्याहै, मदिराक्याहै, रावणकायज्ञक्याहै, राक्षसोंके गुरु शुक्राचार्य कौनहै निकुंभिलादेवी कौनहै होमको स्थानक्याहै॥२३॥

श्लोक· कःपावकोहव्यविलक्षणाश्चके कौदारु
मंत्रौविजयंचकिम्मुने॥ दासीश्वरीकात्रिजटाच
वाटिका काशोकवृक्षैःपरिवारिताचया॥२४॥

भा·टी· अग्निहोमकी सामग्री क्याहै लकडी, मंत्र, क्याहै रावणकी विजय क्याहै दासियोंमे मालक त्रिजटा क्याहै· अशोक नाम बगीचा अशोक वृक्षोंसहित क्याहै॥२४॥

श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर,
देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय)
व्यवस्थापक

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक॰ सर्वानिचान्यानिचयानितेषांद्रव्याणि
मेप्रश्नविवर्जितानि॥ वदस्वचित्तम्ममकौतुका
कुलंश्रुत्वापुराणानिमुनीशतानिच॥२५॥

भा॰टी॰ - हेमुनीजी जो मैपूंछाहूं और मेरेपूंछनेसे बाकी जो प्रश्न रह्याहोवे॰ रावणादि राक्षसोंकी वार्ता सो बिस्तारकरके कहो हे गुरु पुराणोंमें रावणका चरित्र सुनके मेराचित्त घबराय रहा है॥२५

इतिश्रीवेदांतरामायणेबालकांडेशिवसहाय
बुधविरचितेसम्वर्तवरतंतुसंवादेरावणविभूति
प्रश्नेप्रथमोमोक्षोपानः॥१॥

सम्वर्तउवाच॥ ॥केवेदशास्त्रावलिसंहिताद
योयेपीडिताविंशतिबाहुनानिशम्॥ केब्राह्मणा
ब्रह्मविदांवरिष्टगावश्चकावेदमरवंचकिम्मुने १

भा॰टी॰ संबर्त मुनिफेर पूंछतेहै हेमुनिजी वेद, शास्त्र, पुराण संहिता बहुतसे बहुत कौनहै के जिन कूं वारंवार रावण दुःखदे ताथा हेमुनिजी ब्रह्मज्ञानियोमें आप बडेहो गो ब्राह्मण वेदयज्ञ क्याहै जिनको रावण नास करताथा॥१॥

श्लोक॰ केतेपुराणाहरिकीर्तिवर्धनायेनष्टभावं
गमितानिवारिताः॥ दशाननेनातिप्रचंडतेजसा
भूमिश्चकाकेसुरसत्तमाश्चये॥२॥

भा॰टी॰ भगवानकी कीर्ति बढानेवाले पुराण क्याहैं जिन्होंकों बडाते जमान रावणने नाशकों प्राप्ति करदिया और भूमिदेवता क्या है जिन्होंकों रावणने बहुत दुःखदिया॥२॥

श्लोक॰ गंगादयःके॰ सरितोमुनीशविष्णुश्चकोब्र

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ह्मस्कतोवसिष्ठः॥ पुरीत्वयोध्यारविवंशरक्षिता
कासाचकेतत्कुलसंभवानृपाः॥ ३॥

भाटी- हेमुनिराज- गंगा आदिलेकेनदी, विष्णु, ब्रह्माकोपुत्र- वसिष्ठ सूर्य वंशी राजोंकरके रक्षित अयोध्यापुरी और सूर्यवंश मेजन्मे जो राजाये सब कौनहै ॥३॥

श्लोक- कश्चाजसूनुर्बहुकामुकोनृपः काकौ-
शलाकामगधेशनन्दिनी॥ काकेकयीकश्चविभांड-
कात्मजोयज्ञश्चकः कोहुतभुङ्मुनीश ॥४॥

भाटी- अजराजाकोपुत्र बडाकामी राजा दशरथक्याहै अर- कौसल्या रुमित्रा; कैकयी और स्त्री दशरथकी क्याहै और शृं गीरिषि तथा यज्ञकी अग्निकौनहै ॥४॥

श्लोक- कौदारुमन्त्रौहवनस्यद्रव्याः केयज्ञकुण्डं
किमुपावकार्चिः॥ किंपावकेनापिनृपायदत्तन्नद्ध-
क्षणंदोहदलक्षणञ्चकिम् ॥५॥

भाटी- -यज्ञकी लकडी, मंत्र; होम सामग्री यज्ञको कुंड अग्नि- ज्वाला येसबक्याहै दशरथकौं अग्निनेप्रसन्नहोके क्यावस्तु दि या उसवस्तुको भक्षण राणियोनें कियासो क्याहै और गर्भको लक्षण क्याहै ॥५॥

श्लोक- कासाप्रसूतिस्सुखदायिनीया कोरामच
न्द्रः खलुलक्ष्मणश्चकः॥ कौभ्रातरौद्वौशुभलक्ष
णान्वितौशत्रुघ्नकैकयिसुतौसुनिर्म्मलौ॥६॥

भाटी- जो सुखकौंदेनेवालाजन्म उत्सव क्याहै रामचंद्र अरु ल- क्ष्मण क्याहै सुंदरलक्षणयुक्त मलसें रहित दोभाई शत्रुघ्न औ रकैकयीका पुत्र भरत येदोनूं कौनहै ॥६॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक॰ रामस्यकिंक्रीडनकौतुकम्मुनेकश्चेतप्रा-
सादस्वगोऽजिरंचकिम्॥ काधूलिराशिःसरयूस-
रित्काकौतीरतोयौपुरवासिनश्चके॥७॥

भा॰टी॰- हेमुनिजी दसरथराजाकी सफेदमहल आकाशको मा-
नो छूनेचाहतीहै सोक्याहै॰ और रामको बालपनोका खेलतमा-
साक्याहै॰ और धूलिकी समूह सरयूनदी तथा तटजल पुरवासी
प्रजाये सबक्याहै ॥७॥

श्लोक॰ किंरामचन्द्रस्यधनुश्चखड्गकेचेशराःकावि
षुधीसुपूर्णे॥ तद्वत्सुमित्रातनयस्यसर्वंकिंशस्त्र
वृंदंवदतन्मुनेमम॥८॥

भा॰टी॰ राम लक्ष्मणका धनुष बाण तरकस खड्ग और अस्त्रक्याहै
मुनीजीकहो॰ ॥८॥

श्लोक॰ संस्कारश्चेष्ठामुनिनाकृताश्च मुनिश्चकोगा
धिसुतोमहामतिः॥ तस्यापिकोयज्ञसमुत्सवोमु
नेकाताडकायज्ञविनाशकारिणी॥९॥

भा॰टी॰- वसिष्ठजीने राजाके पुत्रोंका संस्कारक्याकिया और गाधि
पुत्र बडेबुद्धिमान् विश्वामित्रकौनहै॰ विश्वामित्रकी यज्ञको उत्स
वक्याहै और यज्ञकी नास करनेवाली ताडका क्याहै ॥९॥

श्लोक॰ कोराक्षसोहावनिदुर्मतीमुनेसुबाहुमा
रीचसमाख्यसंयुतौ॥ विद्याचसाकामुनिनाप्रद
त्तायारामचंद्राय प्रसन्नचेतसा॥१०॥

भा॰टी॰- हेमुनिजी सुबाहु मारीच बडे दुष्टमती कौनहै विश्वामि
त्र मुनि प्रसन्नचित्तसें रामचंद्रकों बिद्याक्याद्दिया ॥१०॥

श्लो॰ कोगौतमःकागृहिणीचतस्यवेनाम्नाप्य-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हिल्यास्करनायकश्चकः॥ कोजारिणीजारसमु
द्रवोरसोकिन्तद्रजोयेनविनिर्गताचसा॥११॥

भा॰टी॰ - गौतम मुनि अरु उनकी स्त्री जिसका अहिल्यानाम येदो
नो कौनहै, इंद्र कौनहै, जारसे उत्पन्न भयाजोरस सो क्याहै वो धूलि
क्याहै, जिसके छुएसें अहिल्या तरगई॥११॥

श्लोक॰ कासाशिलायन्मिलिताचकामिनी कोमैथि
लेशोनगरीचतस्यका॥ स्वयंवरंकिं नृवराश्चकेते
काजानकीतद्धनुरुत्तमञ्चकिम्॥१२॥

भा॰टी॰ - जिस शिलामें अहिल्या मिलगईथी वोशिला क्याहै जन-
कराजा कौनहै, जनककी नगरी क्याहै, स्वयंवर क्याहै, जोराजा-
स्वयंवरमे आयेथे वोसब कौनहै, और जानकी क्याहै, जो धनुष
कीपणजनकने किया सो धनुष क्याहै॥१२॥

श्लोक॰ किंत्रोटनंन्तद्धनुषो मुनीन्द्रभोकोभार्गव
स्तद्धनुरोपणञ्चकिम्॥ कोवैविवाहोजनतासमा
गमंगजाश्वसेनादिसरवासनञ्चकिम्॥१३॥

भा॰टी॰ - हेमुनीद्रजी धनुष तोडना क्याहै परशुरामजी कौनहै
परशुरामजीका धनुष रोपण क्याहै, और हाथी घोडा पालकी फो
ज इत्यादिबरात आई सो क्याहै॥१३॥

श्लोक॰ काश्चोर्मिलाद्यास्तनुजाविदेहयो र्द्वयोः
सकेत्वोर्जनकस्यचोर्मिला ॥ विवाहितारा
सहोदराणांकास्ताशशुभानन्दक्षमास्सुलोचना॥१४॥

भा॰टी॰ - जनक सकेत येदोनोविदेहोकी उर्मिला आदि कन्याक्या
है, जीरामके भाइयोकों भरथ लक्ष्मण शत्रुघन-इनके संग विवाह
भयाये कौनहै, शुभ आनंद क्षमायुक्त॥१४॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक॰ मुनीन्द्रकोरामसहोदराणांविदेहजानांच विवाहकौतुकः॥ रामस्यचैवम्पृथिवीसुताया विवाहहर्षोत्सवमंगलंचकिम्॥१५॥

भा॰टी॰ हेमुनि रामके भाइयों समेत विवाहका तमासा क्याहै। तथा रामजीके विवाहमे हर्ष उत्सव मंगल भया सो क्याहै॥१५॥

श्लोक॰ कानिप्रदत्तानिसुताविवाहेराज्ञाविदेहेन॰ विचक्षणेन॥ किम्वैप्रयाणंचक्षितीश्वरस्यसंगृह्य पुत्राच्छुभकन्यकाभिः॥१६॥

भा॰टी॰ - कन्याविवाहमे जनकने दायज दियासो क्याहै॰ पुत्रसहित तथा शुभजो पुत्रोंकीस्त्री तिनकुं ग्रहणकरके दशरथने प्रयाण किया सो क्याहै॥१६॥

श्लोक॰ ससैन्ययुक्तस्यनृपोत्तमस्य पुनस्स्वभार्य्यैस्सुतैस्सुखान्वितैः॥ मुनीश्वरैः किंगमनंस्वपुर्याश्चोल्कण्ठभावोमिथिलाधिपस्यकः॥१७॥

भा॰टी॰ -फेर विवाहसे बिदा होके सेना सहित राजोमें उत्तम जो॰ दशरथ सो अपनी अपनी स्त्रियों सहित पुत्रोंको सुखयुक्त मुनीश्वर सहित पुरी अयोध्याको आए सो क्याहै और जनक विह्वल॰ हुए सो क्याहै॥१७॥

श्लोकः कःसौख्यवासोरघुनन्दनस्यराज्ञोविचारश्चपटाभिषेकः॥ कामन्थरातद्विपरीतचारिणीक॰ लंकभावंचविचिक्षणञ्चकिम्॥१८॥

भा॰टी॰ - अयोध्यामे रामचंद्र सुखसे रहे सो क्याहै॰ दशरथकोबिचार तथा राजदेणा ये दोनो क्याहै॰ रामके राजमे विघ्नकरनेवाली मंथरा क्याहै॰ कैकयीको शिखाया ऐसा कलंक क्याहै॥१८॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक॰ काक्रूरबुद्धिर्भरतस्यमातुर्विलापसिन्धुर्नृप
तेर्मुनेकः॥ आज्ञाचकाभूपतिसम्प्रदत्ता किंकाननं
कश्चरथोहयाश्चके॥१९॥

भा॰टी॰- भरथकी माताकी खोट बुद्धी क्याहै दशरथकों दुःखसमुद्र
सरीके क्याहै॰ दशरथने रामचंद्रकों क्या आज्ञादिया बनजानेकी॰
जिसबनकूं रामचंद्रजी गये वोबन क्याहै, रामचंद्रके रथ घोडाक्याहै१९

श्लोक॰ कोवैसूतमंतोरुदनंचकिंमुनेरथस्यद्रव्या-
णिचकानिरंहः॥ एतत्समाब्रूहिद्विजेंद्रनिश्चितं का
वैसरिद्यातमसेतिशब्दिता ॥२०॥

भा॰टी॰ हेमुनि सूतमंत सारथी कौनहै, रामजीको बन याते देखके
रुदनहुया सो क्याहै, रथकी सामग्री क्याहै, रथकी वेगक्याहै, हे
मुनिजी यह संपूर्णवार्ता निश्चय करिके कहो तमसानदी क्याहै२०

श्लोक॰ तत्तीरवासोरघुनन्दनस्यकोहयाशनंकिम्पु
रवासिनश्चके॥ कातत्रनिद्रापुरवासिनाञ्चकिंराम
वाक्यंभ्रमणंरथस्य॥२१॥

भा॰टी॰- तमसाके तीर रामचन्द्र बसेथे सोक्याहै, घोडोंकों क्याचा
राखिलाया, पुरवासीकौनहै॰ पुरवासियोके निद्रा आई सो क्याहै॰
रामकी वाक्य क्याहै, रथभ्रमण किया सो क्याहै ॥२१॥

श्लोक॰ भ्रान्त्वापुनस्तद्गमनंचकिम्मुनेनिवर्तनंकिम्पु
रवासिनाम्पुनः॥ पुरींसमागम्यविलापकारणंकिंवे
दद्विवर्षकृतम्प्रमाणकम् ॥२२॥

भा॰टी॰ -रथकों भ्रमणकरके रामजी चलेगए सो क्याहै॰ पुरवासीलो
गपीछे अयोध्यामे आए सोक्याहै, पुरवासीलोग अयोध्यामे आ
केविलापकिया सोक्याहै॰ और रामजीको बनवास चौदावर्ष प्रमा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

णकिया सो क्याहै ॥२२॥

श्लोक॰ वनेचरः कोरघुवीरमित्रः किंशृंगवेरंद्विज॰
शिंशिपश्चकः॥ किमासनंदर्भविनिर्मितम्मुने के
ते कुशाः काचगुहस्यभावना॥२३॥

भा॰टी॰ - हेब्राह्मणजी, बनमे भ्रमण करनेवाला रामजीको मित्र क्याहै, शृंगवेरपुर शिंशिपा वृक्ष क्याहै, गुहने रामजीकों कुशको आसन बनादिया सोक्याहै॰ कुशक्याहै, गुहकी भक्ती क्याहै॰२३

श्लोक॰ तिरस्कृतंयत्खलुलक्ष्मणेनवैकिम्भूषणाभू
मिनिपातितंतथा॥ केभूषणावस्त्रसमन्विताभुने
त्यक्ताश्चयेराघवसूनुनावै॥२४॥

भा॰टी॰ जोगहना लक्ष्मणने अनादरकरिके पृथिवीमें रखदिया॰ सो क्याहै, वो वस्त्र गहणा क्याहै जिसकुं दशरथ केपुत्र रामजीनै॰ त्यागदिया॥२४॥

श्लोक॰ कासाजटायान्निवबंधरामः काजान्हवी॰
पातकपुंजहारिणी॥ कःस्वप्नभावोरघुनन्दनस्य
वाविदेहजायास्सहितस्यभोमुने॥२५॥

भा॰टी॰ हेमुनिजी वोजटाक्याहै जिसकों रामजीने शिरपरबाधी बहुतसे पाप नाश करनेवाली गंगाजी क्याहै, जानकीसहित राम जीसोए सो क्याहै॥२५॥

श्लोक॰ सम्बादसंजागरणोद्वयोःकोबभूवतुर्लक्ष्म
णराममित्रयोः॥ श्रीजान्हवीतोयतटोर्मयःकेका
नोर्गुहस्यैवचवंशयष्टिः॥२६॥

भा॰टी॰ - लक्ष्मण तथा रामजीकामित्रगुह ये दोनो रातको जागे त॰ था बाता किया सो क्याहै॰ गंगाजीकेतीरजल और लहर क्याहै

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नांवक्याहै गुहकी बाँस क्याहै खेवणेवाले क्याहै ॥२६॥

श्लोक॰ किंतारणंकिञ्चप्रयागकाननं कासात्रिवेणी यमुनासरस्वती॥ एकत्रसंगंमिलिताप्रयागेयालोकलोकैस्सततम्विसेव्यते॥२७॥

भा॰टी॰ -रामचंद्रकौ गुहनै गंगाके पारलेगया सोक्याहै, प्रयागजीको बन क्याहै, यमुना सरस्वती गंगा प्रयागमे एकठांभई जिनकूं सबलोक सेवन नित्य प्रति करतेहै सो त्रिवेणी क्याहै॥२७॥

श्लोक वटश्चकोयः प्रलयेपिनाशंनयातिकश्चिन्मुनिवर्यमेश्रुतम्॥ मुनेभरद्वाजमुनिश्चकोवै संसेवितोयेनविदेहजापतिः॥२८॥

भा॰टी॰ हे मुनिश्रेष्ट मैने ऐसासुनाहै प्रयागमे एकबटको वृक्षहै उसकीनाश प्रलयमैभी नहीहोती वहवट क्याहै, भरद्वाज मुनीकौनहै जिनोनै जानकीपतिका पूजन किया ॥२८॥

श्लोक॰ प्रीत्यास्वयंलक्ष्मणजानकीभ्यांयुतोऽतिप्रेम्णामुनिभिस्समाहितः॥ कोवैमुनेस्नानविधिस्त्रिवेण्यांकृतस्त्रिभीरामप्रियासहोदरैः॥२९॥

भा॰टी॰ -प्रीतसे आपने हाथसें प्रेमकरके आदरसे मुनियोंकों संग लेके लक्ष्मण जानकी सहित रामजीको पूजन किया त्रिवेणीमें जानकी लक्ष्मण सहित रामचंद्रने स्नानकिया सोस्नानकी विधिक्या २९

श्लोक॰ वाल्मीकिनाम्नेतिमुनिर्महामतिर्भविष्यवक्तामुनिसत्तमश्चकः॥ मंदाकिनीकासरितांवरामुनेकश्चित्रकूटो मुनयश्चकेते॥३०॥

भा॰टी॰ अगाडी होनेवालीबात कहनेवाले बडेबुद्धिमान् मुनियोंमेंश्रेष्ठ ऐसे वाल्मीक मुनि कोणहै, नदियोंमेंबडी मंदाकिनी नदी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चित्रकूट पर्वत क्याहै मुनीलोग कौन हैं ॥ ३० ॥

श्लोक॰ वनेचराः केरघुनन्दनप्रियाः कौतौकुटीरौव सतिश्चतत्रका ॥ किन्तत्रसौख्यंरघुनन्दनेनप्राप्तं प्रियाभ्रातृसमन्वितेन ॥ ३१ ॥

भा॰टी॰ - जो मुनि बनमें विचरतेहैं रामजीके बडेप्यारे रामचंद्र लक्ष्मणकी दो पर्णकुटी बनी सो क्याहै इन दोनोका बातक्याहै लक्ष्मण जानकीसहित चित्रकूटपर बास करनेसे क्या सुख प्राप्ति हुवा ॥ ३१ ॥

श्लोक॰ पुनस्सुमन्तागमनञ्चकिम्प्रभो पुरीमयोध्यां सरयूसमन्विताम् ॥ मृतेनृपे क प्रमदाविलापके दूतवर्यामुनिनासुप्रेरिताः ॥ ३२ ॥

भा॰टी॰ - हे प्रभोजी रामजीको बिदाकरिके सुमंत अयोध्यापुरी कों आये सो क्याहै कैसी अयोध्याहै सरयूनदी पास बहतीहै दसरथके मरण हुएपर स्त्रियोंने रूदन किया सो क्याहै वसिष्ठजीने दूत भेजा सो दूत क्याहै ॥ ३२ ॥

श्लोक॰ सद्योगताः केकयपत्तनंकिंकः केकयेशोवचनंकिमूचुः ॥ द्रुतंगृहीत्वाभरतंसहानुजन्तौद्वौचकौराजपुरीम्प्रयातौ ॥ ३३ ॥

भा॰टी॰ - दूतोने जलदीकश्मीरको गए सो कश्मीर नगर क्याहै कश्मीरकोराजा कौन है राजासे दूत क्या बोले जलदीसे भरथ शत्रुधनकों लेके अयोध्यामे आए सो भरथ शत्रुघन कौन हैं ॥ ३३ ॥

श्लोक॰ आश्वासितौद्वौमुनिनाप्रचक्रतुर्विरोदनंकिञ्चकिमाश्वसाशनम् ॥ किमूचतुः कोशलनन्दिनीम्प्रतिबिभर्त्सयामासकिमुत्स्वमातरम् ॥ ३४ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ वसिष्ठजीसे भरथ शत्रुघननै विश्वास पायके रोते भएसो॰ क्याहै॰ वसिष्ठजीनै विश्वासदिया सोक्याहै॰ भरत शत्रुघन कौंश ल्यासें क्याबोले और आपनी जो माता कैकेयीउसकूं त्रासदिया॰ सो क्याहै,

श्लोक॰ किंचप्रयाणंभरतेनवैकृतंससैन्यमात्रानु
जबांधवैस्सह॥ गुहेनसम्वादनिवासनौचकोस्वसै
न्यविश्वासनमेवकिम्मुने॥ सरवेनगंगोत्तरणंकिम
द्भुतंप्रयागराजेमुनिसादरंचकिम्॥३५॥

भा॰टी॰ - माता गुरु कुटुंबसेनासहित भरत रामके पासचले सोक्याहै गुहकेसंग भरतको संवाद हुवा तथा गुहने भरतकों डेरादिया भरत ने आपनी सेनाकों विश्वासदिया सरवसें गंगाके पारभये प्रयागमे भरद्वाज मुनिने सेनासहित भरतकी मिजमानीकिया ये सब क्याहै३५

इतिश्रीवेदान्तरामायणेबालकांडेशिवसहायबुध
विरचितेसम्वर्तवरतंतुसम्वादेभरतागमनेभरद्वाजा
श्रमनिवासोनामद्वितीयोमोक्षोपानः॥२॥ ॥

सम्वर्तउवाच॥ ॥किंचित्रकूटेचसमागमम्मुने
परस्परंकिम्वचनंचतेषाम्॥ केपादुकेपादतला
वरक्षितेश्रीरामदत्तेभरतायनिर्मले॥१॥

भा॰टी॰ - संवर्त मुनि पूंछतेभये हे मुनीजी चित्रकूटपर सबमंड लीको मिलाप राम आदि लेके भरत वसिष्ठ और जो आएथे जिन्हो ने आपुसमे बोले सोक्याहै॰ रामजीनै आपणी पावडी दो भरत॰ कूंदिया सोक्याहै कैसी पावडीहै पगके रक्षा करनेवाली सुंदरहै १

श्लोक॰ येधृत्वाशिरसाप्रेम्णाससैन्योगुरुणासह॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शत्रुघ्नेनयुतश्शीघ्रंपुनरायात्पुरीम्प्रति॥२॥

भा॰टी॰ जोपावडी भरतने प्रेमसे अपने शिरपर धरके वसिष्ठ शत्रुघ्न, फौज संगलेके फिर अयोध्या पुरीकों आएसोक्याहै॥२॥

श्लोक॰ भरतस्यचकासेनायामादायागतःपुनः॥
नन्दिग्रामश्चकिम्प्रोक्तंपादुकासेवनंचकिम्॥३॥

भा॰टी॰ - रामजीके पाससे फौज संग लेके भरतजी फेर अयोध्यामें आए सो फौज क्याहै नंदिग्राम क्याहै पावडी सेवन भरतने किया सो क्याहै॥३॥

श्लोक॰ किमयोध्यापुरीराज्यंचकारभरतस्सुधीः॥
किम्प्रजारक्षणं विप्रकिंमृगाहरणंगिरौ॥४॥

भा॰टी॰ - बडे बुद्धिमान भरत अयोध्याको राज किया सो क्याहै हे मुनिजी भरतने प्रजाकी रक्षाकिया सो क्याहै॥४॥

श्लोक॰ रामेणलक्ष्मणेनैवचित्रकूटेकृतम्मुने॥किं
जयन्तापराधंचजानकीचरणार्दनम्॥५॥

भा॰टी॰ - राम लक्ष्मण दोनो चित्रकूटपर नित्य मृग मारते रहे सोक्याहै, जानकीके पगमे जयंतनाम काग चोंच मारया सो क्याहै॥५॥

श्लोक॰ रामेणत्यक्तः कोबाणः किमेकाक्षिनिपातनं
॥किंजयंतस्यभ्रमणंराक्षसागमनंचकिम्॥६॥

भा॰टी॰ रामजीने जयंत कों मारनेके वास्ते बाण छोड्या सो क्याहै, जयंतकी एक आंख काणी करदिया सोक्याहै काकने सब लोकों मे फिरता फिरा सोक्याहै चित्रकूट पर बहुत राक्षस आनेकों लगे सो क्याहै॥६॥

श्लोकः उद्वेगश्चमुनीनांकोयेनतत्त्याजराघवः॥चित्र
कूटस्यकिंत्यागः कोऽत्रिस्तस्याश्रमंचकिम्॥७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ मुनि लोगोंकोंदुःखभयासो क्याहै॰ जिसदुःखसें चित्रकूट कूं रामजी त्याग तेभये सो क्याहै॰ अत्रिमुनि कौनहै॰ अत्रिको आश्रम क्याहै ॥ ७॥

श्लोक॰ अनुसूयाचकादेवीजानकीशिक्षितायया॥
पूजनंरामचंद्रस्यकिमत्रिः कृतवान्मुने॥८॥

भा॰टी॰ अत्रिकी स्त्री अनुसूया देवी जिन्हूने जानकीकों पतिव्रता धर्म शिखाया सो क्याहै, रामजीका पूजन अत्रिमुनिनें किया सो क्याहै॥ ८॥

श्लोक॰ कोविराधोमहाक्रूरोजानकीयेनसंहृता॥
शीघ्रंजघानयंरामो बाणैर्देहविकृन्तनैः ॥९॥

भा॰टी॰ -विराधनाम राक्षस कौणहै॰ जिसनें जानकीकोंहर लेगया॰ जिसको रामजीनें जलदी बाणोसें शसिर काटके मारडाला॰॥ ९॥

श्लोक॰ मोक्षंप्रापतदारक्षश्शरभङ्गोमुनिश्चकः॥
किन्ध्यानंस्तवनंकाचचितातस्यस्वमाश्रमे॥१०॥

भा॰टी॰ - तब राक्षस मोक्षकूं गया सो क्याहै॰ शरभंग मुनीनें रामजीको ध्यानस्तुति करके अपने घरपर चिता बनायके स्वर्गकों गया सो कौनहै

श्लोक॰ कोग्निर्ददाहतंयस्तकस्सुतीक्ष्णोमहामुनिः
॥तेनसंभाषणंकिञ्चकः कुंभजसहोदरः॥११॥

भा॰टी॰ - शरभंगको जो अग्निनेजलाया सो अग्नि क्याहै॰ सुतीक्ष्ण मुनि कौनहै, सुतीक्ष्ण रामजीको संवाद भया सो क्याहै, अगस्त्य मुनीके भाई क्याहै ॥११॥

श्लो॰ कोऽगस्त्यःकाचतत्पत्नीलोपामुद्रामुनीश्वर॥ किं
रामागस्त्यसम्वादंधनुरैन्द्रंचकिम्मुने॥१२॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ हेमुनिजी अगस्त्य मुनि कौनहै, अगस्तिकीस्त्री लोपा मुद्रा जिसकानाम सोकौनहै, हेमुनिजी, रामजीको अरु अगस्त्य मुनिको संवाद हुवा सोक्याहै॰ इंद्रको धनुष क्याहै ॥१२॥

श्लो॰ प्राप्तंरामेणतत्रैवसरिद्गोदावरीचका॥ केतत्ती रजलेशक्रेकुटीरौकौचद्वौतयोः॥१३॥

भा॰टी॰- जोधनुष रामजीकों अगस्ति मुनिने दियासोक्याहै, गोदावरीनदीक्याहै, गोदावरीको तट जल क्याहै रामचंद्र लक्ष्मणकी दो॰ पर्णकुटीये क्याहै, ॥१३॥

श्लोक॰ ज्ञानस्यकाकथातत्ररामचंद्रेणवर्णिता॥ लक्ष्मणंप्रतिभोदेवसुखेनवसताऽनिशम्॥१४

भा॰टी॰- हेमुनिजी सुख समे तठहरेजोराम है सो वारंवार लक्ष्मण कूं ज्ञान कथा कही सोक्याहै॰ ॥१४॥

श्लोक॰ दुःखितावेनकामेनरावणस्यसहोदरा॥ आगतास्वपतिंकर्तुंश्रीरामंरतिवल्लभा॥१५॥

भा॰टी॰- रावणकी बहिनी रतिकूंप्यारी मानिके रामचंद्रको आपको पती बनाने वाले आई कामसे दुःखित होके सोकाम क्याहै ॥१५॥

श्लोक॰ रामेणभ्रामितातत्रसायपौलक्ष्मणान्तिकं॥ काभ्रमिस्तस्यरामेणकृतातस्यातिहास्यतः १६

भा॰टी॰- रामजीके वचनकूं मानके लक्ष्मणके पास गई तिसराक्षसीके संग हांस्य करके इदरउदर भ्रमाने भयेसोक्याहै॥१६॥

श्लोक॰ तस्याःकेनासिकाकर्णेयेछिन्नेलक्ष्मणेनवै॥ किंतद्रुधिरवृन्दंचरक्तांगीयेनसंकृता॥१७॥

भा॰टी॰- शूर्पनखाके नाक कान लक्ष्मणने काट लिये सो नाक कान क्याहै, बहुत रक्त आया, जिसरक्तसें शूर्पनखा कादेह लाल होगई

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सो क्याहै ॥१७॥

श्लोक॰ तरसागमनंतेषांकिन्तयोक्तम्वचस्यकिम्॥
हतारामेणतेसर्वेससैन्याराघवेनवै॥१८॥

भा॰टी॰-खरदूषण त्रिषिरा इनो कुंशूर्पनखाक्या बचनकहतीभई राक्षसलोग बहुतजलदी रामजीसें युद्धकरनेकों आए सोक्याहै, सेनासहित रामजीने सब राक्षसोंका नासकियासो क्याहै ॥१८॥

श्लोक॰ भयाद्यांजानकीप्राप्तासागुहाकामुनीश्वर॥
सहोदर्यासभांगत्वारावणस्यचसन्निधौ॥यच्चोक्तं
वचनंकिन्तद्यच्छ्रुत्वाराक्षसोत्तमः॥१९॥

भा॰टी॰-हेमुनिजी भयसे रामजीने जानकीको गुहामे भेजी सोगुहाक्याहै; रावणकी बहिनीने रावणकेसभामे जायके रावणके सामने खडीहोके जोवचन बोली सो क्याहै जिस बचनकू सुनके राक्षसोमे उत्तमजो रावण ॥१९॥

श्लोक॰ कःकामोमोहितोयेनमारीचान्तिकमाययौ॥
कःसम्वादोहयोस्तत्रकोमृगोयस्यरूपधृक्॥२०॥

भा॰टी॰- तुरंत कामसें मोहित हुवा सो कामक्याहै, मारीचकेसामने रावण गया सोमारीचरावणसंवाद क्याहै, और मारीचने मृगकोरूप धरयासो मृगक्याहै॥२०॥

श्लोक॰ किंविचित्रम्मृगतनौचंचलाकागतिर्मुने॥को
मोहोरामचन्द्रस्यवैदेहीलोभनंचकिम्॥२१॥

भा॰टी॰-हेमुनिजी मृगकीशरीरपर चित्रविचित्र क्यारहा॰ मृगका बहुत भागना क्याहै, मृगकों देखके रामजी मोहित भये सो मोह कौनहै और जानकीकों लोभ हुवा सो क्याहै॥२१॥

श्लोक॰ निवारणंचसौमित्रेःरामचन्द्रस्यकिम्मुने॥ह

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नोरामेणतेनोक्तंकिंलक्ष्मण इतीरितम्॥२२॥

भा-टी- - रामचंद्रकौ लक्ष्मणने मनाकिया मतजावो-ये मृगनही-राक्षसहै सोक्याहै, रामजीने मारीच कौं मार्या सो जमीनमेपडले बख्त मारीचने हालक्ष्मण ऐसा बोला सोक्याहै॥२२॥

श्लोक-जानकीलक्ष्मणस्यैव किंविवादंचनिष्ठुरम्॥
सौमित्रौविगतेदूरेकिंधृतंरावणेनवै॥२३॥

भा-टी- जानकी लक्ष्मणको बहुत विवाद भया सोक्याहै-लक्ष्मण कों दूर गया जाणके रावणनें रूप धारणकिया सोक्याहै॥२३॥

श्लोक-परिव्राजकवेषंचकिंतत्साहित्यमंडलम्॥ वै
देह्याकानिदत्तानिकंदमूलानिसाधवे॥२४॥

भा-टी- - संन्यासीको भेष रावण बनायकेजानकी केपास आया गेरूका कपडा विभूत कमंडल आदि और जो संन्यासीलोग धारण करतेहै सो रावणने क्या धारणकिया-जानकीने साधूजानके कंद मूल फल दिया सोक्याहै॥२४॥

श्लोक-सम्वादःक्रूरवचसाकस्तत्रमुनिसत्तम॥जान
कींस्वरथेस्थाप्यगन्तुकामस्त्वपत्तनम्॥२५॥

भा-टी- - हेमुनिजी जानकी कोंरखोटीबात रावणने कही रावणकुंखोटीबातजानकीने कही सोक्याहै, जानकीकों रावणने आपने रथ-पर बैठायके लंकाकों लेचला सोक्याहै॥२५॥

श्लोक-कोगृद्धस्तस्यकौतुंडौपक्षौचरावणार्दितौ॥
पातितोरावणेनैवजानकींहृत्यसंगतः॥२६॥

भा-टी- -जिसगृद्धके पक्ष चूंचकों रावणने काटके जमीनमें गिराय के जानकीकों लेके लंकाकूंगया सो गीध कौनहै॥२६॥

श्लोक-कादासीस्तस्यदुष्टस्ययासांमध्येचजानकी॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

स्थापितारक्षणं तत्रकिंकृतंराक्षसीगणैः॥२७॥

भा०टी०--रावणदुष्टकी दासी क्याहै जिन दासीयोंके बीच जानकी-कों बैठाया, राक्षसीयोंने जानकीकी क्या रक्षा किया॥२७॥

श्लोक-जानकीहरणंदृष्ट्वारामलक्ष्मणयोरपि॥ को विलापोमुनिश्रेष्ठ गृद्धसन्तारणंचकिम्॥२८॥

भा०टी०--हे मुनिराज, जानकीको हरी देखके राम लक्ष्मणने विलापकिया तथा गीधको संसारसे तारते भए सो क्याहै॥२८॥

श्लोक-कः कबंधोभुजौतस्ययोरामेणनिपातितौ॥ काचितातस्यकोदाहः कबंधवचनंचकिम्॥२९॥

भा०टी० कबंधनाम राक्षस कौनहै कबंधकी भुजा क्याहै जिस भुजाकूं रामजी काटते भए और कबंधकों जलाने वास्ते रामजीने चिताबनाया सोक्याहै कबंधने रामजीसे बचन बोला सोक्याहै २९

श्लो० येनोक्तोरामचन्द्रस्तुतत्क्षणेशबरीङ्गतः॥ का सामुनिश्रेष्ठयार्चित्वारघुनन्दनम्॥ कथित्वाकपिसद्भावंकांगतिम्प्रापितासती॥३०॥

भा०टी०-- जिस बचनकूं मानके रामजी उसी बखत सबरीके पास गए हे मुनिजी सो सबरी क्याहै, जो सबरी रामजीको पूजन करिके तथा रामजीकोंकहीआप सुग्रीवकूं मिलोगे तो सब काम होजायगा ऐसा कहिके किसलोककूं गई॥३०॥

श्लो० कापंपानलिनीश्रेष्ठाकश्शरश्चतदुद्भवः॥ का किष्किन्धापुरीख्याताकेतेवैकपयस्स्मृताः॥३१॥

भा०टी० तलाइयोंमें बडी जो पंपानाम तलाई सो क्याहै उसी पंपातलाईसे निकलाजो पंपानाम तलाव सोक्याहै किष्किंधा पुरीक्याहै जो कपियोंने रामजीकी सहायकिया येसब बांदर कौनहै सो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

निश्चय करके कहो ॥ ३१ ॥

श्लो॰ कोवालिः कश्चसुग्रीवोयामवान्हनुमांस्तथा
नलनीलादयःसर्वेप्यंगदाद्याःकपीश्वराः ॥ ३२ ॥

भा॰टी॰ - वालि सुग्रीव, यामवान्, हनुमान्, नल नील अंगद आदि बडे बडे बलवान् बंदर येसब कौनहै ॥ ३२ ॥

श्लो॰ तारारुमेचकाख्यातेदुन्दुभिःकश्चराक्षसः ॥
कासागुहादुन्दुभेश्चसुग्रीवोयत्रसंस्थितः ॥ ३३ ॥

भा॰टी॰ - तारा रुमा ये दोनो कौनहै, दुंदुभीनाम राक्षस कौनहै, दुंदुभीकी गुफा क्याहै, जिसके दरवज्जे सुग्रीव खडारहा ॥ ३३ ॥

श्लो॰ कोमासश्चकपेर्वासःकिंमृतज्ञानमेवच ॥ का
राज्यप्राप्तिस्सुग्रीवेकिंसुखंप्रापितञ्चतत् ॥ ३४ ॥

भा॰टी॰ - एक महीना सुग्रीवने गुफाके द्वारपर खडारहा सो महीना क्याहै॰ बालि मरगया ऐसा सुग्रीवने जाना सो क्याहै, सुग्रीवकों राजमिला तिसका सुख भया सो क्याहै ॥ ३४ ॥

श्लो॰ कोदुन्दुभिवधश्चैव वालिनिर्य्यापणंचकिं ॥
सुग्रीवस्यप्रवासंचकृतंतद्वालिनाचकिम् ॥ ३५ ॥

भा॰टी॰ - दुंदुभीकों बालीने मारा मारके अपने घरकूं आयाये दोनो क्याहै, सुग्रीवकों बालीने घरसें निकालदिया सो क्याहै ३५

श्लोक॰ किंसुग्रीवस्यभ्रमणंकोमत्तंगोमुनिस्तथा ॥
किंशिरोवालिनाक्षिप्तंसरक्तंमुनिमंडले ॥ ३६ ॥

भा॰टी॰ - सबदेस सुग्रीव फिरा सो क्याहै, मतंग मुनी कौनहै, मुनीके पर्नकुटीके सामने बालीने रक्तसहित राक्षसका शिर फेंका वो शिर क्याहै ॥ ३६ ॥

श्लो॰ कोस्तोरंजितंयेनमुनेराश्रममण्डलम् ॥ कः

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शापोमुनिनादत्तोभूधरः कः प्रवर्षणः॥३७॥

भा॰टी॰ - जिस रक्तसे मुनीकी पर्णकुटी भ्रष्टभई सो रक्त क्याहै मुनीनें बालीकों श्राप दिया सो क्याहै, प्रवर्षण नाम पर्वत है सो क्याहै॥३७॥

श्लो॰ सुग्रीव स्यचकोवासोगिरौमंत्रिगणैः सह॥
रामचन्द्रमिलापः कोभूषणंवसनंचकिम्॥३८॥

भा॰टी॰ - प्रवर्षण ऊपर सुग्रीव बसतेथे सो बास क्याहै॰ राम सुग्रीवकी मित्रताहुई सो क्याहै, गहना वस्त्र क्याहै॥३८॥

श्लो॰ त्यक्तंमैथिलराजस्यकन्यायाकिंप्रदर्शितम्॥
काप्रतिज्ञावालिवधेरामचंद्रेणवैकृता॥३९॥

भा॰टी॰ - जो जानकीने सुग्रीवकूं देखके गहना वस्त्र त्यागदिया॰ वह गहना वस्त्र सुग्रीवने रामजीकों दिखाया सो क्याहै॰ बालीकों मारनेवास्ते रामजीनें पण किया सो क्याहै॥३९॥

श्लो॰ जानकीशोधनेचैवकपिनाकाकृतामुने॥ केसमतालाः किंशुष्कंदुन्दुभेः शिरएवच॥४०॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी जानकीकु शोधनेवास्ते सुग्रीवनें पण किया सो क्याहै, सात तालके वृक्ष तथा दुंदुभीका सूखा शिर क्याहै ४०

श्लो॰ किमंगुष्ठंकिमदृश्यंयमाश्रियरघूत्तमः॥ जघानकपिराजम्वेद्वंद्वयुद्धकरंशठम्॥४१॥

भा॰टी॰ - रघुवंशमें श्रेष्ठ रामजीने जिस अंगुठेसे दुंदुभीके शिरको उठायके दूर फेंक दिया सो अंगुठा क्याहै जिस वृक्षके आडे होकर रामजीने दोके संग युद्ध करनेवाला शठ ऐसे बालीकों मार डाला वो वृक्ष कौनहै॥४१॥

श्लोक॰ कापुष्पमालातत्रासीत्चिन्हितोविहतोयया॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तारांगदविलापः कःकावालिदहनक्रिया॥४२॥

भा॰टी॰ - जिस फूलकी माला सुग्रीवकों पहराया पछानके वास्ते फेर रामजीने युद्ध करनेकूं भेजा सो माला क्याहै॰ तारा अंगद को॰ विलाप तथा वालिकी दाह क्रियाक्याहै॥४२॥

श्लो॰ सुग्रीवराज्यप्राप्तिः कातस्यकिम्मदवर्द्धनम्॥
रामस्यगिरिवासः कोलक्ष्मणेनयुतस्यच॥४३॥

भा॰टी॰ - सुग्रीवकों राजमिलासो क्याहै॰ राजमिलनेसें अभिमान भया सो क्याहै, रामजी लक्ष्मणसहित परवतपर बसे सोक्याहै ४३

श्लो॰ केचत्वारोगतामासावर्षिकाः सुमनोहराः॥ विलापोरामचन्द्रस्यपुनः कोजानकीकृते॥४४॥

भा॰टी॰ - सुंदर मनकों हरण करवेजोग ऐसेजो चारमास वर्षा ऋतुके गए सोक्याहै फेरजानकीके वास्ते रामचंद्रजीने विलाप कियासो क्याहै

श्लो॰ सुग्रीवत्रासनंकिंचलक्ष्मणेनकृतंतथा॥ राघवान्तिकमागत्य प्रेरयामासवैकपीन्॥४५॥

भा॰टी॰ - लक्ष्मणजीने सुग्रीवको त्रासदिया सोक्याहै सुग्रीवने रामजीके सामने आयके कपियोंको भेजासोक्याहै॥४५॥

श्लो॰ चतुर्दिक्षुमहावीरान्सुग्रीवस्तच्चकिम्मुने॥ किमंगुलीयकन्दत्तं रामेणवायुजेकपौ॥४६॥

भा॰टी॰ बडेबली वानरोंकों चारोंदिसाकों सुग्रीवने भेजा सोक्याहै, रामजीने हनुमानकूं मुँदरी दिया सोक्याहै॥४६॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे बालकांडे शिवसहायबुधविरचितेसीताशोधनेतृतीयोमोक्षोपानः॥३॥

श्लोक॰ सम्वर्तउवाच कावधिर्मासिकादत्ताशो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धित्वाचत्रयोदिशः॥ अप्राप्तिं पुनराचख्युर्जानक्या
स्तच्चकिम्मुने ॥१॥

भा०टी० सम्वर्तमुनि फेर पूंछतेहैं सुग्रीवने सब बानरोंकों एकमा
सका प्रमाण करके भेजा सो क्याहै. कपियोंनें तीन दिसा शोधके
आय कहेके जानकी नही मिली. सो क्याहै ॥१॥

श्लोक. योगिनीकासमाख्याता पातालविवरंचकिम्॥
कःसम्पातिःपक्षिराजोयद्वाक्यमनुमान्यच॥२॥

भा०टी०- हनुमान् आदि वानरोंकों योगिनीमिली सो क्याहै, पाता
लकी रस्ता देख पडीसो क्याहै. संपाति गीधपक्षी योका रा-
जाक्याजिसकी बचन हनुमान मानके ॥२॥

श्लो० यदारुरोहहनुमान्समुद्रलंघनोद्यतः॥सगि
रिःकोपदापीड्यपारंगन्तुम्मनोदधे॥३॥

भा०टी०- जिसपरबतकों हनुमान चढते भए पगसे दाबिके समुद्रकों
कूदके उसपारजानेको बिचारकिया सोपर्बत क्याहै॥ ३॥

श्लोक. सिंहिकाकाजलचराछायाकावाहनूमतः॥
मारिताक्रोधयुक्तेनवीरेणमुष्टिनाकथम्॥४॥

भा०टी०- जलमेरहनेवाली सिंहिका क्याहै हनुमानकी छायाक्या
है अरु क्रोधकरिके हनुमान् वीरने हाथकी मुष्टी बांधके मारासो
मुष्टी क्याहै॥४॥

श्लो० सुरसा का समाख्याता द्वयोः किम्मुखवर्द्धनं॥
किम्प्रविश्यगतःपारंबिचारंकिंहनूमतः॥५॥

भा०टी०- सुरसाने मुख बढाया हनुमानने देह बढाया सो सुरसा
क्याहै, सुरसाकी मुखमे पैठके हनुमान समुद्रके पारगए सोमुख
क्याहै॥ हनुमान सिंधुके दक्षणतीर बैठके बिचार कियासोक्याहै ५

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ किन्धृतंलघुरूपंचकालंकामुष्टिपातनम् ॥ विलो
किनासमस्तापूर्न्नदृष्टाजानकीतिकिम् ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ हनुमानने छोटारूप धारणकिया सो क्याहै हातकी मुट्ठी बांध-
के लंकानाम राक्षसीकूं मारी सोलंका क्याहै तमाम लंकापुरी हनुमा
नफिरे जानकीकूं नहीदेखे सोक्याहै ॥ ६ ॥

श्लो॰ पश्चाद्दृष्टाजनकजाकिंतरुस्थेनतेनवै ॥ किमाग
मनवेगञ्चरावणस्यतदामुने ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी पीछे वृक्षपरबैठके जानकीकूं देखे सोक्याहै, त
ब जलदी रावण आया सोक्याहै ॥ ७ ॥

श्लो॰ गतेदुष्टेराक्षसीभिस्तर्जनंकिंकृतन्तथा ॥ त्रिज
टास्वासनञ्चक्रेजानक्याःकिंतदामुने ॥ ८ ॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी रावण दुष्टके गये पीछे राक्षसीयोंने जानकीकों
डरवातीभई सोक्याहै: त्रिजटाने जानकीकूं विश्वासदिया सोक्या
है सोकहो ॥ ८ ॥

श्लो॰ किमूचेरामचरितं हनुमान्तरुसंस्थितः ॥ तेनो
क्तंवचनंश्रुत्वाविश्वासंप्रापसाचकिम् ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - वृक्षपरबैठके रामजीके चरित्रकूं हनुमान कहने लगे॰ तथा
कपिकी वाक्य सुनके जानकीके मन विश्वास भया येदो नोक्याहै

श्लो॰ दत्तांगुलीयंसङ्कृत्यसंवादमभवत्तयोः ॥ कासा
क्षधायवार्तोभूद्धनुमान्कपिसत्तमः ॥ १० ॥

भा॰टी॰ - रामजीकी मुँदरी हनुमानने जानकीकों दियाः जानकी
लेके खुसीभई दोनो माता पुत्र बात करने लगेसोक्याहै जिस भू
षसें हनुमान् दुःखीभंए वोभूष क्याहै ॥ १० ॥

श्लो॰ किम्फलन्तरवःकेचभक्षितोत्पादितास्तथा ॥ रा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्षसीभिः किमुक्तश्च रावणो मानगर्वितः ॥११॥

भा॰टी॰ - जो फल हनुमानने खाए रक्षोकों तोडे सो फल और वृक्ष क्या है रावणकों राक्षसीयोनें क्या कहा ॥११॥

श्लो॰ प्रेरयामास तनयं स्वस्याक्षं राक्षसोत्तमः ॥ हतो हनुमता सश्च बद्धश्चेंद्रजिता च कः ॥१२॥

भा॰टी॰ - राक्षसोंमे उत्तम जो रावण है सो आपने अक्षनाम पुत्रकों भेजा तिस अक्षकों हनुमान मारा सो क्या है इन्द्रजीतने हनुमानकू बांधा सो क्या है ॥१२॥

श्लो॰ लंकाविदाहनं किञ्च ताडनम्पुच्छबंधनम् ॥ भ्रमणं हसनं चैव किन्तैलं रज्जु किम्पुने ॥१३॥

भा॰टी॰ - हनुमानकी पूंछ बांधते भए, मारे लंकामें फिराए हसीकिए और तैल रस्सी कपडा ये सब क्या है ॥१३॥

श्लो॰ कोक्तिर्दशाननस्यैव वीरस्यैव बभूव ह ॥ राक्षसीनां प्रलापं किं किम्पुच्छशीतलन्तथा ॥१४॥

भा॰टी॰ रावणकी हनुमानकी बाते भई सो क्या है लंका जलती देखके राक्षसीयोंने विलाप किया सो क्या है हनुमानने पूंछ बुझाय के थंडी किया सो क्या है ॥१४॥

श्लो॰ जानक्या मणिर्दत्ता रामविश्वासकारणे ॥ गृहीता कपिना साका जानक्या स्वासनञ्च किम् ॥१५॥

भा॰टी॰ - रामजीकों विश्वास होनेवास्ते हनुमानकुं मणि जानकीने दिया सो क्या है, कपीने मणी लेके जानकीकों बिश्वास दिया सो क्या है ॥१५॥

श्लो॰ किम्पुनर्लंघनं सिन्धोरङ्गदास्वासनं च किम् ॥ किं तन्मधुवनं शृङ्गं तैः फलं किम्प्रभक्षितम् ॥१६॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा०टी०-- फेर हनुमान समुद्र कूदके उत्तर पार आए सो क्याहै- अंगदकों आस्वास किया सो क्याहै- मधुबनमें प्रवेस करके कपियोनें फलखाए सो सुंदर सुग्रीवको मधुबन क्याहै ॥१६॥

श्लो० तर्ज्जितावनपाःकेचकपीशायनिवेदनम्॥ को हर्षःकपिराजस्यरामप्रश्नंचकिम्मुने ॥१७॥

भा०टी०-बनके रखवालोंकों मारा वे सुग्रीवसे जापुकारे सुग्रीवकों हर्ष भया- सुग्रीवसे रामजीने पूछा येसब क्याहै ॥१७॥

श्लो० आगत्यहनुमानूचेनस्याप्यादरभावना॥ सेनासंयोजनाकाचसमुद्रतटसंस्थितिः॥१८॥

भा०टी०-- हनुमान आयके सब हाल रामजीसे कहे हनुमानका आदर रामजीनेक्याकिया फौजकों एकठीकरके चलते हुए सो क्याहै- समुद्रके तीर सेना सहित रामजीनें डेरा किया सोक्याहै ॥१८॥

श्लो० बिभीषणस्यधिक्कारःकिंकृतंरावणेनवै॥ केबिभीषणमंत्रज्ञास्तैःसार्द्धंरामसन्निधिम्॥१९॥

भा०टी०-- रावणने बिभीषणकों कहा कि तेरेकों धिक्कारहै ऐसी बानी क्याहै- बिभीषणको मंत्री कौनहै जिनोकों संग लेके रामजीके पास आए ॥१९॥

श्लो० आययौकपयश्चक्रुःकिन्तस्यविनिवारणम्॥ बिभीषणायकिंदत्तंराज्यंरामेणवैतदा॥२०॥

भा०टी०-- आयाजब कपियोंने आणे नहीं दिया सो क्याहै, तब रामजीने बिभीषणकों राजदिया सो क्याहै ॥२०॥

श्लो० समुद्रतरणेचैवकोविचारश्चतैःकृतः॥ किंचदर्भासनन्तत्रत्रिदिनंराघवस्यह॥२१॥

भा०टी०-- समुद्रके पार जानेकेवास्ते बिचार कियासो क्याहै, हेमुनि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जी, रामजीका कुशआसन क्याहै ॥२१॥

श्लो॰ त्यक्त्वामूलफलेरामोनिराहारोबभूवच ॥ किम्मू
लंकिम्फलंचैवकिमयाचतसागरम् ॥२२॥

भा॰टी॰ - मूल फलकों रामजीने त्यागिके निराहार रहे सो मूल फल-
क्याहै, समुद्रसें रामजीने याचना किया सो क्याहै ॥२२॥

श्लो॰ कःक्रोधोरामचंद्रस्यकिं सागरविशोषणम् ॥ के
वैजलचराःसर्वेव्यथिताःशरकर्षणे ॥२३॥

भा॰टी॰ - रामजीने क्रोध किया सो क्याहै, समुद्रकूं शोष लेनेकूं मनकि
या सो क्याहै, समुद्रशोषणेवास्ते धनुषपर बाण चढायके खेंचे तब-
जलजीव बहुत दुःख पाए सो क्याहै ॥२३॥

श्लो॰ किंसागरघृतंरूपम्ब्राह्मणस्यातिकौतुकम् ॥ का
पात्रीकेचतेरत्नाःसमानीताश्चसिन्धुना ॥२४॥

भा॰टी॰ - समुद्रने तमासा सरीके ब्राह्मणको रूप धारण किया सोक्या
है सिंधुथालीमे रत्नधरिके रामजीकी बिनती किया सो रत्न तथा था
ली येसब क्याहै ॥२४॥

श्लो॰ स्तवनंकिञ्चकाराशुरामचंद्रस्यसागरः ॥ कश्चो
त्तरतटस्थश्चसिन्धुशत्रुर्निपातितः ॥२५॥

भा॰टी॰ - समुद्रने रामजीकी स्तुतिकिया सोक्याहै, समुद्रके उत्तरतीर
मेसमुद्रकाबैरी सो रामजीने मारा सोक्याहै ॥२५॥

श्लो॰ कःसेतुःकश्चपाषाणःकेचान्येसेतुबन्धने ॥ सा
हित्याश्चैवरामेनदुःखितेनसुखायच ॥२६॥

भा॰टी॰ - बडे दुःखी रामजीने सुख होनेवास्ते पुल बांधते भए सोपुल
क्याहै पुलकी सामग्री क्याहै ॥२६॥

श्लो॰ कश्चरामेश्वरोदेवःस्थापितःपूजितोनिशम् ॥ किं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सैन्योत्तारणंतस्यकासेनागणनातथा ॥ २७॥

भा॰टी॰ - रामजीने आपना कुलदेव जानके रामेश्वरजी कों स्थापन किया और बारंबार पूजन किया सो क्याहै॰ फौजकूं समुद्रके पार जाना तथा गिनती किया सो क्याहै ॥२७॥

श्लो॰ कःस्कवेलोगिरिर्ब्रह्मन्सैन्यानांकास्थितिस्तथा॥ चतुर्षु द्वारदेशेषुलंकायाश्चचतुर्दिशः ॥२८॥

भा॰टी॰ - हेब्राह्मणजी; स्कवेल पर्वत और स्कवेलकेऊपर फौज टिकी ये दोनो क्याहै, लंकाके चारों तरफ तथा चारों दरवाजाको ॥२८॥

श्लो॰ रोधनंकिम्मुनेब्रूहिकोत्तरेराघवस्थितिः, किंयु द्धंरावणादीनांराक्षसानांपरस्परम् ॥२९॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी, घेर लेते भए सो क्याहै, उत्तर दरवाजापर रघुनंदन आप खडेहुए सो क्याहै, रामजीके तथा रावण आदि गिणती नही जिन राक्षसोंकी जिनसें परस्परयुद्ध बहुत भईसो क्याहै ॥२९॥

श्लो॰ कपीनांरामचन्द्रेणप्रेरितानाम्मुहुर्मुहुः॥ रामस्यलक्ष्मणस्यैवराक्षसैश्चमहाहवं ॥ ३०॥

भा॰टी॰ - रामजीके हुकुम पायके बानरोंकी तथा राक्षसोंकी बडी प्रलय युद्ध भई॰ तथा रामलक्ष्मणसें और राक्षसोंसें बडी युद्ध भई सो क्याहै॥ ३०॥

श्लो॰ किंशिरोवर्द्धनंछिन्नेरामेणरावणस्यच॥ कामायाराक्षसेन्द्रेणसंग्रामेदर्शिता मुहुः॥३१॥

भा॰टी॰ - बारंबार रामजीने रावणको शिर काट काटके जमीनमे पटके और रावणके शिर फिर दूसरे तयार भए॰ उसी तरें शिरोंकी बडी वृद्धि भई सो क्याहै॰ युद्धमे रावणने बहुत माया दिखाई सो माया क्या

श्लो॰ कानिद्राकुंभकर्णस्यकिंवैजागरणंतथा॥ शक्तया

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विघातितेतत्रलक्ष्मणोपतितेक्षितौ ॥३२॥

भा॰टी॰- कुंभकर्णकी निद्रा क्याहै॰ रावणने कुंभकर्णकों जगाया सोंक्याहै; इन्द्रजीतने लक्ष्मणकौं शक्तिसे मारा लक्ष्मण भूमिपर पडगयासोक्याहै॥३२॥

श्लो॰ कोरामस्यविलापश्चकपीनाञ्चैवसर्वशः॥कः सुषेणोगिरिद्रोणोकोमार्गःक श्चतापसः॥३३॥

भा॰टी॰- तबरामजीने और सब वानरोनें बडाविलापकियासो क्याहै सुषेणतथाद्रोण पर्वत क्याहै, जिसके रस्तामे राक्षस कपटमुनिहोके हनुमानकों विघ्नकरनेवास्ते बैठा सोरस्ता और मुनिकौनहै॥३३॥

श्लो॰ किंकमंडलुतोयंचदर्शितस्तेनकः शरः॥काच्छायाकपिनामृत्युंप्राप्ताकागुरुदक्षिणा॥३४॥

भा॰टी॰- दुष्टमुनिने हनुमानको आपने कमंडलुको जल देनेलगा सोजल तथा कमंडलुक्याहै, हनुमानने कमंडलुको जलनहीपिये तोदुष्टने तलाव बताया सो तलाव क्याहै, हनुमान तलावमें जलपीनेलगे तोछाया हनुमानकों खानेवास्ते आई उस्कों हनुमानने मारडाली सोछाया क्याहै, दुष्टमुनिने गुरु दक्षिणा मांगी सोगुरुदक्षिणाक्याहै॥३४

श्लो॰ वनस्पतेरविज्ञानः कोद्रोणोत्पाटनञ्चकिम्॥ किम्पुनस्थापनंतस्य लक्ष्मणाजीवनन्तथा॥३५॥

भा॰टी॰- हनुमानने औषधी नही पछानी तो द्रोणपर्वतकों मूल सहितउपाडके सेनामे आए सोउपाडना क्याहै, लक्ष्मणकौंचैतन्यभएपीछे पर्वतकुं उसीजगापर रख आएसो क्याहै॥३५॥

श्लो॰ कारात्रिःकिंदिनंयुद्धंनागपाशविबन्धनम्॥राम लक्ष्मणयोःकश्चगरुडागमनञ्चकिम्॥३६॥

भा॰टी॰- रामजीसे रावणसे रातदिन युद्ध भई सो रातदिन क्याहै; मे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धनादने रामलक्ष्मणकों नागपाशमें बांध लिये सो क्याहै· गरुडने· आयके छुडाए सो क्याहै ॥ ३६॥

श्लो० स्वस्त्रियंजानकींकर्त्तुरावणश्चभृशंमुने ॥ लो
भादयः केकथितारावणेनतदन्तिके ॥ ३७॥

भा·टी·- रावणने जानकीकों अपनी स्त्री बनाने वास्ते वारंवार लोभ आदिकहता भया सोक्याहै ॥ ३७॥

श्लो० कोजानकीविलापश्चमासेचैकादशेमुहुः ॥ त्रिजटास्वासनंकिम्वैमन्दोदर्याः शुचश्चकाः ॥ ३८॥

भा·टी·- मास ११ वारंवार जानकीने विलाप किया सो क्याहै जानकीकों त्रिजटानेविश्वास दिया सोक्याहै· मंदोदरीकों शोच भयासोक्याहै ३८

श्लो० मेघनादादिसर्वेषुहतेषुपुत्रभ्रातृषु ॥ विलापो
दशकंठस्यकोबभूवमुनीश्वर ॥ ३९॥

भा·टी·- हेमुनियोंकेईश्वर मेघनाद आदि लेके गिनती करवे जोगनहीजो रावणके पुत्र, प्रपुत्र, भाई, राक्षस, इन्होके मरेपीछे रावणने विलाप किया सोक्याहै ॥ ३९॥

श्लो० यज्ञस्थितेदशग्रीवेकोविघ्नोवानरैः कृतः ॥ रा
मरावणयोर्युद्धेयेचान्येभूरिकौतुकाः ॥ केतेसर्वेयथा
योग्यम्वदस्वमुनिसत्तम ॥ ४०॥

भा·टी·- रावणने शत्रुजीतनेके वास्ते यज्ञ करनेकूं बैठा तब वानरोने विघ्नकिया· येदोनो क्याहै, रामरावणके युद्धमे ओरजो बहुत चरित्र भया सो क्याहै· हेमुनिजी येसब बात यथायोग्य कहो ॥ ४०॥

श्लो० रावणेसकुटुम्बेचसामात्ये पुत्रपौत्रके ॥ हतेरा
मेणकपिभिर्लक्ष्मणेनावशेषिते ॥ ४१॥

भा·टी·- रावणके पुत्र पौत्र भाई कुटुंब मंत्रीसहित को रामने मारेथो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रजोवाकीरहे सो कपि ओरलक्ष्मणने मारेसोक्याहै॥ ४१॥

श्लो॰ राक्षसीनांविलापःकोलंकाराज्यंबिभीषणे॥दत्तं किंरामचंद्रेणसेन्यानांजीवनंचकिम् ॥४२॥

भा॰टी॰ - राक्षसीयोंका विलापक्याहै॰ लंकाको राज्य बिभीषणकूं दियासोक्याहै॰ ओरअपनी सेना मरीपडीथीउस्कोजियाने भए॰ येसबकाम रामजीने किया सो क्याहै॰ ॥४२॥

श्लो॰ कास्तुतीरामचंद्रस्यकृतासर्वैश्चराचरैः॥जानक्या रामचंद्रस्यकोमिलापोऽतिसौख्यदः॥४३॥

भा॰टी॰ - देवोंसहित तीनलोक॰ चौदाभुवन॰ रामजीकी स्तुति किया तथा बहुत सुख देनेवाला॰ मिलापरामचंद्र जानकीका भया सोक्याहै

श्लो॰ पुष्पकेचसमारोप्यरामःसर्वान्कपींस्तथा॥लक्ष्म णंजानकींचैवकिंरणस्थलदर्शनम्॥४४॥

भा॰टी॰ - रामजीनें पुष्पक विमानमे लक्ष्मणजानकी तथा सबबानरों कों बैठायके अयोध्याकूंचले॰ तब ऊपरसें रणभूमि दिखाई सो क्याहै॥४४॥

श्लो॰ यथायातोवनंरामस्तथाचपुनरागतः॥भरद्वा जाश्रमेस्थित्वाहनुमत्प्रेषणंचकिम् ॥४५॥

भा॰टी॰ जैसा रामजी बनकूं गए तैसेही फिर अयोध्याकूंचले॰ भरद्वा जमुनिके आश्रम॰ आयके हनुमानकों भरतके पास भेजासोक्याहै॰

श्लो॰ हनुमान्भरतोक्तिश्चकिंपुष्पकसमागमम्॥स र्वासांचप्रजानांवैकोहर्षःपुरवासिनाम्॥४६॥

भा॰टी॰ - हनुमानओर भरतकोसंवाद भयासोक्याहै॰ पुष्पक॰ विमान भरतके सामने आया सोक्याहै॰ पुरवासियोंको बडाहर्ष भयासोक्याहै॥४६॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक- सर्वेषांचैव भ्रातॄणांकिंजटाकृंतनम्मुने ॥ पट्टा
भिषेकोरामस्यसर्वेषांसुखसंस्थितिः ॥४७॥

भा-टी- - हेमुनिजी सब भाइयोनें जटा उतरायके हजामत कराया सोक्याहै- रामजीकों राज्य प्राप्ति हुवा और सबकों आनंद भया- सोक्याहै ॥ ४७ ॥

श्लो० विसर्जनञ्चसर्वेषांकपीनाम्मुनिसत्तम ॥ किंरा
ज्यंरामचंद्रस्यकिंप्रजानांसुखन्तथा ॥४८॥

भा-टी- - हेमुनिजी रामजीने राज पायके कुछदिन पीछे सब कपि- योंकों तथा बिभीषणकों बिदाकिया सोक्याहै- रामजीने राजकि या सब प्रजासुख पाए सोक्याहै ॥ ४८ ॥

श्लो० रामेणकेकृतायज्ञाजानकीत्यागनंचकिम् ॥
कोरामपुत्रौसंजातौकोदुर्वासामुनिःप्रभो ॥ ४९ ॥

भा-टी- - रामजीने यज्ञकिया तथाजानकीकों त्याग दिया- रामजीकें दो लडके हुए- दुर्वासामुनि आए येसब क्याहै ॥ ४९ ॥

श्लो० वियोगोरामचंद्रस्यलक्ष्मणस्यचकोमुने ॥ को
भूम्याविवरोदत्तोजानकीयेन संगता ॥ ५० ॥

भा-टी- - लक्ष्मणको रामजीसें वियोग भयो सोक्याहै, जानकीकी सोगन सुनके भूमिने रस्ता दिया- जिसरस्तेसें जानकी जायके जोति में मिलगई सोक्याहै ॥ ५० ॥

श्लो० सर्वाःप्रजास्समादायरामःकुत्रगतःप्रभो ॥ ए
वंचान्यानिरामस्यरावणस्यचभोमुने ॥ ५१ ॥

भा-टी- - सब चराचर प्रजाकों संगलेके रामजी किस्थानकू गए हे मुनिजी सो कहो- रामरावणको चरित्र मैंने पूंछा सो ॥ ५१ ॥

श्लोक- अनापृष्टानिचमयावदस्वकृपयामुने ॥ पुराणे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रामचरितंश्रुतन्नतर्पितम्मनः॥५२॥

भा०टी०-जोमैंने नहीं पूंछा सोबी आप कृपाकरके कहो पुराणमे रामचरित्र मैंने सुनापरंतु मेरामन तृप्तनहीभया॥५२॥

श्लोक-वेदान्तमार्गेणवदस्वभोमुनेसर्वंचरित्रंरघुनन्दनस्यवै॥श्रुत्वामनोमेबहुतापतापितम्प्रयातिशान्तिञ्चयमाशुनिश्चितम्॥५३॥

भा०टी०-हेमुनिजी रामजीको सम्पूर्ण चरित्र वेदान्त मार्ग करके कहो जिसको सुनके मेरामन जलदीसें शांतिकों प्राप्त होवे कैसामनहै बहुत भ्रमरूप अग्निसे जलताहै॥५३॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेबालकांडे शिवसहायबुधविरचितेसम्वर्तवरतन्तुसम्वादेसर्वप्रश्नोनामचतुर्थोमोक्षोपानः॥४॥

वरतन्तुरुवाच॥ ॥साधुसाधुमहाबाहोधन्यौतेपितरौमुने॥वर्द्धयन्तितवप्रश्नाःममम्मोदन्तपोधन ॥१॥

भा०टी०-वरतंतु मुनिबोले हेसंवर्त मुनि, तुमने बहुत अच्छे अच्छे प्रश्नकिया तुमारे प्रश्नसे हमारे मनकी आनंदकी वृद्धी होतीहै तुमारे माता पिताकों धन्यहै॥१॥

श्लोक-नरामोमानुषोविप्रदशास्योनचराक्षसः॥भूर्भुवःस्वरितिब्रह्मन्नत्रिलोकत्रिगद्यते॥२॥

भा०टी०-हेमुनि रामजी मनुष्यनही और रावण राक्षसनही और आकाश पाताल मृत्यलोक इनकी तीनलोक संज्ञा नहीहै॥२॥

श्लो० अष्टादशपुराणानांषड्शास्त्राणामिदम्मतम्॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वेदान्तानांविशेषेणसर्वलोकमिदन्तनु ॥३॥

भा॰टी॰ अठारा पुराण षड्शास्त्र और विशेषकरके वेदान्तको म त यह है कि तीन लोक चौदा भुवन ये देह ही है ॥३॥

श्लो॰ वर्णयामिद्विजश्रेष्ठतवप्रश्नविभूषिताम्॥ गा थामेतां सुदुर्गम्यामपक्वमानसैर्नरैः॥४॥

भा॰टी॰ - हे द्विजोमे बडे मुनि तुमारे प्रश्नकरिके शोभित है यह कथा जिसकूं मै कहताहुं कैसी है कथा जिन्नरोंकी हृदय ज्ञानसें परि पक्व नही है उनमनुष्यों करिके बहुत दुःखसे प्राप्ती होवे जोग्य है ४

श्लो॰ यतोभगवतश्चैतत्जगदुत्पद्यते मुने ॥ पाल्य- तेयत्प्रपद्यंतेपुनश्चान्तेत्वनेकधा ॥५॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी जिस भगवान्ते यह संसार अनेक प्रकारका उत्पत्ति होताहै तथा पालन होताहै और अंतमे उसी भगवानमे लीन होजाताहै ॥५॥

श्लो॰ सच्चिदानन्दरूपस्यनिर्गुणस्यजगत्पतेः॥ जड संजीवनानन्दकारकस्यमहाप्रभोः॥६॥

भा॰टी॰ - देह जीवके आनंद करनेवाले भगवानके रजोगुण तमो गुण सत्वगुण करिके रहितके संसारके पतीके जडसंसारके बहु तप्रकारसेजीवनरूप आनंद करनेवालेके महाप्रभूके ॥६॥

श्लो॰ ध्यानगम्यस्यसततंनिराधारस्यनिस्तनोः॥ निर्विकल्पस्यनित्यस्य यत्तेजोऽखिलदुर्गमम्॥७॥

भा॰टी॰ - ध्यानसे प्राप्ति होवे योग्यके आधारसें रहितके सरीरसे हीनके तर्क वितर्कसे वर्जितके जन्मनाशसें रहितके ऐसे भगवा नका यो तेज कैसा तेज है संसारी जीवोंकरिके बडे दुःखसें प्राप्ति होनेजोग है ॥७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक॰ तस्याएवर्बुदभागेनविस्तृतम्भुवनत्रयम्॥ब्रह्म
विष्णुमहेशादियुतंसर्वचराचरम्॥८॥

भा॰टी॰ - तिसतेजके अणुके अर्बुदभागसे इस तीन भुवनका विस्ता
रहोरहाहै अणु किसकूं कहतेहैं किजो मकानकेऊपर छपरके छेदमेसें
सूर्यका किरण पडतेहै उसकिरणके भीतर धूलकी कणिका फिरतीदी
षतीहै उस कणिकामेसे एक कणकी अणुसंज्ञाहै उस अणुको अर्बुद
भागकरना १००००००००० इस्मेसे निन्नानवेक्रोड निन्नानवेलाख नि
न्नानवे हजार नवसे निन्नानवे निकारिके बाकीजो रहाभाग १ तिसभा
गका तीनलोक चवदाभुवन चराचरको विस्तार भयाहै कैसे लोकहै ब्र
ह्म विष्णु महेश इन्होकों आदि लेके अनेक प्रकारके जीवोंकरके संयु
क्तहै॥८॥

श्लोक॰ उत्पत्त्यवन संहारेतस्येच्छानमुनीश्वर॥अ-
णोरर्बुदभागस्तुद्विधाभून्मुनिसत्तम॥९॥

भा॰टी॰ हेमुनिजी संसारकी उत्पत्ति रक्षा नाश करना ऐसी भगवान्
की इच्छा नहीहै परंतु वो जो अणुको अर्बुदभागहै सो अपनी इच्छासे
दो भाग होगया हेमुनिजी॥९॥

श्लोक॰ प्रमदापुरुषौविप्रताभ्याविस्तारितंत्विदम्॥
मुनींद्रप्रमदायासीत्साशक्तिर्बहुरूपिणी॥१०॥

भा॰टी॰ - हेविप्र एक भागकरके स्त्री हुई दूसरे भागकरके पुरुष भया
इनदोनोंके संजोग से यह तीनलोक चौदाभुवनको विस्तार भयाहैजो
स्त्रीभई सोशक्तिको रूपहै॥१०॥

श्लो॰ पुरुषोभगवान्प्रोक्तोविष्णुर्नारायणोहरिः॥अ
नेकरूपोगदितोमुनिभिर्योगतत्परैः॥११॥

भा॰टी॰ - जोपुरुष भयासो भगवान् विष्णु नारायण हरी इसप्रकारके

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

बहुतनाम विख्यात भए. योगको जाननेवाले मुनियोंने अनेक रूप भगवानको कहे हैं ॥११॥

श्लो० निराकारस्यदेवस्यनिर्गुणस्यजगत्प्रभोः। तेज
सः पश्यसामर्थ्यमणोरर्बुदभागिनः ॥१२॥

भा० टी० - आकार सेंरहित गुणसेंहीन, ऐसे भगवानके तेजके अर्बुदभागकी सामर्थ्य देखो ॥१२॥

श्लो० येनेदंविस्तृतंसर्वंदृश्यतेसचराचरम्॥ ज्ञानिनो
ध्यानयुक्ताश्चजगच्चैतच्चराचरम् ॥१३॥

भा० टी० - जिसअर्बुदभागके तेजकरके यह चराचर संसार विस्तार भयाहै ज्ञानीऔर ध्यानकरनेवाले जोजीवहैसो ध्यान कर्के युक्त यह चराचर जगतको ॥१३॥

श्लोक० ध्यानयोगेनस्वस्यैवपश्यंतिहृदयेऽनिशम्॥ ज्ञा
नध्यानविहीनाश्चहृद्बाह्यमनिशंध्रुवम् ॥१४॥

भा० टी० ध्यानयोग करके अपने हृदयमें वारंवार देखतेहैं औरजो जीव ज्ञान ध्यानसे रहितहै सो जीव निश्चय करिके वारंवार हृदयके बाहिर ॥१४॥

श्लोक० पश्यन्तिचर्मचक्षुर्भ्यांमोहसंतापतापिताः॥
बाह्यसृष्टेःप्रभावञ्चेद्वर्णयामिसविस्तरम्॥ भविष्य
तितदाग्रंथोमहान्सज्जनसौख्यदः ॥१५॥

भा० टी० - चर्मकी आंख करके देखतेहैं कैसेजीवहैं मोहरूप अग्निकी ज्वालासेंजलेजातेहैं बाहिर सृष्टीके प्रभावको विस्तार जोमैं वर्णन करूं तेसज्जन जीवोंकोसुख देनेवाला ग्रंथ बहुत बडाहोजावे १५

श्लो० ग्रंथमहतिजातेवैनदोषोऽणुर्विदृश्यते॥ तथापि
ममसामर्थ्यंवृद्धस्यनास्तिवर्णने ॥१६॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - ग्रंथ बडा होनेमे कुछ दोष अणुमात्र भी नहीं है बडा आनंद है परंतु मैं वृद्ध होगया बिस्तार वर्णन करणे की मेरी सामर्थ्य नहीं

श्लो॰ शृण्विदानीमतोविप्रचरित्रंशूरवीरयोः॥ राम रावणयोः सम्यङ्मुमुक्षूणांसदाप्रियम्॥१७॥

भा॰टी॰ - हे विप्र इस कारणसे अब रामरावण दोनो सूरवीरके चरित्र को सुनोके साच रित्र है मोक्ष जाने वाले जीवोंको सदा प्यारा लगे है

श्लो॰ पुरुषेच्छाप्रसूतस्तुशरीरःसर्वदेहिनाम्॥ शक्त्या नुमानितंसत्यमसत्यमचलञ्चलम्॥१८॥

भा॰टी॰ - सब जीवोंके वास करनेवास्ते वह जो पहिले अणुमात्र तेज अपनी इच्छासें स्त्रीपुरुष भया उसकी इच्छासें यह देहरूप हवेली बनीहै कैसी शरीरहै रूठी स्थिर नहीहै परंतु स्त्री जो पेस्तर भई सोई मायाहै तिसकरिके साथ हुवा जो पुरुष तिसका अंश जो जीव सो सत्य मानताहै अचल की यह मेरी देह रूपी हवेली कभीनष्ट नहीहोगा॥१८॥

श्लोक॰ पुरुषप्रकृतिसंयोगात्तर्कोभूच्चभवांकुरः॥ स पुलस्त्य इतिख्यातोवितर्कश्चतदुद्भवः॥१९॥

भा॰टी॰ - पहले अपनी इच्छासे हुवे जो पुरुष, प्रकृति उन दोनोके संजोग जो बीर्यहै तिस बीर्यमें संसारकों उत्पन्न करनेवास्ते तर्कनाम अंकुर भया तर्क उसकूं कहतेहै कि एक मिनिटमें इतना बिचार करे कि जिसकी गिनती शेष शारदा भी नहीकर शके संसारके पहिले भया उसवास्ते तर्क कुं पुलस्त्य नाम भया॰ और पुलस्त्के वितर्कनाम पुत्र भया वितर्क किसकूं कहतेहै यह काम होवेगा कि नहीहोवेगा १९

श्लो॰ समरीचिर्मुनिःप्रोक्तश्चोद्वेगस्तस्यसंभवः॥ स विश्ववाससमाख्यातोदुर्मतिस्तस्यगेहिनी॥२०॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - वितर्क मरीच मुनिहै तिस मरीच मुनिके उद्वेग नाम पुत्र भया॰ उद्वेग को क्या अर्थ है एकक्षणमें जीव अनेक चीजमे जाय लगे स्थिर न रहे उस्कों उद्वेग कहते है॰ उद्वेगनाम विश्रवा मुनि है॰ दुर्मति कहे खोटे कर्मकी जो इच्छा करना सो बिश्रवा मुनिकी स्त्री है २०

श्लो॰ साकैकसीद्वितीयानुदीनावैपतिरंजिनी॥ दीनायास्तनयोजातः कुबेरोधैर्यसंज्ञितः॥२१॥

भा॰टी॰ - दुर्मतिको कैकसीनाम है दूसरी स्त्री विश्रवाकी दीनमति है दीनकहे गरीब मति है॰ यह पतिकों सुख देनेवाली है॰ दीनमति जो विश्रवाकी स्त्री है तिसके धीरजनाम पुत्र जन्म्यो सो कुबेर है॥२१॥

श्लोक॰ विमानन्तस्यपुष्पाख्यमविकम्पनमेवच॥ बभूवुर्दुर्मतेः पुत्रास्त्रयश्चान्येसहस्रशः॥२२॥

भा॰टी॰ अनेकदुःखपडे परंतु अपने धर्मकों नहीछोडे ऐसी निश्चय सोपुष्पकविमान है॰ और दुर्मतिजो विश्रवाकी स्त्री तिसके तीनपुत्र भये॰ औरतो दुष्टराक्षस अनेक है

श्लो॰ मनोतिप्रबलोजज्ञेसरावणइतिस्मृतः॥ परोपतापनंजारचौर्य्यमानरवोसमम्॥२३॥

भा॰टी॰ - प्रथमतो मनजन्म्या॰ सो बडा बलवान प्रतापी रावण भया॰ दूसरेजीवोंकू त्रास देना १ भगवानकी प्रीत छोडके आन काजमे प्रीत करना २ ईश्वरके भजनमें भंग करना ३ मानकूं बटाना॰ ४ जीवमे भेद देखना॰ ५॥२३॥

श्लो॰ पानम्वैरमविश्वासंचपलंसम्भ्रमंसदा॥ एतानिदशमूर्द्धानिमनसोरावणस्यवै॥२४॥

भा॰टी॰ - खोटे काजमे सुखदेखना सोई मदिरापान ६ सबजीवोंसें

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वैरकरना ७ किसीजीवको विश्वास नहीं राखना ८ संदर काजदे खके भागना ९ सबजीवकों अनादर करना १० येदस मस्तक मनरूपी रावणके हैं ॥ २४॥

श्लो॰ दुःखत्यागस्सुखस्येच्छावियोगमातुरंतथा॥
सदाक्लेशंसदातुष्टिःप्रमादोऽभयमेवच॥२५॥

भा॰टी॰ - दुःखकोत्याग १ सुखहोनेकी इच्छा २ जीवोसें वियोगमानना ३ विनाविचार काजकरना ४ दुःखमेक्लेश सुखमेभीक्लेशपाना ५ असंतोष ६ प्रमाद ७ ईश्वरकोंडरनानही ८

श्लो॰ निंदापैशून्यमातंडंवितंडंमानमेवच॥ग्लानि
हानिमहामोहप्रमादंकौतुकंरतिः॥उन्मत्तावाह
वश्चैमेविंशाःप्रोक्तामुनीश्वरैः॥ २६॥

भा॰टी॰ - निंदाकरनाद चुगली करना १० बेदसेंरहित कर्म करना ११ आपकीइच्छासे रहना दूसरेका उपदेस माननानही १२ सदाग्लानि १३ सदाहानि १४ सदाबुरेकाममें प्रीति १५ प्रमत्तरहना १६ तमासामें प्रेम १७ स्त्रियोसें प्रेम १८ किसीसे मत्रनही रहना १९ सबजीवोंमे आपकूं बडामानना २० हेमुनिजी यह मनरूपीरावणका वीस भुजाहै ॥२६॥

श्लो॰ दुःसंगस्तुद्वितीयोभूत्सकुंभश्चोत्रउच्यते॥
त्रास स्तृतीयः संजातः प्रोक्तश्च सविभीषणः २७

भा॰टी॰ - खोटेकर्मकी संगतकरना सोई कैकसीको दूसरापुत्र उसकानाम कुंभकर्ण बुरेकर्मकूं देखके बहुत डरना सो तीसरा पुत्र उसकानाम बिभीषणहै॥ २७॥

श्लो॰ बभूवदुर्मतेः कन्यादुःसंगेच्छातिक्रूरिणी॥सा
वैसूर्पणखाप्रोक्तादुष्टकार्याःखरादयः॥२८॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - दुर्मति नाम कैकसी जिसके लडकी भई सो खोटी संग न कर्मोंकी इच्छा उसका नाम शूर्पनखा है- तीन लोकमें जितने बुरे काम है चोरी, जारी, जुवारी, चुगली और जहर देना ये सब खरादिक राक्षस है ॥२८॥

श्लो० मनसस्तनयोजातोदुश्चेष्टितइतीरितः॥ समेघनादोविख्यातोमेघवद्गर्जतेसदा॥२९॥

भा-टी- - बुरेकाजमें प्रेम करना सोई मनरूपी रावणको पुत्र मेघनाद नाम है- जैसे आकासमे मेघ गर्जते है तैसा यह गर्जता है-२९

श्लोक- दुष्टकर्मरुचिःख्यातारावणस्यप्रियाशुभा॥ सैवमंदोदरीचैवचैनादृश्यस्त्वनेकशः॥ दुष्टकार्ये सदाप्रीत्यासंस्थितिर्वैपणाकृता॥३०॥

भा-टी- - बुरेकाममें प्रीति सोई मनरूप रावणकी स्त्री है, उसका नाम मंदोदरी है- और जो बुरेकाम अनेकप्रकारके उत्तम मध्यम निकिष्ट इनकर्मोंकी अनेकप्रकार की प्रीति सोई रावणकी मंदोदरी सरीके बहुत स्त्री है दुष्टकार्यमें प्रीति करके हठते

श्लोक- सालंकातत्सुखंहेमनहर्षोवारिधिस्मृतः॥ हर्षतृष्णाचपरिखादुरानन्दोविधिस्मृतः॥३१॥

भा-टी- सोई लंकापुरी है जिसलंकामें बसकर सुख मानना के तीन लोकमे कोई सुख है नहीं सोई सोना है- उसी सोनेसे लंका जडी है तिसोनके सुखमें हर्ष मानना सोई समुद्र है- खोटेकाजमे बास कर्ना सो लंकाको सुख- सोनेके हर्षकी तृष्णा करना सोई लंकाकी चारों तरफ खाई है और बुरेकाजोंमें आनंद मानना सोई ब्रह्मा है ॥३१॥

श्लो० तत्सेवनंतपःप्रोक्तंवरंक्रूरनिसेवनम्॥ मदमानरूपंचयत्पीतंराक्षसैःसदा॥३२॥

भा-टी- - उसी बुरेकर्मके आनंदको सेवन करना सोई रावणकी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तपस्याहै खोटेकर्ममें नित्यप्रेमराखना और कभी हम मरेगेनही· ऐसा मानना सोई बरदान रावणने ब्रह्मासें लिया· अज्ञानहै सोई मदिराको रसहै जिसकूं राक्षस लोक सदापीतेहै ॥३२॥

श्लो० विशेषतश्चमनसाप्रपीतंरावणेनच॥ शरीरं सर्वजीवानामिदंचैवचराचरम्॥३३॥

भा·टी· - विशेष करिके उसमदकों मनरूपरावण पीताहै सब-जीवोंकी यहशरीर जोहै चलदेह तथा अचलदेह ॥३३॥

श्लो० त्रिलोकमितिविख्यातंपीडितंतेनराक्षसा॥ अनाचारेरथेस्थित्वातद्दर्षवाजिसंयुते॥३४॥

भा·टी· - सोई तीनलोकहै तिसकों मनरूपरावण बहुत पीडादे ताभया· आचारोंसें हीनकर्म सोई रथहै तिस रथमें बैठके उसी· रथकूं देखके बहुत खुशी होना सोई अनेक घोडेहै॥३४॥

श्लो० दुराशासनदुश्चित्तदुरंजन दुरापनम्॥एतै श्चक्रैर्वृतेवीरोगर्दभैश्चकुकर्मभिः॥३५॥

भा·टी· - सबजीवोंकों दुष्टकर्म शिखाना १ रातदिन दुष्टकर्ममें चित्त लगाय राखना २ कोई कोई बुरे कर्मकों देखने वास्ते जानके अंधे होजातेहै उनजीवोंकों दुष्टकाजके सुख सुनायके उसी· सुखको अंजन उनकी आंखोंमें लगाना ३ हमेश बुरेकाज प्राप्ति होनेकी उपाय करना ४ येच्यार पहियाहै इनच्यारों पहियां करके रथयुक्तहै· बुराकर्मकरना सोई खच्चरहै तिन्हों करके युक्तहै॥३५

श्लो० कुकर्मणीच्छाशक्तिश्चमुखानिदशचेन्द्रियाः आमिषंदुष्टकार्याढ्यं रक्तंचरागवर्द्धनम्॥३६॥

भा·टी· अनेक बुरे कर्मकी इच्छा सोई रावणकी सींगहै· दशइं-द्रियसोई रावणके दशमुखहै बुरेकर्मको खजाना भराहै सोई मां

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सहै उस खजानेमें स्नेह बढाना सोई रक्तहै ॥ ३६॥

श्लो॰ मोक्षस्पृहोरावणस्य मनसोमुनिसत्तम ॥
सवैशिवइतिख्यातःसेवनंतद्विचिन्तनम् ॥ ३७॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी, मनरूप रावणकों मोक्ष होनेकी इच्छा रहती है परंतु उपाय नही करता सोई शिवहै॰ मोक्षकी चिंता करनाकि मोक्ष अच्छी वस्तुहै सोई शिवको पूजनहै ॥ ३७॥

श्लो॰ दुर्बुद्धिःसारथिर्ज्ञेयः कुविचारोवितोत्रिकम् ॥
हर्षवृद्धिर्वाजिवेगोमदमभ्रंरजस्स्मृतम् ॥ ३८॥

भा॰टी॰ - रावणकी दुष्टबुद्धि सोई रावणके रथको सारथीहै॰ खोटा बिचार करना सोई घोडोंको हांकनेवाला चाबुकहै॰ दुष्टकर्मों हर्षकी वृद्धि करना सोई घोडोंको दौडानाहै॰ और मदपीके मस्तरहना सोई धूलिहै ॥ ३८॥

श्लो॰ दुराचारमहामोहोरथस्यकूबरंमुने ॥ तन्मोहप्रीतिजननंरश्मिबद्धंसुदुश्छिदम् ॥ भ्रमणंदुष्टकार्येषुरथस्यागमनंमुने ॥ ३९॥

भा॰टी॰ - बुरेकर्मके आचारमें बडी मोह करना सोई रथमें बैठनेकी जगाहै॰ उसी बडी मोहमें प्रीति उत्पन्न करना, अनेक दुःखपरे तो भी उसकूं छोडनानहीं सोई रस्सीहै॰ तिन रस्सियोंसें रथबंधीहै उस रथकी ग्रंथिको काटना चाहै तो बडे कष्टसें कटेगा हेमुनिजी, आठपहरचौसठघडी बुरेकर्ममें फिरना सोई रथकी दौडहै ॥ ३९

श्लो॰ मनःप्रमाथीप्रबलोदशाननोविमर्दयामाससुकर्मतत्परम् ॥ चराचरंविश्वमिदंसहोदरैःसुतैःप्रपौत्रैःसहराक्षसैर्युतः ॥ ४०॥

भाषाटीका - पुत्रपौत्रभाई राक्षसों करिके संयुक्त ऐसाजोराव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ण सो स्नानसंध्या देवपूजन कथाश्रवण और इसी प्रकारके अनेक काजोंमें प्रवीण जीवोंको नाश करताभया॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे बालकांडे पं० शिवसहायविरचिते मनोरावणविभूत्युत्कर्षे पंचमो मोक्षोपानः॥५

श्लोक वरतन्तुरुवाच कामःक्रोधश्चलोभश्चमात्सर्यवंचनौमुने॥ तिरस्कारोसतांचैवनैष्ठुर्यंस्करवकर्मणि॥१॥

भा०टी० - वरतंतुमुनि फिरबोले हेसंवर्तमुनिजी काम,क्रोध,लोभ,दूसरेको स्करव देखके दुःखीहोना कपट सज्जनजीवोंका अनादर स्कंदर कामोंमें चुस्ताई॥१॥

श्लो० एतैः पुत्रैर्युतोराजापीडयामाससन्ततम्॥ भुवनत्रयसंयुक्तं वेदमार्गमुहुर्मुहुः॥२॥

भा०टी० - येसब आदिलेके और अनेक प्रकारके दुष्टकर्म सो रावणके पुत्रहै इनपुत्रोंकरिके युक्त रावण नित्य प्रति तीनलोककूं पीडा देता भया और वेदमार्गकों तो बिशेष करके पीडादेताभया॥२॥

श्लो० कामादीनांस्करवप्राप्तिःसातेषांप्रमदामुने॥ पुत्रपौत्राःप्रपौत्राश्चकामादीनान्त्वनेकशः॥३॥

भा०टी० - हे मुनिजी काम आदि कर्मोंके स्करवमें प्रीति सोई रावणके पुत्रोंकी स्त्रीहै और काम आदि रावणके पुत्रोंके पुत्र पौत्र प्रपौत्र गिनती करवेजोग नहीहै॥३॥

श्लो० तेषांवैवर्णनेशक्तिःशेषस्यापिस्कदुस्तरा॥ कथंमयातेवर्ण्यन्ते मनोरावणजाःप्रजाः॥४॥

भा०टी० - मनरूप रावणकेपुत्र पौत्रप्रपौत्रोंके पुत्र पुत्रोंकी तथा राक्षसों

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

की गिणती करनेमे शेषजीकीभी सामर्थ्य नहीहै॰ और मन रावण सें उत्पन्न हुए परिवारोंकी गिनती मैंकेसा वर्णन करशकों ॥४॥

श्लो॰ मोहजांवारुणीम्पीत्वाराक्षसाः क्रोधजागणाः
दुश्चेष्टितास्त्रैर्विमदाच्छिंद्युः सद्धर्मजान्सुरान् ॥५॥

भा॰टी॰ - क्रोध आदि बडे बडे योद्धोंकरिके उत्पन्न हुयेजो राक्षस सो मोहसें उत्पन्न हुईजो दुष्टचेष्टारूप मदिरा सोपीके मस्त होके बुरे कर्मकी समूह सोई अस्त्र शस्त्रहै तिस अस्त्र-शस्त्र करिके वेदमे लिखाजोधर्म उसधर्म करिकेउत्पन्न जो यज्ञ दान तप स्नान इन आदि जो गिनतीरहित जो देवताहै तिनकों काटते भये मारते भये ॥५॥

श्लोक॰ ज्ञानविज्ञानवैराग्यसन्यासामोक्षदायिनः॥
तएववेदाः कथितास्तेषांवार्ताश्चसंहिताः॥६॥

भा॰टी॰- ज्ञान विज्ञान वैराग्य सन्यास येचार वेदहै मोक्षके देनेवाले हैं॰ इनचारोंकी कथा सोई संहिताहै॥६॥

श्लो॰ विनाशिताश्चतेसर्वे मनोरावणप्रेरितैः॥राक्षसैर्निर्दयैः क्रूरैः कामक्रोधादिसंभवैः॥७॥

भा॰टी॰ - इनवेदोंकी संहितोंकों राक्षसोंने नाश करते भये॰ कैसे॰ राक्षसहै मनरावणकी आज्ञाकों पायेहै॰ सुकर्म कोनाश करनेवाले दयासें हीन राक्षस बडे दुष्टहै काम क्रोध आदि लेके जो खोटा कर्म तिसकरिके राक्षस जन्मेहै॰ ॥७॥

श्लो॰ ब्रह्मणःपरमेशस्यसच्चिदानन्दरूपिणः॥चिंतकाभक्षिताःसर्वेसद्धर्मामोक्षदानृणाम् ॥८॥

भा॰टी॰ - परब्रह्मके ब्रह्मा विष्णु महेशके ईशके जीव देह आत्माके रूपके ऐसे भगवानके चिंताकरनेवाले जो सुंदर धर्म जैसे आचार

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विचार श्रवण कीर्तन विश्वास इनकुं आदि लेके और वेदमें लिखे हुए धर्म जीवोंकूं मोक्षदेनेवाले है- से इनधर्मोंकों राक्षसोनें खाए-८

श्लो० तएवब्राह्मणाः सर्वेगावश्चसत्क्रियाःस्मृताः॥
ताश्चैवंभक्षितास्सर्वाराक्षसैरतिहिंसनैः॥नित्या
भ्यासोवेदयज्ञस्तेनातीवविनाशितः॥९॥

भा-टी- - येसब सुंदर धर्म ब्राह्मणहै- इनधर्मोंकी क्रियासोई गौ है इनब्राह्मण गौवोंकोभी जीवमारनेमे बडे चतुर जो राक्षस सोखाय लेते भये भगवानको ध्यान नित्यकरना सोई वेदकीयज्ञहै- उस यज्ञकोंभी राक्षसोंनें नाशकरते भए ॥९॥

श्लो० पुराणपुरुषध्यानकीर्तन श्रवणादयः॥स्म
रणंस्मारणंचैववन्दनंप्रीतिरंजनम्॥१०॥

भा-टी- - भगवानको ध्यान कीर्तन- कथाश्रवण-कनी- आपस्मरण-कर्ना दुसरेकूं स्मरण कराना- वंदना करना- भगवानकीपूजनमेंप्रीतिबढाना ॥१०॥

श्लो० कथनंकाथनञ्चैवपूजनंशिरसानतिः॥वि-
नयंस्वामिभावश्चनमस्कारप्रदक्षिणे॥११॥

भा-टी- - ईश्वरको चरित्र आप कहणा- दूसरेसे कहाना- पूजन करना- शिरनवायके नमस्कार कर्ना- विनय करना- मैं ईश्वरका दास हूं ईश्वरमेरे स्वामीहै ऐसाहृदयमे राखना वारंवार नमस्कार और प्रदक्षिणा करना ॥११॥

श्लो० साष्टांगंगद्गदावाणीरोमहर्षश्चसंततम्॥पु
राणानाशिताश्चैतेब्रह्मसन्निधिकारकाः॥१२॥

भा-टी- - साष्टांग दंडवत कर्ना गद्गदवाणी बोलना- प्रीतसें रोमखडेहोजाना- ये अठारापुराणहै- जीवोंकों ब्रह्मके साम्ने लेजाने वाले

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

है· इनकोंभी राक्षसोंनें नासकिया· ॥१२॥

श्लो॰ शरीरचेष्टासाभूमिर्महतीभारपीडिता॥ क
रुणागौःसमारव्यातासाभूत्वाशरणम्विभोः॥ जगा
मैतैर्युतापृथ्वीकम्पिताचमुहुर्मुहुः॥१३॥

भा·टी· - सबजीवोंकी देहकी प्रकृती सोई भूमिहै· बहुत बडीहै· सो भूमि राक्षसोंके खोटा काजरूप भारकरिके दुःखी होगई· सोई भूमि· दयारूपजो गौहै तिसका रूप धारण करिके इनदेवतोंकों साथ लेके भगवानके शरणकूंगई॥१३॥

श्लो॰ शरीरशुद्ध्यः सर्वाःस्नानादिमज्जनादयः॥ गं·
गादिनद्यस्ताःप्रोक्तास्ताभिःसार्द्धंचदुःखिता॥१४॥

भा·टी· - देहकीजो सब शुद्धताहै जैसे स्नान, मंजन, आचारयुक्त क
र्म, इन आदि औरजो शुद्धताहै सोई गंगाआदि नदीहै· तिस्कों सं
गलेके ॥१४॥

श्लोक· दुरानन्दोविधिश्चैवकुधर्मःसुरनायकः॥ तेन
सार्द्धंसुरैश्चैवधर्मजैः सहसंगता॥१५॥

भा·टी· जैसे ब्रह्मा आपनी लडकीकेसंग भोग करनेकी इच्छाकिया· इस आदिजो खोटे कर्ममें आनंद मानना· सोई ब्रह्माहै· और जैसाइं
द्र आपने सुख होनेवास्ते अधर्म नहीं देखता ऐसा अधर्म सोइं·
न्द्रहै· शास्त्रमें इन्द्रकों उत्तम संज्ञाहै· कर्मउस्को खराबहै इसवास्ते·
अधर्मरूप इंद्र और सुंदरधर्मसें जन्मेजो देवता प्रथम बर्णनहै· इन
सबकों संगलेके भगवानकी शरणकूंपृथ्वीगई॥१५॥

श्लो॰ जगामप्रार्थितुंविष्णुंपुरुषांशसमुद्भवम्॥ चे
तनंसहसासुप्तंचेतिन्यानिजमायया॥१६॥

भा·टी· - भगवान्के अणुसें उत्पत्तिजो विष्णु तिनकी प्रार्थनाकरने·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वास्ते पृथ्वीगई॰ कैसे भगवानहै संसारके चेतन रूपहै॰ संसारकों चे॰
तन करानेवाली जो आपकी माया तिसकरिके सेवित सोतेहैं॰ १६

श्लो॰ धमन्युद्वर्तिनीदेहे प्राणिनामस्तियाशुभा॥
तदास्येक्षीरसदृशसिंधुवद्विस्तृतंह्रदः॥१७॥

भा॰ टी॰ - सबजीवोंकी देहमें एक नाडीहै॰ उस नाडीका उद्वर्तिनीना
महै॰ नाडी जीवकी रक्षाकरनेवालीहै॰ उस नाडीके मुखमें समुद्रस
रीके लंबा चौडा एककुंडहै उसकुंडको आकार दूध सरीकेहै १७

श्लो॰ शक्त्याविस्तारितास्तस्मिञ्छीलादिसद्गुणास्स
दा॥ह्रददीप्याविभासन्ते गुणाक्षीरइवप्रभो॥ग॰
त्वातत्रचतेसर्वेस्तुतिञ्चक्रुश्च व्याकुलाः॥१८॥

भा॰टी॰ -प्रभूकीसक्तीकरके विस्तार भएजो शील आदि लेकेसं
दरगुण सोसबगुण उसकुंडके जोतिकरिके दूध सरीके शोभा
कुंडमे देरहेहै॰ उसदूध के समुद्रमे सोएजो भगवान तिसके पास
जायके सब भूमि आदि व्याकुलहोरहे और भगवानकी स्तुति
करते भए॰ ॥१८॥

श्लो॰ ब्रह्माउवाच तुभ्यंनमोभगवते करुणाक॰
रायसद्धर्मभूमिद्विजधेनुमखावनाय॥स्वच्छा
यस्वच्छनिलयायनिराश्रयाय भक्तप्रियाय भवदुः
खविभंजनाय॥१९॥

भा॰ टी॰ - ब्रह्मास्तुतिकरतेभए॰ हेभगवन् ऐश्वर्यरूप आपकों
मैंनमस्कार करताहूं॰ जीवोंकेऊपर दया करनेवाले आप तिनकूं
मैनमस्कार करताहूं सुंदर धर्म भूमि ब्राह्मण गौ यज्ञ इनसबकी
रक्षाकरनेवाले तिनकूमैनम॰ शुद्धरूप आपकौ मैनम॰ शुद्धहै
स्थान आपको ऐसे रूपकूं मैनमस्कारक॰ आश्रयसेंहीन जोआ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प तिनकों मैंनम० भक्त आपके प्रिय है ऐसे स्वरूपकूं मैंनमस्कार० संसारके दुःखकूं नाश करनेवाले आपकूं मैंनमस्कार करताहूं १९

श्लो० संसारतापशमनायमनोहराय योगींद्रशेषमुनिमानसहंसकाय॥ धर्मप्रियायधरणीव्रतधारणायदेवाधिदेवपतयेचनमस्करोमि ॥२०॥

भा०टी०- संसारके तापकों नाश करनेवाले, मनकों प्रसन्न करनेवाले, बडेयोगीजन शेष मुनि इनसबको मनसोई मानस सरोवर है, तिसमें हंसरूप आप वास करतेहो और धर्मके प्यारे, क्षमारूप, देवरूप, और देवतोंके पतिरूप ऐसेजो आप परमात्माउनकूं मैंनमस्कार करताहूं ॥२०॥

श्लो० दीनप्रियायशरणागतपालनायप्रोत्फुल्लपंकजमुखायनिरंजनाय॥ श्रीमन्महापुरुषतेजसचेष्टितायमायानुवादरहितायनमोनमस्ते ॥२१॥

भा०टी०- दीन आपकूं प्रियहै, शरणागतके पालना करनेवाले कमलके पुष्पसरीके फुल्लायमान आपको मुख बडेशोभित ऐसेजो ब्रह्म तिसके तेजकरिके आप प्रकाशितहो, मायाके विवादसें रहित ऐसेजो आप तिनकूं मैंनमस्कार करताहूं ॥२१॥

श्लो० इतिस्तुतोजगन्नाथोदेवैर्दुःखविमूर्छितैः॥ उवाचविहसन्देवोविषादंसान्त्वयन्निव ॥२२॥

भा०टी०- दुःखकरिके मूर्छाकों प्राप्तिभये जो देवता तिनोकरिके स्तुति कियेजो जगतके नाथ सो तिनदेवतोंके दुःखकों सांत्वकर्नेवास्ते हसके बोलतेभये ॥२२॥

श्लो० ज्ञातंमया सुरगणाःसुनिपीडितम्वै सर्वंचराचरमिदंभुवनत्रयम्भोगासम्प्रेरितैश्चमनसारव-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लुराचएनतेनापिराक्षसगणैःसततम्मुहुर्वै॥२३

भा०टी०--चेतनपुरुष बोले हेदेवता लोगो यहतीनलोक चराचर को मनरूप रावण तथा रावणकी आज्ञा कुं पायेजो राक्षस येसब बहुत पीडाकरते भए येसब हमकूं मालूमहै ॥२३॥

श्लो० सर्वामरत्वयादत्तंनरवानरवर्जितम्॥अतो हंनररूपस्तुभविष्यामिनसंशयः॥२४॥

भा०टी०--हेब्रह्मा तुमने रावणको सबसे अमर कियाकि तू किसी केमारे नहीं मरेगा परंतु कपीजो किष्किंधा कांडमें वर्णन होवेंगें और मानुषजो उत्तरकांडमें बर्णन होवेंगे इनदोनोंसे तेरी मृत्यु होगा इसवास्ते हम मानुष अवतार धरेगें इसमें संशयनहीं २४

श्लो०चतुर्भिर्भ्रातृभिःसार्द्धंदेव्यासहसुरोत्तमाः पुत्रोदशरथस्यैवसाकेताधिप तेर्ध्रुवम्॥२५॥

भा०टी०-- हेदेवतालोगों हम च्यार भ्राता होकरके शक्ति सहित अयोध्याके राजा दशरथके पुत्र निश्चयकरकें होवेंगे ॥२५॥

श्लो०यूयंसर्वेभविष्यध्वंवानराःपृथिवीतले॥नाशयिष्यामशीघ्रम्वैमनोरावणराक्षसम्॥२६॥

भा०टी०- और तुमसब देवता पृथ्वीमें जायके वानररूप होकर जन्मो तुमकूंसंगलेके हम मनरूप रावणकोजलदी नाशकरेंगे २६

श्लो०इत्युक्त्वान्तर्दधेविष्णुर्ब्रह्मास्वास्यक्षितिंतथा॥देवानाज्ञाप्यप्रययौस्वालयंकपिजन्मनि॥२७॥

भा०टी०- ऐसा कहिके चेतनरूप भगवान् अंतर्ध्यान होगये और ब्रह्मा भूमिसें कहेकि अब दुरोमति थोरेही दिनमें रावणकोनास होगा और देवतोंकूं ब्रह्मा बोलेकि तुम सब पृथ्वीमें वानररूप धरो ऐसासमुझायके ब्रह्मा अपने स्थानकूंगये ॥२७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

इतिश्रीवेदान्तरामायणेबालकांडे पं० शिवसहाय विरचितेषष्ठेमोक्षोपानः ॥ ६॥

श्लोक- वरतन्तुरुवाच अयोध्यासुमतिः प्रोक्तासरयूः सासुवासना ॥ निश्चलत्वतटाप्रोक्ता निर्मानजलपूरिता ॥ १॥

भा० टी० - वरतन्तु मुनि बोले हे संवर्त मुनि सुनो जीवोंकी सुंदर मति जो है सो अयोध्या पुरी है और जीवोंकी सुंदर वासना सो सरयूनदी है. सुंदर वासना कभी अपने स्वभावेसें चलायमान नही होती सोई शरयूके दोनट है. और सुंदर वासनाके अभिमान नही है सोई जल है तिस जलकरिके सदा भरी रहती है ॥ १॥

श्लो० शक्तिस्वभावजः पुत्रो वसिष्ठ इति कथ्यते ॥ आत्मप्रकाशः सविता विचाराद्याश्चतत्सुताः ॥ २॥

भा० टी० - मायाको स्वभाव सो वसिष्ठ मुनि है. आत्माको तेज सो सूर्य है विचार आदि सुंदर स्वभाव सो सूर्य के पुत्र है ॥ २॥

श्लो० विचारतनयो ब्रह्मन्नात्मज्ञानं सुनिर्मलम् ॥ सवेदशरथः प्रोक्त स्तस्यच्छाया तु कौशला ॥ ३॥

भा० टी० - विचारको पुत्र आत्माको ज्ञान है कैसा आत्मज्ञान है मल सें रहित है सो दशरथ है तिस आत्मज्ञानकी छाया कौशल्या है ३

श्लो० श्रवणं मननं मौनमभ्यासस्तद्विचिन्तनम् ॥ चेष्टनं सत्यतानित्यमविचाल्याप्रकंपनौ ॥ एते दशरथाः प्रोक्ता आत्मज्ञानस्य भूपतेः ॥ ४॥

भा० टी० - कथाश्रवण १ कथा सुनके मानना की जो शास्त्रमे लिखा है सो सत्य है. २ खोटे कर्ममे बोलना नही ३ भगवानके रूप जानने

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रामा. २२

वास्ते निसउपाय करना ४ रूपकी चिंतना कर्नी ५ ईश्वरके ध्यान मे आलस्य नही करना ६ ईश्वरके रूपकों सत्य मानना ७ और सब देहके सुखदुःख मानना ८ किसी दुष्टकोसंग दैवयोगसें मिल जावे तो ईश्वरके ध्यानकों छोडके दूसरेकोध्याननहीकर्ना ९ ईश्वरके भजनमें दुख सुख होवेसो सहि लेना १० आत्मज्ञानजो दशरथ तिसकेये दशरथहै ॥ ४॥

श्लो० आत्मनस्स्वच्छप्रकृतिः सासुमित्रेतिकथ्यते ॥
किंचिच्छक्तौचयाप्रीतिः कैकयीसानिगद्यते ॥ भूरिशो
रुचयः सत्कताश्चान्यानृपवल्लभाः ॥ ५॥

भा०टी० - आत्माकी सुंदरि प्रकृति सोई सुमित्राहै मायामें थोरीप्रीति सो कैकईहै सज्जनोमें बहुत रुचि सो दशरथकी औरस्त्रियोंहैं ॥ ५॥

श्लो० आत्मज्ञानंचिरंकालंनलेभे पुत्रजंसुखं ॥ दुः
खमापतदावीरोविश्वार्थ्यमितिभार्य्यया ॥ ६॥

भा०टी० - आत्मज्ञान जो राजा दशरथ सो बहुतदिन बीतगये पुत्रको सुखनहीभया तो संसारके सुख होने वास्ते स्त्रीसहित दुःखकों प्राप्ति भए॥ ६॥

श्लोक स्वभावगुरुणापश्चाद्वसिष्ठेनैवबोधितः ॥ ऋ
ष्यशृंगंसमाहूयचेतनांशंविचिंतनम् ॥ ७॥

भा०टी० - कुछ दिन पीछे शक्तिके स्वभावरूपजो वसिष्ठ सो दशरथके गुरूहै सो बोलेकि हेराजा शृंगीऋषिकों बुलायके यज्ञ करावो तो तुमारे पुत्र होवैगे ऐसी गुरुकी आज्ञा पायके चेतनकोअंशजोविचेतन सोशृंगीऋषिहै तिनकों बुलायके ॥ ७॥

श्लो० ध्यानयज्ञंचकाराशुतत्तेजोहुतभुङ्मुने ॥ नृप

देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय)
श्री [illegible] पुस्तकालय पं० चक्रधर जोशी
देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय)
CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

स्यत्हृदयंकुंडमर्चिस्तद्रुचिरेवच ॥ ८ ॥

भा० टी० - जलदी ईश्वरको ध्यानरूप यज्ञ करते भए; हे मुनिजी ध्यानको तेजसो अग्नि भयाहै आत्मज्ञान दशरथकी हृदय सो कुंड भयाहै ध्यानरूप यज्ञमें राजाकी रुचि सो अग्निकी ज्वाला भईहै.

श्लो० प्रेमकाष्ठंत्वरोमंत्रोहोमद्रव्यंचनिश्चयम् ॥ तेजसापावकेनापिदत्तासद्भावनानृपे ॥ ९ ॥

भा० टी० - आत्मज्ञान राजाको ध्यान यज्ञको प्रेम सो काष्ठहै ध्यानयज्ञ करनेमें जलदी करना सो मंत्रहै दशरथकों ध्यानयज्ञमें निश्चय सो होमकी सामग्रीहै ध्यानको तेजरूप अग्नि सो दशरथकों साधुयोंमें सुंदर भक्तिरूप हविष्य देतेभये ॥ ९ ॥

श्लो० तस्याःसंप्राशनञ्चक्रुर्ग्रहणंराजवल्लभाः ॥ तासांबभूवगर्भोवैभावनाप्रीतिकारणम् ॥ १० ॥

भा० टी० - तिस भक्तिरूप हविष्यको राजाकी तीनो स्त्रियों राजासेंग्रहण करती भई सो हविष्यको खाती भई तिनोस्त्रियोंके साधुजनोंकी भक्तिमें प्रेमहै सोई गर्भ रहता भया ॥ १० ॥

श्लो० चैत्रन्नृपस्फरवंशुक्लसमुल्लासोनिरंतरम् ॥ रतिःप्रीतिर्गुरोःसेवासन्मतिर्विमतिःक्षमा ॥ ११ ॥

भा० टी० - राणियोंके गर्भ देखके दशरथकों स्फरव भया सो स्फरवचैत्रमासहै रोजगर्भ देखके राजा खुश भया सो शुक्लपक्षहै धर्ममें राजाकी मति बढिगई गुरुदेवकी सेवा बहुत करने लगे सब जीवोंसें राजको मद छोडदिया सब जीवोंकों एकसमजानना क्षमा कर्ना ॥ ११ ॥

श्लो० शुद्धतास्वच्छताकीर्तिर्नवमीभाःप्रकीर्तिताः ॥ मध्यान्हसमभावंचतस्मिन्जातोरमापतिः ॥ १२ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा०टी० - ईश्वरमें निःकपट, ईश्वरमें प्रेम ईश्वरके नामकी कीर्ति कर्ना येसवनवमी तिथिहै. संसारमें किसीकी निंदा स्तुति नहीं कर्ना परंतु बुरे कर्मकों छोडना सुंदर कर्मकों ग्रहण कर्ना ऐसे स्वभावको दुपहर कहतेहै तिस दुपहरमें भगवान् दशरथके गृहमें जन्मते भए ॥ १२ ॥

श्लो० कौसल्यायांजगत्स्वामीजगदानंददायकः ॥
विवेकश्चेतनांशश्चपापवारिधिकुम्भजः ॥ १३ ॥

भा०टी० - आत्मज्ञान दशरथकी छाया कौसल्यामे जगतके स्वामी जगतके आनंद देनेवाले पापरूप समुद्रकों शोषण कर्नेमे अगस्त्य रूप चेतनको अंस ऐसे विवेक नाम पुत्र होतेभये ॥ १३ ॥

श्लो० अर्थधर्मादिहस्ताद्यैःसत्यादिमुकुटादिभिः ॥ युतं रूपंदर्शयित्वापश्चाद्बालोबभूवह ॥ कैकय्यांचविवेकस्यचार्द्धभागः प्रजग्मिवान् ॥ अर्द्धांशेनचहौजातौसुमित्रातनयौमुने ॥ १४ ॥

भा०टी० अर्थधर्मआदिचार भुजाहै, सत्यआदिधर्ममुकुटहै इन्हसे युक्तरूप माता पिताको दिखायके बालक होते भये. विवेकके अर्द्धांश कैकयी. शक्ति मेथोरीप्रीतहै. तिस्मेजन्मताभया. और विवेकके अर्द्धांश कोअर्द्धांश करिके आत्मज्ञानकीसुंदरप्रकृतिजो सुमित्रा तिसके दो पुत्र भये. ॥ १४ ॥

श्लो० योरोम्निरोम्निरमतेरमणेनैवमोक्षदः ॥ सरामइतिविख्यातोविवेकोमोक्षदायकः ॥ १५ ॥

भा०टी० - सबजीवोंके रोम रोममेंजो रमितहै और रोम रोममें रमणकरिके सबजीवोंकों मोक्ष देनेवाला सोई रामहै. उसरामको विवेक कहतेहै वो विवेक जीवोंकों मोक्ष देनेवालाहै ॥ १५ ॥

श्लो० निर्मोहोभरतेजीवान्तस्माद्भरत सज्ञितः ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लक्ष्मणवैस्वरूपस्ययेनविज्ञायतेमुने ॥१६॥

भा॰टी॰ हेमुनिजी, औरजो जीवोंका पोषणतो करे परंतु किसीजी वमें मोहनकरे उसकूं निर्मोह कहतेहैं सोई भरतहै जिसकरिके ईश्वरके स्वरूपको लक्षण मालूम पडे ॥१६॥

श्लो॰ सलक्ष्मणइतिख्यातःसन्तोषोमोक्षनायकः॥ यःशत्रून्सततंहन्तिशत्रुघ्नस्तेनकथ्यते॥ स्वदेहस्था निन्द्रियजान्सहनःसमतागुणः॥१७॥

भा॰टी॰ - सो लक्ष्मणहै सोसंतोषहै सोईमोक्षका मित्रहै इंद्रियोंकरि के देहमें रहनेवाले जो इंद्रियोंके स्वरूप शत्रु उनको जो नाशकरेति स्कानाम शत्रुघ्नहै न किसीकूं स्नेही जाणना नकिसीकूं वैरी जान- ना ऐसाजो सहन स्वभाव तिसकूं शत्रुघ्न संज्ञाहै ॥१७॥

श्लो॰ हृद्युदासीनवृत्तिश्चविवेकक्रीडनम्मुने॥ स्व रूपस्यसदाचिन्तासाश्वेतागारसंज्ञिका॥ तत्प्री- तिरंजनंशक्रमजिरंकथ्यतेमुने॥१८॥

भा॰टी॰ - विवेक रामचंद्र आपनी हृदयमें नित्य ऐसा माननेहैकि संसारमें नकोई मित्रहै नकोई वैरी है ऐसास्वभाव सोई रामजीके चारों भाइयोंका खेलना भयाहै ब्रह्ममें मिलनेकीचिंता रामजीकों सदा रहतीहै सोई दशरथकी सफेद महलहै ऐसी महलमें प्री- तसें स्नेह सोई महलकी चौकहै ॥१८॥

श्लो॰ इन्द्रियाणांसदात्रासोधूलिराशिर्निगद्यते॥ निजानंदस्वरूपस्यचिंतकाःपुरवासिनः॥१९॥

भा॰टी॰ - इंद्रियोंको नित्यविवेकरूप रामजी त्रास करतेहै सोई ब हुतसी धूलिहै ऐसे महल चोक धूलमें चारों भाई रामचंद्रउदासीन रूप खेल खेलतेहैं भगवानके सदा आनंदरूपके चिंताकर्नेवाले

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जो जीवहै सो अयोध्यावासी प्रजाहै ॥१९॥

श्लो० ज्ञानंरवङ्गशरा हर्षास्तूणचापौशमौस्मृतौ ॥
संस्काराश्चेन्द्रियाणाम्वैनिग्रहामुनिनाकृताः ॥२०

भा० टी० - ज्ञानजो है सो रामकीरवङ्ग है सत्संगीजीवोंकों देखके अनेक प्रकारको हर्ष होना सोई रामको अनेक प्रकारको बाण है समदृष्टी संसारकूं देखणा सोई तर्कस है रामने इंद्रियोंको जीतनासोई धनुष है रामजीने कभी इंद्रियोंका विश्वास नहीकरते सोई वसिष्ठमुनि रामजीको मुंडण कर्ण छेदन यज्ञोपवीत इन आदि लेके संस्कार करतेभए ॥२०॥

श्लो० एवंक्रीडासमुत्साहेवर्द्धितेनृपमंदिरे ॥ चित्रो
गाधिसतोधीरोप्याजगामक्षणादनु ॥२१॥

भा० टी० - दशरथके महलमें ऐसा आनंद खेल तमासा चारोंभाई बहुत करिरहे है उसी समयमें चित्तरूपजो विश्वामित्रमुनि सो आते भये बडेचतुरहैं एकक्षणमें ॥२१॥

श्लो० पूजितोनृपवीरेणनोदितोवरयाचने ॥ यया
चेचैवमेधावीतत्सतोरामलक्ष्मणौ ॥२२॥

भा० टी० - राजोंमें बीर दशरथने मुनिजीको पूजन करिके कहेकी महाराज आपकूं चाहेसो मुझसे मांगो तब चतुरविश्वामित्रमुनि बोलेकि हे राजन् तुम आपणे दोपुत्र राम लक्ष्मणकों हमे देवो ॥२२

श्लो० तमपक्वहृदंज्ञात्वाराज्ञानेतीत्युदीरितः ॥ बो
धितोगुरुणापश्चाद्ददौराजासहर्षितः ॥२३॥

भा० टी० - दशरथनें बिचारकियाकि चित्तरूप विश्वामित्र इनकीहृदय ज्ञानसें पकीनहीहै कच्चीहै ऐसाविचारिके कहेकी मै पुत्रोंकों नही देऊंगा परंतु पीछेसें गुरु वसिष्ठजो शक्तिके स्वभावहै सो दशरथकों

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

समुझायके सबबात कही तो राजा बडे हर्षसें राम लक्ष्मणकोविश्वा-
मित्रकों दिया ॥२३॥

श्लो० तावादायगतोधीरः शांतियज्ञमथाकरोत्
तृष्णागाद्यज्ञनाशायशीघ्रंसाताडकामुने ॥२४॥

भा-टी- -चतुरजो विश्वामित्रउन्होनेराम लक्ष्मणकूं लेके अपने आ
श्रमपर जायके मनरूपरावणको शांति होनेवास्ते शांतिरूप यज्ञ का
तेभए सोयज्ञनाशकरनेके वास्ते तृष्णा रूप ताडका आती भई २४

श्लो० हतासारामचन्द्रेणपतिताधरणीतले॥ मोहा
हंकाररूपौद्वौराक्षसौमरवनाशकौ॥२५॥

भा-टी- -तिस्कों रामजीने मारकर पृथ्वीमें पटकदिया तब मोहरू
प सुबाहु अहंकाररूप मारीच ये दोनो आतेभये यज्ञनाशकरनेकूं २५

श्लो० मोहःसुबाहुर्निहतोरामेणपतितोभुवि॥क्षि
प्तोरामेणाभिमानःपतितःसागरान्तिके॥२६॥

भा-टी- -मोहरूप सुबाहुकों रामजीने मारडाला तब वह भूमिमें
पडगया और अहंकाररूप मारीचकों बाणसें उठाकर समुद्रकेपा
फेंकदिया ॥२६॥

श्लोक-सुखेनकृतवान्यज्ञंमुनिस्तद्गतमानसः॥राक्ष
सानांविनाशायसद्विद्यादत्तवान्मुनिः॥२७॥

भा-टी- -विश्वामित्रनें रामजीमें चित्त लगायके सुखसें यज्ञ करतेभये
और राक्षसोंके नाश करनेवास्ते विश्वामित्रनें रामजीकों सद्विद्याशि
खाते भये ॥२७॥

श्लो०गृहीतारामचंद्रेणताःसर्वारावणार्दने॥पंच-
ज्ञानेंद्रियाणांचधर्मःसोगौतमोमुनिः॥२८॥

भा-टी- - मनरूप रावणकोनाशकरनेवास्ते रामजी सर्व विद्या शि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

खते भये पांच ज्ञानइंद्रियोका स्कंदरधर्म सो गौतम मुनिहै २८

श्लो० अहिल्यातद्रुचिः प्रोक्ताकुधर्मः स्करनायकः
रमितातेनसानारीस्करवजारसमुद्भवम् ॥२९॥

भा-टी० - तिस पांचज्ञानेंद्रियोंके धर्ममे रुचि सोई अहिल्याहै खोटाधर्मसो इन्द्रहै पांचज्ञानेंद्रियोंके धर्ममेंजीवोंकीरुचि खोटाधर्म छुडायदिया सोई जारको स्करवहै ॥२९॥

श्लो० तत्कर्मनाशनंविप्रशापोदुर्वासनंक्षितौ ॥गं
भीररजसापूतास्वकर्मविस्मृतिः शिला ॥३०॥

भा-टी० - और खोटे कर्ममें अहिल्याकोसुकर्म मिलगया तथा देहकी चेष्टारूप भूमिपर सज्जनोनें निंदाकिया ये दोनो गौतमकी नारि अहिल्याको श्राप तथा अनुग्रह है विवेकरामजीको गंभीरस्वभाव सोई रामजीके पगकी धूलिहै उस धूलि करिके अहिल्यापवित्रभई और अहिल्या आपने कर्मकों भूलिगई सोई शिलाहै ॥३०॥

श्लो० शिलायाम्भिद्यमानायांपुनःप्राप्तास्वमालय
जीवश्चमैथिलोज्ञेयः सदेहश्चविदेहवान् ॥३१॥

भा-टी० - शिला रामजीके पगकी धूलि करिके फटगई सो अहिल्याकी पांचज्ञानेंद्रियोंमें प्रेमरूप आपना घर तिस्कों गई जीवजोहै सोजनकहै कभीदेहमें स्नेहकर्ताहै कभीदेहमें स्नेह छोडदेताहै

श्लो० नृपस्यमोहिनीभार्यारूपचिन्ताकदापुरी ॥ज
नकस्यानुजोविप्रसदादुःखोनिगद्यते ॥३२॥

भा-टी० -मायाकी दासीजो संसारकों मोहतीहै सोमोहनी रूपजनककीस्त्रीहै जीवने कभीकभी भगवानकी चिंताकरताहै सो जनककी नगरीहै जीव रोज दुःखी रहताहै सोदुःख जनकरूपजीवको सकेतुनाम छोटाभाईहै ॥३२॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० कन्ये द्वे तस्य संजाते हानिर्ग्लानिश्च सत्तम ॥
जनकस्य सुता जाता रूपप्रीतिः सुशीतला ॥ ३३ ॥

भा०टी० - सुकेतु के हानिरूप तथा ग्लानिरूप ये दोलडकी भई भगवानके रूपमें प्रीति बडी सीतल ऐसी एक कन्या जनकके होती भई

श्लो० द्वितीया जानकी प्रोक्ता रूपभक्तिश्च शाश्वती
स्वयंवरश्च विचारश्च धनुरिष्टवियोजनम् ॥ ३४ ॥

भा०टी० - भगवानके रूपकी नित्य जो भक्ति सोजनकके दूसरी कन्या भई उस्कानाम जानकी भया जीव कभी कभी थोरा विचार करताहै सोई स्वयंवरहै जीवको इष्टदेव भगवान तिस्से जीवको वियोग भया सोई स्वयंवरमें धनुषहै ॥ ३४ ॥

श्लो० त्रोटनं ज्ञापनं किंचिद्रूपस्य जनकेन वै ॥ सत्वरं
रामचन्द्रेण धनुषस्त्रोटनं कृतम् ॥ ३५ ॥

भा०टी० - जीवरूप जनक थोरा थोरा भगवानके रूपकों जानताहै सोई धनुषको तोडनाहै सोजलदी रामजी धनुषकूं तोडते भये ३५

श्लो० तद्रूपस्मरणं शीघ्रं भार्गवोप्याजगाम ह ॥ स्व-
स्थानसंस्थितिज्ञानं धनुषोरोपणं कृतम् ॥ ३६ ॥

भा०टी० - जीवको तथा भगवानको वियोग रूप धनुष तूटगया तब जीवने भगवानके रूपकों स्मरण करता भया सोई परशुराम मुनि आते भये भगवानको प्रेमरूप वैकुंठ तिसमे टिकने को जीवको ज्ञान भया सोई परशुरामके धनुषकों रामने चढाये तब परशुराम रामकों दंडवत करिके चलेगये ॥ ३६ ॥

श्लो० सत्कर्माद्यभिसंयुक्तः सेनाश्वरथहस्तिभिः ॥
सरवासनश्चतैः साई माजगाम नृपोत्तमः ॥ ३७

भा०टी० - और ज्ञान ध्यान जप तप आदि लेके सुंदर कर्म सोई राम

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

के घोडा फौज, गज, पालकी है॰ इन्होंको संग लेके आत्मज्ञान रा-
जा दशरथ जनक पुरकों बरात लेके आते भये॰ ॥३७॥

श्लो॰ वर्द्धितः सत्समाजश्च विवाहे सततं मुने ॥ जा
नक्यारघुवीरस्य चान्येषां भ्रातृणां तदा ॥३८॥

भा॰टी॰ - सत्संगीजन इकट्ठे होके ईश्वरको भजन करने वास्ते एक
सभा बनायेहै॰ येबडीजो सभाहै सोई सत्संगी लोगोंकी सभा॰ राम
जानकी तथा और तीनों भाइयोंका विवाह भयाहै॥३८॥

श्लो॰ विदेहेन तदा दत्तं कन्योद्वाहे नृपाय वै ॥ रूप-
स्मरणविज्ञानमचलम्वित्तसंचयम् ॥३९॥

भा॰टी॰ जीवरूप जनकने ईश्वरको स्मरण रूपज्ञान दशरथकूं बता
तेभये॰ सोई लडकीयोंके विवाहमें दायज अचल धन, खजाना, भ-
याहै॰ ॥३९॥

श्लो॰ विस्मृतं पुनराप्तं च तत्प्रयाणे नृपस्य च ॥ पूर्वो
क्तापुत्रपत्नीश्च पुत्रान्वितं च भूरिशः ॥ पुरोक्तैर्मुनि
भिः सार्द्धमाजगाम नृपोत्तमः ॥४०॥

भा॰टी॰ - आत्मज्ञानरूप दशरथको भगवानको स्मरण रूप ज्ञा
न किंचित् भूलगया॰ सोफिर प्राप्ति भया॰ सोई दशरथको फिर अयो
ध्याचलनेकी तयारी भई॰ पहिले कहेहुएजो पुत्र, पुत्रोंकी स्त्री त-
था जनकको दियाजो भगवानको स्मरण रूप धन बहुत॰ तथा प-
हिले बर्णन भयेजो मुनि इनसबकों संग लेके चलते भये ॥४०॥

श्लो॰ समादायागतो राजा स्वपुरीं स्फमतिन्ततः ॥
पुनरीदृक्समाजश्च भविष्यति कदाप्यहो ॥ इत्युक्तं
ठोविदेहस्य बभूव मानसे सदा ॥४१॥

भा॰टी॰ - पहिले श्लोकमें बर्णन भयेजो प्राणी तिन सबकों संगले

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कै सुमति नाम अयोध्याको प्राप्तिभये· बडी भाग्यहै कीक भी· फि
र ऐसीसभा साधुवोंकी होवैगा ऐसा बिचार करके जनक हर्षमें
आनंदमाने सोई जानकी आदि कन्याके बिदामें जनककी विह्व
लता भई· ॥४१॥

श्लो॰ यथापुरेदं परिपीडितंजगन्मनोदशास्येननि
रंतरम्मुने॥ विवर्द्धितेदाशरथेतथासुखंकिञ्चित्स
मावापनृपात्मजोऽपिसः॥४२॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी मनरूप रावण पहिले जैसा यह संसारकों·
पीडाकरता रहा·सोई रामजी की थोडी वृद्धि भई संते संसारकोंथो
रा सुखकी वृद्धि होती भई· संसारकों किंचित् सुखी देखके रामजी
भी थोरा सुखकूं प्राप्तिभये· रामजीनें विचार कियाकि थोरा सुख
भया तो अब कुछ दिनमें सब दुःख नाश होवैगा ॥४२॥

इतिश्रीशिवसहायबुधविरचितेवेदांतरामायणे
बालकांडेसम्वर्तवरतन्तुसंवादे रामावतारकथनेस
प्तमोमोक्षोपानः॥७॥

॥ ॥समाप्तश्चायं बालकाण्डः श्रीरस्तु॥ ॥

अथायोध्याकाण्डं

वरतन्तुरुवाच श्लो॰ इन्द्रियार्थान्समालोक्यवि
परीतान्नृपोत्तमः॥ तच्छिक्षार्थंनृपोरामभिषे-
कुंसमारभेत्॥१॥

भा॰टी॰ - वरतंतु मुनिबोले हेसम्वर्त मुनि सुनो आत्मज्ञानरूप
दशरथ राजा· इंद्रियोके अर्थकों बहुत भ्रष्टदेखके तिन इंद्रियोंकों
शिखाने वास्ते रामजीकों राज देनेको प्रारंभ करतेभये॥१॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० भ्रातृत्रयाणां भगिनी दुर्बुद्धिर्मंथरा च सा ॥
शिक्षयामास कैकेयीं किंचिच्छक्तिप्रियान्तदा २

भा०टी० - काम, क्रोध, लोभ, इन तीनो भाइयोंकी बहन जो दुर्बुद्धि सोई मंथरानाम कैकयीकी दासीहै. सो मंथरा थोरी जो सक्तिकी प्रीतिरूप केकयीतिस्कूं शिखातीभई ॥२॥

श्लो० कलंकं तु तया प्राप्तं सज्जनैर्दूरत्याजनम् ॥ रामस्य वनवासञ्च भरतस्याभिषेचनम् ॥ ३ ॥

भा०टी० - सज्जन लोगोनें दुर्बुद्धिरूप मंथराकों त्यागते भये. सो त्यागरूप कलंक मंथराकों प्राप्ति भया. रामजीकूं बनजाने वास्ते और भरत कूं राज देनेवास्ते ॥३॥

श्लो० याचयामास कैकेयी पूर्वं दत्तवरा हि सा ॥ नृपेण द्वौ वरौ दत्तौ भार्यायाः प्रीतिचेतसा ॥ वश्यमेकं द्वितीयन्तु त्वयानित्यम्प्रबद्धितः ॥ ४ ॥

भा०टी० - दशरथनें कैकेयीकूं पहिले दोबर दान दियेथे प्रसन्न होकर. एकवरतो तुमारी वश्य हमरहेंगे दूसरावर तुम करिके हम बंधेरहेंगे ॥४॥

श्लो० तस्मिन्न्यस्तौ तया काले याचितौ सत्यभावतः ५

भा०टी० - यह दोबरकों कैकेयीने दशरथके पास थाती रखदियाथा सत्य स्वभाव सोई थातीहै ॥ ५ ॥

श्लो० दुःस्वभावः शरीरस्य तदारण्यं निगद्यते ॥ परतापादयो वृक्षा भूरितृष्णादयो लताः ॥ ६ ॥

भा०टी० - देहको खोटा स्वभाव सोई बनहै. दूसरेजीवकों दुःख आदि अनेक कष्ट देनाये सब बनके वृक्षहै. बहुत तृष्णा करना सोई वेलहै ॥ ६ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ उत्पातकारकाःसर्वेवनजा स्तच्चराःस्मृताः॥दुः
स्वभाववनस्येह विस्तारोयद्विवर्ण्यते॥७॥

भा॰टी॰ - उत्पात करनेवाले काम॰ सोई सब बनके भील भयेहै देहको खोटेस्वभावरूप बन तिसकों विस्तार जो वर्णन करों॥७॥

श्लो॰ तदायम्बहुभूमाचग्रन्थोभवतिसज्जनाः॥ईदृ
शंकाननंदत्तंरामायनृपभार्यया॥८॥

भा॰टी॰ - तबहे सज्जन मानुष्यों ग्रंथ बहुत बडा होजावेगा इस वास्ते वनको विस्तार मैंनेनही बर्णन किया॰ दशरथकीप्यारीस्त्री कैकेयी ऐसा बन रामजीकू देती भई॥८॥

श्लो॰ आज्ञानृपतिनादत्तास्वच्छवृत्तिःसकोशला
॥विलापोनृपतेःप्रोक्तोदुःस्वभाववनेचलम्॥९॥

भा॰टी॰ - बडीचतुर निर्मल वृत्ति दशरथकी सोई राजाने रामजी॰ को बनजानेकी आज्ञा देताभया॰ बनजानेमें रामजीको चित्त॰ चलायमान नहीभया॰ सोई दशरथ आदिसबको विलापहै ९

श्लो॰ गमनंरामचन्द्रस्यवर्षाणांचचतुर्दश॥पंच
कर्मेंद्रियावर्षास्तदर्थाःपंचलोलुपाः॥१०॥

भा॰टी॰ - पांच कर्मेंद्री और पांच कर्मेंद्रियोंका अर्थ बडे कामक्रोध॰ आदिउत्पन्न करनेवाले

श्लो॰ बालादीनिचचत्वारिशरीरस्यवयांसिच॥एते
दिग्वेदवर्षाश्चविपरीतेंन्द्रियार्थता॥११॥

भा॰टी॰ - और जीवोंकी देहकी अवस्था बाल आदि च्यार अवस्था जैसे बाल॰ पौगंड युवा वृद्ध ४ येसब खोटी इन्द्रियोंका अर्थ लेके चौदा १४ वर्ष वनमें रहनेवास्ते है॥११॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० साराज्यवृत्तिभरतेदत्तवान्नृपसत्तमः॥पितु
र्वाक्यंरथंप्रोक्तंस्वच्छवृत्तिभवागुणाः॥१२॥

भा०टी० - और खोटे इंद्रियोंके अर्थकों शिखाने वास्ते दशरथनें भ
रतकूं राजकी वृत्ती देते भये और दशरथकी वाक्य रामजीकूं व
नजाने वास्ते सोवाक्य रामको रथहै रामजीकी सुंदरमति ति
स्के गुणजैसे लोभ-मोह स्नेह वैर ये रामजीके नहीहै ॥१२॥

श्लो० हयाश्चतत्सुखाद्व्यारथस्यतत्स्थितीरवः॥
सुमन्तोनिश्चलत्वंचनृपस्यमुनिसत्तम॥१३॥

भा०टी० -सोई रामजीके रथकेघोडेहै उनघोडोंमें सुख मानना-
सोई रथकी सब सामग्रीहै पिताके वचन रूप रथमे बैठना सोई
रथकों दोडनाहै हे मुनिजी, आत्मज्ञान राजाको धर्म सो कभी
चित्त चलायमान नहीहोता- सोई सुमंत नाम राजाको मंत्रीहै१३

श्लो० विवेकतनयस्यैववियोगोरुदनम्मुने॥तम
साऽचंचलावृत्तीरामस्यमुनिसत्तम॥१४॥

भा०टी० - ऐसीरथमे बैठके रामजी बनकूं चले तो दशरथके विवेक
सरीके पुत्रको वियोग बहुत दिनसें भया सोई राजा आदि राणि
योंकों तथा पुरवासियोंको रोना भयाहै हे मुनि पिताके बचनसें
रामजीकी अचल वृत्ति सोई तमसा नदीहै ॥१४॥

श्लो० वासश्चकारभगवान्तत्तीरेग्लानिवर्जितः॥ह
यसंचारणेधीरः कारयामासरारथिः॥पितुरा-
ज्ञाविचलनंहयानामशनंस्मृतम्॥१५॥

भा०टी० -विवेक रामजीके कभीग्लानि नही होती सोई तमसा
केतीर रामजीको बासहै धर्ममें बडे चतुर रामजी सोई सुमंत-
ने घोडोंकों फेरते भये तथा पिताके आज्ञाको रामजीनें मान

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लिया सोई घोडोकों चारा खिलाते भये॰ ॥१५॥

श्लो॰ पित्रोर्विनिन्दनंत्यागं पूर्वोक्ताः पुरवासिनः॥
चैतन्यस्यसदाचिन्ताकृतारामेणमानसे॥१६॥

भा॰टी॰ - तथा रामजीने कभी पिताकी निंदा नही किया॰ सो भी घोडोकों चाराहै विवेक रामजी चैतन्य रूप भगवानकी चिंता आपके हृदयमें रोज करतेहै ॥१६॥

श्लो॰ सानिद्रातमसातीरे वाक्यंरामस्यनिश्चयं॥
पितुर्मोहोवनेहर्षोरामस्यवर्ततेद्वयम्॥१७॥

भा॰टी॰ - सोई तमसाके तीरपर रामजीको निद्रा आती भई॰ निश्चय करिके बनजाना ऐसा रामजीको विचार सोई रामजी सुमंतसें कहेकि, रथकों फिरायके लेचलो॰ पुरवासी हमारे संग चलेंगे सो अच्छा नहीहै॰ रामजीको बनजानेमे बडा हर्ष है तथा पिताकी मोहहै ॥१७॥

श्लो॰ एतद्रथस्यभ्रमणंनिश्चिताकाननेस्थितिः॥
राक्षसानांविनाशायभूभारहरणायच॥१८॥

भा॰टी॰ - येदोनो रथको भ्रमण कर्नाहै॰ रामजीकी बनमें निश्चय स्थिति करना भूमिको भार नाशकरना तथा राक्षसोंको नाश करना॰ श्लो॰ एतत्पुनस्तद्वमनंतुष्टभावोरघूत्तमे॥ निवर्तनंप्रजानांचैकषायइवकालनम्॥१९॥

भा॰टी॰ - येदोनो प्रसन्न होके तमसाके तीरसें रामजीको फिर बनमें गमन भया॰ जैसा॰ कादा उकलताहै तैसे पुरवासी प्रजाओंको पीछा आना भया ॥१९॥

श्लो॰ पुरवासिनाम्विलापश्चपुनःप्रोक्तंमुनीश्वर॥
रामश्चस्वस्वभावेनगुहेनाशुसुतोषितः॥२०॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - सोई प्रजाको फिर विलाप भयाहै॰ हे मुनिजी; रामजीको स्वभाव सोई गुहनाम भीलहै सो भील रामजीकों प्रसन्न करता भया ॥२०॥

श्लो॰ स्वभावाचलनम्विप्रशृंगवेरपुरःस्मृतः॥ औ
दासिन्यंचरामस्यशिंशिपस्तरुसत्तमः॥२१॥

भा॰टी॰ - रामजी अपने स्वभावसें कभी चलायमान नहीहोते॰ सोई शृंगवेरपुरहै॰ रामजीके नकोई मित्रहै नकोई वैरीहै सोई शिंशिपावृक्षहै तिस्के नीचे रामलक्ष्मण जानकी सहित बसते भये २१

श्लो॰ रूपध्यानंकृतन्तेनरामेणतरुसन्निधौ॥ त॰
दासनम्महाबाहोप्रेमोत्कंठाःकुशास्मृताः॥२२

भा॰टी॰ -रामजीनें ईश्वरके रूपको ध्यानकरते भये॰ सोई आसन गुहने बनाताभया॰ रामजीने ध्यान करिके प्रेमसें गद्गद होगयेसोई कुशहै तिस कुशको आसन बनाया ॥२२॥

श्लो॰ कुकर्मणोनिवृत्तिश्चसागुहस्यैवभावना॥
तैःकुशैरामचंद्रस्यगुहेनकृतमासनम्॥२३॥

भा॰टी॰ - रामजीने खोटे कर्मसें चित्तकों खैंचे रहतेहै सोई गुहने रामजीकी भक्ति किया तिन कुशोंकरिके गुहने रामजीकों आसन बनाताभया ॥२३॥

श्लो॰ तस्मिन् शिश्ये स्वपत्न्याचरामोनिद्रांचकारवै
सत्सभाविहराक्रान्ताबुद्धिर्निद्रास्मृतामुने ॥२४॥

भा॰टी॰ - तिस आसनपर जानकी सहित रामजी सोते भये॰ हे॰ मुनिजी; रामजीकों साधुवोंकी सभाका वियोग होजाताहै॰ उस॰ वियोग करिके रामजीकी बुद्धि दुःखी होजातीहै॰ सोई निद्राकरते भये ॥२४॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ असद्वार्तादयोधर्म्मायेचैवंमायया कृताः॥
तेविभूषणवस्त्राद्यास्त्यक्ताद्वाभ्यांगुहान्तिके॥२५

भा॰टी॰ - मायाकरिके रचेंज्योखोटेखोटे धर्म सोई संसारके गहना तथा वस्त्रहै तिन सबकों राम लक्ष्मण गुह मित्रके सामने त्यागते भये॰॥२५॥

श्लो॰ गुहलक्ष्मणयोः सुप्तेसपत्नीकेरघूत्तमे॥ बभूवतुः सत्कथनेसद्विचिन्तनमेवच॥२६॥

भा॰टी॰ - रामजीकों तथा जानकीकों सोए जानके गुहको लक्ष्मणको संवाद भया दोनोनें सुंदर धर्म तथा ईश्वरकी चिंता कर्त्ते भये सोई संवादहै॥२६॥

श्लो॰ संवादजागरौप्रोक्तौतौतयोर्जान्हवीतटे॥
शरीरशुद्धिर्योगेनपूर्वोक्ताजान्हवीस्मृता॥२७॥

भा॰टी॰ - पहिले बर्णन भईजो गंगाजी तिस्के तीर गुहको तथा लक्ष्मणको संवाद तथा जागते भये॰ सुंदर धर्मकोकथन तो संवाद भयाहै॰ ईश्वरकीचिंताकर्ना सोजागना भया॥२७॥

श्लो॰ शुद्धमाचरणन्तोयम्बाह्याभ्यंतरयोः शुचिः॥
तटौद्वौमुनिभिः प्रोक्तौतरंगिण्योनुशासिकाः॥२८

भा॰टी॰ - शुद्ध कर्मकों कर्ना सोई गंगाकोजलहै॰ और देहके बाहर जलमृत्तिकासें शौच कर्ना, हृदयमें ज्ञानसे शौच कर्ना॰ ये दोनो कर्म गंगाके दोतीरहै॰ गुरुकी दीक्षा लेना सोई गंगाकीठहरहै

श्लो॰ स्वभावाचरणंवंशंतत्प्रीत्यायष्टिसंज्ञया॥
योगाचरणयानावा तारणंशुद्धसंस्थितिः॥२९॥

भा॰टी॰ जीवोंके स्वभावकों आचरण सोई वांसहै उसी स्वभावरूप वांसमें प्रीति करना सोई वांसकी लाठीहै॰ योगको करना

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सो नांवहै॰ शुद्धकर्ममें टिकना सोगंगाको उतरनाहै॰ इसप्रकारसें योग सें गुहने रामलक्ष्मण जानकीकों गंगाकेपार लेगया॰॥२९॥

श्लो॰ कृतंगुहेनसहसाप्रयागंहृदयस्थलम्॥सज्जनैर्भाषणंस्नानंतस्यप्रीतिःसरस्वती॥३०॥

भा॰टी॰ - गुहनें पारउतारे रामजीकीहृदयसो प्रयागहै॰ सज्जन मानुष्योंसें भाषण करना सोस्नानहै इसी सज्जनोंके भाषणमें प्रीति सो सरस्वतीहै॰॥३०॥

श्लो॰ तत्संगतौचयत्प्रेमतद्रुचिर्यमुनास्मृता॥वटःस्वधर्मोविप्रेंद्रसत्कर्माचरणोमुनिः॥३१॥

भा॰टी॰ - सज्जन जीवोंके मिलापमें प्रेम औरउसीप्रेममें रुचि सोयमुनाहै॰ जीवोंको आपना२ धर्मसो अक्षय वटहै॰ सुंदरकर्म करनी सो भरद्वाजमुनिहै॰ तिनके आश्रमपर रामजी जाते भये॰॥३१॥

श्लो॰ पूजितोयेनरामोवैजानकीलक्ष्मणान्वितः॥सुखमापमहाराजोरामोराजीवलोचनः॥३२॥

भा॰टी॰ - जोभरद्वाजमुनी राम लक्ष्मण जानकी को पूजन करतेभयें भरद्वाज मुनिके आश्रमपर एकरात्रि रामजी रहे तहां बहुत सुख॰ पातेभये॥३२॥

श्लोक॰ उवासरामोमुनिनासुपूजितोविदेहपुत्र्यासहानुजोविभुः॥प्रातःसमुत्थायप्रियासहोदरैःस्नानंत्रिवेण्यांविधिवच्चकारवै॥३३॥

भा॰टी॰ - मुनिकरके पूजित ऐसे रामचंद्र जानकी लक्ष्मण भरद्वाजमुनिके आश्रमपर रात्रि बसके प्रातःकाल उठके पहिले वर्णनहुइ जोत्रिवेणी तिसमें विधिपूर्वक शुद्ध आचरणहै रामजीको सोईविधिहै॰ और पहिले वर्णन भयाजो जल तिसमें डरसें हीनकर्म रूप॰

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

स्नान राम लक्ष्मण जानकी करते भये- ॥३३॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे अयोध्याकांडेपं० शिवसहा यबुधविरचितेसम्वर्तवरतन्तुसम्वादेरामचंद्रभारद्वा जाश्रमनिवासेप्रथमोमोक्षोपानः॥१॥

वरतन्तुरुवाच॥ श्लोक- आत्मज्ञानस्यस्वपितुःरामे णचिन्तनम्मुने॥सवाल्मीकिर्मुनिःप्रोक्तःशत्रुजेता जयोगिरिः॥१॥

भा-टी- - वरतन्तु मुनिबोले रामजीने अपने पिताजो आत्मज्ञान तिस्काचिंतन करतेभये- सो वाल्मीक मुनिहै तिनके आश्रमपर रामजी जाते भये- रामजीको पराक्रम कामादि शत्रुवोंकों जीतनेमे बडाबल वानहै- सो चित्रकूटपर्वतहै- वाल्मीककी आज्ञापायके तिस चित्रकूटपर रामजी बसते भये॥१॥

श्लो० रामस्यसततंप्रीतिर्यारूपेसापयस्विनी॥सभ यादिगुणास्तत्रमुनयोवनवासिनः॥२॥

भा-टी- - भगवानके रूपकी प्रीति रामजीके हृदयमें नित्य बनी रहतीहै- सोई मंदाकिनी नदीहै- अधर्मके भय आदि गुण रामजी में हैसो इस बनके मुनिहै- अधर्मसैं डरे सोई महात्माहै॥२॥

श्लो० इंद्रियाणाम्प्रचंडानामविस्वासादयोगुणाः तैरारण्यचरैर्नित्यंसेवितोजानकीपतिः॥३॥

भा-टी- - बडीजबर्दस्तजो इन्द्रीहै तिनको विस्वास रामजी कभीन हीकरते ऐसा गुण सोई वनके रहनेवाले मानुष्यहै- सो मानुष्य रा मजीकी सेवा करतेभये॥३॥

श्लो० गिरेर्वैजयरूपस्यचित्रकूटस्यनित्यशः॥अ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चलत्वंचतत्प्रेमकुटीरौरामसंकृतौ॥४॥

भा॰टी॰ - पहिले बर्णन भया जो रामजीका काम आदि जय रूप चित्रकूट सो अचल है तथा उस अचलमें प्रेम ये दोनो राम लक्ष्मणकी पर्णकुटी है ॥४॥

श्लो॰ तद्गिरौनिश्चलाप्रीतिर्वसतीराघवस्यवै॥प्रपं चरहितंसौख्यंप्राप्तंरामेणतत्रच॥५॥

भा॰टी॰ - ऐसे चित्रकूटमे रामचंद्रकी प्रीति निश्चल है सोई चित्रकूटपर रामचंद्रको वास है॰ रामजी संसारके प्रपंचसें रहित है॰ सोई चित्रकूटका सुख है ॥५॥

श्लो॰ अयोध्यासुमतेर्भूरिर्निश्चलेनैवसंकृता॥ तत्सुमंतागमःप्रोक्तःपुनारामांतिकान्मुने॥६॥

भा॰टी॰ - जिसको चित्त कभी धर्मसें चलायमान नहीं होता सो सुमंतरूप सारथीने सुमतिरूप अयोध्याको प्रेम निश्चल होके किया सोई रामजीके पाससे सुमंतको फिरि अयोध्यामें आना भया है॰

श्लो॰ सत्समाजेविनष्टोभूदात्मज्ञानंनिरंतरम्॥तदे वमरणम्प्रोक्तमयोध्याधिपतेस्तदा॥७॥

भा॰टी॰ - सत्पुरुषोंकी समाजमें रोज आत्मज्ञान नष्ट होगया सोई दशरथको मरण है ॥७॥

श्लो॰ कृतंकोलाहलंसर्वैःसज्जनैःसत्सभातले॥ पूर्वोक्तनृपभार्याभिर्युगपत्तद्विलापनम्॥८॥

भा॰टी॰ - सत्पुरुषोंकी सभामें आत्मज्ञानको नष्ट देखके उसीसभामें बैठके सज्जनोने बहुत उच्चस्वरसें रुदन किया सोई पेस्तरबर्णन भई सो राजाकी स्त्री है॰ सो सब इकठी होयके विलाप करती भई॥८॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० निर्दयत्वंसदाशक्तेस्तत्केकयपुरस्मृतः॥ ध-
र्माचरणदूतास्तेवसिष्ठेनैवप्रेरिताः॥ गतास्तेत-
त्पुरंप्रोचुः क्रूरंकेकयभूपतिम्॥ ९॥

भा-टी- - शक्ति निर्दई है जीवको फसानेमे मोहनही करती- किय
हगरीब दुःख पावेगा- ऐसा शक्तिको स्वभावहै सोई कश्मीरनगर
है- वसिष्ठजीने आपने धर्मके आचारमें बडे पुष्ट सो सब दूत है
तिन दूतोंकों कश्मीरकों भेजते भये- दूत जायके कश्मीरको केक
यीको क्रूरस्वभाव सोई कश्मीरको राजा है तिस्सें बोलते भये ९

श्लो० नृपस्यमरणंशीघ्रंगृहीत्वातत्स्फुतोतदा॥ कु
मत्याप्रापितौतत्रपूर्वोक्तौनृपनंदनौ॥ १०॥

भा-टी- - जलदी आत्मज्ञान दशरथको मरण कहिके कुमति करी
के कश्मीरको लेगयेजो राजाके दो पुत्र भरत शत्रुघन तिनदोनो-
कों संगलेके॥ १०॥

श्लो० आयाताःस्कमतिन्दूताभरतानादरम्प्रजाः॥
भगवच्चिंतकाःसर्वेप्रजाश्चपुरवासिनः॥ ११॥

भा-टी- - दूतोनें स्कमतिरूप अयोध्याकूं आतेभये- तब भगवा
नके भजनकर्नेवाले रूपजो सब पुरवासी है सो भरतके अनादरकों-

श्लो० चक्रुश्चानादरन्तस्यहास्यरूपन्निरंतरम्॥ आ
स्वासितौवसिष्ठेनक्षमामार्गेणरोदनम्॥ १२॥

भा-टी- - करते भये- क्या अनादर किये रोज भरतकूं देखके हसना
सोई अनादर है- और वसिष्ठजीने क्षमारूप आस्वास किया- सोई-
भरत शत्रुघनको रोना है॥ १२॥

श्लो० चक्रतुःशपथंवीरौकौशल्यांभरतोऽर्जवम्॥
चकारमातुःस्वस्येवभर्त्सनंधैर्यनाशनम्॥ १३॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - भरत को कोमल स्वभाव सोई दोनोभाई सौगंद करतेभये रामजीको वियोग तथा दशरथको मरण स्कनिके भरत शत्रुघनकी धीरज नष्टहोगई सोई केकयीकों भरत ताडना करतभये-१३

श्लो० दाहादीनिसमस्तानिकर्म्माणिमुनिसत्तमः॥
कारयामासभूपस्यशुद्धाचाराणितेनवै॥१४॥

भा-टी- -सबजीवोंको शुद्ध आचार सोई दशरथकी दाह क्रियादिकर्म वसिष्ठने भरतसें करवाये ॥१४॥

श्लो० पूर्वोक्तसेनाजननीबांधवैः पुरवासिभिः॥गुरुणाविप्रवर्गैश्चसंयुतोगमनञ्चसः॥१५॥

भा-टी- - पहिले वर्णन भई जो फौज तथा माता भाई पुरवासी गुरु ब्राह्मण इनसबों करिके संयुक्त भरत होकर रामजीके पासजानेकी तयारीकिया-॥१५॥

श्लो० परमानंदरूपंहिगुहेनभाषणंकृतम्॥रामधैर्यस्वरूपंचतत्प्रतीतिनिवासनम्॥१६॥

भा-टी- - भरतने परमरूप आनंदमें लीन भये सोई गुहको तथा भरतको संभाषण भया- रामजीको धीरज स्वभाव सोई गुहकी- निश्चयहै- श्रीरामकों मिलने वास्ते भरतजातेहै सोई भरतको गंगा तटपर टिकाना भया ॥१६॥

श्लो० सैन्यविश्वासनंचक्रेरामध्यानेनसंयुतः॥भरतस्वस्वभावेनससैन्यमातृबांधवैः॥१७॥

भा-टी- - भरत शत्रुघन रामजीको ध्यान करतेभये- सोई फोजकोंविश्वास देनाहै- तथाभरत अपनेस्वभावमें दृढहै सोई सेना भाई गुरुमाता-सहित ॥१७॥

श्लो० गंगापारंस्करवेनासोगुहप्रेरितनौकया॥प्रया

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गस्थोमुनिश्चक्रेसत्कार्य्यंभरतस्यच ॥१८॥

भा०टी० - गुहसें चलाई नाव करिके गंगाके पार गये प्रयागजीमें टिके जो मुनि भरद्वाज पहिले बर्णन हुए सो भरतको सत्कार करतभये

श्लो० यमादिभिर्योगपथैः सन्तुष्टोनृपनन्दनः। बभूवाव्यक्तकथनंश्रोतृणांचाचिनांतथा॥१९॥

भा०टी० - किस चीजसें सत्कार किया रखो टाबचन नही बोलना इंद्रियोंकोंजीतना इनआदि अनेक प्रकारके सुंदर कर्म्मो करिके सत्कार किये तब भरत संतुष्ट होके चित्रकूट कूंगये तब चित्रकूट पर रहनेवाले जीवोंको तथा कहने वाले जीवोंके बीचमें ईश्वरको धर्म वर्णन भया ॥१९॥

श्लो० चतुर्णांचैवभ्रातृणामन्येषांचपरस्परम्॥ समागमस्सोविख्यातः परमात्म प्रकाशकः ॥२०॥

भा०टी० - तथा चारोंभाई रामजीके और अनेक जीवोंके आपसमे परमात्माके रूपको प्रकाश मालूम पडा सोई सबको चित्रकूटपर आनाभया ॥२०॥

श्लो० पादुकेरामचंद्रेणसत्यबुद्धिः सहिष्णुता॥ स्वानुजायस्वयन्दत्तेप्रीत्याशृत्यागमत्पुरीम्॥२१॥

भा०टी० - सत्यराखना हृदयमें तथा कोई आपनेको दुःख देवैसो उस्कोदुःखदेनेकाबिचारनानही ये दो पादुकाहै सो दोनों पादुका रामजीने प्रसन्न होके भरतकूं देतेभयेभरतनें दोनों पादुका अपने स्वभावरूप शिरपर धरिके अयोध्यापुरीमें आतेभये॥२१॥

श्लो० भरतोभ्रातृसहितः सेनामातृमुनीश्वरैः। वासंचक्रेपुरीबाह्ये पंचक्रोशमितेशुभे॥२२॥

भा०टी० - भाई सेना माता मुनीश्वर सहित आयके आपभरतअके

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लेपुरीके बाहेर पांचकोसपर टिकते भये॥ २२॥

श्लो॰ कदापिसुमतिःकुर्याकुमतेःसंगमद्भुतम्॥ अ
तोतद्दूरतःस्थित्वापंचदुष्टेन्द्रियोज्झिते॥२३॥

भा॰टी॰ - भरत विचारते भये कि दैवयोगसें सुमतिजोहै सोकुमति की संगत करलेवे तो बडा आश्चर्य होजावे इसवास्ते पांच दुष्टइंद्रियों करिके त्याग भया जो सुंदर कर्म्म उसी पांचकोशमें वासकरते भये॥२३॥

श्लो॰ सत्कर्माचरणे वीरोनन्दिग्रामेसुशोभने॥ न
न्दीतिरूपिणीम्बध्वाजटांरामइवस्वयम्॥२४॥

भा॰टी॰ - सुंदर कर्मको आचरण कर्ना सोई नंदिग्रामहै॰ तिसमेटिकते भये॰ नंदिग्रामकी प्रीतिरूप जटा रामसरीके भरतभी शिर में बांधिके॥२४॥

श्लो॰ द्वयोःपादुकयोश्चक्रेरंजनंप्रीतिसेवनम्॥
शमादीनाम्प्रजानाम्वेविपरीतोद्भवोद्भवैः॥ भरतोर
क्षणंचक्रेदुःखितानांमुहुर्मुहुः॥२५॥

भा॰टी॰ - पेस्तर वर्णन भयेजो दोनूपादुका तिनको स्नेहरूप प्रीतिसोईसेवन करते भये॰ शम दम यज्ञ आदि औरजो सुकर्म सोई सब प्रजा भये॰ तिन सबकी रक्षा करते भये भरत खोटीइंद्रियोंको जो खोटा अर्थ तिस करिके वारंवार दुःखीजो प्रजा तिनकोरक्षा करते भये॥ २५॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेपं॰शिवसहायबुधविर
चितेनंदिग्रामे भरतवासेद्वितीयोमोक्षोपानः॥२

इति अयोध्याकांडम् समाप्तं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अथारण्यकांडः

श्लोक· वरतन्तुरुवाच कुज्ञानसमुदायाश्चतेमृगाः काननौकसः ॥ सलक्ष्मणेनरामेण हतानि पतितानि क्षितौ ॥१॥

भा·टी· - वरतन्तु मुनि बोले खोटा खोटा ज्ञान जैसे परस्त्रीकों भोगना· परधन हरना· चोरी करना· इनआदि बहुत ज्ञानसो सब बनके मृग भये· तिन मृगोंकूं राम लक्ष्मण मारते भये· वे मृग भूमिपर पडगये ॥१॥

श्लो· ज्ञानहर्षशरैस्तीक्ष्णैर्जघानारण्यसंश्रितान् राक्षसानपिपूर्वोक्तान्मनोरावणप्रेरितान् ॥२॥

भा·टी· - तथा मन रावण करिके आज्ञा पायके बनमें फिरते जो राक्षस तिनकोभी रामजी ज्ञानमें हर्ष मानना सोई बाण है तिस्स बाणों करिके मारते भये ॥२॥

श्लो· रूपभक्त्याश्चजानक्याःपादौतच्छ्रुतिकीर्तने आलस्योनिजतुंडेननिजघानस्करेशजः ॥३॥

भा·टी· -विवेक कोचरित्र सुनना तथा कीर्तन करना ये दोनों भगवानके रूपकी भक्तिजो जानकी तिसके दो पग है तिस पगको आलस्यरूपजो काग सो जानकी विवेककेचरित्रको सुनती तथा कीर्तनकरती भई· इनदोनोंकों नहीकर्नेदेना· सोई तुंड है तिस तुंडकरिके जानकी केपगमें घाव करताभया ॥३॥

श्लो· अप्रीतिकृतहर्षेणजानक्याश्चरणांबुजे ॥ पातयामासतस्याक्षिशरेणैकेनराघवः ॥४॥

भा·टी· - आलस्य रूप कागने जानकीकों निल्य मनाकरताभया· कि तूंपरमेश्वरकी प्रीतछोडदे· जानकी दुष्टकी वाक्य नही मानी इस

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वास्ते उस आलस्यरूप कागकी प्रीति जानकीमे नहीहै ऐसी अ प्रीतिमेंजो कागको हर्ष सोई तुंडकी धारहै उसी धार करिके जानकीके चरणमें मारना भया. तब रामजीने एक बाण करिके जयंतकी एक आंखि काटिके भूमिपर गिराय देतेभये ॥ ४॥

श्लोक. उपदेशशरेणैकं क्रोधाकुलितलोचनः॥ आलस्योव्याकुलोभूत्वा क्रूरवाक्यादिसंगतौ॥५॥

भा-टी- - किस बाणसें रामजीने आंख काटे उपदेसरूप बाण करिके क्रोध करिके रामजीको नेत्र लाल होगया. तब आलस्यरूपकाग खोटीवचन बोलना ऐसी अनेकप्रकारका बुराकाम निस कीसभामें ॥ ५॥

श्लो० गतवान्प्राणरक्षार्थं नकेनापिस्करक्षितः॥ पश्चाच्छरणमायातो रामस्यचरणाब्जयोः ॥ ६॥

भा-टी- - अपने प्राणकी रक्षा करनेवास्ते जाताभया. परंतु किस दुष्टोंकी सामर्थ्य नही भई कि रक्षा करशके तब रामजीके चरणकी शरणआया ॥ ६॥

श्लो० शौर्य्यार्ज्जयोश्च तन्हक्षारक्षित्वाराघवस्त्यजत्
तदागतःसमाजग्मुर्दुष्टकर्मादिराक्षसाः॥ चित्रकूटस्थितंज्ञात्वारामंसत्यपराक्रमम्॥७॥

भा-टी- - कैसे रामके चरणहै एकतो शूररूपहै, दूसरा कोमलतारूपहै, रामजीने शरण जानके कागके प्राणकी रक्षा करनेभये. तब काग चलागया. तब दुष्टकर्म पेस्तर बर्णन हुयेजो राक्षस सोचित्रकूटपर रामजीकूं टिकेजानकर रामजीके सामने आतेभये ७

श्लो० अर्दितुंसहसोद्योगंचक्रुर्मरणकांक्षिणः॥
सद्धर्मामुनयश्चैवचित्रकूटवनाश्रिताः॥ ८॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा० टी० - राक्षसोनें जलदी मरणकी इच्छा करिके रामजीकों दुःख देनेवास्ते उपाय करते भये तथा चित्रकूटके बनमें रहने वाले कंदरधर्मरूप जो मुनिहै वोभी ॥८॥

श्लो० तेऽपिप्रापुर्महादुःखंपीडितारात्रिसेस्तथा॥
तान्पीडितान्विलोक्याशुरामस्तत्याजतंगिरिम् ९

भा० टी० - राक्षसोंसे पीडा पायके दुःखी होतेभये रामजीने विचार कियाकि हमारेवास्ते राक्षस आतेहैं सो मुनिलोगभी दुःख पाते हैं हमचित्रकूटपर नहीं होतेतो राक्षस रोज इहां नहीं आते ऐसा बिचारिके और मुनियोंकों दुःखी देखके चित्रकूट त्यागिके दूसरेबनकूं चले ॥९॥

श्लो० शत्रुत्रयाणांविजयंचित्रकूटंरघूत्तमः। तत्याजस्वबशंज्ञात्वानैतेमांजयितुंक्षमाः॥१०॥

भा० टी० - काम क्रोध लोभ इन तीनों वैरीयोंकोंजीतनारूप जो चित्रकूट तिस्कूं आपनी वस रामजीने जानके ये वैरी हमे नहीजीतसकैंगे ऐसाजानिके चित्रकूटकों त्यागते भये ॥१०॥

श्लो० कामादिसारंसंगृह्य भूभारहरणायच॥
रक्षोविनाशनंचैवतैर्विनानभविष्यति ॥११॥

भा० टी० - रामजीने बिचाराके कामको सार स्फरव लोभको सार संसारमें आपनी स्तुती होना क्रोधको सार वैरीको मारनेमें दया नहीकरना इनतीनोंकी थोरा थोरा सार भूमिके भार नाशकरने वास्ते लेतेभये इनतीनों सारों विना राक्षसोंका नाश नहीं होगा ऐसाबिचार करिके ॥११॥

श्लो० एवम्विचार्यसहसाजगामात्रेरथाश्रमम्॥ मार्गेरुध्वाविराधस्तुततस्तस्यपुरस्थितः॥१२॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- -रामजीने ऐसाबिचारकियाकि अब मुनियोंकेपासच लना- तो प्रथम अत्रिमुनिके आश्रमकूं चलते भये- तब रामजी- कारस्ता घेरके रामजीके साम्ने विराध नाम राक्षस खडा होगया १२

श्लो० राधःसदुपदेशश्चतेनयोविगतोभुवि॥स विराधइतिख्यातोभ्रमोभयविवर्द्धनः॥१३॥

भा-टी- -सुंदर काजके उपदेशकूं राध कहतेहैं- शास्त्रमे उसीराध सें दूरि होजावै तिस्को नामबिराधहै- भयको बढानेवाला जोभ्र महै उस्कानाम विराधहै॥१३॥

श्लो० जानकीतेनसन्नीताब्रह्मभक्तिश्चशाश्वती॥ अतोरामेणतरसाहतःप्राप्ताचजानकी॥१४॥

भा-टी- - तोविराध जानकीकों हरि लेगया- इसवास्ते जलदी रा मजीने बिराधकों मारिके जानकीकों ले आए॥१४॥

श्लो० तंहत्वारामचन्द्रश्चजगामात्रेःशुभाश्रमम्॥ नसन्तिशत्रवोयस्यजन्मतस्त्रयएवते॥१५॥

भा-टी- - रामजीने तिसविराधकों मारिके सुंदरजो अत्रिमुनिको आश्रम तिसपर जाते भये- जन्मतें काम क्रोध लोभ येतीन शत्रु जि स्केनहीहै॥१५॥

श्लो० सोऽत्रिर्म्मुनिःसमाख्यातःशीलोब्रह्मसखा महान्॥ निंदानजन्मतोयस्याःसानुसूयेतिक- थ्यते॥१६॥

भा-टी- -तिनकों अत्रिमुनि शास्त्रमें कहतेहैं- सो अत्रिमुनिशी लकोनामहै- शील ब्रह्मको बडामित्रहै जन्मसें जिस्की हृदयमें जीवमात्रकी निंदानहीहै उस्कों शास्त्रमे अनुसूया कहतेहै १६

श्लो० शीलवृत्ति र्वराश्रेष्ठामुनिपत्नीपतिव्रता॥ सो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त्रिः संपूजयामास स्वस्वभावोद्भवैर्गुणैः ॥१७॥

भा० टी० - शीलकी वृत्तिको अनुसूया नाम है. बडी श्रेष्ठ है. शीलरूप अत्रिमुनि जिनकी स्त्री है. शीलको छोडिके दूसरी जगा अनेक दुःख पावे तो भी नही जाती शीलरूप अत्रिमुनि आपने स्वभावसे उत्पन्न गुण करिके रामजीको पूजन करते भये ॥१७॥

श्लो० जानकीं शिक्षयामास स्ववृत्तिं मुनिवल्लभा ॥ स त्सभान्वेषणप्रेम दुःस्वभाववनेभवत् ॥१८॥

भा० टी० अत्रिमुनिकी प्यारी जो शीलकी वृत्ति अनुसूया सो अपनी बडी उत्तम वृत्ति जानकीको शिखाती भई खोटा स्वभावरूप वनमें जीवको मोक्ष करनेवाली सभाको प्रेम करिके सोध लगाना

श्लो० रामचन्द्रस्य भ्रमणं पितृवर्षप्रमाणतः ॥ पत्नीभ्रातृसमायुक्तो जन्माग्निवारिदः प्रभुः ॥ शरभंगं मुनिन्द्रष्टुं जगामरघुनन्दनः ॥१९॥

भा० टी० - सोई रामजीको वर्ष १४ वनमें भ्रमण करना भया है. कैसे रामजी है जानकी लक्ष्मण संयुक्त है. तथा जन्मबाधारूप जो अग्नि तिसको बुझाने वास्ते मेघरूप है सो रामजी शरभंग मुनि का दर्शन करने वास्ते शरभंग मुनिके आश्रमपर गये. ॥१९॥

श्लो० तेजसा शरभंगेन पूजितो जानकीपतिः ॥ शौचाद्याचारसाहित्यैस्तेषां प्रीतिस्तुतिः कृता ॥२०॥

भा० टी० - तपको तेज सोई शरभंग मुनि है सो मुनि शौच आचार आदि और उत्तम उत्तम कर्म है तिन्हो करिके रामजीको पूजन किया. तथा राम लक्ष्मण जानकी उनके चरणमें बडी प्रीत किया. सोई शरभंग मुनि रामजीकी स्तुति करते भये ॥२०॥

श्लो० कौशलप्रीतिरचिताचिता श्रीरामसंगतिः ॥ द

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ग्ध्वादेहंमुनिःशीघ्रंविवेकेराघवेविशत्॥२१॥

भा॰टी॰--रामजीमें बडीचतुरप्रीति ठसप्रीतिकी चिता बनाया तथा रामजीकी संगतिसो अग्निभई है ऐसी सुंदर उत्तम चिता अग्निसे भावरूप देहकों भस्म करिके विवेकरूप रामजीमें शरभंग मुनि मिलगये॥२१॥

श्लो॰ अविचारसुतीक्ष्णेनकृत्वासंभाषणम्प्रभुः॥
सन्मार्गमुपदिश्यासुसुतीक्ष्णोमुनिसत्तमे॥२२॥

भा॰टी॰ - रामजीके विचारसे रहित कर्म सोई सुतीक्ष्ण मुनिहै तिस्सें संभाषणकरिके सुंदर धर्मकारस्ता सुतीक्ष्णकों बतायके॥२२

श्लो॰ रामोजगामवेगेनकुंभजस्यानुजाश्रमं॥मान
वृद्धेश्वजीवस्यकदापिरघुनंदनः॥२३॥

भा॰टी॰ - जलदी रामजी अगस्त्य मुनीके छोटेभाईके आश्रमपरजा तेभये कभी जीवके अभिमानकी वृद्धि होतीहै सोई अगास्त्यको भाईहै॥२३॥

श्लो॰ दीनस्वभावोजीवानांसोगस्त्योमुनिसत्तमः॥
मानवृद्धिःकदातस्यसोगस्त्यस्यानुजःस्मृतः॥२४॥

भा॰टी॰ - जीवोको स्वभाव बडा गरीबहै सोई अगस्त्य मुनिहै जीवों केकभी मानकीवृद्धि होतीहै सो अगस्त्यको छोटाभाईहै॥२४॥

श्लो॰ तस्मैसन्मार्गमुद्दिश्यकुंभजाश्रममागतः॥पू
जितःकुंभजेनैवरामोदीनदयागुणैः॥२५॥

भा॰टी॰ - तिस अगस्त्यकेभाईकुईश्वरके भजनरूप रस्ता बताय-के रामजी अगस्त्य मुनिके आश्रम पर आए-जीवोंको दीनस्वभाव जो अगस्त्यहै सो दीनको गुण दया आदि बडे उत्तम धर्म तिसकरि के रामजीको पूजन करतेभये॥२५॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ अगस्त्यवचनाद्रामोजग्राहैन्द्रं महद्धनुः ॥ राक्ष
सानांविनाशायसमन्तालक्ष्मणोविभुः ॥२६॥

भा॰टी॰ - रामजीनै अगस्त्यकी वचन मानकर राक्षसोंका नाशकर
नेवास्ते समरूप इन्द्रकोधनुष ग्रहण करतेभये ॥२६॥

श्लो॰ अगस्त्याज्ञांचसंगृह्यरामोगोदावरींययौ ॥
याददातिस्वयंगाम्बेनिर्मलांसततंस्थिताम् ॥ दृ
ष्टिम्ब्रह्मस्वरूपेचसावैगोदावरीस्मृता ॥ २७॥

भा॰टी॰ - जोकोई वस्तु आपहीसें ब्रह्मके स्वरूपमें नित्य वास
कर्नेवाली औरनिर्मल दृष्टिदेवै उस्कूं गोदावरी नदी शास्त्रमें क
हतेहैं सोरामजीने अगस्त्यमुनिकी आज्ञा पायके ऐसी गोदा
वरी नदीकूंजातेभये ॥२७॥

श्लो॰ उदासीनमतिर्ब्रह्मन्सावैगोदावरीनदी ॥ वि
हर्षोमन्दभावश्चगोदावर्यास्तटौस्मृतौ ॥२८॥

भा॰टी॰ - संसारमेंउदासीनमति राखनाकि हेभगवन् संसाररूप-
वंदीघरसें मेरेकूं कब छुडावोगे ऐसीमतिजोहै सोई गोदाव-
रीनदीहै संसारके सत्यरूप चरित्रकों देखके हर्ष नही मानना त
थापशूसरीके आपने देहमें मंदता हानि मानना ये दोनों गोदा
वरीके तटहैं ॥२८॥

श्लो॰ अनुद्वेगजलेनैवपूर्यमानादिवानिशम् ॥ क्ष
मालंबंचरामस्य लक्ष्मणस्यसकोमलम् ॥२९॥

भा॰टी॰ - दुःखकोंपायके जीव उद्वेगकों नप्राप्तिहोवे सोगोदावरीको
जलहै तिस जलकरिके रातिदिन पूर्ण रहतीहै क्षमाको आलंबतो
रामजीको और कोमलस्वभाव लक्ष्मणको ॥२९॥

श्लो॰ सत्संगस्मारिणीबुद्धिः साबभूवद्वयोस्तदा ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तत्रानंदयुते वासे संस्थिते रघुनन्दने ॥३०॥

भा॰टी॰ - इन दोनो लक्ष्मणो करिके दोनों भाइयोंकी रातदिन सत्संगके स्मरणमें बुद्धि होती भई॰ तिस गोदावरीके तटपर आनंदसें रामजीको स्थित भये संते ॥३०॥

श्लो॰ किंचित्कालंव्यतीतंचस्मरवमानंदचिन्तनम्॥
दुर्मतेस्तनयाक्रूरादुःसंगेच्छातिक्रूरिणी ॥३१॥

भा॰टी॰ - आनंदरूप भगवानको चिंतना करते सन्ते दुर्मतिजो॰ कैकसी तिसकी लडिकी खोटाकर्म की संगतिकरनेकी इच्छा बडी क्रूर ॥३१॥

श्लो॰ आजगामातिवेगेन रावणस्यसहोदरी॥ रामस्यसन्निधिंदुष्टादुष्टकामेनतापिता ॥३२॥

भा॰टी॰ - ऐसी रावणकी बहिण शूर्पनखा बडेवेगसें रामजीके सामने आती भई रामजीको सुंदर कर्म देखके उस्कों दुष्ट कर्म॰ मालुम पडा सोदुष्टकर्म कामदेव करिके जलिरहीहै ॥३२॥

श्लो॰ उवाचवचनंस्निग्धंपतिर्मेभवराघव ॥ सुखंभोक्ष्यसिचात्यन्तं मयानीतं निरंतरम् ॥३३॥

भा॰टी॰ - इसके रामजीसें बोली हे रामजी तुम मेरे पति होवो॰ मै संसारमें ऐसा सुंदर सुंदर बुराकर्मको सुख लै आऊंगा॰ उस सुखकूं आप भोगोगे॰ बहुत करिके ॥३३॥

श्लो॰ इत्येवमुक्तस्तयारघूत्तमःप्रोवाच तामस्मि सपत्निकोत्यहम् ॥ सहोदरोयंममनेपुरस्थितः करिष्यतेतेसकलंविचिंतितम् ॥३४॥

भा॰टी॰ - शूर्पनखा करिके ऐसे कहेजो रामजीहै सो बोलते भये॰ किहे दुःसंगकी इच्छा मेरे तो स्त्रीहै॰ तेरे सामने येहमारा भाई खडा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

है- सो तेरा संम्पूर्ण विचार सिद्ध करेगा- रामजीने विचार किया- कियह दुःसंगसें छूटजावेतो अच्छाहोवे- इसवास्ते संतोषरूप लक्ष्मण के पास भेजदेते भये कि संतोषकी संगति पायके इसकी बुद्धि निर्मल होजावेगा- ॥३४॥

श्लो० रामेणप्रेरिताबालासाययौलक्ष्मणान्तिकं॥
तिरस्कृतालक्ष्मणेनपुनरायात्तदन्तिकम् ॥३५॥

भा-टी- -रामजीकी आज्ञापायके लक्ष्मणके पास गई- लक्ष्मणने विचार कियाकियह जन्मजन्मांतरकी बिघडीहै इस कूंमे कुछ शिक्षाभी करूंगातो मेरी शिक्षा मानेगानहीं- इसवास्ते पास- नही आने देई तो फिर रामजीके सामने गई॥३५॥

श्लो० भ्रम्याविभ्रामितातत्रश्रुतवत्यापुनःपुनः॥प्र
दुद्रावातिवेगेनभक्षितुंजनकात्मजाम् ॥३६॥

भा-टी- - राम लक्ष्मणनें उस्के कर्म मुनियोंसे पहिले सुनरखे- थे सोई श्रवणरूपजो भ्रमीनाम हिंडोलाहै तिस हिंडोलना करिके वारंवार रामजीके पाससें लक्ष्मणके पास लक्ष्मणकेपा- ससें रामजीके पास फिरती भई- तब परमेश्वरकी भक्तिरूपजो जानकी तिस्कूं खानेवास्ते दौडती भई खाना क्याहै जानकीको ईश्वरमें प्रेमहै उसकों बिगाड देना- ॥३६॥

श्लो० दुरालापदुराचारौतच्छ्रोत्रौलक्ष्मणस्तथा॥
चकर्ततत्क्षणेशीघ्रंनाशिकांचापिदुर्गमाम्॥३७॥

भा-टी- -तब लक्ष्मणनें क्रोध करिके जलदी शूर्पनखाके दोकान शुभ कर्ममेंजो प्रीतिहै सोई नखारहै तिसतखारसें काट लेते- भये- कैसे कानहै दुष्टवचन साधुचोंको शूर्पनखा बोलतीहै- एककान तो खोटा बोलहै- दूसराकान सज्जनोको अनेक उपाय-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

करिके खोटा आचार शिखानेको बिचार करती है· ॥३७॥

श्लो॰ दुराश्रवणमेमाद्यांशुभप्रीत्यासिनासुधीः॥
श्रोत्रादिवासनायुक्तैरक्तैश्चैवकुकर्मभिः॥३८॥

भा·टी· - तथा बडे दुःखसें भगवानकी चटीवस्तुकी सुगंधि लेनाऐसी नाकभी काट लेते भये· कैसी नाक है· रातदिन सूर्पनखा खोटे कर्मोंकी कथा सुनती है सोई नाक है· दुष्ट संगतसें कान आदि इंद्री भ्रष्ट होगई उनकी वासनाको अर्थ तथा खोटी इन्द्रीसें खोटा कर्म कर्ना ये दोनो रक्त है· इसी रक्तकरिके शूर्पनखा लाल होगई है यह श्लोक दोयका अर्थ मिला है इस्कूं व्याकर्णमे कुंलक कहते हैं·

श्लो॰ रक्तांगीसा प्रदुद्रावप्राप्तारवरसभास्थलम्॥
खरस्याग्रेनिपतिता रुरोदबहुसस्वरम्॥३९॥

भा·टी· - शूर्पनखा उसरक्तसें लाल होके पेस्तर बर्णन भये जो खर· आदिराक्षस तिन्होकी कुमति रूप सभा है· तिस सभाकों शूर्पनखा गई· खरके आगे पडिके बडे उच्चस्वरसें रोनें लगी· ॥३९॥

श्लो॰ खरादिभिश्चसंपृष्टावर्णयामाससर्वशः॥राम
लक्ष्मणयोःकृत्यंनाशिकाकर्णकृन्तनम्॥४०॥

भा·टी· - खर आदि राक्षसोनें शूर्पनखासे पूछते भये तब राम· लक्ष्मणको कर्म तथा अपनी नाक कानकी काटनेकी हाल कहती भई॥४०॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेपं॰शिवसहाय बुधविरचिते आरण्यकांडेसम्वर्तवरतन्तुसंवादेप्रथमोमोक्षोपानः॥१॥· श्रीरस्तु

वरतन्तुरुवाच श्लोक· जारधूर्त्तमदापानाद्यायुः

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

खररूपिणः॥ चतुर्दशमहासैन्यैरेषाम्प्रीतिसमुद्भवैः॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि फिर बोलते भये॰ जार, द्यूत, मद्यकोपान-आदिलेके पहिले वर्णन भये इनसब बुराकर्मोंका रूपजो खर-आदि राक्षस सोई जार द्यूतादि कर्मोंकी अनेक प्रकारकी प्रीतिसें उत्पन्न हुयेजो बुरेकर्म बहुत तिनमेंसे १४००० हजारसेना लेके रामजीसें युद्ध कर्नेकों आते भये॥१॥

श्लो॰ जानकीभयसंयुक्ता छायामभ्यासनिर्मितां
जगामलक्ष्मणेनैवसार्द्धं सातरसागुहाम्॥२॥

भा॰टी॰ - इन दुष्टोंको देखके जानकी डरायके नित्य भगवानमेंमिलनेवास्ते अभ्यास करतीहै उसअभ्यास करिके बनाईजो भगवानकी बहुतसें थोडी छायारूप कृपा सोई गुहाहै तिसगुहामें लक्ष्मणको संगलेके गई॥२॥

श्लो॰ गुहागतान्निरीक्ष्यैवरामोजनकनन्दिनीं॥जघानखरसैन्यन्तंक्षणेकेनरघूत्तमः॥३॥

भा॰टी॰ - गुहामें प्राप्ति हुई जानकीको रामजीने देखके एकक्षणमें खरकी सेनाकों मारते भये॰॥३॥

श्लो॰ हतसैन्यास्तुतेदैत्यारामंहन्तुंसमुद्यताः॥
तेपिरामेणनिहताःपतिताःपृथिवीतले॥४॥

भा॰टी॰ - आपनी सेनाकों मरी देखके राक्षस सब रामजीकोंमारनेवास्ते दौडतेभये॰ तिन सबकोंभी रामजीने मारडाले॰ राक्षसभूमिपर पडगये॥४॥

श्लो॰ हतेषुतेषुसर्वेषुराक्षसेषुखरादिषु॥तत्सैन्यमपिदृष्टासानिहतंपतितम्भुवि॥५॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - शूर्पनखाने सेना सहित खर आदि सब राक्षसोंकों मराजानिके तथा पृथ्वीमें पडेदेखके ॥५॥

श्लो॰ दुःखिताश्रुविमुञ्चंतीपतिनासखलितापथि॥
रुदतीलक्ष्मणेनैवछिन्नकर्णान्तनाशिका ॥६॥

भा॰टी॰ - तबशूर्पनखा लक्ष्मणकरिके नाक कान कटीहुई रोती गिरती पडतीभई॰॥६॥

श्लो॰ जगामवेगेनसहोदरीदरीदुःकर्मप्रीतिस्थितिमुक्तमाम्पुरीम्॥ लंकाम्मनोरावणपाणिपालितांसभास्थितम्वाक्यमुवाचभ्रातरम्॥७॥

भा॰टी॰ - दुष्टकर्ममें हठकरिके ठरना ऐसी लंकापुरी तथा मनरावणकरिके पालितहै ऐसी लंकापुरी कों जलदीगई॰ हठतें दुष्टकर्ममें चेष्टारूप जो मनरावण आदि राक्षसोंकरिके सोभित रावणकी सभा तिससभामे बैठाजो शूर्पनखाको भाई रावण तिस्सें शूर्पनखा बोली॥७॥

श्लो॰ त्वं क्रूरबुद्धेमदपानमादितोनबुध्यसेशत्रुगणंसमागतम्॥ विकर्त्तयित्वाममकर्णनाशिकां सहानुजेनैवसपत्निकःस्करवी॥८॥

भा॰टी॰ - हेदुष्ट मदिरापीके तूं मस्त होगयाहै॰ तेरानाश कर्नेवाले वैरी आयगया॰ परंतु तेरेकों मालूम नहीहै॰ तेरावैरी अपने भाईसें मेरीनाक कान कटायके स्करवसें भ्रातास्त्री सहित गोदावरीपर बसताहै॥८॥

श्लो॰ पुत्रौदशरथस्यैवअयोध्याधिपतेःशुभौ॥
रामलक्ष्मणनामानौराक्षसान्हंतुमागतौ॥९॥

भा॰टी॰ - अयोध्याके राजा दशरथ तिसकेपुत्र दोहै राम १ लक्ष्म

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ण २ यह नामहै राक्षसोंको नाश करने वास्ते आयेहै ॥ ९॥

श्लो॰ ताभ्यांकिमर्थंतेनासाकर्णौचैवविकर्तितौ॥
वर्णयामाससर्वंसाचरितंतस्यचात्मनः॥१०॥

भा॰टी॰ - मन रावण पूंछताहै तेरा कान नाक उन दोनोंनें किसवास्ते काटे तब शूर्पनखा अपना चरित्र तथा रामजीको चरित्र वर्णन करतीहै ॥ १०॥

श्लो॰ विचार्यहृदयेस्वीयेरावणःक्रूरशासनः॥किंचित्संस्मृत्यचात्मानंज्ञानदृष्ट्यासुरोत्तमः॥११॥

भा॰टी॰ - शूर्पनखाका बचन सुनके बडे कठिनसे शिखावे योग्य जोरावण असुरोंमें उत्तम सो ज्ञानदृष्टि करिके अपने आत्माको विचारिकै किमै ऐसे सर्वेश्वरको पार्श्ववर्तीहों ॥ ११॥

श्लो॰ रूपभक्तेश्चजानक्याःसौंदर्यंब्रह्मभावनम्॥
तेनकामेनसंतप्तोममाप्येवभवेत्कदा॥१२॥

भा॰टी॰ - कैसारावणहै ब्रह्मकी भक्तिरूप जानकी तिसकी सुंदरताजोहै सोई ब्रह्ममें भावहै उस ब्रह्मके भावरूप कामदेव करिके बहुत तप्त होरहाहै यह विचारताहैकि ऐसा ब्रह्मको भावमेरे भी कभी होजावे ॥ १२॥

श्लो॰ तदाहंभवसंसारान्मुक्तोयास्यामिस्वांगतिम्
एवंनिश्चित्यमनसाहर्तुकामश्चजानकीम्॥१३॥

भा॰टी॰ - तब मैभी संसारसें छूटके आपनीगतिमें चला जाऊ ऐसा आपने मनमें निश्चय करिके जानकीकों हरन कर्नेवास्ते ॥ १३॥

श्लो॰ रथारूढोजगामैकोरात्रौकामविमोहितः॥
मदान्धनायांप्रययौमारीचस्यान्तिकंद्रुतम्॥१४

भा॰टी॰ - रात्रिको ब्रह्ममे भावरूप कामसें मोहित मनरूपरावण

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अभिमान करिके अंधकार रूप रात्रिमें रथमें बैठके अकेलाज लदी अहंकार रूपजो मारीच तिसके सामने गया॰॥१४॥

श्लो॰ मारीचस्तन्दद्दर्शाथ दुराचाररथेस्थितम्॥
तद्धर्षवाजिभिर्युक्तेगर्द्दभैश्चकुकर्मभिः॥१५॥

भा॰टी॰ - कुकर्म रूप खच्चर करिके तथा रथके हर्षजो घोडे तिन करिके संयुक्तजो भ्रष्ट-आचार रूप रथ तिसमें बैठके रावण मारीच केपास गया॰ तिसकूं मारीच देखताभया॥१५॥

श्लो॰ समुत्थायादरंचक्रेपृष्टोवाचदशाननः॥ भगिनीदुर्दशांचैवखरादीनांवधंतथा॥१६॥

भा॰टी॰ - रावणकों देखके मारीच उठके आदर किया॰ और आने को कारण रावणसें पूछताभया॰ तब रावणने शूर्पनखाकीदुर्गति तथा खरआदि राक्षसोंका मरण सबकहनेलगा॰॥१६॥

श्लो॰ जानकीहरणार्थायसमायातस्तवांतिकम्॥
विचित्रमृगरूपस्त्वंभवतानमयेरितः॥१७॥

भा॰टी॰ -किजानकीकों मै हरण करूंगा॰ इसवास्ते तुमारे पास मै आयाहूं॰ हे भाई हमारी आज्ञा तुम मानिके चित्रविचित्र मृगबनो॰

श्लो॰ श्रुत्वादशाननोक्तिंचमारीचोमानगर्वितः॥
स्वनाशभयभीतेनकर्मणातंव्यबोधयत्॥१८॥

भा॰टी॰ - बडा अभिमानी जो मारीच सो रावणकी वचन कों सुनिके कहाकी हे रावण जो कर्म तुमने विचारेहो तिसकरिके मेरा मरण होगा॰ और तुम दुःख पावोगे॥१८॥

श्लो॰ बोधितोपिदशग्रीवोनबुबोधमहाबली॥ भयाद्भूवमारीचः कुविचारो मृगोद्भुतम्॥१९॥

भा॰टी॰ - बडाबलवानजोरावणहै सो मारीचकी वाक्यकों सुनि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

केनहीमाना तब मारीचनें जानाकी। जो मैं फिर कुछ ज्ञान देउंगा तो मेरेकुं मारडालेगा-ऐसे भयसें खोटाबिचार रूप मृग होगया-

श्लो० कुमार्गतनयैर्युक्तः परपीड्यादिरोमभिः॥ भूरिभिर्दुःखदैः पादैः कुवाक्य छल वंचनैः॥२०॥

भा-टी- - खोटा मार्गजोहै सोई दुष्ट पुरुषहै तिस्के दूसरेजीवोंकों दुःखदेनेवाले आदिपुत्र जैसा ईर्षण मत्सरता चुगली इन आदि औरजो दुष्टहै सोई रोम भयेहै तिस रोमों करिके युक्तहै-औरखोटीवचन बोलना- छलकरना- कपट करना-ठगाई करना ये-च्यारि पगहै इन्हो करिके युक्त मारीचहै॥२०॥

श्लो० कुरावकुशलाशोभाकुतृष्णाबिन्दुरंकितः॥ सत्तिरस्कारपुच्छेनसंयुतोऽधर्मचंचलः॥२१॥

भा-टी- - खोटावाक्य बोलनेमें चतुराई सोई मारीचके देहकी शोभाहै-बुरे कामोंकी बहुत तृष्णा सोई बिंदू है तिस्का कालापीला सफेद आदि अनेक प्रकार करिके चित्र विचित्र होरहाहै- सत्पुरुषोंका तिरस्कार सोई पूंछहै तिस पूंछ करिके युक्तहै अधर्म सोई चंचलस्वभावहै तिस करिके बहुत चंचलायमानहै॥२१॥

श्लो० सदानादरहास्याभ्यांशृंगाभ्यांशोभितःखलः जगामरामवसतिंतन्दृष्ट्वाजनकात्मजा॥२२॥

भा-टी- - सुंदर कर्मकों जैसा विद्यादान तलाव कूवा धर्मक्षेत्र-आदि औरकर्म तिनको अनादर तथा हँसी करनाये दोसींगहै-ऐसी सींगकरिके खल मारीच शोभित होरहाहै- ऐसा रूप बनायके रामजीकी पर्णकुटीके सामने गया- तब तिस मारीचकों देख के जानकी॥२२॥

श्लो० लुलोभसहसादेवीस्वकार्यालिंचिदातुरा॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

बभूवप्रेरयामासरामंतद्ग्रहणेसती॥२३॥

भा-टी- - अपने काजतें थोरी आतुर होके लोभकूं प्राप्ति हुईजो जानकी सो विचार कियाकि मन रावणको भेजा आयाहै अब रामजी रावणकों मारेगे तो घर२ प्राणी २ प्रति हमारी वृद्धि होवैगा सबमें हम बसेगे- रामजीसें जानकी बोलीकि इस मृगकों पकडके ले आवो २३

श्लो० करुणापृथिवीदुःखसंहारंरघुनन्दनः॥प्राप-
मोहंविचलितस्तद्धेग्रहणायवा॥२४॥

भा-टी- - दयारूपजो पृथिवी तिस्का दुःख संहार रूप मोह कूं रामजी प्राप्ति होके मृगाको पकडना अथवा मारना इसवास्ते चलते भये

श्लो० सन्तोषलक्ष्मणेनैवस्वस्थत्वेननिवारितः॥
स्वीकृतन्नैवरामेणगत्वासंधातितोमृगः॥२५॥

भा-टी- - संतोषरूपलक्ष्मणको संसारमें समस्वभाव है उसी स्वभाव करिके रामजीकों मनाकिया- कि आप इस मृगकूं मारनेवास्ते मति जावो- लक्ष्मणकी विनयकों रामजीनहींमाने- और जायके मृगकों मारतेभये॥२५॥

श्लो० आविर्भावंकदाकुर्वन्कदान्तर्ध्यानमेवच॥मा
नप्रीत्याविप्रीत्याचधावन्वेगतरंहतः॥२६॥

भा-टी- - मृगने अभिमानकी प्रीति कभीथोरी कभीज्यादा करिके भागता भया सोई मृगको दोडनाहै तथा गुप्त होनाहै- ॥२६॥

श्लो- हतोहालक्ष्मणेतीवप्रोवाचमृगसत्तमः॥वि-
वेकंचैवसंस्मृत्यतत्तनौप्रविवेशह॥२७॥

भा-टी- - मृगने मरतेबखत हासंतोषरूप लक्ष्मणमैने बहुतपाप किया सोआपक्षमाकरो- ऐसा शब्द बोलताभया- सोई लक्ष्मणको पुकारनाहै- तथा विवेकको स्मरण करिके अभिमान रूप मारीच

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शरीरकों त्यागिके रामजीकी शरीरमे मिलगया ॥२७॥

श्लो॰ अहंकारसुताःसर्वेनमयावर्णितुंक्षमाः॥ ते पितुर्मरणंदृष्ट्वारावणंचैवसंश्रिताः॥ चक्रुर्विनाशनंसर्वेसज्जनानांमहोद्यमाः॥२८॥

भा॰टी॰ - अभिमानरूपजो मारीचहै तिस्के पुत्रोंको वर्णन करनमें मेरी सामर्थ्य नहीहै॰ मारीचको मरण देखके मारीचके पुत्र जो बुरेकाजहै सब इकट्ठा होके रावणकेपास जायके साधुवोंका नाश करने लगे॥२८॥

श्लो॰ निहत्यरामोमृगरूपधारिणंत्वचञ्चलेभेमृगदेहसंश्रिताम्॥ देहंत्यजन्हारवलुलक्ष्मणेति प्रोक्तं वचःश्रुत्यविसिस्मयेहृदि॥२९॥

भा॰टी॰ - रामजीने अभिमानरूप मारीचकों मारिके मृगाकी देहकी खालनही पाए तथा मृगने देह त्यागते बखत लक्ष्मणकों पुकारताभया॰ उस शब्दकूं सुनिके रामजीके मनमें बडी विस्मय होगया॥२९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेपं॰शिवसहायबुधविरचिते आरण्यकांडे मारीचवधेद्वितीयोमोक्षोपानः॥२॥

वरतन्तुरुवाच श्लोक॰ हालक्ष्मणेतिसंश्रुत्यजानकीव्यग्रमानसा॥ दीपार्चिःपवनेनेव बभूवव्यथितासती॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तमुनि बोले हेसंवर्त सुनो॰ हालक्ष्मणऐसाशब्द सुनकेजानकी ने बिचार कियाकि अभिमान बडाबलवानहै॰ बडे॰ बडेयोद्धोंकूं जीतलिया॰ सो मेरेप्राणनाथजो विवेकरूप रामजी॰

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तिनको भी जीतलिया सो दुःखी होके संतोषरूप लक्ष्मण को आपनी रक्षा कर्नेवास्ते बुलाते हैं ऐसा विचारसें दुःखी होगई जानकी जैसा हवा करिके दीपकी जोति कांपती है तैसे ही जानकी दुःखी होकर कांपनेलगी ॥१॥

श्लो० उवाचवचनंस्निग्धंकिंचिच्चलितपौरुषम्॥ गच्छलक्ष्मणतेभ्रातारक्षसेनैवपीडितः॥२॥

भा०टी० थोरा लक्ष्मणकोंभी पुरुषार्थ चलायमान होरहाहै मारीच की बचन सुनिके ऐसेजो लक्ष्मण तिनसें जानकी बोली हे लक्ष्मण जलदी जाओ तुमारे भाईकों राक्षस दुःख देताहै ॥२॥

श्लो० त्वांसमाह्वयतेशीघ्रंप्राणांत्यक्ष्यामितम्विना॥ उवाचलक्ष्मणोदेवींनैवंभवतिकर्हिचित्॥३॥

भा०टी० - दुःखी होके वे तुमकूं पुकारते हैं रामजीविना मैं मरजाऊंगा लक्ष्मण बोले हे देवि रामजी कभी दुःखी नही होवैगे ॥३॥

श्लो० नहंतारंप्रपश्यामिरामस्यभुवनत्रये॥ तयोक्तोलक्ष्मणस्तूर्णंमांगृहीतुंसमागतः॥४॥

भा०टी० - हे देवि तीन लोकमें रामजीकूं मारनेवाला कोई मैं नही देखताहूं ऐसी लक्ष्मणकी वचन सुनिके जानकीकी बुद्धि मली न होगई सोई मलीन रूप ग्रहण कर्नेको जानकीने कहाकि हे लक्ष्मण तुमविचारते हो कि विवेकरूप रामजीको अंतकाल होजावे तो हम जानकीकों लेलेवें सो भाई ऐसा नही होगा ॥४॥

श्लो० एवमुक्तेतुजानक्यागतेदूरेचलक्ष्मणे॥ तिरस्कारकृतेदूरे आजगामदशाननः॥५॥

भा०टी० - ऐसी भेदरूप बचनजानकीके कहेसें ते लक्ष्मण रामजीके पास कूंचले तबजानकीनें लक्ष्मणको तिरस्कार किया

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सोई दूरहै तिस दूरकूं लक्ष्मण गये तब रावण जानकीके पास-
आताभया-॥५॥

श्लो० महार्जवंचसन्यासंतद्धृत्वागाद्दशाननः॥तत्प्रे
मभस्मनाछन्नंतद्धृत्वाकमंडलुम्॥६॥

भा-टी- बडा कोमल स्वभाव सोई सन्यासहै-तिस सन्यासकोरू
पधरिके जानकीके पास मनरूप रावण आया- उस कोमल स्वभा
में प्रेम सोई विभूतिहै- तिसविभूतिको देहमें लगायेहै- तथाउ
सीविभूतिमें स्नेहबढाना सोई रावणको कमंडलुहै-॥६॥

श्लो० शौचंवस्त्रंचसंधृत्यशुद्धगैरेयरंजितम्॥भि
क्षांकपटप्रीतिंचयाचेजानकीन्तदा॥७॥

भा-टी- - देहमें पवित्रता राखना सोई वस्त्रहै- शुद्ध स्वभावसो-
गेरुहै उसीगेरुसें शौच रूप कपडा रंगेहै- ऐसा रूप धरिके कप
टरूप भिक्षा जानकीसें मागताभया॥७॥

श्लो० दयावर्द्धनंनिर्दयायाश्चत्यागन्ददौजानकी-
साधवेकन्दमूलं॥नजग्राहकामातुरोहर्तुकाम
स्तदाजानकींक्रूरवाक्यंसमूचे॥८॥

भा-टी- - तबजानकीने दयाको बढाना रूप कंद निर्दयाकूंछो-
डनारूप मूल साधुजानके रावणकूं देनेंलगी- तब पहिले ग्रहीन
हुयाजो काम तिस्कामकरिके आतुर होरहाहै रावण- सोजान
कीकों हरण करनेकी इच्छा करिके जानकीकूं चिढानेवास्ते खो
टीखोटी बचन बोलता भया॥८॥

श्लो० किंकरिष्यसिरामेणवनस्थेनसदुःखिना॥मां
भजस्ववरारोहेराक्षसानामधीश्वरम्॥९॥

भा-टी- - हेजानकी बनमे रहने वाले रामके संग तेरेकों कुछ सुख

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नहीहै राक्षसोंका मालक जो मैं हूं सो मेरी स्त्री तूं होजा ॥ ९ ॥

श्लो० इत्युक्त्वादर्शयामासस्वरूपंराक्षसाधिपः ॥
पूर्वोक्तंबालकांडेच दशास्यम्वैशहास्तिकम् ॥ १०

भा-टी- - ऐसा कहिके जानकीकूं रावणने अपना स्वरूप दिखाया: कैसा स्वरूपहै बालकांडमे पहिले दशमुख वीशभुजा वर्णन भयाहै सो स्वरूप ॥ १० ॥

श्लो० तन्दृष्ट्वाजानकीभीताश्रुतपूर्वंखलंसती ॥
उवाचधैर्यमालम्ब्ययदित्वंरावणःखलः ॥ ११ ॥

भा-टी- - पहिले मुनियोंसें जानकीनें रावणको रूप सुनि रखा था: उसी रावणकूं देखके बहुत डरायके जानकी धीरज धरिके बोली हे दुष्ट जो तूं रावणहै ॥ ११ ॥

श्लो० क्षणंतिष्ठात्रमेभर्तासत्वरश्चागमिष्यति ॥
नाशयिष्यतितेगर्वमित्युक्तश्चतयातदा ॥ १२ ॥

भा-टी- - तो एकक्षण हमारे सामने तूं खडारह हमारापति जलदी आवेंगे तो तेरे अभिमानको नाश करेंगे ऐसी बचन जानकी रावणको कहती भई ॥ १२ ॥

श्लो० जानकीमूर्द्धजांगृह्यरामपादाब्जसन्नतिं ॥
करेनैकेनचोरुंचरामरूपनिरीक्षणम् ॥ १३ ॥

भा-टी- - तब रामजी के चरण कमलको वारंवार नमस्कारकी प्रीति सोई ईश्वरकी भक्तिजानकीकी चोटी है तिस चोटीकूं एक हातसें पकडके तथा रामजीके रूपको वारंवार देखना सोई जानकीकी जंघाहै तिस जंघाको ॥ १३ ॥

श्लो० द्वितीयेनाशकसंगृह्यस्वरथेस्थाप्यकामतः ॥
ययावाकाशमार्गेणज्ञानशून्यत्वदाचसः ॥ १४ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - तिस जंघाकों दूसरे हातसें पकडके आपनी रथमें बैठायके ज्ञानसें हीनजो हृदय सोई आकाशहै तिस आकाशमार्ग करिके जानकीकों लेचला॰ ॥१४॥

श्लो॰ हारामराजीवदलायताक्षत्वयाविहीनाविधिनाकृताद्यहम्॥ वियोगचिंतातवपादपद्मयोश्चिरंसदातिष्ठतिमानसेमम॥१५॥

भा॰टी॰ - जानकीविलाप करतीहै हेरामजी ब्रह्मदेवने आपुकरिके हमकूं हीन करदिया॰ आपुके चरण कमलकोवियोग मेरे चित्तमे टिका रहेगा॰ ॥१५॥

श्लो॰ एवमादीनिबहुधाविलापानिचजानकी॥ कुर्वतीरथमध्यस्थारक्षोपतिविमर्दनम्॥१६॥

भा॰टी॰ - इसप्रकारको बहुत विलाप रावणके रथमें बैठी हुई जानकी करतीभई॰ रावणको तथा दुष्टराक्षसोंका नाश रूप विलाप॰ जानकी करतीहै ॥१६॥

श्लो॰ दुष्टकर्मोद्भवाम्प्रीतिंहठजांस्वपुरींबलः॥ सत्वरोगन्तुकामश्चलंकांराक्षससत्तमः॥१७॥

भा॰टी॰ - दुष्टकर्म सेउत्पन्नजो प्रीतिरूप हठ करिके ठरना ऐसी जो लंकापुरी तिस्कों जानकीकों लेजानेकी इच्छा किया॥१७॥

श्लो॰ दुर्लक्षणोजटायुश्चदुर्ज्ञानोद्भवमामिषम्॥ दुर्वाक्यतुंडेनसदायोभुनक्तिनिरंतरम्॥१८॥

भा॰टी॰ - तब दुष्टजीवोंको लक्षणजोहै सोईजटायुनाम गीधहै तथादुष्ट ज्ञान जैसे विचारना किचोरीमें धन कमाना॰ परस्त्री भोगना॰ इत्यादि और अनेक बुरे कर्म है तिन्होंकरिके उत्पन्नजो कर्म सोई मांसहै॰ खोटी बचन बोलना सोई चोंचहै॰ ऐसे चोंच करिके

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

उस मांसकों रोज जटायु गीधखाता है॥१८॥

श्लो० दुश्चेष्टेहाकृतौपक्षौतत्सुतौचरणौस्मृतौ॥ए
तादृशौजटायुश्चकृत्वातेन सभाषितम्॥१९॥

भा-टी- - दुष्टकर्ममेंचेष्टा तथा दुष्टकर्मकर्नेकी इच्छा येदोनो जटायु के पक्षहै· इनदोनों चेष्टातथा इच्छाके जो पुत्र नरकमें पडना तथा कुयोनिमें जन्मलेना येदोनो जटायुके दोपगहै ऐसा जटायु रावण सें संभाषण करिके॥१९॥

श्लो० पातितोरावणस्तेनसवाक्यसंगरेरथात्॥पु
नश्चोत्थायवेगेन गृहीत्वाजनकात्मजाम्॥२०॥

भा-टी- - सुंदर वचनरूप युद्ध करिके रावणकों रथसें जमीनमें ज-टायुने गिराय दिया· तब रावण जलदीउठके जानकीकों पकडिके रथ मेंबैठगयाक्यूंकि जब रावणकों जटायुने गिराय दिया तब जानकीभी रथसें पडुगयीथी· भागनेवास्ते सोफिर पकडलिया॥२०॥

श्लो० पक्षौद्वौतस्यखड्गेन छित्वागात्वरितःपुरीम्॥
स्वैश्वर्यंनिश्चलाबुद्धिर्नमेमेकर्हिचित्कदा॥२१॥

भा-टी- - रावणने तरवारसें जटायुके दोनोपक्ष काटके लंकाकूंजा ताभया· मनरूपरावण ऐसा बिचारताहै कियह मेराऐश्वर्य कभी· नाशकूं नही प्राप्ति होवेगा॥२१॥

श्लो० नाशमेष्यतिसाशोकवाटिकारावणप्रिया॥
तदुद्भवाःसुखावृक्षास्तस्यांजनकनंदिनीम्॥२२॥

भा-टी- - नाशकूं नही प्राप्ति होवेगा ऐसीजो रावणकी बुद्धि सो अ शोक बागहै· रावणकोंबडीप्यारीहै· उसबगीचामेंउत्पन्न भयेजो सुख सोवृक्षहै· तिसबगीचामें जानकीकूं॥२२॥

श्लो० स्थापयामासदासीभिर्निन्देर्षासहनादिभिः॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कारयित्वाऽवनंतस्याश्चतुर्दिक्षुनिशाचरः॥ २३॥

भा·टी· - जानकीकूं अशोकबगीचामें रिकाताभया· क्या करिके ऐसीराक्षसीयोंसें जानकीकी रक्षाकरायके· कैसीराक्षसीहै परजीवकी निंदा· जीवकों स्फरबी देखके अपनी हृदयमें दुःखी होना· जीवमात्रसें प्रीति नहीं राखना इनआदि औरजो बहुत ऐसी मतिसो राक्षसी है

श्लो० निंदेर्षासहनासूया दुर्वांछाद्याश्चकोटयः॥
दास्यस्तस्यसमाख्यातावर्णितुन्नैवताः क्षमाः॥ २४॥

भा·टी· - दूसरे जीवकीनिंदा ईर्षा असहना· जीवउपकार करेतोभी निंदाकरना· जीवोंकों दुःख देनेकी इच्छारूप इन्हों आदि गिनती रहित इतनी रावणकी दासीहै॥ २४॥

श्लो० मृगंहत्वारघुश्रेष्ठो निवृत्तः स्वाश्रमंप्रति॥ मार्गे दृष्ट्वातदायातं लक्ष्मणंविह्वलोभवत्॥ २५॥

भा·टी· - अभिमानरूप मृगकों मारिके रामजी अपने आश्रमकूं चले तोरस्तामें लक्ष्मणकों आते देखके रामजी विह्वल होगये॥ २५

श्लो० उवाचाधैर्यसंयुक्तंवचनंरघुनन्दनः॥ कस्मात्तातत्वयात्यक्ताजानकीममवल्लभा॥ २६॥

भा·टी· अधीरजयुक्त वचन रामजीनें लक्ष्मणसें बोले· हे भाई हमारी प्राणसें प्यारी जानकीकों त्यागिके क्यों आए॥ २६॥

श्लो० उवाचलक्ष्मणःसर्वंकारणन्तत्सविस्तरं॥ सहतेनैवसंयातोरामःस्वाश्रममंडलम्॥ २७॥

भा·टी· - लक्ष्मणनें सब कारण बिस्तार पूर्वक कहतेभये· तबरामजी लक्ष्मणसहित अपने आश्रमपर आए· ॥ २७॥

श्लो० विलोक्यजानकीहीनंविललापाकुलेंद्रियः॥ गांभीर्य्यस्थैर्य्यस्वास्तिक्येचलत्वंकिंचिदात्मनः॥ २८

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा·टी· - रामजी अपने आश्रमपर आए सो जानकी करिकेही न देखते भये· तब अपनी शरीरकी स्थिरतासे तथा गंभीर स्वभावसें तथा अपने धर्मसें किंचितमात्र चलायमान होगये· सोई· विलापहै ॥२८॥

श्लो॰ एवंमहाविलापश्चरामलक्ष्मणसंकृतः॥गृद्ध्रं निपतितन्दृष्ट्वाचक्रेप्रश्नोत्तरंहरिः॥२९॥

भा·टी·- ऐसाविलाप राम लक्ष्मण करते भये· गीधकों भूमिमें पडा देखके उस्सें प्रश्नतथा उत्तर करते भये ॥२९॥

श्लो॰ अहंदुर्लक्षणोगृद्धः पातितोरावणेनवै॥जानकीरक्षणेशक्तस्त्वद्दर्शनजिजीविषुः॥३०॥

भा·टी· जटायु बोले हेरामजी, दुष्टोंको लक्षण रूप मैं गीध हूं· जटायु मेरा नामहै· जानकीकीरक्षा करनेमें मैंने कुछ पराक्रम किया तब मेरे कों रावणनें पृथ्वीपर गिरायदिया· आपके दर्शनकी इच्छा करिके अबतक मैं जीता रहाहै ॥३०॥

श्लो॰ इत्युक्त्वातत्यजे प्राणंगृद्धोरामसमीपतः॥रचित्वाप्रेमकाष्ठेनचितामास्थाप्यतम्प्रभुः॥३१॥

भा·टी· - गीधने ऐसे बचन रामजीसें कहे पीछे प्राणत्याग ताभया· तब रामजीको प्रेम जटायुपर बहुतथा तथा उसी प्रेमरूप काष्ठ करिके चिता बनायके उसी चितामें जटायुकूं बैठायके ॥३१॥

श्लो॰ ज्ञानाग्निनाचतन्दग्ध्वाभोजयामासपक्षिणः॥तज्जातिजान्महाक्रूरान्दुर्मर्षादीन्सहस्रशः॥३२

भा·टी· - ज्ञानरूप अग्नीसें जटायुकूं जलायके उसकी जाति जो दुष्ट कर्मकी भावना· तिस्मे उत्पन्न भये जो बडे क्रूर २ दुःख देने वाले अमर्ष कहें दूसरेके सुखको देखके जलना इनआदिलेके इनमेजो सं·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दरपक्षी बडे दुष्टोंमें दुष्ट तिनकूं बहुत हजार पक्षियोंकू रामजीनें भोजन करवाते भये ॥३२॥

श्लो॰ सदोपदेशिकेर्धर्मैर्भक्ष्यभोज्यैश्च भूरिशः ॥
भ्रेमतुः काननेवीरौसीतात्वेषणतत्परौ ॥३३॥

भा·टी· -रामजीने दुष्टकर्मोंकों ईश्वरके भजन रूप उपदेश देते भये· सोई उपदेश अनेकप्रकारके पकवान है· तिसकरिके पक्षियोंकों भोजन करायके जानकीके शोधनेवास्ते दोनो भाई बनमें भ्रमणकरते भये ॥३३॥

श्लो॰ सभि दनकबंधेनवेष्टितौरामलक्ष्मणौ ॥ अ-
सत्प्रशंसनारागभुजाभ्यान्दैवयोगतः ॥३४॥

भा·टी· -सुंदर धर्मकी निंदाकरना· ऐसा दुष्टकर्म सोई कबंध है· तथा दुष्टकर्मकी तारीफ कर्ना और उसी तारीफमें स्नेहकर्ना ये दो कबंधकी भुजा है· सो दैवयोगसें रामलक्ष्मणकों कबंधने आपनी दोनो भुजाकेवीच बांधलिया· ॥३४॥

श्लो॰ एकंचिच्छेदरामस्तुशिक्षाखड्गेनतद्भुजम् ॥
सूक्तासिनाद्वितीयञ्चचिच्छेदलक्ष्मणोभुजम् ३५

भा·टी· - कबंधकों रामजीने सुंदर धर्म शिखवाते भये· सोई खड्ग है तिसखड्गकरिके रामजी एकभुजा काटते भये· और सुंदर वचनरूपतरवारसें दूसरी भुजा लक्ष्मण काटते भये ॥३५॥

श्लो॰ छिन्नोभुजोयदातस्यतदाप्राणांससर्जह ॥ हिं
साविरहितैःकष्टैर्दयारूपाचिताकृता ॥३६॥

भा·टी· जब कबंधकी दोनो भुजा कटगई तब पहिले कथितजो कबंध है सो प्राणछोडता भया· तब रामजीनें कबंधकूं जलाने वास्ते जीव हिंसासें हीनजो कर्म· जैसे कथाश्रवण· मौनरहना· दुष्टकी संगत्यागना

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

इत्यादि सब काष्टहै· तिसकाष्ठसें चिता बनायके कैसीचिताहै· दयारूप· ॥ ३६ ॥

श्लो॰ रामेणसहभ्रात्रैवकृपाग्निदाहितोऽसुरः ॥ स द्रूपधारीविमलो ज्ञानानंदोबभूवह ॥ ३७ ॥

भा·टी· - लक्ष्मणसहित रामजी कबंधकेऊपर कृपाकरतेभये· उसी कृपारूप अग्नीसें कबंधकों जलातेभये· तब कबंध सुंदररूपधारण करिके ज्ञानमें आनंद भया ॥ ३७ ॥

श्लो॰ उवाचवचनंस्निग्धंजानकीप्राप्तिकारणे ॥ अग्रे तिष्ठतिराजेन्द्रशबरीभिल्लनंदिनी ॥ ३८ ॥

भा·टी· - जानकी के प्राप्ति होनेकी उपायरूप बचन बडी कोमल कबंध रामजीसें बोलाकि हे राजोंकें इंद्ररूप रामचंद्र इहांसे अगाडी थोडी दूरपर भीलकी कन्या शबरी रहतीहै· ॥ ३८ ॥

श्लो॰ तस्याश्रमंसमागच्छसातेसर्वंवदिष्यति ॥ इत्युक्त्वासगतःस्वर्गंसुरेंद्रभुजपालितम् ॥ ३९ ॥

भा·टी· - तिस शबरीके आश्रमपर आपजावो· तब जानकीके मिलनेकी संपूर्ण वार्ता शबरी आपसें कहेगा· ऐसा रामजीसें कहिके ईश्वरके शरीरमें जो स्वर्गलोकहै इंद्र करिके रक्षाहो रहीहै· ऐसे स्वर्गकों कबंधगया ॥ ३९ ॥

श्लो॰ निशम्यरामोपिकबंधभाषितंसलक्ष्मणोलक्ष्मणसेवितांघ्रिः ॥ जगामशीघ्रंशबरीशुभालयंश्रीजानकीजीवनवल्लभोहरिः ॥ ४० ॥

भा·टी· रामजीकबंधकीवचनसुनिके जलदी शबरीके आश्रमकोजातेभये·

इतिश्रीवेदान्तरामायणेआरण्यकांडेशिवसहायबुधविरचितेसंवर्तवरतन्तुसंवादे तृतीयोमोक्षोपानः ॥ ३

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अथ किष्किंधा कांड प्रारम्भः

वरतन्तुरुवाच श्लो० कबंधवचनंश्रुत्वारामोलक्ष्मणसंयुतः॥ पुनरन्वेषमाणश्चजानकीम्विरहातुरः॥१॥

भा०टी० - वरतन्तु मुनि बोले लक्ष्मण सहित रामजीनें कबंधकीवचन सुनिके दुःखी होयके फिरि खोटे स्वभाव रूप बनमें भ्रमण करते भये॥१॥

श्लो० महामोहो वनचरः सन्धर्मपशुहिंसकः॥ दुहितातस्यविप्रेन्द्रचंचलामतिरुत्तमा॥ शबरीसासमाख्यातासज्जनानाञ्चसंगतः॥२॥

भा०टी० - हेविप्रेंद्र स्नान ध्यान दान जप पूजा बिनय नमस्कार इन आदि ओरजो अनेक प्रकारके सुंदर धर्म तो सब पशु भयेहैं तिनकों मारनेवाला जो बडा मोह सोई भील है जीवोंकी चंचल मति उसकी कन्या है शबरी उसका नाम है सुंदर २ धर्म सो ब्राह्मण है तिन ब्राह्मणोंकी संगतकों शबरी करती भई॥२॥

श्लो० चकाररामचन्द्रस्यभक्तिंसाशबरात्मजा॥ तदाश्रमंजगामाशुरामोलक्ष्मणसंयुतः॥३॥

भा०टी० - उस संगतिके प्रभावसें रामजीकी भक्ति शबरी करती भई तिसके आश्रमपर लक्ष्मण सहित रामजी जाते भये॥३॥

श्लो० शबरीपूजयामासरामंसभ्रातृकंतदा॥ स्थैर्यस्वभावसाहित्यैःप्रार्थनेनविशेषतः॥४॥

भा०टी० - शबरीको स्वभाव धर्ममें बहुत स्थिर है अनेक दुःखपरे तौभी भगवानको भजनरूप धर्म छोडती नही उस धर्मरूप पूजनकी सामग्री करिके तथा बहुत प्रार्थना करिके लक्ष्मण सहित राम

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जीको पूजन करती भई ॥४॥

श्लो० शरीरंरामप्रेमाग्नौ दहन्वाक्यमुवाचसा ॥ रा-
मागेनलिनीम्पश्यसरश्चैवतदुद्भवम् ॥५॥

भा०टी० - रामजीको प्रेमशबरीके हृदयमें बहुत है उसी प्रेमरूप अग्नि करिके देहजलायके बोलती भई हे रामजी आपकी रस्तामें एक तलाई है उस्का पंपानाम है तथा उसी तलाईसें उत्पन्न भया एक तलाव है उस्का पंपासर नाम है इन दोनोंको आप देखोगे ॥५॥

श्लो० किष्किंधांचपुरींरम्याम्प्रवर्षणगिरिन्तथा ॥ आ
स्तेतस्यगिरेर्मूर्ध्नि सुग्रीवः कपिसत्तमः ॥६॥

भा०टी० - तथा बडी सुंदरि किष्किंधापुरी तथा प्रवर्षण पर्वत इनकूं आप देखोगे प्रवर्षण पर्वतके शिखरपर सुग्रीव नाम कपि टिकाहै

श्लो० तंगच्छजानकीनाथसस्तेकार्य्यंकरिष्यति ॥
इत्युक्त्वास्वतनुन्दग्ध्वागतास्वर्गंहृदालये ॥७॥

भा०टी० - हे जानकीनाथ तिस सुग्रीवको दर्शन देनेवास्ते आपजावोगे तब सुग्रीव आपको सब काम करेगा ऐसा रामजीसें कहिके सबरी शरीरकों भस्म करिके आपने हृदयमेंजो स्वर्गपुरी है उस स्वर्गपुरीकों गई ॥७॥

श्लो० रामोपित्वरितम्प्रापनलिनीम्फुल्लपंकजाम् ॥
शांतिरूपांधैर्यजलांनिर्म्मलज्ञानसन्तटाम् ॥८॥

भा०टी० - तथा रामजीभी जीवोंकी शांतिरूप पंपानाम तलाईकों जाते भये कैसी तलाई है धीरजरूप जल करिके भरी है तथा मल रहित जो ज्ञान सोई तट है जिस तलाईके ॥८॥

श्लो० निश्शंकपंकजांस्वच्छांसरश्चैव महासुखम्
नपुनर्जन्मतोयेनसंयुतंतच्चराघवः ॥९॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा० टी० - कामआदि राक्षसोंकी भयसे हीन जो स्वभाव पंपाकोसो ई कमलहै बहुत निर्मल तलाईहै एसी जो शांतिरूप तलाईको स्रव जोहै सोई पंपासर नाम तलावहै शांतिको सेवन किहेसें वारंवार जन्म नहीहोता सोई जलहै तिस जलसें तलाव भराहै ९

श्लो० स्नानंचकारतत्तोयेलोकविस्तारणम्प्रभुः॥प्रव
र्षणंगुरुध्यानंशिखरंतद्विचिंतनम्॥१०॥

भा० टी० - तलावके स्रंय सको लोक२ मे विस्तार रामजी करैंगे सोई यश विस्तार रूप स्नान उस तलावमें रामजी करते भये गुरुको राति दिन ध्यान कर्ना सोई प्रवर्षणनाम पर्वतहै रातदिन गुरुदेवकी बचन चिंतवन करना सोई प्रवर्षण पर्वतको शिखरहै॥१०॥

श्लो० गुरूपदेशस्सुग्रीवस्तद्वियोगेनवालिना॥त्रासि
तोदुःखितोऽत्यन्तंसुचिरंतापतापितः॥११॥

भा० टी० - गुरुदेवको उपदेश सोई सुग्रीवहै गुरुको वियोग सोई वालिहै तिस वालि करिके सुग्रीव बहुत दुःख तथा त्रासको प्राप्ति भयाहै तथा बहुत दिनतक वालिनें सुग्रीवकों आपने तेज रूपअग्निसें जलाता भया क्योंकि सब दुःख साधुलोग सहि लेते हैं परंतु गुरुको वियोग क्षणमात्रभी नहीं सहसक्ते॥११॥

श्लो० निरीक्ष्यवीरावायान्तौप्रेषयामाससत्वरम्।
बलवन्तंमहावीरं हनुमंतंतदन्तिके॥१२॥

भा० टी० - तब प्रवर्षणके शिखरपर बैठाजो सुग्रीव सोरामलक्ष्मणकों आते देखके जलदी वीरोंमें बडावीर ऐसाजो हनुमान तिस्को रामजीके सामने भेजते भये॥१२॥

श्लो० तृष्णाजनेयंसहसामोहंत्वाससमुद्भवम्॥सु
खेच्छाहर्षलांगूलंतन्मग्नादिलसत्तनुः॥१३॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - कैसे हनुमानहै तृष्णातो अंजनीहै तथा जीवकी, शरीरकी स्वासा सोवायुहै इनदोनोंके संयोगसें उत्पन्न भये जो हनुमान इनको मोहनामहै और मोहरूपभी है रामजीके प्रेमके सुख प्राप्ति होनेकी इच्छामें हनुमानकों हर्ष बहुत होना है सोई हर्ष हनुमानकी पुच्छ आदि सब अंगहै तिस्के हर्षमेंरातदिन उन्मत्त रहना आदिजो कर्म जैसा रामजीकी सेवा

इसीप्रकारके कर्ममें मस्त रहना सोई हनुमानकी शरीरकी शोभाहै ॥१३॥

श्लो॰ किंचित्कुशलविप्रस्यधृत्वारूपमगात्कपिः॥
रामान्तिकम्प्रगच्छन्तम्प्रोवाचकपिसत्तमः॥१४॥

भा॰टी॰ थोरासुख सोई ब्राह्मणको रूप धरिके रामजीके पास हनुमान जाते भये रामजीके दर्शनको प्रेम सोई हनुमानको रामजीके पास जानाहै रामजीके पासको जातेजो हनुमान तिसमें सुग्रीव बोले

श्लो॰ यदीमोवालिनाप्रेष्योदुष्टोसम्भ्रमविभ्रमौ॥
तदातेचेतनम्प्राप्य त्यक्ष्यामोदमहंगिरिं॥१५॥

भा॰टी॰ - जोयेदोनो भ्रम तथा विभ्रम होवे और बालिके भेजे आतेहोवे तब तुमारी चेतनरूप जो अनुशासन तिस्कूं पायके मैं इस पर्वतकूं छोडके भगजाऊं ॥१५॥

श्लो॰ इत्युक्तःकपिराजेनसत्वरंहनुमान्कपिः॥ आजगामातिहर्षेणरामपादाब्जषट्पदः॥१६॥

भा॰टी॰ - ऐसा सुग्रीवने हनुमानसें कहे हनुमान सुनिके रामजीके पद कमलहै तिस्के रस लेनेमें भ्रमररूप हनुमान सो बडे हर्षसें रामजीके पास आते भये ॥१६॥

श्लो॰ नमस्कृत्यचद्वौवीरौ कोयुवांजगतीपती॥ मुनि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वेषेणपृथिवींचरन्तौस्वेच्छयाबली॥१७॥

भा-टी- -राम लक्ष्मणकों नमस्कार करिके हनुमान पूछते भये आप दोजने कौन हो- ईश्वरकी प्रीतिके पति हो मुनिको रूप धरि के आपनी इच्छासे पृथ्वीमें भ्रमण करि रहे हो ॥१७॥

श्लो० हनुमद्वचनंश्रुत्वावर्णयामासलक्ष्मणः॥श्रु त्वातद्वाक्यमतुलंशमरूपंकपीश्वरः॥१८॥

भा-टी- -हनुमानके बचन सुनिके सब चरित्र लक्ष्मण कहते भये- शम-दम-यम नियम आचार आदि कर्म लक्ष्मणको कहनाभया- तिस शम रूप लक्ष्मणकी बचनको हनुमान सुनिके॥१८॥

श्लो० कथयामाससर्वंहिसुग्रीवापत्तिकारणम्॥ युवयोर्भवितामैत्रीनिःशंकायदिराघव॥१९॥

भा-टी- -गुरु उपदेशरूप सुग्रीवकी संपूर्ण विपत्ति हनुमान राम जीसें कहते भये- हनुमान बोलेकि हे रामजी, आपतो विवेकहो और सुग्रीव गुरुकोउपदेसहै दोनोजनेकी मिताइ जब होवै १९

श्लो० तवतस्यचसर्वंहिकार्यंभवतिशोभनम्॥इत्यु क्तोसमारोप्यस्वपृष्ठेरघुनंदनौ॥२०॥

भा-टी-तब सब तुमारा तथा सुग्रीवका काज होवे- गुरुके वियोग रूप वालिको तो आप मारो- और मन रावणके मारनेमें सहाय- सुग्रीव करेगा- ऐसा हनुमान कहिके रामजीके प्रेमको सुख ति- स्के हर्षरूप हनुमानकी शरीरकी शोभारूप पीठपर रामलक्ष्मण कों बैठायके सुग्रीवकेपास को चलते भये॥२०॥

श्लो० जगामचंचलमतिर्मग्नपृष्टेकपीश्वरः॥नयित्वा यत्रसुग्रीवस्तत्रवीरावबेशयत्॥२१॥

भा-टी- -जिस शिखरपर सुग्रीव विराजेथे उसीस्थानपर राम ल-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रमणाकों हनुमान प्राप्ति करतेभये श्लोक वीस तथा एकवीसको अर्थ सामिलहै कारण यह श्लोक युग्म है इसवास्ते॥२१॥

श्लो॰ चकारमैत्रीन्दुर्भेद्यान्दुर्जनैरिन्द्रियोद्भवैः॥ मध्येकृत्वागुरोभक्तिमग्निन्हौ गुरुभावनाम्॥२२॥

भा॰टी॰ - रामजी तथा सुग्रीव अपनी अपनी गुरुदेवकी भावना रूप मित्रता करते भये॰ दुष्ट इन्द्रियों करिके उत्पन्न जो बुरे कर्म सो सब दुर्जनहै तिन्हो करिके दुःखसे काटवे योग्यहै॰ सहजमें नही कटसकेगा गुरु देवकी भक्ति रूप अग्निको रामजी अपने तथा सुग्रीवके बीचमें रखके मित्रता करते भये॰ राम सुग्रीवकी निश्चय सोई बीचहै॥२२॥

श्लो॰ जांववान्जल्पषेतत्रमायाचेष्टोतिदुःसहः॥ तस्यच्छायास्वभावेन नलनीलौमहाबलौ॥लघुदीर्घौतदाकारौचक्रतुर्हर्षमुत्तमं॥२३॥

भा॰टी॰ - मायाका विचार सोई जांववानहै॰ बड़ाकठिणहै सो राम सुग्रीवकी मित्रता देखके खुशी भया॰ तथा जांववानकी छायाको स्वभाव दोप्रकारकोहै येक बडा दूसरा छोटा सो नलनीलहै॰ सो भी बडे हर्षकों प्राप्ति भये॰॥२३॥

श्लो॰ हिंसापराधम्वसनन्द्विजभावंचरावणे॥ भूषणंजानकीत्यक्तन्दर्शयामासवानरः॥२४॥

भा॰टी॰ - रावण ब्राह्मणहै तिसमें ब्राह्मणको भाव तथा ब्राह्मण मारनेसे ब्रह्म हत्या होतीहै येही दोनो गहणा तथा वस्त्र जानकी के भयेहै इनदोनोको पेरुर रावणकी रथमें बैठीजो जानकी त्यागिगयीथी॰ कारण रावणको ब्राह्मण नही मानना॰ येतो चंडालहै॰ तथा रावणके मारेकी हत्याको भी नहीं डरना ऐसा वस्त्र भूषण सु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ग्रीवने रामजीको दिखाते भये॥ २४॥

श्लो० दृष्ट्वातज्जानकीवस्त्रंभूषणंरघुनन्दनः॥ तच्चिं तनविलापंचतत्क्षणेकृतवान्प्रभुः॥ २५॥

भा० टी० - पहिले श्लोकमें वर्णन भया जोगहना वस्त्र जानकीको तिस्कों रामजीने अपने नेत्रोंसे देखिके जानकीकी चिंता रामजी रात दिन करते भये सोई रामजीको विलाप है॥ २५॥

श्लो० पश्चात्पप्रच्छसुग्रीवंकस्माद्वसिकानने॥ इतिपृष्टःसमारेभेस्वकार्यकथनंकपिः॥ २६॥

भा० टी० - ऐसा विलाप करिके पीछे सुग्रीवसें रामजी पूंछते भये कि दुःस्वभाव रूप बनमें तुम क्यों बसते हो॥ रामजी ऐसा पूछे तब सुग्रीवने अपनी हाल कहने लगा॥ २६॥

श्लो० उवाचसर्वंकपिसत्तमस्तदास्वकर्मदुःखंब हुतापवर्द्धनम्॥ चित्तंसमाधायरघूत्तमस्तदाश्रु श्रावसर्वंकपिवर्यवर्णितम्॥ २७॥

भा० टी० - बहुत संतापकी वृद्धि कर्नेवाला जो अपना कर्म है तिस कर्मको गुरुको उपदेस रूप जो सुग्रीव है सो सब चरित्र रामजीसें कहता भया॥ और विवेकरूप रामजी भी॥ चित्तको स्थिर करिके सुग्रीवकी हाल सुनते भये॥ २७॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेकिष्किंधाकांडेपं० शिवस हायबुधविरचितेसम्वर्तवरतन्तुसंवादे सुग्रीवराम चंद्रविलापेप्रथमोमोक्षोपानः॥ १॥

वरतन्तुरुवाच श्लोकः विवेकरामचन्द्रेणपृष्टः प्रोवाचराघवम्॥ सुग्रीवोदुःखितोत्यन्तंरामं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सत्यपराक्रमम्॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि फिरबोले॰ रामजीसें पूछाजो सुग्रीव सो॰ बहुत दुःखी होके रामजीसें बोलता भया॥१॥

श्लो॰ वालिनश्चममोत्पत्तिंकपीनांचैवविस्तृतम्॥
अयोध्याप्राप्तराज्याय मुनिस्तेकथयिष्यति॥२॥

भा॰टी॰ - हेरामजी, जब सुमतिरूप अयोध्यामें आप राजगादी पर बैठोगे तब कोई मुनिने बालिकी तथा मेरी तथा सब बानरोंके जन्मकी कथाकहेगे॥२॥

श्लो॰ ममभ्रातारघुश्रेष्ठवालिर्ज्येष्ठोतिबुद्धिमान्॥
ब्रह्मणास्थापितोराज्ये कपीनांरघुनंदन॥३॥

भा॰टी॰ - हेरामजी गुरुको उपदेश रूपतो मैहूं सुग्रीव मेरानामहै और मेरा बडाभाई गुरुसें वियोग होताहै सो वह बालिनामहै॰ बालिको कर्मतो मेरे जन्म पीछे होताहै परंतु बालितो मेरेपेस्तर जन्माहै॰ क्योंकि संयोगके पहिलेही वियोग जन्मताहै॰ सो ऐसेबालिको ब्रह्माने बानरोंका राजाकिया॰॥३॥

श्लो॰ मनुष्यभावायेसर्वे गुरौ तेकपयःस्मृताः॥ मनुष्यभावकर्माणिचासंख्यानिचचंचलाः॥४॥

भा॰टी॰ - जोमनुष्यको कर्म अनेक प्रकारकोहै॰ जन्म मरण हानि लाभ॰ दुःख सुख इन्ह आदि औरजो बहुत कर्महै सोसब गुरुमें देखना॰ ऐसे अनेक प्रकारके स्वभाव सोई गिनतीसेंहीन वानहै॥४॥

श्लो॰ गुरोकुभावनालोकास्तेऋक्षात्हादिजा मुने॥
गुरोदुर्बुद्धिरत्यन्तंसाकिष्किंधापुरीप्रभो॥५॥

भा॰टी॰ - और जुवारी, चोर, व्यभिचारी, नसेबाज, परनिंदक, रुपि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ण॰ इनआदि और जो अनेक बुरेकर्म है सो सब ये लक्षण गुरूमें देखना॰ सोई ऋक्ष है॰ तथा गुरुमे बहुत खोटी बुद्धि कर्ना सोई बुद्धि किष्किंधापुरी है॰ ॥५॥

श्लो॰ तस्यांस्थितोमहाबुद्धिर्वालिर्विगतकल्मषः॥
यावत्स्वबलसामर्थ्यं तावद्दुर्मतितांगुरौ॥जीवा-
नांकारयामास तच्चर्क्षकपिशासनम्॥६॥

भा॰टी॰ - तिस किष्किंधापुरीमें टिकिके बडा बुद्धिमान् पापसें रहित ऐसा जो वालि सो वानरोंका राज कर्ता भया॰ जहांतक गुरुके वियोग रूप वालिको जोर चला तहांतक जीवोंकों गुरुमे॰ खोटी मति कराय दिया॰ ऐसा बानरोकों तथा ऋक्षोंको राजकरता भया ॥६॥

श्लो॰ तस्य भार्यारघुश्रेष्ठ तारानाम्नीशुभावलिः
चिंतागुरुवियोगस्य तस्यांजातोंऽगदः सुतः ७

भा॰टी॰ - हे रामजी गुरुके वियोग कीचिंता सोई वालि कीस्त्री है तारा उसका नाम है॰ तिस तारामें वालिके अंगदनाम पुत्र भया

श्लो॰ उपायोगुरुदेवस्य वियोग शमनस्यच॥ मम
भार्या महाराज रुमानाम्नेति विश्रुता॥ गुरोराज्ञा
सदाग्राह्या सा मम प्राणवल्लभा॥८॥

भा॰टी॰ - गुरुके वियोगकी शांति करनेकी उपाय जो है सोई अंगद है॰ हे महाराज नित्य गुरुकी आज्ञा विनाविचारे ग्रहण करना - ये नहीविचारना कि ये आज्ञा गुरु खोटी देते है॰ या भली देते है॰ ऐसी मति सो मेरी स्त्री है॰ रुमा उसका नाम है॰॥८॥

श्लो॰ एवंवालिर्महावीरश्चकार राज्यमुत्तमम्॥ क
पीनांचिरकालंच ममापिप्रीतिवर्द्धनः॥९॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - इसप्रकारसें वालिनें बहुत दिनतक कपियोंका राजा होकर राजकिया तथा मेरीभी प्रीति बढाई॰॥९॥

श्लो॰ एकदादुंदुभिर्नामराक्षसोरघुनंदन॥ आज गामनिशामध्ये वालिंजेतुन्निशाचरः॥१०॥

भा॰टी॰ - हेरघुनंदन एकदिन रात्रिमें वालिको जीतने वास्ते दुंदुभी नाम राक्षस आताभया॥१०॥

श्लो॰ अभिमानोगुरोरामदुंदुभिर्बलवत्तरः॥ गुरौमानस्यचाप्रीतिः सानिशारघुनंदन॥११॥

भा॰टी॰ - जीवोंको गुरुमें अभिमानकि सब संसार छोटाहै और हमारेगुरु बडेहै॰ ऐसो मान सोई दुंदुभीहै॰ बडाबलीहै॰ और उसी गुरूकेअभिमानकी प्रीति सोई रात्रिहै॥११॥

श्लो॰ तत्सौख्यांध युतामध्यंसौख्यान्धहर्षकारणम्॥ दुंदुभिःक्रोधसंयुक्तोऽथाजुहावकपीश्वरम् १२

भा॰टी॰ - उसीगुरुदेवके अभिमानकीप्रीतिमें सुख मानना सोई॰ अंधकारहै॰ तिसकरिके रात्रियुक्तहै॰ उसी प्रीतिके सुखमें बडा हर्षमानना सोई अर्ध रात्रिहै॰ ऐसाजो दुंदुभी राक्षस सो क्रोधकरिके वालिकू पुकारनेलगा॰ अरे दुष्ट गुरुके वियोगरूप वालि तूने बहुतसे जीवोंकों गुरुसेवासें दूर करिके बैठाहे सो तेरेकों मारिके सबजीवोंकी गुरु देवसें मुलाकात कराऊंगा॥१२॥

श्लो॰ युद्धार्थेस्वस्वकार्यार्थे तच्छ्रुत्वाकपिसत्तमः॥ आगत्यत्वरितंवीरोजघानैकेन मुष्टिना॥१३॥

भा॰टी॰ - ऐसे शब्दकों सुनिके वालि तोजीवोंकों गुरुसें वियोगकरनेवास्ते और दुंदुभी जीवोंको गुरुसें मिलाप कराने वास्ते युद्ध करते भये॰ वालिनें एक हातकी मुट्ठी करिके दुंदुभीकों मारनेलगा॥१३

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ ताडितोमूर्खतामुष्ट्यादुद्रावाद्रवेगतः॥
स्वगुहांगर्वबुद्धिंवैआविवेशत्वरान्वितः॥१४॥

भा॰टी॰ -जीवोंकी मूर्खबुद्धिसोई वालिके हातकी मुष्टिहै तिस् करिके मारागयाजो दुंदुभीहै सो बडी बेगसें भागिके गुरुके अभिमानरूप दुंदुभीकी बुद्धिजोहै सोई दुंदुभीकी गुहाहै तिस्गुहामें घुसगया॥१४॥

श्लो॰ वालिर्विवेशक्रोधेनतंहन्तुंतांगुहांरुधीः॥
भ्रातृस्नेहपरीतेनमयापिगमनंकृतम्॥ मांस्थाप्यसोगुहाद्वारेसत्संगतिविवर्जिते ॥१५॥

भा॰टी॰- दुंदुभीकों मारनेवारने वालिभी उस गुहामें प्रवेशकरताभया॰ भाईको स्नेहजोहै सोई मेरागमनहै॰ इस प्रकारसें मैंभी वालिकेपीछे२ जाताभया॰ सत्संगतिसें वर्जित जो कर्म सोई-गुहाको दरवाजाहै॰ तिस दरवज्जेपर वालिने मेरे कूंटिकायके॰

श्लो॰ तत्रयुद्धंकृतंतेनवालिनाचपरस्परम्॥ स्थित्वाहंमासमेकञ्चभ्रातृस्नेहस्वरूपिणम्॥१६॥

भा॰टी॰ - गुहाके भीतर गया॰ तब वालिसें तथा दुंदुभीसे युद्धहोतीभई॰ मेरे ऊपर वालिका स्नेह बहुतरहासोई एकमास गुहाके दरवाजापर खडा होनाहै॥१६॥

श्लो॰ वालिनानिहतोरक्षस्तदाद्वारे ववाहच॥ बहुरक्तंमयाज्ञातंस्वभावचलनंसखे॥१७॥

भा॰टी॰ - वालिने दुंदुभीकों मारा तब गुहाके दरवज्जेपर मेरे स्वभावको चलायमान होना सोई रक्तहै सो बहुत बहताभया॰

श्लो॰ हत्वावालिंसमायातिमांहन्तुंदुंदुभिःशठः॥
एवंज्ञात्वाशिलामेकांस्वबुद्धिजडतांनृप॥१८॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - हेमित्र, मैनेबिचार कियाकि गुरुदेवमें अभिमानरूप दुंदुभी बडा जबर्दस्त है क्योंकि दुंदुभीके ऊपर गुरुकी कृपा है सो वालिकूं मारिके मेरेकूं मारेगा॰ ऐसा जानके हे राजन् रामचंद्र जी मेरी बुद्धिकी जड प्रकृति सोई शिला है ॥१८॥

श्लो॰ गुहाद्वारिसमाधायकिष्किंधामहमागतः
॥प्रसत्यकारात्कपयः पूर्वोक्तारघुनन्दन ॥१९॥

भा॰टी॰ - मैंने आपनी जडप्रकृतिरूप शिलासें सत्संगति वर्जित गुहा के दरवज्जेकूं दापिके किष्किंधा पुरीकों मैंचला आया तब हे रघुनंदन पेस्तर वर्णन भये जो कपि है सो मेरेकों जबर्दस्ती मे॥१९॥

श्लो॰ सरवेमामप्यमिच्छन्तमभिषेचुर्मदाकुलाः
॥गुरुदुर्बुद्धिकिष्किंधापुरीराज्येस्थितोह्यहम्॥२०

भा॰टी॰ - हेमित्र मेरे गुरुदेवमें दुर्बुद्धि रूप जो किष्किंधा पुरीतिस्का राज्य कर्नेकी मेरी इच्छा नहीथी॰ तौभी मेरेकों अभिमानसें उन्मत्त ऐसेजो कपि है सो मेरेकों किष्किंधापुरीका राज देतेभये॰

श्लो॰ गुरूक्तिनिश्चयस्यैवभंगंप्राप्तंस्करवम्मया॥
तन्निहत्यसमायातोवालिस्वासनसंस्थितम् २१

भा॰टी - गुरुके वचनको विश्वास मेरेकों नष्ट होगया यह स्करवकिष्किंधा के राजमें मै पाया॰ हे रामजी दुंदुभीकूं मारिके गुरुके वियोगरूप वालि आयके आसन पर बैठा॥२१॥

श्लो॰ दृष्ट्वामांहन्तुकामश्चदुद्रावत्वरितोयदा॥न
दाहंत्रसितोरामसर्वंसन्त्यज्यविद्रुतः॥२२॥

भा॰टी॰ मेरेकों देखिके गुरुके वियोगरूप वालि मेरेकूं मारने दौडता भया॰ तब मैने आपके गुरुदेवमें प्रेम भक्ति अनु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रागसें वन आदि सब सुंदर कर्म तथा गुरुदेवकी आज्ञा रूप मेरी रुमानामस्त्री इन सबकूं छोडिके व्याकुल होयके भागगया ॥ २२ ॥

श्लो० करुणाम्पृथिवींसर्वांबभ्रामाहंसुदुःखितः ॥ भ्रमणंदुर्बलत्वंमेस्वात्मनोरक्षणायवै ॥ २३ ॥

भा० टी० - करुणारूप संपूर्ण पृथ्वीमे मैंने भ्रमण किया. परंतु वालिको द्रोही जानिके मेरेकों कोईने शरण नहीं लिया. क्योंकि गुरुको उपदेशरूप जो मैं हूं सो गरीब और गुरुको वियोगरूप वालि बडा जबरदस्त है इसवास्ते मेरी दुर्बलता सोई पृथ्वीमें मैंने भ्रमण किया है ॥ २३ ॥

श्लो० वियोगवालेस्संत्रासोवर्ततेवसुधातले ॥ अविश्वासेनत्रासेननलब्धंशरणंमया ॥ २४ ॥

भा० टी० - गुरुमे वालिको विश्वास नहीं है सोई वालिकी त्रास है तिस त्रास करिके दयारूप पृथ्वीमे मैंने भ्रमण किया. परंतु मेरेकूं कहीं शरण नहीं प्राप्ति भई ॥ २४ ॥

श्लो० स्वस्वभावगुरोश्चाहंशरणंगतवानहं ॥ तेनोपदिष्टः प्राप्तोहंगिरिमेनंसमाश्रितः ॥ २५ ॥

भा० टी० - पीछेसें मेरा स्वभाव जो है सोई मेरा गुरु है तिसकी शरणकूं मैं गया. तब मेरा स्वभावरूप गुरुदेवकी आज्ञा पायके इसपर्वतपर मैं ठिका हूं ॥ २५ ॥

श्लो० रामनात्रसमायातिवालिर्मेमूलकृन्तनः ॥ मतंगशापाद्राजेंद्रतस्मादत्रस्थितोह्यहम् ॥ २६ ॥

भा० टी० - हे रामजी मतंग ऋषिकी श्रापसें इसपर्वतपर मेरे मूलको काटनेवाला वालि नहीं आता. इसवास्ते मैं इस पर्वत परटिका

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० स्फरवेनमंत्रिभिःसार्द्धंचतुर्भिरघुनंदन॥
सखेतेसंगतिंप्राप्यमग्नोहंस्फरवारिधौ॥२७

भा·टी· – हे रघुनंदन स्फरव करिके चारमंत्रीसहित यहांटिकाहूं· परंतु हेमित्र अब आपकी संगतिपायके स्फरवके समुद्रमें मग्न भयाहूं॥२७॥

श्लो० गुरूपदेशेनस्फुटनाम्नाविज्ञापितोभूदितिरामचन्द्रः॥ पप्रच्छसर्वंमुनिवर्य्यकृत्यंरघूत्तमोवालिविनाशभीतिम्॥२८॥

भा·टी· – स्फ्रीवनाम जो गुरूपदेश तिसकरिके कहेहुयेजो रामजीहै सो मतंगकी आपकी हाल जिस्से बालित्रासपाताहै सोपूंछतेभये ॥२८॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेकिष्किंधाकांडेशिवसहायबुधविरचितेस्फ्रीवरामसंवादेरामप्रश्नेद्वितीयोमोक्षोपानः॥ २॥

श्लो० वरतन्तुरुवाच स्फ्रीववाक्यावसरेरामःप्रोवाचसादरम्॥ कोमतंगोमुनिःशापंयोददौकपिसत्तमे॥ ॥१॥

भा·टी· – वरतंतु मुनिबोले स्फ्रीव बचन कहिचुके तब रामजी· स्फ्रीवसें पूंछतेभये· बालिको श्राप देनेवाले मतंगऋषि कौनहै

श्लो० रामस्यवचनंश्रुत्वाहरिःप्रोवाचराघवम्॥ सखेशृणुकथामेतामेकदामहिषासुरः॥२॥

भा·टी· –विवेकरूप रामजीकी बचन स्फनिके गुरुदेवकोउपदेशरूप स्फ्रीव बोलते भये· हेमित्र, यह कथा स्फनिबे लायकहै

श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर, देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय) व्यवस्थापक-पं० चक्रधर जोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सो आपस्कनो : एकदिन महिषासुर राक्षस ॥२॥

श्लो॰ असत्याचरणोवालिंस्ववशेकरणायच॥ कि
ष्किधामाजगामाशुभयवेगकलीर्षणैः॥३॥

भा॰टी॰ - हट करिके झूठ कर्मको आचरण कर्ना सोई महिषासु
रहै॰ सो महिषासुर वालिकों जीतने वास्ते किष्किंधा पुरीकों आ
ताभया॰ जीवोंको भयदेना, कामकरनेमें जलदी रखना, सब-
जीवोंसें लडाई कर्ना, सब जीवोंसें इर्षा करना इनकरिके ॥३॥

श्लो॰ पादैरेतैश्चसंयुक्तो दुराचर्यादिसम्भवैः॥रो
मभिर्भूरिभिर्व्याप्तन्देहम्बिभ्रन्मदाकुलः ॥४॥

भा॰टी॰ - एच्यार महिषासुरके पगहै॰ इनच्यारि पगोंकरिकेयु
क्तहै॰ खोटे कर्मसें उत्पन्नजो कर्म सो रोमहै॰ तिस बहुत रोमकों
धारण करिके उन्मत्त होरहाहै ॥४॥

श्लो॰ दुरुक्तिनिरयाभ्यांवैनेत्राभ्यांरागरंजितः॥
पैशून्यपरघाताभ्यांशृंगाभ्यांतीक्ष्णनिर्मितः ५

भा॰टी॰ -खोटी वाक्य बोलना तथा नरकमें पडने माफिक कर्म
कर्ना येदोनो कर्म दोनेत्रहै इन दोनों कर्ममें स्नेह सोई लालरंग
है तिसकरिके दोनों आंख लाल होरहीहै॰ चुगली कर्ना तथा
दूसरेकूं मारना ये दोनो शींगहै इन कर्मोंमें प्रेम सो शींगकी धार
है ऐसी शींग करिके युक्तहै ॥५॥

श्लो॰ पैशून्यसरवपुच्छेनलंबमानेनशोभितः॥
एतादृशोहतोरामवालिनामहिषासुरः॥ ६॥

भा॰टी॰ -चुगलीमें सरव मानना सोई पूंछहै तिस पुच्छ करिके
शोभितहै ऐसे महिषासुरकूं वालिनें मारडाला॰ ॥६॥

श्लो॰ हतमुत्थापतंवीरश्चिक्षेपक्रोधसंकुलः ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पपातपर्वतस्यास्यसमीपेरघुनन्दन ॥७॥

भा॰टी॰ - हेरघुनंदन महिषासुरकों मारिके वालिने उसकीदेह कों उठायके फेंकताभया॰ तब वोदेह इस पर्वतके सामने आय पडी॥७॥

श्लो॰ स्वेच्छाचारमतंगस्यचाश्रमेपतितोसुरः॥ दुष्टाचरणरक्तैश्चरंजितोभूत्तदाश्रमः॥८॥

भा॰टी॰ - वेदशास्त्र लोककों संमत नहीं मानना अपनी इच्छा में आवे सोई करना ऐसे स्वभावकों शास्त्रमें मतंगऋषि कहते हैं ऐसे मतंग मुनिके आश्रम पर मरा हुवा आय पडा॰ तथा खोटा कर्मको आचरण रूप करिके जोरक्त उससें मुनिका आश्रम लाल होगया॥८॥

श्लो॰ गुरुध्यानगिरेरस्यसमीपेवानरोत्तम ॥यद्या गन्तासिवैमृत्युस्तत्क्षणेनेभविष्यति॥९॥

भा॰टी॰ - तब स्वेच्छाचार रूप मतंग मुनि बोलेकि हे कपियोंमें उत्तम वालि यहजो गुरुदेवको ध्यानरूप प्रवर्षण पर्वत है इसके समीप जो तूं आवेगा तो उसीबखत मरजावेगा॰॥९॥

श्लो॰ एवंज्ञात्वारघुश्रेष्ठनायात्यत्रकदापिच॥ एवंज्ञात्वाचमेवासङ्कृतोऽत्ररघुनन्दन ॥१०॥

भा॰टी॰ - हेरघुनंदन मैं ऐसा जानाकि वालि यहां नही आसक्ता इस वास्ते इसपर्वतपर मैंने वासकियाहै॥१०॥

श्लो॰ श्रुत्वाचसुग्रीवसमीरितंवचङ्प्रोवाचरामङ् करुणाश्रुपूरितः॥ अहंहनिष्यामितवाशत्रुद्रोहि णंसखेऽभिषेच्यामिचत्वान्नृपासने॥११॥

भा॰टी॰ - ऐसी सुग्रीवकी वाक्य सुनिके रामजी बोलेकि हेमित्र,

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तुमारे द्रोह कर्नेवाले बालिकूं हम मारेगे और तुमकूं किष्किंधा पुरीको राजा करेगें ॥११॥

श्लो॰ रामोक्तिं कपिवीरस्तुनिशम्योवाचराघवम्॥
किष्किंधाधिपतिंमान्त्वं वानराणामधीश्वरं॥१२

भा·टी· -विवेकरूप रामजीकी वचन सुनिके गुरुको उपदेश रूप सुग्रीव बोलेकि हे रामजी, जो आपु मेरेकों गुरुदेवमें खोटी बुद्धि कर्ना ऐसी किष्किंधा पुरीको राजा ॥१२॥

श्लो॰ करिष्यसियदावीरतदातेजानकीमहम्॥पु
रीमपिशुभांकुर्य्यांसुबुद्धिंगुरुसत्तमे॥सप्तपाता
लविवरात्सप्तोर्द्ध्वाद्रघुनन्दन ॥१३॥

भा·टी· -करोगे तब मैं पुरीकोंभी सुंदरबुद्धि गुरुसे करिदेऊंगा·तथा जानकीकोंभी सात पातालनीचे सात ऊपर ॥१३॥

श्लो॰ विनाश्यजानकीदुःखदातारंसकुलम्प्रभो॥स
गुरुंसपुरंदुष्टंसमित्रंसहचारिणम्॥१४॥

भा·टी· -मैभी जो जानकीकों दुःख देनेवाले दुष्टको परिवार गुरुपुर मित्र संगरहनेवाले इनसबकों नाशकरिके ॥१४॥

श्लोक दास्यामितुभ्यंजनकात्मजामहंसखेध्रुवं
प्राप्यकपीश्वरेशतां॥हनिष्यसेत्वंकथमद्यवालि
नंवीरंसुवीरार्च्चितपादपल्लवम्॥१५॥

भा·टी· -जानकीको आपकूं देऊंगा· परंतु हे मित्र जो मेरेकों किष्किंधाको राज्यमिलेगातो हे रामजी बडेबडे वीरजैसे ध्यान ज्ञान उपदेश इन आदि और अनेक सुंदरकर्म वालिके पगकी पूजन करतेहै कि हे गुरुकेवियोग दुष्ट वालि तूं जीवोंको गुरुदेवसें वियोग मतिकर ऐसेवीर वालिको आप अभी कैसे मारोगे ॥१५॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ इत्युक्त्वा दर्शयामास सप्ततालान्कपीश्वरः॥
रामचंद्रायत्वरितं शष्कंच दुंदुभेश्शिरः॥१६॥

भा·टी· -रामजीसें सुग्रीव ऐसा कहिके रामजीकों सात तालके वृक्ष तथा दुंदुभीको सूखाशिर देखाते भये ॥१६॥

श्लो॰ कुतृष्णायास्सुतान्सप्तलंबमाननभश्चरान्॥
परसौख्यविनाशंच परवित्तकलत्रयोः॥१७॥

भा·टी· -खोटे कर्ममें तृष्णा करनी तिस तृष्णाके सात पुत्र जमीन सें आकाश तक ऊंचे दूसरे जीवके सुखका नाशकरना· और दूसरे जीवको धन तथा स्त्रीको ॥१७॥

श्लो॰ हरणंसुकृतविद्वेषमन्यायेवर्तनंसदा॥स्व·
स्त्रीनिरादरंनित्यंमरणाचिन्तनंतथा॥१८॥

भा·टी· - हरणकरना तथा ईश्वरके गुणकों जाणनेवाले जीवोंसें वैर राखना· रातिदिन अन्याय कर्ममें रहना· आपनी स्त्रीको रोज अनादर करना मरणेकी चिन्ता नहींकरना॥१८॥

श्लो॰ एतान्तालान्स्वस्वसुखैः पत्रैश्चवर्द्धितान्कपिः
प्रोवाचदर्शयित्वैतान्धृत्वाकंपयतेऽसकृत् ॥१९॥

भा·टी· - येसात कर्मरूप सात तालके वृक्षहैं·येसात तालके वृक्ष आपने आपने कर्ममें सुख मानना उसीसुखरूप पत्र करिके वर्द्धित होरहेहैं· सुग्रीवने ऐसे सात तालके वृक्ष रामजीकों दिखायके रामजीसें बोले कि इन सातों वृक्षोंकों एकहीवार वालि पकडिके हिलाताहै॥१९॥

श्लो॰ वालिर्यद्येकबाणेन द्वेदितुन्त्वंक्षमःप्रभो॥
तदावालिवधेरामविश्वासोमेप्रजायते॥२०॥

भा·टी· - हेरामजी जोएक बाणकरिके आपु सात वृक्षोंकूं काट

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नेमें समर्थ हो तब बालिकों मारनेमें विश्वास मेरेकूं होवे ॥२०

श्लो० सर्वप्राणोत्तमं ज्ञानं गुरोर्यद्रघुनन्दन ॥ तद्दुं
दुभिशिरश्चेदमार्द्रक्षिप्तञ्चबालिना ॥ २१ ॥

भा·टी· - हेरघुनंदन सबजीवोंसें अपने गुरुकूं उत्तम माननासो ई दुंदुभीको शिरहै सोई शिरयह आपके सामने पडाहै यह-शिर आलारहाथा तब बालिने उठायके ह्यांपरफेंकदिया ॥ २१

श्लो० तवास्योत्क्षेपनेरामचेत्पश्यामिपराक्रमम्
तदात्वयाहतंमन्येबालिनम्वीरसम्मितम् ॥ २२ ॥

भा·टी· - और अब यहशिर सूखाहै तो भी आपु इस्को उठानेको भीजो समर्थ होवो तो मैं जानूं कि आपके मारे बालि मरेगा ॥ २२

श्लोक· इत्युक्तः कपिनारामो विवेकोज्ञानवारिधिः ॥
सत्संगार्बुदछायायाः छायाछायार्बुदेनवै ॥ २३ ॥

भा·टी· - ऐसी सुग्रीवकी वचन सुनिके ज्ञानके समुद्र रामजी विवेकरूपसो सत्संगकी अर्बुदभागजो छाया तिस छायाकी छायाके अर्बुद भागको एकभाग सोई बाणहै तिस एकबाण करिके एक ही दफेमें सातों वृक्षोंकूं काटडारे दोकाअर्थमिलाहैसोयुग्महै २३

श्लो० भागेनैकेषुणारामश्चिच्छेदयुगपत्तरून् ॥ क
दापिरामचंद्रस्यस्वभावोभ्यासतश्चलेत् ॥ २४ ॥

भा·टी· - विवेक रूप रामजीकोस्वभाव कभी ईश्वरके ध्यान करने सें चलायमान होताहै औरकभी चलायमान नही होता ऐसास्वभाव रामजीके दोनोपगहैः दोकोअर्थमिलाहैसो युग्महै ॥ २४ ॥

श्लो० कदापिनचलेत्तस्मादिमौपादौप्रकीर्तितौ ॥ अ-
चलोदक्षिणोज्ञेयश्चलोवामइतीर्य्यते ॥ २५ ॥

भा·टी· - रामजीको अभ्यासमें अचलस्वभाव सोई रामजीको द

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्षिण पग है॰ और चल स्वभाव वाम पग है॰

श्लो॰ याश्चलाश्चलयोः प्रीत्य स्ताश्चांगुल्यः प्रकीर्तिताः॥ द्वयोश्चलवृत्तय त्तदंगुष्ठं निगद्यते॥२६

भा॰टी॰ - चल पगमें तथा अचल पगमें जो बहुत प्रीति सो दोनोंपगोंकी अंगुली है॰ रामजीके दोनो पगोका अचल स्वभावसो दोनोंपगोंका अंगुठा है॥ २६॥ इस श्लोकमे प्रीति शब्द ईवन्त है॰

श्लो॰ तच्छिरश्चाशुचिक्षेपवामांगुष्ठेन राघवः॥ एतत्पराक्रमन्दृष्ट्वा रामस्य कपिसत्तमः॥२७॥

भा॰टी॰ - रामजीने वामपगके अंगुठेसे उगायके जलदी दुंदुभीको शिर बहुत दूर फेंकदिया॰ ऐसा॰ रामजीको पराक्रम सुग्रीव देखके॥२७॥

श्लो॰ राज्यस्पृहांपरित्यज्य ज्ञानयुक्तो बभूव ह॥ बद्ध्वा करांजलिं रामम्प्रोवाच विनयान्वितः॥२८॥

भा॰टी॰ - राजकी इच्छा छोडिके ज्ञानकुं प्राप्ति भया जो सुग्रीव है सो हाथजोडके रामजीसें बोला॰॥२८॥

श्लो॰ राज्यं न कांच्छे रघुवीर दुःखदं त्वत्पादसंलग्नरजोभिवांच्छकः॥ भवामि नित्यन्तव दासकिंकरः प्रदेहि राज्यं तवसेवनावधिम्॥२९॥

भा॰टी॰ - हे रामजी॰ जिस किष्किंधा पुरीको राज पायके गुरुदेवमें दुष्ट बुद्धि होवे ऐसा दुःख देनेवाला राज्य कों मैं नही चाहताहूं॰ आपके चरणकी धूलि चाहताहूं॰ आपु आपके चरणोकी सेवन रूप राज्य मेरेकूं देवो॥२९॥

इति श्री वेदान्तरामायणे किष्किंधाकांडे शिवसहाय बुधविरचितसुग्रीवनिश्चये तृतीयो मोक्षोपानः॥३॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक- वरतन्तुरुवाच सुग्रीववचनंश्रुत्वासं-
शिक्ष्यकपिसत्तमम्॥ प्रेरयामासयुद्धायवालिना
रघुनन्दनः॥१॥

भा-टी- - वरतंतु मुनि बोले सुग्रीवकी वचन सुनिके रामजीने सु
ग्रीवकूं शिखायके वालिकेसंग युद्ध करनेकों भेजा॥१॥

श्लो० चतुर्भिर्मंत्रिभिस्सार्द्धंराघवाभ्यांचसंयुतः
क्रोशैकेगुरुदुर्बुद्धिकिष्किंधायाश्चनिश्चये॥२॥

भा-टी- - चारि मंत्री सहित तथा रामलक्ष्मणसहित गुरुमें दुष्ट
बुद्धिरूपजो किष्किंधा तिस्के एककोशपर॥२॥

श्लो० तद्दूरेलक्ष्मणोस्थित्वाचत्वारश्चैवमंत्रिणः॥सु
ग्रीवेणतदाहूतोवालिर्वीरशिरोमणिः॥३॥

भा-टी- - सुग्रीवखडाहोके गुरुके वियोगरूप वालिकों पुकारता-
भया- और सुग्रीवसे कुछदूरपर रामलक्ष्मण और सुग्रीवके-
चारमंत्री येसब खडे रहे॥३॥

श्लो० तूर्णमागत्ययुयुधेस्वानुजेनकपीश्वरः॥गुरु
वाक्येषुविश्वासस्सुग्रीवपुच्छवर्णनम्॥४॥

भा-टी- - गुरुकी वाक्यमें विश्वास मानना सोई सुग्रीवकी पुच्छहै
कपीश्वरजो वालिहै सो जलदी आयकर अपना भाई सुग्रीवसें यु
द्ध करते भये॥४॥

श्लो० तद्विश्वासज्ञानंचवालिपुच्छभिगद्यते॥ता
भ्यांयुद्धंचद्वौचक्रे पुनर्मुष्ट्याप्रजघ्नतुः॥५॥

भा-टी- - उसी गुरुकी वाक्यमें विश्वास नहीं मानना सोई वालिकी
पुच्छहै- सो पहिलेतो दोनो वीरोनें पुछसें युद्ध करते भये पीछे मुष्टि
सें युद्ध करते भये॥५॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ ब्रह्मसृष्टोचयद्दुस्कृतन्मेसर्वंगुरुर्हरिः॥ इ
तिबुद्धिस्समाख्यातासुग्रीव मुष्टिबंधनं॥ ६॥

भा·टी· - ब्रह्माके बनाए जोतीनलोक चवदा भुवनमें जोचीज है· सो सब चीजरूप मेरा गुरुहै ऐसा गुरुको ब्रह्मरूप माननेवाली बुद्धि सो सुग्रीवकी मुष्टिको बांधना है॥ ६॥

श्लो॰ बुद्धिस्तदन्यायातस्मिन्सावाल्यंगुलिबंधना
मुष्ट्यायुयुधतुर्वीरौसुग्रीवोवालिनाडितः॥ ७॥

भा·टी· - और गुरुमे ऐसी बुद्धिसे हीन जो दूसरी बुद्धिहै कि जैसी जुदी जुदी सब वस्तुहै तैसेई गुरुभीहै ऐसी बुद्धि वालिकी मुष्टिबंधनहै ऐसी मुष्टिसें वालिकों सुग्रीवनै मारा· सुग्रीवकों वालिनै मारा· सुग्रीवतो चाहताहै कि गुरुके वियोग रूप वालिको मार डारों· तो जीवोंसे गुरुवियोग नहीं होवे· और वालि चाहताहै कि गुरुके उपदेशरूप सुग्रीवकों मारि डारों तो गुरुकोउपदेश संसारमें नष्ट होजावे· और मेरा राजरहे· सोवालि सुग्रीवकों मारा· तब सुग्रीव दुःखी होगया· ॥ ७॥

श्लो॰ प्लाव्यायादुःखितोभूत्वागिरिमूर्ध्निस्वमाश्रमं
॥स्पृष्टोविवेकरामेणकरेणकपिसत्तमः॥ ८॥

भा·टी· - तब सुग्रीव दुःखी होके भागिके पर्वतपर अपने आश्रम पर आया· तब विवेकरूप रामजीने आपना हात सुग्रीवकेऊपर फेरते भये· कृपाकरिके देखना सोई हात फेरना है· ॥ ८॥

श्लो॰ गत श्रमःसुखंपेदेशौर्येणमंत्रिभिःसह॥ उ·
वाचरामंसुग्रीवः कथंघातयसेरिणा॥ ९॥

भा·टी· - तब सुग्रीवके देहकी पीडा· नष्ट होगई· और सुग्रीव सुखकों प्राप्तिभये· मंत्रियों सहित बडेमानसे जैसा पुत्र पितासें मा·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नकरिकै बात करै कि मैंतो आपको बालक हौं यह काम आपकूं करना पड़ेगा तैसेई सुग्रीव रामजीसें बोले कि हे रामजी, बैरीसें मेरेकूं आपक्यों मराते हो मारना होवे तो आपही मेरेकों मारिडालो ९

श्लो० इत्युक्तो राघवः प्राह नज्ञातस्त्वं मयासखे ॥ एकरूपौ युवां वीक्ष्य नत्यक्तश्शायको मया ॥१०॥

भा०टी० - ऐसी सुग्रीवकी वाक्य सुनिके रामजी बोले कि हे भाई तुमदोनो एकरूप रहेये इसवास्ते मैंनही जानाकि कौन वालि है कौनसुग्रीव है इस वास्ते मैंने बाण नही छोडा ॥१०॥

श्लो० पुनराह्वय वालिन्त्वं हतं पश्यसि भूतले ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं प्राह रामः सत्यपराक्रमः ॥११॥

भा०टी० - सोफिर बालिकों तुम पुकारो अबकी वालिकों मरादेख लेना सुग्रीवसें ऐसा कहिके सत्यहै पराक्रम रामजीको सो लक्ष्मण सें बोलते भये ॥११॥

श्लो० मत्प्रीतिरूपां बध्नीहि मालां कंठेऽस्य धीमतः ॥ यथेमं चिन्हितं ज्ञात्वा वालि प्राणं हराम्यहम् ॥१२॥

भा०टी० - हे लक्ष्मण मेरी प्रीति सुग्रीवपर बहुत है उसी प्रीतिरूप माला सुग्रीवके गलेमे बांधि देओ उस माला करिके मैं जानोंगा कि यह सुग्रीव है ऐसा जानिके वालिके प्राणकों मैं हरूंगा ॥१२॥

श्लो० इत्युक्तो लक्ष्मणस्तूर्णं बध्वा मालां हृदांशुभाम् ॥ रामप्रीतिस्वरूपां च तद्धर्षपुष्पपुष्पिताम् ॥१३॥

भा०टी० - रामजीकी ऐसी वाक्य लक्ष्मण सुनके जलदी सुंदर माला सुग्रीवके गलेमें बांधते भये रामजीकी प्रीतिरूप माला है सुग्रीवको हर्ष सो पुष्प भया है तिस पुष्पों करिके माला फुल्लाय मानहोरही है ॥१३॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ बद्धमालस्तुसुग्रीवः पुनर्गत्वातिशीघ्रतः॥ आ
ह्वयामासप्रोच्चैस्तंवालिंयुद्धायनिर्भयः॥१४॥

भा॰टी॰ -मालाकूं गलेमें बांधिके सुग्रीवने जलदी बडे जोरसें वा॰
लिकों युद्ध करने वास्ते निर्भय होके पुकारताभया॰॥१४॥

श्लो॰ वालिश्चपुनराहूतस्सुग्रीवेनातिक्रोधितः॥
तारयावारितोपीत्थंरामचंद्रगुणम्प्रति॥१५॥

भा॰टी॰ - सुग्रीव करिके पुकाराजो वालि है सोबडा क्रोध करिके
चलनेको विचार कियातौ तारानें रामजीको सबगुण वालिकों सु॰
नायके वोली आप मतिजावो- बडेजबरदस्तसे सुग्रीवकी मिताई
भई है॥१५॥

श्लो॰ तांतिरस्कृत्यसमगात्सुग्रीवंयुद्धलालसम्॥
युद्धंप्रचक्रतुर्वीरौवालिनाविह्वलीकृतम्॥१६॥

भा॰टी॰ - वालिने ताराको अनादरकरिके युद्धकी इच्छाकिहेजो॰
सुग्रीवहै तिस्केपास आयके फिर दोनोंसे युद्ध होतीभई॰ तबवा
लिने सुग्रीवकों विह्वल करिदिया॥१६॥

श्लो॰ सुग्रीवंराघवोवीक्ष्यपूर्वोक्तेधनुषिप्रभुः॥ पु
नश्शिक्षोद्भवंज्ञानं बाणंसंयोज्यशीघ्रतः॥१७॥

भा॰टी॰ - सुग्रीवकों व्याकुल देखिके रामजीने पहिले वर्णन॰
भयाजो धनुष तिसपर फिरि सुंदरकर्मकोशिखाना रूप बाण ज
लदीचढायके॥१७॥

श्लो॰ वियोगकृतमज्ञानम्वृक्षंकृत्वापुरस्सरम्॥ आ
लक्ष्यहृदयंतस्यससर्जशरमुग्रिणम्॥१८॥

भा॰टी॰ -गुरुके वियोग करिके कियाजो अज्ञान सोई वृक्षहै॰ ति॰
सवृक्षकों आपने सामने करिके आप वृक्षके आडे होयके वालि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

की हृदयकों देखिके शिक्षारूप बाण बडा कठिण तिस कूं छोडते भये॥ १८॥

श्लो० तेनाहतः पपाताशु दृष्ट्वा रामम्पुरस्थितम्॥ स्तुत्वा क्षमाप्य स्वाघं च प्राणान्तत्याज वानरः॥१९॥

भा·टी· - तिस बाण करिके मृत्युकूं प्राप्ति भयाजो वालि सो जलदी पृथ्वीमें पडगया· तब रामजीकों सामने देखिके अपना अपराध रामजीसें क्षमा कराय के प्राणकों छोडि दिया· गुरुदेवको वियोगको मरण भयासो सब जीव आनंदयुक्त भये॥१९॥

श्लो० चक्रुर्विलापन्ते सर्वे सुग्रीवाद्याः कपीश्वराः॥ जनिष्यति पुनस्सोयमिति शोकम्च चक्रिरे॥२०॥

भा·टी· - गुरुके वियोगरूप वालिके मरणकूं देखिके गुरुके उपदेशरूप सुग्रीव तथा सुग्रीव आदि औरजो वानर है सो विलाप करते· भये· कि यह गुरुको वियोगरूप फिर कभी जन्मेगा ऐसा चिंतनरूप विलाप करते भये॥ २०॥

श्लो० वालिनं निहतं श्रुत्वा तारा द्या वालिवल्लभाः॥ अंगदादिसुताः सर्वे विलापं चक्रिरे तदा॥२१॥

भा·टी· - वालिके मरणकों देखके गुरुके वियोगकी चिंतारूप तारा तिसकों आदि लेके और जो वालिकी स्त्री हैं सो सब तथा गुरुके वियोगकों शांति करनेकी उपाय रूपजो अंगद है तिस्कों आदि लेके सब वालिके पुत्र विलाप करते भये॥ २१॥

श्लो० शरणं कस्य यास्यामः कोस्मान्संगृह्य पालयेत्॥ एतादृशं विलापं च चक्रुस्सर्वे विमोहिताः॥२२॥

भा·टी· - अंगद विचार कियाकि जो गुरुके वियोगरूप वालिजीतारहा तब तो उस वालिकी शांति करनेकी उपायजो मैं हूं सो मेरेको सब·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जीव आदर देतेथे कि इस्को आदर करेंगे तो यह गुरुको वियोग रूप वालिको सांति कर्नेकी उपाय है और अब वालि मरगया हम किसकी शरण कूं जावें कोण हमारी पालन करेगा ऐसा विलाप करते भये॥२२॥

श्लो॰ निर्निंदराघवं तारापतिप्रेमपरायणा॥वियोगादर्शनंजातं तदेवनिन्दनं मुने॥२३॥

भा॰टी॰ - पतिके प्रेममें कुशल जो तारा है सो गुरुके वियोग कूं नही देखती भई सोई रामजीकी निंदा करती भई॥२३॥

श्लो॰ बोधितारामचंद्रेण ज्ञानं प्राप्य तदासती॥
गुरूपदेशस्यपतेस्सुखहर्षंजहर्षसा॥२४॥

भा॰टी॰ - तब रामजीने ताराकूं ज्ञान दिया तारा ज्ञान कूं पायके गुरुके उपदेशरूप जो सुग्रीव है तिस्के सुखके हर्षकूं पायके बहुत खुशी भई क्योंकि गुरुके वियोगकी चिंता तो ताराखुद है नित्य विचारतीथी कि यह गुरुको वियोग शांति होवे तब जीवोंको सुख होवे परंतु अज्ञानसें उसी वियोगकी स्त्री भई रही ज्ञान पायके जानलिया कि मेरा पति गुरुको उपदेशरूप सुग्रीव है॥२४॥

श्लो॰ परस्परंकृतावार्तातस्यवालेश्चतैस्तदा॥पराक्रमस्यनित्यस्यसहरामकपीश्वरैः॥२५॥

भा॰टी॰ - तब रामजी सहित सब कपियोंनें आपसमें वालिके पराक्रमकी वार्ता कर्ते भये कि देखो भाई वालि कैसा बली था कि गुरुकी महिमा कों वेदशास्त्र पुराण लोक ये सब तारीफ कर्ते है तिस गुरुको वियोग जीवोंसें करदेना यह बडे बलीको कर्म है

श्लो॰ सैववालेर्दाहक्रियाकृतातेनांगदेनवै॥राज्यं ददौततस्तूर्णंसुग्रीवायरघूत्तमः॥२६॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - ऐसी वार्ता सब करते भये सोई वालिकी दाह आदिक्रिया अंगद कर्ता भया॰ तब रामजीनें जलदी किष्किंधा पुरीको राज सुग्रीवकों देते भये॰ ॥२६॥

श्लो॰ राज्यासनस्थेसुग्रीवेकपीनांराघवप्रिये॥पुर्यांपूर्वस्वभावश्चनष्टोभून्नैवदृश्यते॥२७॥

भा॰टी॰ - रामजीका प्यारा सुग्रीव जब वानरोंका राजा भया तब किष्किंधा पुरीको स्वभावजो पेलरया कि गुरुमे खोटी बुद्धि देखना॰ सोस्वभाव नष्ट होगया॰ कहीं देखनेमे नही आता॰ किसी स्थान॰ पर गुरुमे सुंदर बुद्धि होगई किष्किंधापुरीकी ॥२७॥

श्लो॰ साराज्यप्राप्तिस्सुग्रीवेतत्सुखंमदवर्द्धनं॥गुरोर्वियोगमरणंदृष्ट्वारामोऽतिहर्षितः ॥२८॥

भा॰टी॰ सोई सुग्रीवकों राज्य प्राप्ति भयाहै तिस राज्य प्राप्ति में सुख सोई अभिमानकी वृद्धिहै॰ तथा गुरुके वियोग रूप वालिके मरणकूं देखिके रामजीभी खुशीहोते भये ॥२८॥

श्लो॰ विज्ञापनंचगुरवेचोपदेशायवालिजम्॥दातुंजीवान्युवराजंचक्रेरामोत्यनुग्रहः॥२९॥

भा॰टी॰ - बडे दयालु रामजीने अंगदकों युवराज करते भये॰ कि॰ जबकोई जीव गुरुसें उपदेश लेनेकों जावे तब अंगद गुरुदेवसें॰ अर्ज करे॰ किमहाराज आपसें उपदेश लेनेकूं जीव आयाहै॰ ऐसा॰ कर्म सोई युवराजहै॰ सो युवराज पदवी अंगदकों रामजी देते भये

श्लो॰ सएववासोरामस्यप्रवर्षणगिराबभूत्॥आत्मज्ञानंस्वपितरन्निर्मोहंभरतन्तथा॥३०॥

भा॰टी॰ - ऐसा अंगदकों युवराजपद देना सोई रामजीको प्रवर्षण पर्वतपरटिकना भयाहै॰ तथा रामजीने अपने पिता जो आत्मज्ञान

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तथा निर्मोहरूप भरतकों ॥३०॥

श्लो० शक्तिपुत्रंवसिष्ठंचजानकीविरहन्तथा॥ एते षांचिंतनस्पर्शनमस्प्रीत्याप्तिहेतवे॥३१॥

भा·टी· - शक्तिके पुत्र जो वसिष्ठ तिनकों जानकीकी विरहको चिंतवन जैसा पिताको चिंतवन तथा भरतको मिलाप· वसिष्ठकोन मस्कार जानकी की प्रीति इनसबकर्मों में प्राप्ति होनेको॥३१॥

श्लो० विचारावार्षिकामासास्तत्सुखाश्चमनोहराः॥ संगतिम्प्राप्यदुष्टानांजानकीकिंकरिष्यति॥३२॥

भा·टी· -विचार करना सोई च्यारिमास वर्षा ऋतुके है उसी च्यार कर्म्मोमें सुख सोई वर्षा ऋतुकी शोभाहै· रामजीने ऐसेच्यार मास वर्षामें विचार करतेभयेकि दुष्टजीवोंकी संगत पायके जानकी क्याकरैगा॥३२॥

श्लो० भविष्यतिस्वधर्माद्वाविच्युतासाच्युताऽपिवा ईदृग्विलापोरामेनकृतःसंगतिकारणात्॥३३॥

भा·टी· जानकीको धर्म ईश्वरकी भक्ति उस भक्तिरूप धर्मकों छोडिदेवेगाकि नहीं छोडेगा ऐसाविलाप संगतिके कारणसें रामजी करते भये॥३३॥

श्लो० चतुर्णांचचतुर्णांचकिंचिन्मासागताःस्मृताः चत्वारोविगतान्मासान्नायान्तंकपिसत्तम॥दृष्ट्वा रामोद्रुतंप्रेम्नाप्रेषयामासलक्ष्मणम्॥३४॥

भा·टी· -पहिले वर्णन भये जोचारि महीने सो बीतिगये कारण· धीरज धरिके रामजी पिताकों वसिष्ठकों भरतकों जानकीकों चिंतवन मिलाप नमस्कार प्रीति इनसबको विचारको थोरा कर्म करते भये सोई च्यारिमासको बीतना भयाहै· परंतु सुग्रीव रामजीकेपा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पासनही आया॰ तब प्रेम करिके लक्ष्मणकों भेजते भये॰॥३४

इतिश्रीवेदान्तरामायणेपं॰शिवसहायबुधविरचि
तेकिष्किंधाकांडेचतुर्थोमोक्षोपानः॥४॥

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच प्रेषणम्प्रेमरूपञ्च गम-
नंताद्विवर्द्धनम्॥ क्षुत्तृषासुखदुःखौच हानि
लाभौप्रियाप्रिये॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि बोले रामजीको प्रेम सुग्रीवकेऊपर बहु
तहै उसी प्रेमरूप सुग्रीवके पास लक्ष्मणकों भेजना भयाहै प्रे-
मकी वृद्धि सोई लक्ष्मणको सुग्रीवकेपास जाना भयाहै॰ क्षुधा
तृषा॰ सुख दुःख हानि लाभ॰ प्रिय अप्रिय॥१॥

श्लो॰ जीवनम्मरणंनिद्रायस्यापस्याद्यस्तथा॥
इत्याद्यश्चयेभावासर्व्वायेषांनविद्यते॥२॥

भा॰टी॰ - जीवन मरण॰ निद्रा॰ यश अपयश इन आदिजो औरस
वजीवोंके कर्महै जिनकी गिनती नहीहै॥२॥

श्लो॰ सर्वेषामंडजातानांनराणांचविशेषतः॥ एते-
सर्वेगुरो र्दृश्यामन्तव्याश्चविशेषतः॥३॥

भा॰टी॰ - सबजीवोंके येकर्महैं परंतु नरस्वरूप जीवोंकेतो बहु
तहै॰ येसबकर्म गुरूमें देखना॰ तथा मानना॰ किजैसा सबहै तै-
साही गुरुभीहै॥३॥

श्लो॰ तएवकपयः प्रोक्तास्तेरुद्धोलक्ष्मणस्तथा॥
गुरोयेदुष्टभावाश्चतैर्क्लेशैरपिसर्वशः॥४॥

भा॰टी॰ - सोई सबकर्म वानरहै रामकी संगति जिनकूं भईथी वो-
तोस्वभावकों छोडि देतेभये और जिनकूं रामकी संगत नहीं भई-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सो दुष्टरहे ऐसे दुष्ट कर्मरूप जो बंदर सो लक्ष्मणको रोकने लगे किस्किंधाके भीतर नहीं जाने दिये॰ पेस्तर कहे तृषाआदि आठ॰ औगुण गुरुमें देखना॰ सोई रीक्ष है॰ वोभी लक्ष्मणकों रोक लिहे॰४

श्लो॰ तेषांदुर्बुद्धिहरणंक्रोधंचक्रेरघूत्तमः॥ ताराङ्गदाभ्यामानीतोमारुतेनविशेषतः॥५॥

भा॰टी॰ -तिन सब दुष्टकर्मोंकी दुष्टबुद्धिको हरणरूप क्रोध लक्ष्मण करते भये॰ तब कपियोनें लक्ष्मणके क्रोधरूप उपदेश पायके बुद्धि सुंदर धर्ममें लगाते भये॰ खोटा कर्म छोड दीन्ही॰ गुरुकों ईश्वर मानने लगे तब तारा अंगद हनुमान येतीनो लक्ष्मणको आदर करिके सुग्रीवके पास लेगये॥५॥

श्लो॰ क्रोधशान्तिं कपीनांवैदृष्ट्वाबुद्धिंसुनिर्मलां॥ अहंगुरूपदेशोवेनान्योस्तिपृथिवीतले॥६॥

भा॰टी॰ -सुग्रीवनें लक्ष्मणकों देखिके आदर किया॰ तथा कपियोंके क्रोधकी शांति देखिके और बुद्धि सुंदर कर्ममें देखिके सुग्रीवनें ऐसा विचार कियाकि विवेकरूप रामजी सरीके मेरे मित्र और॰ गुरूको उपदेशमें बडे सुंदर कर्म करनेवाले मेरे सब कपि ऋक्ष अब मेरे सरीखा पृथ्वीपर कोई दूसरा नहीं है ऐसा सुग्रीवकूं अभिमान भया॰॥६॥

श्लो॰ तन्माननाशनंत्रासंकृत्वारामानुजःकपिम्॥ सर्वैःकपिवरैस्सार्द्धंयुवराजादिमारुतैः॥७॥

भा॰टी॰ -तब लक्ष्मणके सामने सुग्रीवको अभिमान नाश होना भया॰ सोई सुग्रीवको त्रास करिके सब वानर तथा सुग्रीव अंगद॰ हनुमानसहित॥७॥

श्लो॰ जांबवान्नलनीलाद्यैरानयितात्वरान्वितः॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रवर्षणेनिपेतुस्तेरामस्याग्रेचवानराः॥८॥

भा॰टी॰ - जांबवान् नलनील आदि वानरोंसें बहुत देस देसके गुरुमें दुष्टकर्म देखनेवाले जो कर्म सोई वानर हैं तिनकों संगलेके प्रवर्षण पर्वत पर रामजीके सामने सब पडतेभये॥८॥

श्लो॰ विवेकदर्शनम्विप्रतेषांतत्पतनंस्मृतम्॥ पृष्टा रामेणतेसर्वेस्वकर्मकरणंसदा॥९॥

भा॰टी॰ - सब गुरुमें दुष्टबुद्धि करनेवाले कर्म देस देससें आय के विवेक रूप रामजीके दर्शन करतेभये सोई सबको पृथ्वीमें पडनाहै॰ तबरामजीनें सबके कर्मकी कुशल पूंछतेभये॥९॥

श्लो॰ चतुर्दिशस्समायाताः कपीनांयूथपास्तदा॥ असंख्यागणितुंशक्तानशेषेनापिकर्हिचित्॥१०

भा॰टी॰ - तब चारोंदिशासें और बहुत गुरुमें दुष्टकर्म देखनेवाले जो दुष्टकर्म रूप वानर सोभीआतेभये जिनोंकी गिनती करनेकी शेषकीभी सामर्थ्य नहीहै॥१०॥

श्लो॰ पूर्वोक्ताः कपयःसर्वेदृष्ट्वारामंचतत्यजुः॥ नमस्कृत्यस्वभावन्तेप्रयाताःसर्वतोदिशम्॥११॥

भा॰टी॰ सब कपि ऋक्ष रामजीकूं देखिके नमस्कार करिके अपना स्वभाव जो गुरुमें दुष्टकर्म देखना सो छोड देतेभये॰ गुरुको ईश्वर मानतेभये॥११॥

श्लो॰ सुग्रीवप्रेषिताःसर्वेजानकीशोधकारणे॥ निर्वंचनास्वभावश्चवृत्तिर्मासावधिःकृता॥१२॥

भा॰टी॰ - सुग्रीव करिके भेजेजो सब वानर रीछ जानकीकों शोधनेवास्ते चारों दिशाकों जातेभये॰ कपियोंको अपने स्वामीसें कपट नहीकरना ऐसे स्वभावकी वृत्ति सोई सुग्रीवने एक मास

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

का प्रमाण करते भये श्लोक ग्यारा तथा बारा का अर्थ मिला है॰ इस-
कुं युग्म कहते है॥१२॥

श्लो॰ जांववन्तं हनूमंतमंगदादीननेकशः॥ दक्षि
णांप्रेषयामासस्कग्रीवोजानकीकृते॥१३॥

भा॰टी॰ - जानकीकों शोधनेवास्ते सुग्रीवनें जांववान हनुमान
अंगद आदि बहुत वानरोंकों दक्षिणदिशाको भेजते भये॥१३॥

श्लो॰ धर्मादीनांशुभाचिन्ताश्चतस्रश्चदिशःस्मृताः
तत्प्राप्तिप्रेषणम्प्रोक्तंगच्छन्तंमारुतिम्प्रभुः॥१४॥

भा॰टी॰ - धर्मकी चिंता सो पूर्व दिशा है॰ अर्थकी चिंता सो दक्षिणदि
शा है॰ कामकी चिंता सो पश्चिम दिशा है॰ मोक्षकी चिंता सो उत्तरदि-
शा है॰ इन च्यारों अर्थ धर्म काम मोक्ष प्राप्ति होना सो कपियोंको भेज
ना भया है॰ हनुमान जाने लगे तब रामजीने॥१४॥

श्लो॰ रामोददावांगुलेयम्प्रीतिजम्प्रेमनिर्म्मलम्॥ ह
नूमतेप्रसन्नश्चप्रोचावचनंहरिः॥१५॥

भा॰टी॰ - रामजीकी प्रीति जानकीपर बहुत है उसी प्रीति करिके
उत्पन्न जो निर्मल प्रेम सोई मुँदरी है उस मुँदरीकों रामजीने हनुमा
नकों देते भये॰ तथा प्रसन्न होके हनुमानसें बोले॰

श्लो॰ देयाजनकजायैषात्वयातानसचेतसा॥ एता
म्प्राप्यध्रुवंदेवीविश्वासंतेकरिष्यति॥१६॥

भा॰टी॰ - हे सुंदर कर्ममें मोहरूप हनुमान यह मुँदरी तुम जान
कीकों देना॰ इस मुँदरीकों पायके जानकी तुमारा विश्वास करेगा॰ कि
यह कोई विवेकरूप रामजीको दास है॥१६॥

श्लो॰ तामादायययुः सर्वेनमस्कृत्यरघूत्तमम्॥
मासेपूर्णेनिवृत्तास्तुचिदिग्भ्यःकपयःशुभाः॥१७

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - तिस मुँदरीकों लेके हनुमान आदि सब कपि चलते भये एकमास बीतगया उसीदिन तीनदिशासें वानर आयके ॥१७॥

श्लो॰ समागत्यसमाचख्युरप्राप्तिंकपिसत्तमाः॥
जानक्याश्चुत्यतद्रामोलक्ष्मणश्चकपीश्वरः॥ त्रय
स्तेदुःखमापन्नास्स्वस्वकार्यविनाशनम्॥१८॥

भा॰टी॰ - सुग्रीवसें कहते भये कि हम सबतो जानकीकों आपनी२ दिशामें शोधनकिया॰ परंतु जानकी नहीमिली॰ ऐसी कपियोंकी वचनकूं सुनिके रामलक्ष्मण सुग्रीव बहुत दुःखी होतेभये॰ रामजी कातो जानकीका वियोग रूप दुःख भया और लक्ष्मणकों रामजीकी दुःख देखके दुःखभया॰ तथा सुग्रीवकों रामजीसें करारकियाहै॰ कि जानकीका शोधन मैंलगाऊंगा॰ सो दुःखभया ॥१८॥

श्लो॰ सुबोधितौरामकपीश्वरौतदाविमूर्छितौतो
षबलेनबन्धुना॥ दुःखम्परित्यज्यसुखेनसंयु
तौबभूवतुर्धैर्यबलेनतौतदा॥१९॥

भा॰टी॰ - मूर्छाकों प्राप्तिभये जोरामजी तथा सुग्रीव इन दोनोंकों संतोष रूप लक्ष्मण रामजीके भाईहै उन्होने ज्ञान देते भये तबज्ञानकों पायके रामजी तथा सुग्रीव दुःखकों त्यागिके धीरज धरिके सुखकों प्राप्ति होते भये ॥१९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेकिष्किंधाकांडे शिवसहा
यबुधविरचितेसंवर्तवरतन्तुसंवादे जानकीशोधने
पञ्चमोमोक्षोपानः॥५॥ समाप्तश्चायंकिष्किंधाकांडः

अथसुंदरकांड प्रारंभः

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच युवराजादयस्सर्वेकप-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

योदक्षिणान्दिशम्॥ चक्रुर्विशोधनंतस्यागिरि-
दुर्गेष्वनेकशः॥१॥

भा॰टी॰ - वरतंतु मुनि बोलते भए अंगद आदिसब वानर दक्षिणदिशामेपर्वतोंके बडेबडे कठिन गुहा तिसमें जानकीको शोधतेभए॥१॥

श्लो॰ नकेषामपिसूक्तंचगृह्यतेयेनकारणात्॥स
गिरिः क्रूरताकर्मदुर्गमित्यभिधीयते॥२॥

भा॰टी॰ - जिस मूर्ख पणासें जीवमात्रकी सुंदर वाक्य नसुनै तथा बुरी वाक्य सुनै ऐसे स्वभावकों पर्वत संज्ञाहै उसी स्वभावरूप पर्वतमें बहुत बुराकर्म करै सो पर्वतोंकी कठिनगुहाहै॥२॥

श्लो॰ भ्रमतांकपिवीराणांशोधार्थंजानकीकृते॥
निर्वंचनास्वभावस्यगतामासावधिस्तदा॥३॥

भा॰टी॰ - पेस्तर वर्णन भएजोकपि तिन्होमें वीरजो अंगद आदि तिनकों जानकीके वास्ते शोधन करते २ निःकपटको स्वभावरूप जो मास एक कोप्रमाण सोवीतिगया॥३॥

श्लो॰ तां व्यतीतांसमालक्ष्यबभूवुर्दुःखसंयुताः॥
अंगदस्तुविशेषेणरुरोदपितृवर्जितः॥४॥

भा॰टी॰ जोप्रमाण सुग्रीव करिदियाथा मास १ जानकीकी शोधनकरिके आना ऐसे प्रमाणको वीतिगया देखि सब हनुमान-आदिकपि दुःखी होते भये तथा अंगदतो गुरुवियोगरूप पितासें हीनहै इसवास्ते रुदन कर्ता भया॥४॥

श्लो॰ जांववान्दुःखितान्दृष्ट्वासमस्तान्कपिसत्तमान्॥उवाचवचनंवीरोमायाचेष्टेतिदुःसहः॥५॥

भा॰टी॰ - बडाकठिन मायाको विचाररूप जांववान सो सब वान

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रोंको दुःखी देखिके सब कपियोंसें बोलताभया॰ ॥५॥

श्लो॰ स्वभाववचनात्यक्त्वासर्वेजन्मावधिन्दृढां॥
कुर्वन्तांजानकीप्राप्तिर्ध्रुवन्नश्वभविष्यति॥६॥

भा॰टी॰ - अरेहे वानरो सुग्रीवनौ निःकपटस्वभावरूप एकमासको प्रमाण दियो सोनो बीतिगयो॰ अब जबतक आपन सब जीवे तबतककी प्रतिज्ञा करो॰ विना जानकीकी शुधि लिहे सुग्रीवकैपास नहीं जावेंगे॰ ऐसी दृढता करोगे तब निश्चय जानकी प्राप्ति होवैगा॰ ॥६॥

श्लो॰ ऋक्षेशवचनंश्रुत्वातथोक्तंकृत्यसादरम्॥जानकीशोधनेयत्नाःपुनर्वीरायुस्तदा॥७॥

भा॰टी॰ - जांबवानकी वाक्य सुनिके कपियोनें फिरि जानकीके॰ शोधनेवास्ते जातेभये ॥७॥

श्लो॰ मार्गेप्राप्तातदातेषांयोगिनीयोगतत्परा॥निर्वेचनायास्तनुजाबिलंकपटभेदनम्॥८॥

भा॰टी॰ - तब रस्तेमें एक योगिनी मिली॰ कैसी योगिनीहै निःकपटकी लडिकी॰ कपटको काटनारूप योगिनीकी बिलहै॥८॥

श्लो॰ निवृत्तसिद्धिस्सारव्याता पातालंतत्सुरवंमुने
॥तयाविश्वासमार्गेणसर्वेनिष्कासिताबिलात्॥
अपकृद्दृद्याःपूर्वंज्ञानपक्षास्तयाकृताः॥९॥

भा॰टी॰ - मोक्षकी सिद्धिरूपसो योगिनीहै॰ उसी मोक्षके सिद्धिमें जोसुख सो पाताल है॰ कपटको नाश करने वालीजोबिलिसोपातालमें मिलीहै॰ ऐसी निःकपटकी लडिकी योगिनी मोक्षकी सिद्धिरूप सो विश्वासरूप रस्ता करिके वानरोंकोउसबिलसें निकारिके बाहेर करि देती भई बाहेर करनाय हहैकि पेस्तर कपिकु छुत्तानन-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हीं जानतेरहे सो योगिनी कपियोंकों ज्ञानमें पक्काकरिदिया ९

श्लो॰ कपटोन्मूलनंतेषांतन्निःकाशन्निगद्यते॥
लंकाकनकहर्षोद्धितटेतस्युश्चवानराः॥१०॥

भा॰टी॰ -मोक्षकी सिद्धिरूपयोगिनी पूर्वोक्तजो वानरहै तिन्हो कीकपटकोंमूलसहित नाशकिया सोही बिलसें कपियोंका निकसनाहुआ॰ बिलसें निकसिकै लंका सरवको हर्षसो समुद्रहै तिसके तटपरवानरोने टिकते भये॥१०॥

श्लो॰ रामांगुलेयविश्वासदर्भविस्तीर्यतेनदा॥पृथिव्यांतउपाविश्यप्राणान्त्यक्तुंसमुद्यताः॥११॥

भा॰टी॰ -रामजीकी मुँदरी पासहै इससें सब वानरोकों विश्वास है कि हम लोगोकोंरामजी अपना कार्य सिद्धिविचारिकेतो हमारे दलमें मुँदरी दिएहै ऐसाविश्वाससोई कुशभया॰ तिसकुशको जमीनमें बिछायकै उसी कुश आसन परबैठिकैसब वानर प्राणत्यागनेकी तयारी करते भये॥११॥

श्लो॰ स्वभावक्रूरताप्राणंत्यजतांवनचारिणाम्॥
दैवयोगात्तदाप्राप्तस्संपातिर्गृध्रसत्तमः॥१२॥

भा॰टी॰ - वानरोंका स्वभाव बडा क्रूरहै तिसकों त्यागतेजो वानर उसी समयमें दैवयोगसें संपाति नाम गीध आताभया॥१२॥

श्लो॰ दुर्लक्षणजटायोश्चभ्राता दुर्गतिवर्द्धनः॥तन्दक्षाकपयःसर्वेस्वात्मानंतेनभक्षितम्॥१३॥

भा॰टी॰ -खोटा लक्षण जोजटायु तिस्का यह भाई खोटी गतिकों बढानेवाला बडीलोभरूप संपाति गीधहै॰ तिसबडीलोभरूपसंपातिकों वानरोने देखिकै अपनी २ देहकाभक्षण॥१३॥

श्लो॰ अमन्यन्त तदोक्तश्चयुवराजेनगृध्रराट॥सं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पातिश्चरितम्भ्रातुश्श्रुत्वा विह्वलमानसः॥१४॥

भा॰टी॰ - मानतेभए कियह दुष्ट हमसब लोगोंको खावैगा॰ तब अगदनें संपातिसें पहिलेकी सबबात कहतेभए संपाति जटायुको मरण सुनिके विह्वल होगया॰ विचार कियाकि जीवोंको षोटाल क्षण जटायु बडी लोभजोमें हूं तिस मेरा आदर करताथा॰ अब व हमरिगया जीवमात्रसब सुलक्षण होगए मेरेकों आदरकौन-देवैगा॰ इसवास्ते संपाति दुःखी भया॥१४॥

श्लो॰ कथित्वासस्वचृत्तांतं जानक्याश्चकपीन्प्रति॥
प्राप्तपक्षोयथौपक्षी स्वगतिन्त्वरितंखगः॥स्वस्था
वासार्ज्जवौप्रोक्तौगृद्धपक्षौशुभाशुभौ॥१५॥

भा॰टी॰ - अति लोभरूप संपाति अपनी हाल तथा जानकी की प्राप्ति होनेकी हाल कहिके संदरिअवस्थामें वास तथा बडी लोभको दुष्टस्वभाव छोडिके कोमलस्वभाव ए दो पक्ष प्राप्ति होके चला॰ गया॥१५॥

श्लो॰ कपीनांदर्शनफलादतिलोभंचत्यज्यसः॥
गतेगृद्धेनिरीक्ष्याथकपयस्सागरंतदा॥१६॥

भा॰टी॰ - कपियोंके दर्शनकेफलतें अति लोभकों त्यागिके संपा॰ ति महात्मा होगया तब गीधके गएपीछे वानरोंनें समुद्रकों दे॰ खिके सब॥१६॥

श्लो॰ एनमुल्लंघ्य कोवीरोलंकांगत्वाचजानकीम्॥
दृश्यारव्यास्यतिरामायजानकीकुशलंसुधीः॥१७

भा॰टी॰ - आपसमें विचारने लगेकि ऐसा वीर कौन है॰ जोवीर इस समुद्रकों कूदिके लंकाकोंजायके जानकीकों देखिके जा॰ नकीकी कुशल रामचंद्रसैं कहै॥१७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० स्वस्ववीर्यवदन्तिस्मसर्वेकपिवरास्तदा॥
गुरुमानवभावंवैकार्य्यकर्त्तुन्नतेक्षमाः॥१८॥

भा·टी· -गुरुकों मानुष्यसरीके देखतेथे वानर लोग सो वानरका पराक्रमहै उसी अपने २ वीर्यको समुद्रके लाँघने वास्ते आप समें सब वानर कहते भये· परंतु समुद्रकों कूदिके लंकाकों जा· यके जानकीकों देखिके फिरि समुद्रकों कूदिके जानकीकी हा ल रामजीसे कहनेको किसीकी सामर्थ्य नहीं होती भई॥१८॥

श्लो० दुःखितान्वानरान्वीक्ष्यप्रेरयामासमारुतिम्॥
क्लेशोरामचंद्रस्यप्रीतितृष्णासमुद्भवम्॥१९॥

भा·टी· -वानरोंकों दुःखित देखिके रामजीमें जोप्रीति तिसकी जो तृष्णा तिसतृष्णाके पुत्रजो हनुमान तिस्कों जांबवान आज्ञा· देताभया॥१९॥

श्लो० रामपादरतेर्मोहं हनुमन्तम्महाकपिम्॥ आ· रुरोहगिरिंवीरोरामनिन्दनरूपिणम्॥२०॥

भा·टी· - कैसे हनुमान है रामजीके चरणोंकी जोरति तिस रति में मोहरूपहै ऐसाजो हनुमानहै सो दुष्टजन रामजीकी निंदा करते है सोई निंदारूप पर्वतपर चढिगए॥२०॥

श्लो० दासाभिमानपादेनतमापीड्यमहागिरिम्
सिंन्धूल्लंघनकार्यार्थमारुरोहनभःकपिः॥२१॥

भा·टी· - हनुमानविचारेकि मैं रामजीके दास हों ऐसा दासको· अभिमान सोई हनुमानको पगहै तिसपगकरिकै रामजीको निं दनरूप पर्वतकों दाबिके समुद्रकों कूदनेवास्ते हनुमान आ· काशकों चढिगए॥२१॥

श्लो० कार्यसिद्धिंस्वतोज्ञात्वाचिंताशून्यंनभस्मृतं॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पूर्वोक्तसागरे हर्षतोयवृद्धिप्रपूरिते॥ तिष्ठंतीव-
निताकाचित्कुकर्मरीतिरद्भुता॥२२॥

भा०टी० - रामजीके कार्यकी सिद्धि हनुमाननें आपसे जानि कैं चिं
ताको त्याग दिहे सो चिंताहीन हनुमानको चित्त सोई आकाश
भयाहै पेस्तर बर्णन भयाहर्ष सोई जलहै तिसजलकी वृद्धि क
रिकै पूर्ण जो समुद्र तिसमें कुकर्मकी रीति रूप कोई स्त्री बडी अ
द्भुत॥ २२॥

श्लो० सिंहिकासासमाख्याता तयाग्रस्तस्तदाकपिः
छायामार्गेणसावीरञ्च कर्षस्वान्तिकंहि सा॥२३

भा०टी० - सिंहिका उसका नाम सोस्त्री हनुमानकी छाया पकरिकै
अपने साम्नेको हनुमानकों षेंचि लेती भई॥ २३॥

श्लो० स्वच्छायांहनुमान्वीक्ष्य कार्यबुद्धिं दृढांकपिः॥
शीघ्रंगमनक्रोधेनकार्यविघ्नेन मुष्टिना॥२४॥

भा०टी० - रामजीके काजमे हनुमानकी बुद्धि बहुत दृढ है सोई ह
नुमानकी छायाहै तिस छायाकों ग्रसित देखिकै तब रामजीके
काज वास्ते जलदी जाना तिसमें विघ्न होना सो हनुमानके हात
की मुष्टि है तिस मुष्टिकरिकै॥ २४॥

श्लो० तांहत्वाचपुनर्गतुमारेभेसहसाकपिः॥ सुरै
र्जग्राहतंवीरम्प्रेषितासुरसासती॥ २५॥

भा०टी० - सिंहिकाकों मारिकै जलदी चलतेभए तब देवतों करि
के भेजीजो सुरसा सो हनुमानकों पकडि लिया॥२५॥

श्लो० सुकार्य्यभ्रांतिस्साज्ञेयामार्गन्देहीतितांकपिः॥
प्रोवाचनददौमार्गंसुमनस्त्वञ्चसायदा॥२६॥

भा०टी० - सुंदरकाजमेंजो भ्रांति होतीहै सोई सुरसा है तब सुर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सासैं हनुमान बोले हे सुरसे तूं सुंदर काजकी भ्रांति है सो मेरे सुंदरमनरूप रस्ता दे रामजीके काज करनेमें मेरे मनमें भ्रांतिरूप तूमति दिकु ऐसा हनुमान कहे जब सुरसाने रस्ता नहीं दिया२६

श्लो॰ तदा कपिस्तान्निर्भर्त्स्य गंतुकामः प्रचक्रमे॥
गच्छंतं साकपिं दृष्ट्वा भक्षितुं समनुद्यता॥२७॥

भा·टी· - तब हनुमान उसकों त्रास करिके जबरदस्तीसैं चलते भये· तब चले जात जो हनुमान तिन्को खावनेवास्ते उपाय करती भई

श्लो॰ रामकार्येषु विद्वेषन्तत्तस्या मुखवर्द्धनम्॥अ
हं द्रक्ष्यामि वैदेहीमिति हर्षरवन्तनुः॥२८॥

भा·टी· - रामजीके काजमें वैर सोई सुरसाको मुखको बढाना· भया· तथा हनुमानजी विचारेकि मैं जानकीकों देखोंगा ऐसा हर्षकी वृद्धि सोई जलदी हनुमानको भी देहका बढाना हुआ· ॥२८

श्लो॰ कपिना वर्द्धितस्तूर्णं ज्ञात्वा तस्य पराक्रमम्॥त
दास्यमदनाशश्च तन्मुखं विश्य तनुं कपिः॥२९॥

भा·टी· - सुरसा हनुमानके पराक्रमकौं देखिके तब सुरसाके मुखबढानेको अभिमान नष्ट होगया· तब हनुमान सुरसाके तनुरूप मुखमैं प्रवेश करिके ॥२९॥

श्लो॰ गन्तुकामन्निरीक्ष्यैव ददावाशिषमुत्तमाम्॥नि
र्मोहताशिषन्दत्वा गताकाशं च सा पुनः॥३०॥

भा·टी· - यह श्लोक युग्म है हनुमानकौं जाता देखिके निर्मोहरूप आशीर्वाद हनुमानकों देती भई कि हे हनुमान रामजीके चरणकेप्रीतिमें तुमारी मोह सदा बनी रहेगा· ऐसा कहिके आकाशकों जाती भई॥३०॥

श्लो॰ चिंतापानीयतद्वीर्यं सुरकार्यविवर्जनम्॥दुष्ट

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कर्माण्यनेकानि तेषाम्मध्ये शतैस्तदा ॥३१॥

भा० टी० - तब हनुमान समुद्रके पार जाते भये कैसा समुद्र है हनुमानकी चिंतारूप जल सोई समुद्रको पराक्रम है देवतोंके कार्यकों कर्ने नही देना सोई अनेक दुष्ट कर्म है तिन दुष्टोंके मध्यमें शैकरौं १०० दुष्टकरिकें ॥३१॥

श्लो० महाबलैर्विस्तृतं च दुरीहजन्तुसंकुलम् ॥ ईदृशं सागरन्तीर्त्वागतः पारं च दक्षिणम् ॥३२॥

भा० टी० - बडे बलीकरिकै विस्तार होरहा है तथा दुष्टोंकों रातिदिन षोटेकर्ममें भाव सोई जलके जीव है तिन जीवों करिके व्याप्त होरहा है ऐसै समुद्रकों पार जायके समुद्रके दक्षिण तटकों हनुमान प्राप्ति भए. तीन श्लोक ३० तथा ३१ तथा ३२ कौ अर्थ मिला है सो कुलक है ३२

श्लो० मंस्यन्ति मातरं मेऽद्य धन्यामेतच्चराचरम् ॥ इतिहर्षं कपिर्मेने तद्दक्षिणतटं मुने ॥३३॥

भा० टी० - हनुमाननैं विचार कियाकि अभी यह संसारके चराचर जीव मेरी माताकों धन्य मानैंगे ऐसा हर्ष हनुमान आपने हृदयमें मानते भये सोई समुद्रका दक्षिण तट है ॥३॥

श्लो० संस्मृत्य रामस्य स्वरूपमद्भुतं कपीश्वरः सिंधुतटस्थितो बभौ ॥ अहं भविष्यामि द्वयोस्सुवीरयोस्सुकंठसन्तोषनुदोस्सदा प्रियः ॥३४॥

भा० टी० - हनुमान रामचंद्रके अद्भुत स्वरूपकों स्मरण करिके खुशी भये सोई समुद्रके तटपर टिके जो हनुमान तिनकी सोभा है जानकीकूं देखिके रामजीके पास जाउंगा तब रामजीकों तथा सुग्रीवकों बडा प्यारा होउंगा ऐसा आनंद मानते भये ॥३४॥

इति श्री वेदान्त रामायणे शिवसहाय बुधविरचिते

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सुंदरकांडेप्रथमोमोक्षोपानः॥१॥

श्लो० वरतन्तुरुवाच सिंधोस्तटेसमासीनोवि
चारंकृतवान्कपिः॥ रामचन्द्रपदध्यानन्तद्विचा·
रंहनूमतः॥१॥

भा·टी· -वरतंतु मुनि बोले हर्षरूप समुद्रके तटपर हनुमान टिकि
के रामजीके चरणकोध्यानकर्ते भये· सोई ध्यान लंकामें प्रवेश कर
नेवास्ते हनुमानकोविचारकर्नाभया॥१॥

श्लो०रामचन्द्रपदद्वंद्वप्रीतितृष्णासुतस्यवै॥ जगतो
लघुज्ञानत्वंलघुरूपंचनद्भुतम्॥२॥

भा·टी· -रामजीके चरणमेंजो प्रीति उसी प्रीतिकी तृष्णा तिसके
पुत्र हनुमानसें अपनी हृदयमें ऐसाविचार करनेहैंकि तीनलोक
चौदाभुवन विवेकरूप रामसे थोराहै एरामजी सबसेबडेहैंऐसा
विचार सोई छोटा रूप भयाहै· ऐसे रूपकौं हनुमान धरिकै लंका
में प्रवेश कर्ते भये॥२॥

श्लो०दुष्टकर्म्मस्थितिं प्रीत्याहठात्सारावणालया॥
प्रविशन्तं कपिन्दृष्ट्वात्तर्ज्जयामाससानिजैः॥चिर·
संस्थैश्चरित्रैश्चदुष्टराक्षससंस्थितैः॥३॥

भा·टी· -तब हठसें षोटेकर्ममें प्रीतिसें टिकना ऐसीजो लंकारू
पराक्षसी सो लंकामें प्रवेश कर्तेजो हनुमान तिनकों आपनेचरित्र
करिकै डराती भई· कैसाचरित्रहै बहुत दिनोसें दुष्टराक्षसोंके·
संगवास रूपचरित्र॥३॥

श्लो०लंकाप्रवेशहर्षस्यया तृष्णाभूत्कपेस्तदा॥त·
यामुष्यामहावीरोहत्वाताम्प्राविशत्पुरीम्॥४॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - हनुमाननैं लंकामें प्रवेश किए तब बडा हर्ष भया-उस हर्षमें जो तृष्णा सो हनुमानकी हात के मूठि भई उसी मूठि करि-के लंका राक्षसीकों मारिके लंकामें प्रवेश कर्ते भये ॥४॥

श्लो०जानकीशोकसविताजगामास्तन्तदाकपिः॥
कपेर्धैर्य्यमभूत्सायम्प्रवेशंहर्षवर्द्धनम् ॥५॥

भा-टी- -तबजानकीको शोकरूप सूर्यका अस्त होगया तथा हनुमानकी धीरजपण सोई सायंकाल होगया- हनुमान अत्यंत खुशी भए सो खुशी होना लंकामें हनुमानको प्रवेश भया है ॥५॥

श्लो० मदांधबुद्धिर्दैत्यानांरावणादिप्रतापिनां॥ सा-
निशाजानकींद्रष्टुंतस्याम्बभ्रामवानरः॥ ६॥

भा-टी- -रावण आदि लेकें बडे बडे राक्षसोंकी बुद्धि अभिमानकरिकें अन्धी होरही है सोई रात्रि भई तिस रात्रिमें जानकी के देखने वास्ते प्रेमरूप भ्रमण हनुमान करते भए॥ ६॥

श्लो०नापश्यज्जानकींतत्रब्रह्मभक्तिं कपीश्वरः॥रा
क्षसानांदुरावृत्तिस्साचिन्ताप्य भवत्कपेः॥ ७॥

भा-टी- - ब्रह्मकी भक्ति रूप जानकीकों नही देखे हनुमान तब राक्षसोंकी खोटी वृत्तिरूप चिन्ताको हनुमान प्राप्ति भये॥७॥

श्लो०चिन्ताग्रस्तःकपीशश्चजगामाशोकवाटिकाम्॥
कदापिदैवात्सत्संगोरावणस्यापिसंभवेत् ॥८॥

भा-टी- -उसी चिंता करिकें ग्रसित जो हनुमान सो अशोक बगीचामैं गए-कभी दैवयोगसें रावणकोभी सत्संग होजावैगा॥८॥

श्लो०यत्रकुत्रापितद्धर्षस्साऽशोकतरुरुच्यते॥त-
त्प्रीतिर्वाटिकाप्रोक्ताश्चान्येवृक्षास्त्वनेकशः ॥९॥

भा-टी- -जिसी किसीजगहपर ऐसा विचारमे जो हर्ष सो अशोक

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नाम वृक्ष है॰ उसी हर्ष रूप अशोक वृक्षमें जो प्रीति सो अशोक बगीचा है तथा दूसरे कामके हर्षरूप वृक्षतो अनेक है ॥९॥

श्लो॰ तेसर्वेशोकवृक्षानांसुखाश्चामितशाखिनः॥
फलिनस्तरवश्चान्येदुःकर्मामोदरूपिणः॥१०॥

भा॰टी॰ - और जो वृक्ष अनेक अनेक प्रकारके है सो अशोक वृक्षोंके सुख रूप है॰ और पोटेकाजमें आनंद मानै ऐसा रूप वृक्ष फूलवाले भी है क्योंकि बगीचामें एकैरकमको वृक्ष नही रहता बहुत प्रकारके रहते है ॥१०॥

श्लो॰ पूर्वोक्तावाटिकामुख्याचेयमाभ्यन्तरस्थिता॥
राक्षसानांविलासायचान्यास्तासुचभूरिशः॥११॥

भा॰टी॰ - तथा अरण्यकांडमें जानकी केटिकाते वखत अशोकवाटिकाको वर्णन भयाहै॰ असिल वह है यहतो बगीचाके भीतर भी बगीचा रहताहै सो यह है॰ राक्षसोंको आनंद करनेवास्ते अशोव बगीचामे इस्से भी और बहुत बगीचा है॥११॥

श्लो॰ समारुह्यकपिर्वीरोद्रढिमानंतरुंसुधीः॥ददर्शतद्धोवीरोहर्षाशोकस्वरूपिणि ॥१२॥

भा॰टी॰ - हनुमानके हृदयमें ऐसी दृढता है कि मैं रामजीकोकार्य करूंगा॰ सोई एक वृक्ष है जिसके नीचे जानकी रहतीथी॰ तिसवृक्षपर हनुमान चढिके कभी हर्ष कभी शोक ऐसा हनुमानकीहृदयमें होताहै सोई उस वृक्षको नीचतल भया है ऐसे वृक्षकेनीचेजानकीको हनुमान देखते भये॥१२॥

श्लो॰ जानकीम्ब्रह्मणोभक्तिंजन्ममृत्युविनाशिनीम्॥
एकवेणीधरान्देवीरूपचिन्तास्वरूपिणीम्॥१३॥

भा॰टी॰ - कैसी जानकी है ब्रह्मकी भक्ति है॰ जन्म तथा मरणकेबा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धाकी नाशकर्नेवाली है. भगवानके रूपकी चिंता जानकी राति-दिन कर्ती है सोई शिरमें एक पाटी बनायके उसीपाटीको शिरमें धारण कियेहै॥ १३॥

श्लो० कृशितांराक्षसानाम्वैमुक्तिदानस्यचिंतया॥ बिभ्रतीम्मलिनंवस्त्रंरामचंद्रवियोगजं। दुःखरूपं विलोक्याशुजहर्षकपिसत्तमः॥ १४॥

भा-टी- - इनदुष्टराक्षसोंकामोक्ष कैसा होवैगा ऐसी चिंतारूप-सोई जानकी दुर्बल होरही है. रामजीको वियोगरूप मैलावस्त्र जानकीनें धारण कियाहै ऐसा दुःखरूप जानकी को स्वरूप हनुमान जलदी देखिके बहुत खुशी भए कि जानकी दुःखी है परंतु मैं दर्शन जानकीको पाया-इसवास्ते खुशी भए॥ १४॥

श्लो० आजगामतदावीरोरावणोराक्षसेश्वरः॥ जानकींस्वस्त्रियंकर्तुंतन्दृष्ट्वापिहितःकपिः॥ १५॥

भा-टी- - तबउसीवखत जानकीको रावण अपनी स्त्री बनानेवाला आताभया-तिसको देखिके हनुमान छिपिगए॥ १५॥

श्लो० दर्शयित्वाचसामादिरावणोवैपराजितः॥ न स्वीकृतन्तयासर्वाराक्षसीःप्रत्युवाचह॥ १६॥

भा-टी- - रावणने साम दाम दंड भेद जानकीको देखाय केहारि गया. जानकी रावणकी वाक्यको नहीं मानती भई. तब रावण-बोला हेदेवि मैभी भगवानको अंशहौं इति साम॥ हेदेवि मैभी तुमारा नामलेउंगा. इतिदाम. हेदेवि मेरी विनती नहीमानो तो मैं तो भ्रष्ट होगया हौं परंतु तुमकोंभी भ्रष्ट करिदेवोंगा इति दंड. आपनी प्रकृति रूपराक्षसीयोंको भेजिके जानकीके पास चुगली कराया. मेरी मंडलीमेंआइ जावो यहचारिभेद नहीमानी जानकी तो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

राक्षसीयोंसें बोला रावण ॥१६॥

श्लो० द्विमासाभ्यन्तरेसीतानमद्वशमुपेष्यति॥तदास्याः कर्त्यचांगानिराक्षसेभ्यः प्रदास्यथ॥पूर्वोक्तराक्षसाप्रोक्तास्त्यागन्तत्तनुकृंतनम्॥१७॥

भा-टी- - दोमहीनेके बीचमे सीता हमारी बसमें नही आवेगातो इस जानकीकी देहकों काटिके राक्षसोंकों तुमसब मिलके देदेना जानकीकों लंकासे निकालिदेना-येही देहको काटनाहै-पहिले कहेहुए राक्षसोंकों जानकीकेरक्षावास्ते देना सोई देहकाटके देनाहै १७

श्लो० इंद्रियाणांचहीचेष्टौकर्मज्ञानेतिसर्वदा॥इत्युक्त्वाराक्षसीरक्षोजगामस्वालयशठः॥१८॥

भा-टी- - दसइंद्रियोंकी दोचेष्टाहै पांच ज्ञानेंद्रियस्वभाव पांच कर्मेंद्रियस्वभाव यहसदा है सोई दोमहीनाभयाहैं ज्ञानसें तथाकर्मसें समुझाओ-ऐसा राक्षसियोंसें कहिके रावणजो शठहै-सो अपनेघरकूंगया-॥१८॥

श्लो० गतेदशाननेसीताभिदेर्षाद्यास्त्वनेकशः॥राक्षस्यस्त्रासयामासुस्त्रासनन्तन्मदक्षयम्॥१९॥

भा-टी- - रावणके गयेपीछे परनिंदापराई इर्षा इन्हो आदि लेकेगिनतीरहितजो राक्षसी है सोसब अपना अनेकप्रकारकीमदकी क्षयरूपजो त्रास सोजानकीकों देनें लगीं॥१९॥

श्लो० वर्ज्जयित्वाचतास्सर्वास्त्रिजटावाक्यमब्रवीत्॥शत्रुत्रयविनाशायत्रिधाबुद्धिश्चसाम्मृता॥२०॥

भा-टी- - कामक्रोधलोभकी नाश करनेकी बुद्धिजो त्रिजटाहै सोरामजीकी प्यारीहै वहसब राक्षसीयोंकों मनाकरिकै बोलतीभई॥२०

श्लो० मात्रासयतवैदेहींरावणस्यकुलक्षयम्॥अचि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रेणैवमेदृष्टो राज्यातिश्चविभीषणे॥२१॥

भा॰टी॰ - अरे दुष्टिनी राक्षसीयों जनकपुत्रीकों त्रास मतकरो॰ रावणके कुलका नाश थोरेही दिनमें मैं देखतीहूं और लंका कोराज बिभीषणकों होवैगा येभी मैं देखतीहूं॥२१॥

श्लो॰ एवमुक्तास्तयासर्वा बभूवुर्निद्रयायुताः॥ जानक्यैशमनीम्बुद्धिन्दत्वागात्त्रिजटागृहम्॥२२॥

भा॰टी॰ - त्रिजटाकरिके इसप्रकार कहीजो राक्षसी हैं सो सब निद्रासे व्याकुल होयके सोगई॰ त्रिजटा जानकी प्रति सांति बुद्धि दैके॰ अपने घरकूं गई राक्षसीयोंका बुराकर्म छूटनासोनिद्रा॰ सोनाहै॥२२॥

श्लो॰ संसारसुखत्यागश्चत्रिजटागेहमुत्तमम्॥ तदादिसर्वरामस्यचरितंकपिरभाषत्॥२३॥

भा॰टी॰ - संसारके सुखको त्याग सोई त्रिजटाको घर है॰ त्रिजटाकेगएपीछे आदिसे रामजीको सब चरित्र हनुमान कहते भए॰२३

श्लो॰ श्रुत्वापिसर्वरामस्यचरितंकपिवर्णितम्॥ स्वपतिप्रीतिसन्त्यागाविश्वासंप्रापजानकी॥२४॥

भा॰टी॰ - कपिके मुखसें कहाजो रामजीका चरित्र सो संपूर्ण जानकीसुनी तोभी चित्तमें बिचारकियाकि मैंने आपने पतिकी प्रीतिरक्षाकर्नेवास्ते दूसरेकी वचन नहीसुननीहूं दुसरेकी बचनसुननेसें अपनेपतिकी प्रीतिको त्याग होताहै॰ ऐसा अविश्वास किया विश्वास नहीमानी॥२४॥

श्लो॰ जानक्यारामचंद्रस्यप्रीतिरत्यंतवल्लभा॥ तदुत्पन्नंचयत्प्रेमददौतद्धनुमान्कपिः॥२५॥

भा॰टी॰ - जानकीकेऊपररामजीकी बडीप्यारी प्रीतिहै तिसप्रीतिसें जोउत्पन्नभयाप्रेम सोमुद्रिकाहै उस मुँदरीकों हनूमाननें जानकी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कूं देतेभए ॥२५॥

श्लो॰ रामांगुलीयंसंगृह्यसकतंमेनेकपिंसती ॥ नि
तिक्षारूपसम्वादं चक्रतुः पुत्रमातरौ ॥२६॥

भा॰टी॰ - रामजीकी मुँदरी लेके जानकीने हनुमानकूं अपनापुत्र मानती भई दुष्टके कर्मकों देखके क्रोधनहीकरना ऐसीबात पुत्र जो हनुमान माताजो जानकी ये दोनो करतेभये ॥२६॥

श्लो॰ क्षद्रावणमिलापेच्छातयार्तोराजकन्यया ॥
अनुज्ञातोबभक्षाशुफलानिनिर्भयःकपिः ॥२७॥

भा॰टी॰ - हनुमानजीके रावणसें मुलाकात कर्नेकी इच्छा सोई भूखहै तिसभूखसें बडा दुःखी होके हनुमान जनककी कन्या जोजानकी तिस्सें आज्ञा मागिके और भयछोडिके फलखातेभये

श्लो॰ दुष्टकर्मादितरवः फलंतेषांपरार्दनम् ॥ तानु
त्पाट्यकपिर्वीरोभक्षित्वातत्फलानिच ॥२८॥

भा॰टी॰ - जुआ चोरी जहरदेना आगिलगाना इनकों आदिलेके औरजो बुरे कर्महै सोसब वृक्षभएहै तिनकों हनुमान मूलसें तोडिडाला इनवृक्षोंका फल क्याहै दूसरेकूं दुःख देना ऐसेफलोंको भीखाया त्रेता द्वापरमे एनष्टहोगये कलियुगमें पुनिभये ॥२८

श्लो॰ जगर्ज्जदुष्टनाशश्चराक्षसीभिर्निवेदितः ॥ गर्ज
न्वीरोमनश्चक्रेरावणंहंतुमुद्यतः ॥२९॥

भा॰टी॰ - बुरे कर्मको नाशरूप हनुमानको गर्जना भया तथाराक्षसीयोंने रावणसें सर्व हाल कहतीभई गर्जना करते करते हनुमानजी मनरूपरावणकों मारनेको विचार कर्तेभए ॥२९॥

श्लो॰ विवेकरूपस्यरघूत्तमस्यतृष्णासकतं प्रेम
रसस्यमोहः ॥ गर्जन्कपीशाधिपतेश्चदूतोवितर्क-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

यामासदशास्यमृत्युम्॥३०॥

भा॰टी॰ -विवेकरूप रामजीके भजनकी तृष्णा के पुत्र हनुमान तथा रामजीके प्रेमके मोहरूप सुग्रीवके दूत ऐसे हनुमान रावणको मरणविचारते भए॥३०॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेसुंदरकांडेसम्वर्तवरतन्तुसंवादेशिवसहायबुधविरचितेअशोकवाटिकानाशोद्वितीयोमोक्षोपानः॥२॥

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच राक्षसीभिःसमाश्रुत्यकपेःकर्मचरावणः॥ स्वपुत्रमक्षनामानंकलिंयाहीत्यनोदयत्॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि बोलते भए राक्षसियों करिके कथितजो हनुमान का किया कर्म तिसकों रावणने सुनिके आपना पुत्रजो सब जीवोंसे लडाई रूप अक्षनाम तिसकों भेजता भया॰ उससें कहाकि तूंजायके हनुमानकों पकडि ल्यावो॥१॥

श्लो॰ पित्राज्ञातोययौशीघ्रंकलहोरामपादयोः॥ तृष्णात्मजंचतन्मोहंददर्शस्वस्वरूपिणम्॥२॥

भा॰टी॰ - पिताकी आज्ञाको पाइके जलदी अक्षय कुमारगयाजायके बहुत हुसियार होयके टिकैजो हनुमान तिसकों देषा॰ कैसेहनुमानहै रामजीके दोनोचरणोकीजोतृष्णा तिसके बेटाहै॰ तथा रामजीकेपगकी जोमोह सोई हनुमानहै॥२॥

श्लो॰ सद्रोहोराक्षसेन्द्रस्यप्रासादोवाटिकास्थितः॥ तमारुदंकपिन्दृष्ट्वाहन्तुंसोभिप्रदुद्रुवे॥३॥

भा॰टी॰ - मनरूपरावणनें सुंदरकार्यमें द्रोह किया॰ सोईद्रोहरूप

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अशोकबगीचामें हवेली है अक्षय कुमारनें तिस हवेलीपरबैठे जो हनुमान तिस्कों मारनेवास्ते दौडताभया॥३॥

श्लो॰ सहतः कपिवीरेणपपातधरणीतले॥ विरुद्ध बुद्धिसम्भूते दुर्वाक्येरावणात्मजः॥४॥

भा॰टी॰ - रावणकोपुत्रहनुमान करिकें माराथका सो भूमिमेंपडि गया॰ षोटीबुद्धिसें उत्पन्न जो षोटावचन सो भूमिऊपर कहातीहै तहां पडिकें मरिगया॥४॥

श्लो॰ किंचित्कलिंस्वतनयंहतंदृष्ट्वाचरावणः॥ दुश्चेष्टितंमेघनादं प्रेरयामाससत्वरः॥५॥

भा॰टी॰ - रावणने थोराकलहरूप अपना बेटा अक्ष तिस्कोंमरा देखिकें जलदी षोटे काजकी प्रीति जैसा दूसरेका सरव देखिके॰ जलना सोई मेघनादहै तिस्कों भेजताभया॰॥५॥

श्लो॰ सस्ते नकृतवान्युद्धंस्वस्वकर्मप्रशंसनम्॥ सत्तिरस्कारपासेन बबंधत्वरितंकपिम्॥६॥

भा॰टी॰ - मेघनादनें अपने कुलकी तारीफकिया॰ तथा हनुमान॰ नें रामजीकी समाजकी तारीफ किया॰ ऐसी युद्ध दोनो कर्ते भए॰ तिस पीछे साधुलोगोंको जो अनादर सोई पास भयाहै तिस पाश करिकें हनुमानकों बांधताभया॥६॥

श्लो॰ रामचन्द्रविरुद्धेच्छासासभारावणस्यच॥ कपिर्बद्धोययौतांचतेनानीतोदुरात्मना॥७॥

भा॰टी॰ - रामजीके संगविरुद्ध करनेकी इच्छा सोई रावणकीस॰ भाहै सोरवोटे काजमें प्रेमरूप मेघनाद उसी सभामें बंधे हुए हनु मानकूं लेगया॥७॥

श्लो॰ मनसारावणेनैवपृष्टः कस्त्वमिहागतः॥ कि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मर्थ्यकाननन्भष्टं कृतंतेमेसुतोहतः ॥ ८॥

भा० टी० - मनरावण हनुमानसे पूछनै लगा तूं कौनहै इहां क्यों आया और अशोकवाटिकाको नाश क्यों किया तथा हमारे पुत्रकों क्यों मारा ॥ ८॥

श्लो० इतिपृष्टस्तदोवाचनिर्भयोहनुमान्कपिः ॥ दूतोहंरामचन्द्रस्यनिर्मोहोहनुमान्कपिः ॥ जानकीदर्शनायात्रप्राप्तस्सुग्रीवप्रेरितः ॥ ९॥

भा० टी० - मैं विवेकरूप रामजीको दूत हौं हनुमान मेरा नाम है गुरुको उपदेशरूप जो सुग्रीव उन्ने जानकीकों देखने वास्ते मेरे कौं लंकामें भेजा है ॥ ९॥

श्लो० इत्युक्तस्ताडयामासरावणोराक्षसैस्तदा ॥ कपिम्विषयजैस्सौख्यैर्गणनावर्ज्जितैर्म्मुहुः ॥ १०॥

भा० टी० - हनुमानकी वाक्य सुनिके गनती सैं हीन जो विषय कौ सुख तिसकरिके रावण राक्षसोंसें हनुमानकों मराताभया ॥ १०

श्लो० रामचन्द्रपदप्रीतितृष्णापुत्रस्यदाहनम् ॥ विचार्यराक्षसाश्चक्रुस्तत्पुच्छेवस्त्रवेष्टनम् ॥ ११॥

भा० टी० - रामचंद्रके चरणकी तृष्णा तिसके पुत्र हनुमान मोहनामऐसे हनुमानकों भस्म करने वास्ते खोटा कर्मरूप सब राक्षस हनुमानकी पुच्छमें वस्त्र लपेटते भये ॥ ११॥

श्लो० रामसेवासुखेहर्षं तल्लांगूलं कपेस्मृतम् ॥ दुष्टकर्मसुखैर्वस्त्रैर्वेष्टित्वाग्निंसमाददुः ॥ १२॥

भा० टी० - रामजीकी सेवामें जो सुख तिस सुखको हर्ष सोई हनुमानकी पुच्छ है तिस पुच्छमें खोटे कर्मोंमें जो सुख सोई कपडा भया है तिस कपडेकों हनुमानकी पुच्छमें लपेटिके अग्नी लगाय

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

देतेभये ॥ १२ ॥

श्लो० स्वशक्त्यभावः कार्येषुसोग्निरित्येवकीर्त्यते ॥
चिंताप्रजागरन्तैलंरज्ज्वक्षशोकमुत्तमम् ॥ १३ ॥

भा०टी० -थोडे काजोमें राक्षसोंकी शक्ति नष्ट होगई सो अग्नि भई तथा राक्षसोंकों चिंता करिके नींद नही आती सो तेल है अक्षय कुमारकी शोक सो वडी पुष्ट रस्सी है तिस रस्सीसें पूंछिमें वस्त्रकों बांधिके अग्नी लगाय देतेभये ॥ १३ ॥

श्लो० ग्रहणंहठसंवेगोभ्रमणञ्चदुरासदम् ॥ हस
नंराक्षसानांवैरामचन्द्रपराजयः ॥ १४ ॥

भा०टी० - राक्षसोंकी हठकी वृद्धि सोई राक्षसों करिके हनुमानकों पकडना भयाहै राक्षस बडे दुःखसें जीतवे योग्यहै ऐसा दुष्टोंकोबल सोई लंकामें हनुमानको भ्रमण कराना भयाहै रामजीकों हमजीति लेवेंगे ऐसा राक्षसोंकों विचार सोई हास्य भयाहै ॥ १४ ॥

श्लो० राक्षसानांकुकर्माद्यास्तेसर्वेन्यायकौशलाः ॥
तएवताडनाभूरिकपेर्हर्षविवर्द्धनाः ॥ १५ ॥

भा०टी० - राक्षसोंकी थोडे कर्मआदि लेके चतुराई सोई हनुमानके हर्ष बढानेवाला ताडना भयाहै ॥ १५ ॥

श्लो० एतैश्चान्यैश्चबहुभिश्शरीरस्थैश्चराक्षसैः ॥
प्रेरितैर्दशभालेनसंमोहरभासितः कपिः ॥ १६ ॥

भा०टी० - इनसें औरभीजो शरीरमें बहुत से राक्षस टिके हैं सोसब मनरावण की आज्ञा पायके रामजीके प्रेमके मोहरूप जो हनुमान तिसकों त्रास देतेभए ॥ १६ ॥

श्लो० भ्रामितोहसितश्चैवताडितोगपिप्रकुत्सनैः ॥ सं
मोहोहनुमानापशान्तिंरामप्रक्रोधतः ॥ १७ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ - रामके प्रेमके मोह रूप जो हनुमान सो दूसरे जीवोंकोंदु
ख देनेवाले राक्षसों करिकैं धुमाए गए तथा माराजाता भए तथा
हंसे जाते भए तौभी विवेकरूपरामजीकेक्रोधतें शांतिकों प्राप्तिभ
ए॰ विचार किहेकि लंकामेंजो मैकुछ ज्यादाउत्पात करोंगातो रा
मजी मेरी दुर्गति करैंगे ॥१७॥

श्लो॰ नकिंचिद्राक्षसान्सर्वान्मन्यतेकपि सत्तमः॥
लघुनाकृतरूपेणपाशान्निर्गत्यतत्क्षणे॥१८॥

भा॰टी॰ - हनुमानने राक्षसोंको कछुभी बलवान नहीगननेथे
यहजो राक्षसोंकी लघुता सो हनुमानको लघुरूप भयाहै ऐसा
लघुरूप धरिकै हनुमान उसी वखत राक्षसोंकेपाससें निकलगए

श्लो॰ दुष्टकार्यस्थितिंप्रीत्याहवज्जांहनुमान्कपिः॥
ददाह लंकान्नगरींराक्षसानांप्रपश्यताम्॥१९॥

भा॰टी॰ - बुरेकाजोंमें हठसें प्रीतिसें टिकना ऐसी लंकाहै तिस॰
लंकाकों राक्षसोंके देखते २ हनुमान भस्मकरिदेते भए॥१९॥

श्लो॰ पूर्वबुद्धिपरित्यागस्सेवदाहोविकथ्यते॥नि
न्दर्षाभूरितृष्णाद्या दुष्टकर्मरतिस्सदा॥परवित्त॰
कलत्रादिस्पृहाचसततंहृदि॥२०॥

भा॰टी॰ - हनुमानकी त्रासतें राक्षसोंकी पेस्तर वाली बुद्धि कों॰
थोरा थोरा त्यागना सोई लंकाको जलानाभयाहै तथा परजीवकी
निंदा इर्षा बहुत तृष्णा बुरेकाजोमें प्रीति सदा करना दूसरेको धन
स्त्री आदि हरण करनेकी सदा इच्छा करना ॥२०॥

श्लो॰ एवमाद्यास्तसंख्याताराक्षस्योभुवनत्रये॥ग्रं
थवृद्धिभयाच्चैवनोक्तास्सर्वामयाधुना॥२१॥

भा॰टी॰ - इनकों आदिलेकै गनती नहीजो कुकर्ममेंप्रीति सोरा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्षसी तीन लोकमें भई है. सब राक्षसीयों का वर्णन करे तो ग्रंथ बहुत बडा होजावैगा. इस भयसें नही मैंने वर्णन किया ॥२१॥

श्लो० भयन्तासांविलापश्च मदहानिश्चरक्षसां ॥ पुच्छशीतलतासाच लंकादुःखमनेकधा ॥ रूपभक्तेश्वजानक्यास्सेवास्वासनकपुनः ॥२२॥

भा-टी- - लंकाकों जरती देखिके राक्षसी सब बहुत डरिगई सोई राक्षसीयों को विलाप हुवा तथा राक्षसोंके मदको नाश भया सोई हनुमाननें पूंछि बुझायके ठंढी करते भए. औरजोजीव लंकामें बसेथे सबको बहुत दुःख भया सोई हनुमाननें फिरि जानकीकों विश्वास देते भए ॥२२॥

श्लो० पुत्रप्रीतिम्महावीरेताम्मणिंजानकीददौ ॥ तां गृहीत्वानमस्कृत्य तूर्णंचलितुमुद्यतः ॥२३॥

भा-टी- - जानकीने हनुमानमे पुत्र सरीके प्रीति करतीभई सोई चूडामणि है. तिस मणिकों हनुमानकों दिया. जानकीनें. उस मणिकों हनुमान लेके रामकेपास चलते भए ॥२३॥

श्लो० कार्यसिद्धिंस्वतोवीक्ष्य हर्षंचक्रेकपिस्तदा ॥ तदेवलंघनंसिन्धोः पुनराभून्मुनीश्वर ॥२४॥

भा-टी- - हनुमाननें अपने पराक्रमको देखिकें खुशी भए सोई. फिरि समुद्रकेउत्तरपार आना भया ॥२४॥

श्लो० गुरुदेववियोगस्यशान्त्युपायांगदस्यच ॥ आस्वासनंकपिश्चक्रेस्वचरित्रप्रवर्णनैः ॥२५॥

भा-टी- - गुरुके वियोग शान्तिकी उपायजो अंगद तिस्को हनुमान जो लंकामें कर्म किया उस कर्म रूपविश्वास देते भये ॥२५॥

श्लो० कपेर्गुरूपदेशस्य विशङ्काचरणंगुरौ ॥ तत्रव्या

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तंकाननंतस्यकदापिविच्युतम्फलम् ॥२७॥

भा॰टी॰ - गुरुकोउपदेशरूप सुग्रीव निस्कों नित्य गुरुके पूजनमें शुद्ध आचार सोई सुग्रीवको मधुनाम वगैचाहै दैवयोगसें सोई आचार कभी क्षण भरेको नष्ट होजाताहै सोई फलहै ॥२६

श्लो॰ तस्यैवभक्षणञ्चक्रुः कपयोंगदप्रेरिताः ॥ गुरावाचारमननध्यानचिन्तनकीर्तनाः॥२७॥

भा॰टी॰ - क्षण भरेको आचार नष्ट होजाताहै सोई फलकों अंगद की आज्ञापायकै कपियोंने खाते भए गुरुके चरणमें आचार मानना॰ ध्यान चिंतन कीर्तन करना॥२७॥

श्लो॰ एतेवनेशाः कपिना कृतारक्षापरायणाः॥ एते पुचकदालस्यास्तेन्यूनवनयार्द्दिताः ॥२८॥

भा॰टी॰ - ध्यान आदि इन्होंकों सुग्रीवने वनको मालिक कियाहै एसब गुरुके आचारके रखनेमें बडेचतुर हैं॰ इन्कोंजो कभी आलस्य होजातीहै सोवनके रक्षाकरनेमें छोटे मालिकहैं॰ उनकोंकपिलोगोनें मारतेभए॰॥२८॥

श्लो॰ निपीडितास्तेवनपाः कपीश्वरैर्विप्लुत्यमानास्वलितामुहुः पथि॥ सुग्रीवमूचुः करुणापरास्तदातत्काननस्यैवविनाशनमुने॥ २९॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी कपियोंसें पीडितजो पेस्तरवर्णन हुए बगीचाके रक्षाकरने वाले सो सब अपनादुःख तथा बगीचाको नाशसुग्रीवसें कहते भए॰ २९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेसुंदरकांडे संवर्तवरतन्तुसंवादेशिवसहायबुधविरचितेकपिमधुवनफलभक्षणेतृतीयोमोक्षोपानः॥३॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० वरतन्तुरुवाच तेन्यूनवनपास्सर्वेप्रेरि-
तैः कपिभिरुत्तदा॥ अंगदेनभृशञ्चैव ताडितावि
मदुद्रुवुः॥ तेषांविस्मरणान्नष्टस्मरणाभिश्च-
ताडना॥२॥

भा-टी- - वरतनु मुनि बोले अंगदकी आज्ञाकों पायके कपियोंनें व
नमेंजो छोटे २ मालिक तिनकों मारते भए- मारना क्याहै एसर्वध्यान-
आदिस्कंदरकर्मोंकों गुरुदेवमें भूलिजातेरहे सो भूलना नष्टहोग-
या- अब ध्यानआदिको स्मरण नित्यकरैंगे एई मारनाहुआ- इसप्रका
रसें ताडनाकी प्राप्तिजो वनके रखानेवाले सो भागतेभए॥१॥

श्लो० कम्पनम्पूवनम्प्रोक्तंप्राप्योचुःकपिसत्तमं॥
सर्वंकपिकृतंश्रुत्वाकपीशोहर्षमाययौ॥२॥

भा-टी-वनकेरखवा लोंकेहृदयमें ध्यान आदिकी आलस्य कांपनेलगी-
सोईतिनको भागनाहुआ- इसप्रकारसें भागिके सुग्रीवसें सब हा-
लकहतेभए कि हमारीसबकी अब पूर्व देहको लक्षण- नष्टहोगया-
सोई कहना भयाहै- वानरोंके कर्मकों सुनिके सुग्रीवकों बडाहर्ष
प्राप्ति हुआ- ॥२॥

श्लो०स्वात्मानमचलंमेनेकपिस्तद्धर्षमुच्यते॥स्वप
क्षवर्द्धनंज्ञानंतत्प्रभंराघवस्यच॥३॥

भा-टी- - सुग्रीवने अपनेरूपकों अचल मानते भए-किजो दुष्टकर्म
गुरुदेवकी आज्ञासें मेरेकोंदूरिकर्तेथे सो धीरे २ नाशभएचलेजातहै
यहसुग्रीवको हर्षहै तथा रामजीनें अपनापक्षजो ज्ञान- विराग- स
त्संग- यमनियम- इन्हो आदि लेके सुंदर कर्मोंकी वृद्धि मानतेभए
सोई सुग्रीवसें रामजीको प्रभ भयाहै॥३॥

श्लो०एतस्मिन्नंतरेचैवकपयस्तेसमागताः॥स्वस्वभा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वंपरित्यज्ज्यपतिताराघवान्तिके॥ ४॥

भा-टी- -ऐसी आनंद समीमें पेस्तर कहेहुए जो वानर सो सब अपने अपने स्वभावकों छोडिके रामजीके सामने पडिजातेभए॥४॥

श्लो० पृष्टारामेनतेसर्वेकुशलम्वद्भिरेतदा॥ कृपया तवराजेंद्रवयम्भिर्मलिनंकृताः॥५॥

भा-टी- - विवेक रूपरामजीनें वानरोंसें कुशल पूछे तो वानर बोले कि, हेरामजी जिसदिन हमारे सर्वके ऊपर आपकी कृपाभई उसीदिन गुरुमें बुराकर्म देखना इससे आदि औरजोकर्म ऐसे वानर रिक्ष हम सर्वजो हैसो आपने मलरूप स्वभावते छूटिगए॥५॥

श्लो० प्रोवचहनुमान्सर्वंलंकावृत्तांतमादितः॥ स्वस्मिन्तनयप्रीतिंचजानक्यामणिमाददौ॥६॥

भा-टी- - लंका कोसमाचार सब हनुमान रामजीसें कहते भए आपनेकुं जानकी लडिका मानिकेपुत्रवालीप्रीतिकियासोई पुत्रकी प्रीति मणि भईहै सो मणि हनुमानकों देती भई सोईमणि हनुमानने रामजीकोंदिया रामजीनें मणिपायके खुशी भए॥६॥

श्लो० जानकीबालकोयम्वेप्रेमरूपंपुनःपुनः॥ उवाचरामस्तम्प्रीत्यातत्तदादरमुच्यते॥७॥

भा-टी- - रामजीवारंवार सबसें कहते भएकि जानकीको ब्रह्ममेजो प्रेम सो पुत्ररूप हनुमान है ऐसी रामकी वाक्य सो हनुमानको आदर भयाहै॥७॥

श्लो० गुरौदुर्भावनात्यक्ताकप्यृक्षेश्वरभावना॥ कृतावसेवसेनायायोजनागणनाशुभा॥८॥

भा-टी- - जीवोंको गुरुदेवमें दुष्टभाव छूटिगया सुंदरभाव करनें लगेकि हमारेगुरु साक्षात् ईश्वरहै ऐसीजीवोंकी बुद्धि सोई सेनाकीग

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नती तथा लंकाको चलना भयाहै॰॥८॥

श्लो॰ दुष्टकर्मस्थितिप्रीतिलंकासौख्यस्यकांचनं॥
तद्धर्षवारि धेर्नाशचिंतासातत्रसंस्थितिः॥९॥

भा॰टी॰ - खोटेकाजोमें हठकरिके टिकना॰ ऐसीजो लंका तिस॰ का सुख सो सुवर्ण तिस्को हर्ष सो समुद्र ऐसे समुद्रके नाश करनेकी चिन्ता सोई समुद्रके तटपर रामजीकी फोजको उतरना होताभया॰

श्लो॰ कुकर्मत्रासरूपेण बोधितश्चदशाननः॥ भ्रा॰
त्राविभीषणेनैवतेननिष्कासितोबलः॥१०॥

भा॰टी॰ - बुरेकाजमें डरना सो बिभीषण है॰ सो मनरूप रावणकों॰ बिभीषणनें ज्ञान दिया॰ कि भाई सुंदरकर्म करो॰ बुराकर्म छोडि देवो॰ ऐसी वचन सुनिके लंकासें बिभीषणकों रावणनें निकासि दिया॰ बुराकर्म कर्नेमें राक्षस भयसें हीन भये सोई बिभीषणकों लंकासैं निकारना हुआ॥१०॥

श्लो॰ सत्यार्जवनिरानन्दाहिंसनास्तस्यमंत्रिनः॥स
मायान्मंत्रिभिश्चैतैश्शरणंराघवस्यवै॥११॥

भा॰टी॰ - सत्यवचन॰ कोमलस्वभाव॰ अभिमानहीन चित्त॰ जीवमात्र की दया यहचारि बिभीषणके मंत्रीहैं॰ इनचारोंकों संगलेके रामजी की शरण आया॥११॥

श्लो॰ नाम्नश्चार्थमविज्ञातंकपिभिस्तस्यकर्हिचित्॥
त्रासन्दास्यत्ययन्तस्मान्नोऽतश्चक्रुर्निवारणम्॥१२

भा॰टी॰ - कपियोनें त्रासरूप बिभीषणके नामको अर्थ कभी नहींजाणते थें यहजानते थेकि त्रासरूप राक्षस सबकों त्रास देताहै॰ विचारकि हेकि, यह आवैगातो हमसबकों त्रास देवैगा॰ इसवास्ते रामजीकेसामने बिभीषणकों नहीं आनेदिए॥१२॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० आज्ञप्तारामचन्द्रेणबोधिताश्चापिवानराः॥क
पयश्चानयामासुस्तञ्चराक्षससत्तमम्॥१३॥

भा·टी· - रामजीवानरोंसें बोलेकि यह विभीषणसबकों त्रासनहीं देता·एतौ खुद्दबुरेकाजसें डरताहै इस्कोल्यावो·ऐसारामजीसें ज्ञानपायके विभीषणकौंरामजीके पास लेआए॥१३॥

श्लो० ईश्वरप्राप्त्युपायस्यमूलम्प्राप्यजहर्षसः॥स
एवपातोरामस्यपादाग्रेतस्यवर्णितः॥१४॥

भा·टी· - ब्रह्ममें प्राप्ति होनेकी उपायको मूल रूपविवेक रूपरामजी जिनकोपायके विभीषण खुशी भया सोई रामजीके चरणके साम्नेवि भीषणको पडिजानाहुआ॥१४॥

श्लो० लंकायाशिक्षणार्थायलंकाराज्यंददौहरिः॥
भविष्यतिचसालंकासाधूनाम्प्राणवल्लभा॥१५॥

भा·टी· लंका को भगवानकीसेवनआदि सुंदरकर्मशिखाने वास्ते· लंकाकोराज रामजीनें विभीषणकौंदियाकि लंकाको राजा विभी षण होवैगा·तोयह लंका साधु लोगोंकों प्राणसें प्यारी होवैगा·ऐ साविचारिकें॥१५॥

श्लो० लंकासुरवहिरण्यस्यहर्षवारिधितारणे॥ई·
श्वरप्रार्थनारूपम्विचारंकृतवान्प्रभुः॥१६॥

भा·टी· - लंका कोसुरव सोई सुवर्णहै तिसकरिके लंकाजडीहै· उससुवर्णमें हर्ष माननासो समुद्रहै जैसासमुद्रको पारनहीं तैसा ही हर्षकोपारनहीं ऐसेसमुद्रकेपार जानेवाले इश्वरकी विनतीरूप· विचार रामजीकर्तेभए॥१७॥

श्लो० एतस्मिन्प्रेरितोशीघ्रमागतौशुकसारणौ॥राम
सेनांरावणेनकृतघ्नगुरुद्रोहिणौ॥१८॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - ऐसाविचार रामजी करिरहेहैं उसी वखत रावणकी आज्ञापायके जलदी शुक सारण ये दोराक्षस रामजीकी फौजमें आये- शुक तो कृतघ्नरूपहै- जोउपकार करैउसकों नाहीमानै- और सारण गुरुसें द्रोह करताहै तिसकारूपहै॥१७॥

श्लो॰ दूतौदशाननस्यैतौ कृतघ्नगुरुद्रोहिणौ॥ कप यस्ताडयाञ्चक्रुर्ज्ञात्वाकपिनृपाज्ञया॥१८॥

भा-टी- - ये दोनो कृतघ्नतथागुरुद्रोहरूप रावणके दूतहैं ऐसाविचारिकें सुग्रीवकी आज्ञा पायकें वानर मारने लगे॥१८॥

श्लो॰ स्वकर्मणि हयोः प्रीतिर्यापुराजन्मतोऽप्यभूत् रामदर्शनमात्रेणविनष्टासाचताडना॥१९॥

भा-टी- - कृतघ्न तथागुरुद्रोहरूप शुक सारणको स्वभावकिउपकारकोनहीं मानना तथागुरुको द्रोह करना- ऐसीजो दूतोंकी अपना२ कर्ममें प्रीति रहीसो प्रीति रामजीके दर्शनसे नष्ट होगई- सोई शुक सारणकी ताडना हुई॥१९॥

श्लो॰ मोचितौरामचंद्रेणगतौरावणसन्निधिम्॥- रव्यापयांचक्रतुस्सर्वंरावणायथाक्रमम्॥२०॥

भा-टी- - रामजीने दूतोंकों कपियोंकी त्रासतें छुडाय दिया- तब दूनो दुष्ट निर्मल होकें रावणसें रामजीकी हाल जो देषिगएं सो सब- कहते भये॥२०॥

श्लो॰ पूर्वप्रकृतिनिर्मुक्तौतदेवमोचितौतदा॥ तिरस्कृतौरावणेन कुसंगत्यागकारणात्॥२१॥

भा-टी- - पहिलेके दुष्टस्वभावसें दूनो छूटिगए सोई कपियोंकी त्राससें रामजीको छुडानाहुआ- तथाषोटीसंगतिसें छूटिगए सोई रावणसें अनादरपायकें॥२१॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० शरणंरामचन्द्रस्यसमायातौपुनर्द्रुतम्॥रा
मसंगतिजं सौख्यंप्रापितौमुक्तिकारणम्॥ २२॥

भा०टी० - शुकसारण जलदीरामजीकी शरण आते भए० मुक्तिको बीज ऐसाजो रामजी को संग तिसमें उत्पन्न हुआ सुख उससुखको प्राप्ति होते भए ॥ २२॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेसुंदरकांडे संवर्तवरतन्तुसंवा
देशिवसहायबुधविरचिते शुकसारणमोक्षे चतुर्थो
मोक्षोपानः ॥ ४॥ इतिसुंदरकांडसमाप्तः

अथ युद्धकांड प्रारंभः

श्लोक० वरतन्तुरुवाच सर्वेषाम्मतमाकृत्य०
रामस्सत्यव्रतस्सुधीः॥ लंकासुखहिरण्यस्य
हर्षपालनहेतवे॥ १॥

भा०टी० - वरतन्तु मुनि बोलते भए सब वानर तथा रिक्षोंके मत० कोंलेके बडेबुद्धिमान रामजी हैसो लंकापुरीको सुखरूप सुवर्ण तिसके हर्ष सोई समुद्र तिस्के रक्षाकरने वास्ते ॥ १॥

श्लो० प्रेमोत्कंठाशमादीनान्तेकुशाविजयंरिपोः॥
तद्रूपमासनंकृत्वाव्रतंरामः समादधे॥ २॥

भा०टी० - शमन्यम० दम० दया इन्हो आदि लेके और जो ईश्वरके प्यारे कर्म हैं तिन्ह कामोमें प्रेमसें गद्गद होना वचनन कहिआवे ऐसेस्व भाव कुशहैं तथा रावणकोंजीतिके अपनी विजय सोई आसन० है ऐसा कुशके आसन पर बैठि कै जीव मात्रके मोक्ष करनेको विचा ररूप व्रत रामजी धारण करते भए० ॥ २॥

श्लो० त्रयः कालादिनाऽप्रोक्तास्सर्वानाकृष्यमंडले॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सत्सङ्गस्यनयिष्यामिसर्वान्जीवान्चराचरे॥३॥

भा०टी० - भूत भविष्य वर्तमान एतीनकाल तीन दिन भएहैं· राम जीनें विचारेकि, मनरूपरावणको नाश करिकै तिसपीछै सबजीवोकों ज्ञान की रस्सीसे पकडिकै सत्संगमें लैआवैगे· मोक्षहोनेवास्ते ऐसा उत्तम व्रतरामजी धारण करतेभये॥३॥

श्लो० मूलमालस्यमुक्तंचफलन्तत्स्करवर्धनम्॥·
सत्कर्मनाशकोज्ञात्वातत्त्यजेहौरघूत्तमः॥४॥

भा·टी· - दोप्रकारकी आलस्यहै एकतौ बुरेकाममें दूसरा सुंदर कर्ममेंसे ब्रह्ममे प्रीति तिस्में आलस्य करना सोई बनको मूलहै तिस्कों रामजी त्यागि देते भए· उसी आलस्यमे हर्ष माननासो फलहै उसफलकोंभी त्यागिकै रामजी निराहारव्रत कर्ते भए॥४॥

श्लो० लंकासुरवहिरण्यस्य हर्षवारिधिमुत्तमम्॥
हानिरूपंमहामार्गं मयाचत रघूत्तमः॥५॥

भा·टी· - लंका को सुरव सोई सुवर्ण उस्मे हर्ष सोई समुद्र· तिस समुद्रकी हानि रूप बडी रस्ता रामजी समुद्रसें मागतेभए· कि· तूं हानि मानिकै सुषिजावो· तौ लंकामें हमाराराज होजावै॥५॥

श्लो० अदृष्ट्वाहर्षहानिंवैरावणस्यवधोद्यतः॥तद्वा
निशमनोपायंक्रोधञ्चक्रेचराघवः॥६॥

भा·टी· - समुद्रकी हानि होती रामजीनहीं देखे· तौ रावणकेमारनेवास्ते उपाय करि रहे ऐसे रामजी तिस हर्षके शांति होनेवास्ते· उपायरूप क्रोध कर्ते भए॥६॥

श्लो० लंकांशुभांपुरींकर्तुंविचारंप्रकरोतिसः॥अनेः
कयत्नंरामश्चतत्सागरविशोषणम्॥७॥

भा·टी· - रामजीनें लंकापुरीकों सुंदरबनानेवास्ते रोजविचार कर्ते

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

है सोई समुद्रको शोषण है॥७॥

श्लो॰ धैर्येणविचकर्षाशुतेजरूपंशरम्प्रभुः॥ विक
र्षंतंशरन्दृष्ट्वारामंसत्यपराक्रमम्॥८॥

भा॰टी॰ - धीरज करिकै तेजरूपजो शर है तिस्कों रामजीनें हर्षरूप-
समुद्रके शोषण कर्नेवास्ते खैंचतेभए॥८॥

श्लो॰परपीडादयःसर्वेव्यथिताजलजन्तवः॥ अपश्य
न्तस्स्वशरणंदुःखिताश्चमुहुर्मुहुः॥९॥

भा॰टी॰ - परकों दुःख देनेवाले जोषोटेकर्म है सोई सब जलजीव है
सोसब आपनी रक्षा करनेवास्ते जीवकों नही देखेतो वारंवार दुःखी
होतेभए॥९॥

श्लो॰ नरामोमानवोयम्वैविवेकोमोक्षदायकः॥ इ
तिज्ञानंसमुद्रस्यद्विजरूपंतदेवच॥१०॥

भा॰टी॰ - समुद्रकों ऐसाज्ञान हुआकि, रामजी मानुष्य नहीहै ए
तो मोक्षदेनेवाले विवेकहै ऐसा ज्ञान सोई ब्राह्मणकोरूपहै॥१०

श्लो॰ तत्रासोधारणान्तस्यपात्रीतत्प्रीतिरुत्तमा ॥
मयासंतोषितेरामेपूर्वन्मेवसुरक्षस्थितिः॥११॥

भा॰टी॰ - रामजीकी त्रास सोई ब्राह्मणकोरूपकोधारणभया-
है तिस्कों धरिकै उसी ब्राह्मणके रूप धारणमें प्रीति सोई थाली-
भईहै समुद्रनें विचारकियाकि, जो मै रामजीकों प्रसन्न करिलेउ
गा तबपेस्तर सरीके मेरी स्थिति॥११॥

श्लो॰ वर्तिष्यन्तिचसौख्याद्याभविष्यंतिचमेतदा॥
एतेचान्येचतस्यासन्विचाररत्नसंचयाः॥१२॥

भा॰टी॰ - वनीरहैगा तथा बडेबडे सुखभी मेरेकों होवैगा इस्सरीके-
औरजो अनेक प्रकारको समुद्रको विचार सोई अनेक प्रकारकीबहु-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तसे रत्न भई है ॥१२॥

श्लो॰ सागरस्तान्समादायसंप्रापराघवान्तिकम् ॥
स्वस्यापिराघवेप्रेमवर्द्धनंस्तवनंकृतं ॥१३॥

भा॰टी॰ - पूर्वोक्त ब्राह्मणको रूप धरिके तथा पूर्वोक्तथालीमै पूर्वोक्तरत्न धरिके समुद्र रामजीके पास आताभया· समुद्रको भी प्रेम रामजीमें बहुत होगया सोई समुद्रने रामजीकी स्तुति कर्ताभया १३

श्लो॰ समुद्रेनैवरामस्यकृतायाविस्मृतिः पुरा ॥ दिगुत्तराचसाज्ञेयापूर्वमानोरिपुस्मृतः ॥१४॥

भा॰टी॰ - समुद्रने पेस्तर रामजीको भूलिगयाथा सोई उत्तरदिशाहै रामजीसें पेस्तर समुद्रने अभिमान कियाथा· सोसमुद्रको वैरीहै· जिसने समुद्रको ज्ञान हरिलियाथा ॥१४॥

श्लो॰ पूजितस्संस्तुतोरामः क्षामितःसिंधुनामुहुः ॥
तेनसंप्रार्थितोरामोजघानतद्रिपुन्तदा ॥ राक्षसानांविनाशायभूभारहरणायच ॥१५॥

भा॰टी॰ - समुद्रने रामजीकी पूजन स्तुति किया· तथा अपना अपराध रामजीसें क्षमा कराया· वैरीकों मारनेवास्ते प्रार्थना किया· तबरामजीने पेस्तर वर्णन हुआजो समुद्रको वैरी तिसकों मारते भए राक्षसोंकानाश कर्नेवास्ते तथा पृथ्वीको भार हरनेवास्ते ॥१५॥

श्लो॰ पर्णंचक्रेस्वयंरामस्सस्सेतुस्सागरेभवत् ॥ क्षमारूपञ्चपाषाणंरामस्यसेतुबंधने ॥ अन्येसत्सं गवीर्याद्यास्साहित्यास्तत्रबंधने ॥१६॥

भा॰टी॰ - रामजी प्रतिज्ञा कर्तेहुए सोई समुद्रमे पुल भयाहै· रामजीकेचित्तमें क्षमा बहुत है सो क्षमा पुल बांधनेवास्ते पत्थर भयाहै· तथापुल बांधनेमें औरजो अनेक प्रकारकी सामग्री चाहिए सो सत्सं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गको अनेक प्रकारको सुंदर कर्म्म है सो सब सामग्री भएहै ॥ १६ ॥

श्लो० बंधनंरामचंद्रस्य दृढत्वंस्वपणेऽभवत् ॥ ईदृ-
शःसागरेसेतुर्बद्धोरामेनवैतदा ॥ १७ ॥

भा०टी० - रामजी अपनी प्रतिज्ञासें चलायमान कभी नहीं होते सो ईपुलको बांधना भयाहै तब ऐसा पुल समुद्रमें रामजी बांधते भए

श्लो० रावणस्यातिबलिनोयुद्धेज्ञात्वारघूत्तमः ॥ महा
दुःखंभवेत्तत्रक्रूरेक्रूरतरेऽपिच ॥ १८ ॥

भा०टी० - बडाबली रावण तिसके युद्धमें क्रूरसे क्रूरयुद्धमें बडादुःख होवैगा ऐसा रामजीने जानिकै ॥ १८ ॥

श्लो० चक्रेसंस्थापनंतस्यस्वकर्मशिवरूपिणः ॥ अच
लत्वंचविश्वासम्पूजनंतत्रनिश्चितम् ॥ १९ ॥

भा०टी० - तब अपने स्वभावको अचल विश्वासरूप शिवकी स्थापनाकर्ते भए कि यातो रावणको मारैंगे या हम मरैंगे पण युद्ध छोडेंगे नहीं ऐसो स्वभाव पुष्ट कर्ते भए अपने स्वभावमें रामजीको निश्चय है कि मैंने स्वभावको जैसा राखौंगा तैसा रहैगा ऐसा निश्चय सोई शिवकी पूजन भईहै ॥ १९ ॥

श्लोक० एवंकृत्वाविधिंतत्रविवेकोराघवस्तदा ॥ संस्मृ
त्यचमनोरूपरावणंप्रबलंप्रभुः ॥ २० ॥

भा०टी० - विवेकरूप रामजीने मनरूपरावणको बडाबली जानिकै ऐसा उपाय कर्तेभए ॥ २० ॥

श्लो० स्वभावन्तत्यजुस्सर्वेपूर्वोक्तंगुरुसत्तमे ॥ पूर्वो-
क्ताःकपयश्चैवरिक्षाश्चरामसंश्रयात् ॥ २१ ॥

भा०टी० - तथा वानररिक्षभी रामजीकी संगति पायकै पेस्तरजो गुरुमें दुष्टस्वभावथा उसको त्यागिदेतेभए ॥ २१ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गुरोसद्भावनंचक्रुर्ऋक्षाश्वकपयोनिशम्॥ तत्सैन्यो
त्तारणंब्रह्मन्बभूवराघवस्यच ॥२२॥

भा॰टी॰ - वानर तथा रिक्ष गुरुमें स्कंदरकर्म देखने लगे॰ रातिदिन सोई रामजीकी सेनाको समुद्रके दक्षिणपार जानाभयाहै॥२२

श्लो॰ दुष्टकार्येदशास्यस्य सदाप्रेमाचलम्मुने॥
सुस्कवेलोगिरिःप्रोक्तोयुद्धचिंतादशानने॥२३॥

भा॰टी॰ - हेमुनिषोटे कर्ममेंरावणको प्रेमकभीचलायमान नहीहो ता सोई स्कवेलनाम पर्वतहै तथा रावणके भी रामजीकेसंगयुद्ध करनेमेंचिंतारहतीहै ॥२३॥

श्लो॰ सास्थितीरामसैन्यानामभवत्तत्रपर्वते।महानं दयुतोरामोबभूवमुनिसत्तम ॥२४॥

भा॰टी॰ - सोईस्कवेलपर्वत पररामजीकी सेनाको टिकनाभयाहै॰ हेमुनिजी समुद्रके पारजायके सेनाको स्कवेलपर वास देखिकेराम जीकों बहुत आनंद होताभया॰॥२४॥

श्लो॰ दुःकर्म्मप्रीतिहृदसंस्थितिसौख्यहर्षसिंधुंव्य
तीर्यकपिसैन्ययुतोविवेकः॥तस्थौविभीषणमतेन
विभीषणाढ्याभूभारहारकुशलोरघुवंशकेतुः॥२५

भा॰टी॰ - पेस्तर वर्णनहुवाजो समुद्रनिस्केपार जायके विभीष॰ णकेमतसें विवेकरूपरामजी स्कवेलपर टिकिके भूमिकेभारना शकर्नेमें बडेचतुर खुशीहोते भए॥२५॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेयुद्धकांडेशिवसहायबुधवि
रचितेससैन्यरामस्यस्कवेलाद्रिस्थितिवर्णनेप्रथमो
मोक्षोपानः॥१॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लोक- वरतन्तुरुवाच तृष्णारतिर्मतिर्भूतिर्दु-
ष्टकार्येषुसर्वदा॥ वर्ततेमुनिशार्दूलमनसोरावं-
णस्यवै॥१॥

भा-टी- - वरतंतु मुनि बोले हे मुनियों में श्रेष्ठ- खोटे कर्मोंमें सदा तृ-
ष्णा प्रीतिबुद्धि विभूति ए सब रावणकी बनी रहती है॥१॥

श्लो०ताश्चतस्रोदिशःप्रोक्तालंकायादुष्टकर्म्माणि॥
पणप्रीतिस्थितेःपूर्वंकथितायाःसविस्तरम्॥२॥

भा-टी- -पेस्तर वर्णन भईजो लंका तिस्केए चारि चारिउ दिशा भईहै

श्लो० सत्संगनिंदनभित्यंतद्विनाशायचिन्तनम्॥
क्वचित्क्वचित्कृतंचापिसतांहासादिताडनम्॥३॥

भा-टी- - सत्संग कीनिंदा रोज करना सत्संगको नाश करने वास्ते चिं-
ताकरना- किसी२ जगह सत्संगको नाशभी करिदेना- साधु लोगों-
कों देखिके हसना आदि ताडन करना ॥३॥

श्लो०एतेद्वाराश्चचत्वारोलंकायामुनिनायक॥तेषुता
सुखजीवानामकरोन्मतिवारणम्॥४॥

भा-टी- - एचारि लंकाके चारि दरवाजाहै इन दरवाजामें तथा-
चारि दिशामें रामजीनें दुष्टजीवोंकी बुद्धि कोनाश करिके
सुंदरबुद्धि करदियाहै॥४॥

श्लो०तदेवरोधनंविप्रलंकायाश्चचतुर्दिशः॥चतु
र्ष्वद्वारदेशेषुराघवेनकृतंमुने॥५॥

भा-टी- - सो हे मुनिजी ऐसा कर्म सुंदरजीवोंकों सुख देने वा-
स्तेरामजीनें किये सोई लंकाको चार दरवाजा तथा चारि दिशा राम
जी घेरि लेते भए॥५॥

श्लो०सत्संगनाशनंचैवराक्षसैश्चक्वचित्क्वचित्॥कृ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तन्तदेवलंकायाश्चोत्तरंद्वारमुच्यते ॥ ६॥

भा-टी- - राक्षसोनें किसी किसी जगहपर सत्संगको नाश करिदि-
यासोई लंकाका उत्तरदरवज्जाहै ॥ ६॥

श्लो० विनष्टस्यपुनः कर्त्तुर्वर्द्धनोपायचिन्तनम्।सै
वस्थितिस्समाज्ञेयारामचंद्रस्यचोत्तरे॥ ७॥

भा-टी- - नष्टभयाजो सत्संग तिसकी फिरि वृद्धिहोनेकी उपाय-
को चिंतवन रामजी नित्य कर्ते है सोई लंकाके उत्तर दरवज्जेपर रा
मजीको टिकना भयाहै॥ ७॥

श्लो-सद्ज्ञानशिक्षणंरामेलक्ष्मणेचकपिष्वपि॥ऋ-
क्षेष्वपिविशेषेणसङ्गत्याशोधितेषुच॥ ८॥

भा-टी- - रामजीमे लक्ष्मणमे तथा बानरोमेंभी तथा रामकी संग
तिकों पायके शुद्ध भएजो रिक्ष तिन्होमेभी सुंदरज्ञान शिखानेकी
बुद्धि बहुत है॥ ८॥

श्लो० चक्रुस्तेशिक्षणंस्वस्वकर्मणोराक्षसेषुच॥दु
ष्टकर्मानिसर्वानिविधिनानिर्मितानिच॥ ९॥

भा-टी- - राम लक्ष्मणबानर एसब अपने अपने सुंदरकर्मकों राक्ष
सोकों शिखाते भए- जैसी जिस्की बुद्धिहै तिसमाफिक तथा तीनलोक
चवदाभुवनमें जो ब्रह्माकेबनाएहुए बुरेकर्म जितनेहै ॥ ९॥

श्लो० रावणेतानिवर्तंते कुम्भकर्णेविशेषतः॥दुष्ट
सङ्गादिकर्माणिस्करेशविजयेतथा ॥ १०॥

भा-टी- - सोसब रावणमेंवसतेहै कुंभकर्णमे तो विशेषसें वस-
तेहै तथा मेघनादमें कुंभकर्णसें ज्यादा बुरेकर्म्मोकोवासहै १०

श्लो- अन्येषुराक्षसेष्वेवमन्यायास्सर्वदास्थिराः॥शि
क्षणान्तेप्रकुर्वन्तिविवेकादीन्स्वकर्मणः॥ ११॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भाटी० - इसी प्रकारसें औरजो राक्षस है तिन्होमेंभी बुराकर्म रातिदिन टिकारहताहै रावण आदिलेकै सब राक्षस जो है सोस ब विवेकरूप रामजी आदिलेकै जो मोक्षके मित्रहै तिन्होंकों बुरा कर्म्म शिखवाते है ॥११॥

श्लो० एवंपरस्परंयुद्धंरामरावणयोर्मुने ॥ संकृत्य जीवन्मृतन्हौरामरावणवैरिणौ ॥१२॥

भाटी० - इस प्रकारकी अपना अपना कर्म शिखावनरूप युद्ध रामरावणकी होती भई रामरावण एदोनो आपसमे वैरमानिकै जीवको जुआकरिकै युद्धकर्ते भए ॥१२॥

श्लो० सूयोन्यै स्वर्गमोक्षायमहदैश्वर्य भुक्तये ॥ सर्वसौख्यायजीवस्यप्राप्तयेरघुनन्दनः ॥१३॥

भाटी० - जीवोंको सूंदरियोनिमें जन्म लेनेवास्ते तथा स्वर्ग प्राप्तिहोनेवास्ते तथा बहुत स्वर्ग भोगनेवास्ते तथा बहुत सूख भोगनेवास्ते तथा मोक्ष होनेवास्ते रामजी युद्ध करते भए विवेककी इच्छातो जीवोंकों मोक्षदेनेकीहै परंतु जो मोक्षकी उपायमें जीव भ्रष्ट होजावे तो संसारको सूख तो होवे ऐसाविचारि रामजी युद्धकर्ते भए १३

श्लो० सहित्वानेकदुःखानियुद्धंचक्रेरघूत्तमः ॥ कुयोन्यैनरकायैचरौरवाद्याप्तिहेतवे ॥१४॥

भाटी० - अनेक दुःख सहिकै रामजी युद्ध कर्ते भए तथा जीवोंकों षोटीयोनि प्राप्ति होनेवास्ते तथा रौरव आदि नर्क प्राप्ति होनेवास्ते १४

श्लो० अनेकदुःखभोगायजन्ममृत्युभवायच ॥ जीवस्यानेकदुःखाप्त्यैयुद्धंचक्रेचरावणः ॥१५॥

भाटी० - गनतीसें हीन दुःख जीवोंको भोगकर्नेवास्ते तथा वारंवार जीवकोंजन्म लेनेवास्ते तथा शरीरको छोडनेवास्ते और अनेकप्रकारको

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दुःखजीवोंकों देनेवास्ते रावण युद्ध कर्ता भया ॥१५॥

श्लो० परितापान्ध्येनेकानिसहित्वापरतापनः॥ काम ँ क्रोधश्चलोभश्चमोहमानावहन्तथा ॥१६॥

भा-टी- - दूसरेजीवोंकों दुःख देनेवाला जोरावणसें अनेक दुःख सहताहै परंतु जीवकों दुःख देनेवास्ते युद्ध कर्ता भया· तथा काम क्रोध लोभ मोह मान अहंकार ॥१६॥

श्लो० सद्सत्कर्मवर्तंतेकर्मस्वेतेनिरंतरम्॥ असत्कर्मस्वसत्योक्तास्सत्कर्माणिचसज्जनाः॥१७॥

भा-टी- - एसब सुंदर कामोंमें भी रहतेहैं तथा बुरेकामोमें भीरहतेहैं षोटे कर्ममें षोटा कहातेहैं तथासुंदर कर्मोंमें सज्जन कहतेहैं

श्लो० असज्जाः कामवर्गाश्चयुद्धचेष्टाश्चसज्जनैः॥ कुर्वंतिराक्षसा भूत्वासद्धर्मान्पीडयन्तिच॥१८॥

भा-टी- - षोटे कर्मों करिकै उत्पन्नजो षोटे कर्म जैसा काम क्रोध आदि कर्म सोसबराक्षसहोके सज्जन लोगोंसें युद्ध कर्तेहैं तथा सुंदर धर्म जैसा कथा श्रवण स्नान दान दया जप पूजन इन्होआदि लेके औरजो सुंदर धर्म तिन्होको नाश कर्ते भए उसी वास्ते युद्ध कर्ते भए· क्योंकि विवेकरूप रामजी सुंदर धर्मको नाश नहींकरने देते ॥१८॥

श्लो० एवंपरस्परंयुद्धम्बभूवाहोनिशम्मुने॥ रामरावणयोः क्रूरंजन्ममोक्षाप्तिहेतुकम्॥१९॥

भा-टी- - इस प्रकारसेंजीवकों मोक्ष होनेवास्ते रामजी युद्धकरते भए· तथा जीवकों वारंवार जन्म लेनेवास्ते मनरावण युद्धकर्ता भया· सुंदर तथा बुरेकर्मको करना एई युद्ध भईहै ॥१९॥

श्लो० छिन्नंविवेकेनपुनः पुनश्शिरोज्ञानासिनारा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

घववर्यसूनुना ॥ मनोदशास्यस्य महाहवेमुनेन-
चंचलत्वचतदेवतच्छिरः॥ २०॥

भा-टी- - मनकी चंचलता जोहै सोई मनरूप रावणको शिरहै तिस-
शिरकों रामजीनें वारंवार काटते भए-॥२०॥

श्लो० लज्जाश्रमविहीनश्चरावणोराक्षसेश्वरः॥
सएववर्द्धनस्तस्यशिरसश्चंचलस्यवै॥ २१॥

भा-टी- - मन रावण लज्जा तथा श्रमसें हीनहै चेसरम है सोई रा-
वणके शिरकी युद्धमे वृद्धि होती भई॥२१॥

श्लो०कापथात्तंसमाकृष्यसत्पथेचञ्चलंशठम्।
रामोनिवेशयामासचासकृद्दयया हठात्॥२२॥

भा-टी- - रामजीनें दयाकरिके रावणकों षोटीरस्तासें षैंचिके सुं-
दररस्तामें टिकाते भए-हठसें ॥२२॥

श्लो० तदेवछेदनंतस्यकृतंरामेनसंगरे॥ प्रवेशितो
ऽपितेनाशुसत्पथेहरिवल्लभे॥२३॥

भा-टी- - सोईराम करिके शिरको काटना भयाहै-युद्धमे- मनरू-
परावणको रामजीनें भगवानकीप्यारीरस्ताजो सत्संग तिस्मे-
टिकाते भए तौभी-॥२३॥

श्लो०तत्परित्यज्यसहसाकापथस्थुनराश्रितः॥ तत्त
स्यभूमिपतनमाकाशेव्याप्तिरेवच॥२४॥

भा-टी- - उसरस्ताकों त्यागिके षोटीरस्तामें फिरि टिकताभया- सो
ई शिरको भूमिमें पडना भया- तथा आकाशकोजाना भया-॥२४॥

श्लो०कदातृष्णांकदानिद्रांकदाशान्तिंकदाक्षमां॥
कदाहानिंकदाग्लानिंनीत्वनीत्वोकदामुने॥२५॥

भा-टी- - हेमुनिजी मनरूपरावण कभी तृष्णाको कभी निद्राको-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कभीशान्तिको कभी क्षमाको कभीहानिको कभीग्लानिको कभी-
नीतिको कभीअनीतिको ॥२५॥

श्लो० ज्ञानाज्ञानसुखंदुःखम्मूर्खतांसुज्ञतांकदा॥
एवमादीन्यनेकानियेषांसंख्यानविद्यते॥२६॥

भा-टी- -कभीज्ञानको कभीअज्ञानको कभीसुखको कभीदुःख-
को प्राप्ति होताहै कभीमूर्ख बुद्धिकों कभीसुंदरबुद्धिकों इन्होकों-
आदिलेके गिनतीसेंहीनऔरजोचीजहै ॥२६॥

श्लो० प्राप्नोत्यज्ञानतोनित्यंकदाराजाकदाप्रजाः।ध-
नाढ्योवित्तहीनश्चदानीचकृपणस्तथा ॥२७॥

भाषाटीका- - मनरूपजोरावणहै सो अज्ञानकी वशी होकै नि-
त्य कभी राजकों प्राप्ति होताहै कभीप्रजाकीरीतिकों प्राप्ति होताहै
कभी बडा धनमान होजाताहै कभी दरिद्री होजाताहै कभी-
दानी होजाताहै कभी कृपण होजाताहै कभी ईश्वरसे वैर राख
ताहै इसवैरके प्रतापसें अनेक दुःख सहताहै तौभी ईश्वरसें प्री-
ति नहीं लगाता इसवास्ते दुःख भोगताहै ॥२७॥

श्लो० क्षणेक्षणेभवत्येवंसामायादर्शितामुने॥सं-
ग्रामेरावणेनैवराक्षसेनमुहुर्मुहुः॥२८॥

भा-टी- - क्षण क्षणमें अनेक प्रकारकी जंजाल मन कर्ताहै सोई
युद्धमें रावणकी माया देख नाहुआहै ॥२८॥

श्लो० प्राणनाशोभवेन्मेचेत्तथापिनत्यजाम्यहम्॥स्व
कर्मरक्षसान्नाशंकरिष्यामि हठादपि॥२९॥

भा-टी- - रामजीनें ऐसी प्रतिज्ञा कियाहैकि चाहेमेरा प्राणरूप
सत्संग नाश होजावे परंतु मेराकर्मजो राक्षसोंको नाशसोतो मैं करौं
गा छोडौंगानहीं ॥२९॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ रामेनेतिप्रतिज्ञातंरावणेनापितत्तथा॥ रामादि सर्वसाधूनांकर्ताहंमूलकृन्तनम् ॥३०॥

भा॰टी॰ - तैसेई रावणभी प्रतिज्ञा कियाकि चाहे मेरा प्राणरूप षोटाकर्म नाश होवे परन्तु तौभी रामजी आदि लेकै जो साधु हैं जे साविवेकराम संतोष हरिमें प्रेमतीर्थ इन आदिको जडसें खोदिकै नाशकरि देउगा॰॥३०॥

श्लो॰ द्वयोः पणोरामदशास्ययोर्मुनेसैवेदृशस्सं गरवर्द्धनस्तदा॥ बभूवपेतुश्चपरस्परहताभूमौक पीशाः खलुराक्षसामुने॥३१॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी रामरावणकी ऐसी प्रतिज्ञासोई युद्धकी वृद्धिभई रामकीसेनासें मारेहुए जो राक्षस तथा रावणकी सेना करिके मारेहुए जो वानर से भूमिमें पडिकै मरिजाते भए ॥३१॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेयुद्धकांडेशिवसहायबुधवि रचितेसंवर्तवरतन्तुसंवादे द्वितीयोमोक्षोपानः॥२॥

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच दुस्संगकुम्भकर्णस्य- सदाप्रीतिस्स्वकर्मणि॥ सत्संगनाशनंचैवसानि द्रातस्यवैमुने॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि बोलतेभए खोटी संगतिरूपजो कुंभकर्ण है तिसकी अपने कर्ममें षोटे काजोमें प्रीति रोज लगी रहती है तथा सत्संगको नाशकर्नेमें नित्यप्रीति रहतीहै सोई कुंभकर्णकी निद्राहै॥१॥

श्लो॰ तस्यलोभगृहीतश्चसस्तस्यस्वपनस्मृतः॥ अहोनिशंनतद्ज्ञातंकदापीत्यम्बभूवह॥२॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - सत्संगकी नाशकर्नेकी लोभसें कुंभकर्ण दुखी होरहा है सोई उसका शयन कर्ना है- रातिदिन कुंभकर्ण कों मालुम नही होता ऐसा सोनेमेमस्त होरहा है॥२॥

श्लो० चिन्तनंचद्वयोर्नित्यंकरोतिद्विजमानसे॥दुः
संगपणवर्षेचद्वाविमौचिंतनौमुने॥३॥

भा-टी- - हेमुनिजी कुंभकर्णनें भलाबुरा दोनो कर्मकी चिंतवन कर्ता है एई दूनौका चिंतवन बारह महीनेमें॥३॥

श्लो० निद्राक्षयदिनौप्रोक्तौकुंभकर्णस्यदुर्म्मतेः॥
भविष्यतिजयोयुद्धेरावणस्येतिनिश्चितम्॥४॥

भा-टी- कुंभकर्णके जागनेको दोदिन भए है- रावणकोऐसी निश्चय हैकि युद्धमें मेरी निश्चयसें जय होवैगा-॥४॥

श्लो० कुंभकर्णेनतत्तस्यकारयामासरावणः॥प्रोक्तं
जागरणम्विप्रदुस्संगहर्षगर्ज्जनम्॥५॥

भा-टी- - परंतु कुंभकर्ण करिकें जय होवैगा- ऐसा रावणको विचार सोई कुंभकर्णकोजगाना भयाहै- खोटा कर्म रूप कुंभकर्णको- खोटे कर्ममें हर्ष है सोई कुंभकर्णको गर्जना भयाहै॥५॥

श्लो० सत्कार्यालस्यद्यूताद्यैस्सत्तिरस्कारनिन्दनैः॥
असंख्यैर्विधिनासर्वैर्निर्मितैश्चकुकर्म्मभिः॥६॥

भा-टी- - ब्रह्माकरिके बनाए हुए गिनतीसे हीन कुकर्म जैसा सुंदरकाजमें आलस्य तथा जुआ खेलना तथा साधुजनोंको अनादर कर्ना निंदाकर्ना॥६॥

श्लो० एतेषांप्रेमसौख्याद्यैश्शस्त्रैरस्त्रैश्चभूरिशः॥
संयुतस्सैनिकैरागाद्युद्धायरघुनन्दनम्॥७॥

भा-टी- - इनकर्म्मोको प्रेम तथा सुख सोई हथियार भयाहै- तथा-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

एही दुष्ट कर्म फोज भयी है· ऐसी फौंज तथा हथियार करिके युक्त· कुंभकर्ण रामजीसें युद्ध करनेकों आताभया ॥७॥

श्लो॰ शीघ्रन्दुस्संगरूपश्चकुम्भकर्णोमहाबली॥
तंसमायान्तमालोक्यविवेकोराघवस्तदा॥८॥

भा·टी· - जलदी दुस्संगरूप कुंभकर्ण युद्धमें आताभया· तिस्कों देखिकै विवेकरूप रामजी भी ॥८॥

श्लो॰ कपीनयोजयच्छूरानंगदादींश्चकोटिशः॥स्व
यम्भ्रातृसमायुक्तोयुद्धचक्रेरघूत्तमः॥९॥

भा·टी· - अंगद आदि वानरोंकों युद्ध कर्नेवास्ते आज्ञा देते भए· तथा आपुदोनो भाई युद्धकर्नेवास्ते चलते भए॥९॥

श्लो॰ पैशून्यमत्सरशुभाशुभदृष्टिपातैस्तत्सैनिकाः
कपिवरान्विभिदुः कुकार्याः॥अज्ञानवीर्यमदिराम्म
दवर्द्धिनीम्वैपीत्वाचसोपिविभिदेकपिवर्यवीरान्॥१०॥

भा·टी· - चुगली करना· दूसरेजीवोंके सुखकों देखिकै बुरामानना सुंदरकाजमें षोटाकाज देषना तथा खोटेकाजमें सुंदरकाज देखना· ऐसो आंखीसें खूबतरहसे निसान लगाय लगाय दुष्टकाजरूप पेस्तर वर्णन भएजो राक्षस सोसब वानरोंकों मारतेभए· अभिमानकों बढानेवालीजो अज्ञानको पराक्रमरूप मदिरा तिस्कों पीकै कुंभकर्ण भी वानररिक्षोंकों मारताभया॥१०॥

श्लो॰ ते वैहताश्चकपयःपतिताः पृथिव्यांसत्संगचिन्त
नमयींगमिताश्चमूर्च्छां॥तान्त्यज्यरावणसहोदर
नाशनायप्रोत्थायसर्वदितिजान्विभिदुर्नखाग्रैः॥११

भा·टी· - राक्षसोंकरिकै मारेगयेजो वानर तथारीक्ष सोसब पृथ्वीमें पडिकै सत्संगकी चिन्तारूप मूर्छाकों प्राप्ति होते भए· क्षणमात्रमें स·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

संगकी चिन्तारूप मूर्छा कों त्यागिके कुंभकर्णके नाश कर्नेवास्ते उठिके सब राक्षसोंको अपने अपने नखके अग्र करिके छेदन भेद न कर्ते भए ॥ ११॥

श्लो॰ संचिन्तनन्निजगुरोर्बहुधानखानितत्पादध्या
नबहुप्रेमनखाग्रमुक्तम् ॥ तन्मानसार्च्चनमहागिरि
भिश्चवृक्षैर्जघ्नुर्गुरूपवसनामृतचिन्तनैस्तान् ॥१२

भा॰टी॰ - वानरोनें अपने अपने गुरुको बहुत प्रकारको ध्यान कर्ते भए॰ तथा गुरुको ध्यान नखको अग्र भयाहै॰ मन करिके गुरुका पूजन कर्ना सोई बडे पर्वत भएहै॰ गुरुके साम्ने टिकनेकी चिन्तवन सो वृक्ष भएहै॰ ऐसे वृक्ष पर्वत करिके वानर राक्षसोंकों मारते भए ॥१२॥

श्लो॰ तान्स्वान्निरीक्ष्यकपिभिर्विगतांश्चप्राणैस्संभ्रद्रु
तान्निपतितान्भुविसैनिकांश्च॥ मूर्छागतान्कपिवरांश्च
मदावलीदान्दुद्रावदुष्टगमनः खलुकुंभकर्णः॥१३॥

भा॰टी॰ - कुंभकर्णने आपनी दुष्ट कर्म रूप फौजको वानरोसें नष्ट भई तथा भगी पतित देखिके युद्ध कर्नेकों कुंभकर्ण दोडताभया॰ १३

श्लो॰ सज्जनैस्तत्तिरस्कारोगतिवेगोनिगद्यते ॥ तन्द्र
वन्तंविलोक्याशुकपीन्हतुंरघूत्तमः॥१४॥

भा॰टी॰ - सुंदर कर्म्म जो साधु है सो कुंभकर्णको अनादर करिदियाहै सोई कुंभकर्णका दोडना भयाहै॰ वानरोंको मारनेवास्ते दोडताकुंभकर्णकों रामजी देखिके ॥१४॥

श्लो॰ सज्जनार्च्चनद्रावेनद्रुत्यतत्सन्निधिंगतः॥ पूर्वो
क्तैरस्त्रशस्त्रैश्चकुंभकर्णंचराघवौ॥१५॥

भा॰टी॰ - सुंदर कर्म्म करामजी पूजन कर्ते है सोई रामजीका दोडनाभयाहै॰ इसप्रकारसें दोडिके कुंभकर्णके साम्ने आते भए॰ कुंभक

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

र्णभी सामनें राम लक्ष्मणकों देखिके ये स्तर कहे हुए बाणकरिके

श्लो॰ स्वसंगभ्रष्टमतुलंक्रोधंकृत्वाजघानतौ॥जघ्नतुस्तावपिक्रोधात्तस्य कर्मविचिन्तनात्॥१६॥

भा·टी· - कुंभकर्णने अपनी संपूर्ण संगतिकों भ्रष्ट देखिके सोई बे प्रमाण क्रोधहै ऐसा क्रोध करिके राम लक्ष्मणकों मारताभया· कुंभकर्णके कर्मको चिंतवन राम लक्ष्मण कर्ते भए· कि यह दुष्टनें सज्जनोंकों खूब दुःख दियाहै सोई चिन्तवन राम लक्ष्मणका क्रोधहै ऐसा क्रोध करिके राम लक्ष्मण कुंभकर्णकों मारते भए॥१६॥

श्लो॰ स्वशिक्षासायकैर्दुष्टं कुंभकर्णं मदाकुलम्॥तयोर्युद्धंसमीक्ष्याथसाधवोदुर्जनास्तदा॥१७॥

भा·टी· - रामजीनें दुष्टकों सुंदर धर्मशिखातेभए सोई बाण करिके दुष्टकों मारतेभए· रामजी और कुंभकर्णकी युद्धकों देखिके· साधुजन तथा दुष्टजन॥१७॥

श्लो· विस्मयंपरमंजग्मुः किन्त्वेतद्भविष्यति॥पुण्यपापौचसंज्ञातौतेनापिराघवेनच॥१८॥

भा·टी· - बडीविस्मयकों प्राप्ति भए यह क्या होवेगा· पुन्यको तथापापको रामजीभी जानतेहै तथा कुंभकर्णभी जानताहै

श्लो॰ द्वाविमावीश्वराधीनावितियुद्धंत्रिवासरं॥बभूवचद्वयोर्ब्रह्मन्वीरयोर्वीरतापनम्॥१९॥

भा·टी· - कि यह दूनो कर्म भगवानके अकति आरहै जिस्सें· जोचाहै सो करवावे ऐसा जानना सोई तीनदिन युद्धमेंभयाहै १९

श्लो॰ चतुर्थेदिवसेप्राप्तेद्वयोर्मानविवर्द्धने॥कुंभकर्णंमहावीर्य्यन्दुरसंगरौरवैधनम्॥२०॥

भा·टी· - रामजीको तथा कुंभकर्णको युद्धमें अभिमान बहुतहै सो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ई अभिमान चौथादिन भयाहै तिस चौथेदिन युद्ध में आया जोरी रवनर्क सो अग्नि भया तिस्की वृद्धि करनेवाला घोटीसंगरूप कुंभकर्णको ॥२०॥

श्लो० पूर्वोक्तैस्सैनिकैस्सर्वैस्संयुतं मृतशेषिकैः ॥ युद्धं चक्रे पुनर्वीरो विवेकोरघुनंदनः ॥२१॥

भा-टी० - मरेसें वचीजो फौज तिस्करिकै संयुक्त कुंभकर्णकोंरामजी युद्ध कर्तेभए ॥२१॥

श्लो० सत्कर्मशिक्षणैर्बाणैस्तंजघानरघूत्तमः ॥ पैशून्याद्यस्त्रशस्त्रैश्चजघानरघुनंदनम् ॥२२॥

भा-टी० - संदरकर्मकों शिखावन रूप बाण करिकै रामजी कुंभकर्णकों मारतेभए चुगली करना आदिलेके बुरेकर्मरूप बाण करिकै रामजी कों कुंभकर्ण मारता भया ॥२२॥

श्लो० बभूवतुश्च द्वौवीरौ बाणछिन्नकलेवरौ ॥ स्वस्वकार्यस्य प्राप्त्यर्थं चिन्तनं बाणछेदनम् ॥२३॥

भा-टी० - अपने अपने काजकी प्राप्ति होनेकी चिंतवन सोई बाण करिकै देहको काटना दूनोभी वीरोंका होता भया ॥२३॥

श्लो० सत्संगवासनासौख्यरक्तांगोरघुनन्दनः ॥ दुस्संगचिन्तनारक्तरंजितोराक्षसोत्तमः ॥२४॥

भा-टी० - सत्संगकी प्रीतिको सुख सोई रक्त भयाहै तिस रक्त करिकै रामजीकी देह लाल होगईहै । तथा कुंभकर्णकों मालुम पडिगयाकि, दुःसंगको नाश रामजी करेंगे उसी दुःसंगकी नाश होनेकी चिंता सोरक्तहै तिसरक्तकरिकै कुंभकर्णकी देह लाल होगईहै ॥२४

श्लो० एवंयुद्धेसमुद्भूते पृथिवी करुणातटा ॥ स्वधर्मगिरिभिश्चैवं वृक्षैश्चैव चचालह ॥२५॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा०टी० - रामजीकी तथा कुंभकर्णकी ऐसी कठिन युद्ध देखिके जीवमात्रके ऊपर दया राखना सोई पृथ्वी है उस पृथ्वीको धर्म क्षमा आदि सुंदर कर्म सोई पर्वत तथा वृक्ष है तिनसहित पृथ्वी कांपती भई ॥ २५ ॥

श्लो० विधूयमानामृथिवीन्निरीक्ष्यजघानरामः खलुकुम्भकर्णम् ॥ सदौपदेशेनशरेण दुर्मतिंपपात सोभूमितलेसदालये ॥ २६ ॥

भा०टी० - दयारूप पृथ्वीको कंपायमान रामजी देखिके सुंदर कर्मको उपदेशरूप बाण करिके कुंभकर्णको मारते भए रामजी करिके मारा जो दुस्संग रूप कुंभकर्ण सो सुंदर धर्म रूप जो पृथ्वी तलति स्त्रे पडिके मरिगया षोटी संगति को नाश भया सुंदरि संगति की वृद्धि भई एहीकुंभकर्णको मरण भया ॥ २६ ॥

श्लो० कुंभकर्णेहतेदुष्टेदुःसंगेसाधुदुःखदे ॥ रामेनधर्मजादेवाः पूर्वोक्ताःसज्जनादयः ॥ २७ ॥

भा०टी० - साधुजनोंको दुःख देनेवाला दुस्संगरूप कुंभकर्णके मरे पीछे पेस्तरबर्णन भएजो धर्मसें उत्पन्न देवता तथा सज्जन ए

श्लो० चक्रुर्जयजयारावं तेवैदुंदुभयस्तदा ॥ नेदुस्तद्धर्षमतुलंसुमनास्तंनिगद्यते ॥ २८ ॥

भा०टी० - सब जयजयकार करते भए सोई दुंदुभी बाजती भई तथा इन साधुजनोकों तथा देवताओंको बहुत हर्ष भया सोई पुष्प भया है ॥ २८ ॥

श्लो० शंकाविरहिताप्रीतिस्सज्जनानामभूत्तदा ॥ सत्संगेमुनिशार्दूलपुष्पवृष्टिश्चसाभवत् ॥ २९ ॥

भा०टी० - हे मुनिजी सत्संगमें सज्जनोकी प्रीति दुष्टोंकी शंकासें

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हीन होती भई सोई पुष्पवृष्टि होती भई॥ २९॥

श्लो॰ दुःसंगरूपेरवलुरावणानुजेहतेचरामेणससै
न्यकेरवले॥ स्फरवं प्रपेदुः रवलुसज्जनाद्योनिश्शं
कराग्रपरमेश्वरेचलम्॥ ३०॥

भा·टी· – षोटीसंगतिरूप कुंभकर्ण रावणको छोटो भाई तिस्कों· रामजीने मारिडाले तब साधुजनोंकों भयरहित भजनमें प्रेम होता· भया· ऐसा स्फरव साधुवोंकों होताभया· तथा शंकारहित प्रेम परमेश्वरमें होताभया· ॥ ३०॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुधवि
रचितेसम्वर्तवरतन्तुसंवादेकुंभकर्णवधेतृतीयोमो·
क्षोपानः॥ ३॥

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच कुंभकर्णहतन्दृष्ट्वारामे
नरावणस्तदा॥ स्वसुतंचसमाहूयदुश्चेष्टितमथा
ब्रवीत्॥ १॥

भा·टी· – वरतन्तु मुनि बोले रावणनें दुस्संग रूप कुंभकर्णको राम जीसें मराजानि कैषोटेकर्म को प्रेमरूप जो मेघनाद तिस्कों बुलाय कै· बोलता भया ॥ १॥

श्लो॰ दुश्चेष्टितमहाबाहोयाहियुद्धायसत्वरम्॥
विवेकेनहतोभ्राताकुम्भकर्णोममानुजः॥ २॥

भा·टी· – हे षोटे कर्मके प्रेममेघनाद मेरेभाई कुंभकर्णकों विवेक· रूपरामजीने मारिडालेहै से युद्धकरने वास्तेजलदीजावो॥ २॥

श्लो॰ दुष्टकर्मणियत्प्रेमतदिंद्रमर्दनस्स्मृतः॥ सश्रु
त्वास्वपितुर्वाक्यंशीघ्रंयुद्धायनिर्य्ययौ॥ ३॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा०टी० -षोटे कर्म्मों में प्रेमरूप मेघनाद पिताकी वाक्य सुनिके उसीवखत युद्ध करनेकों गया ॥ ३ ॥

श्लो० चकार युद्धमतुलं ताभ्यां च कपिभिः सह ॥ जार द्यूत महामोह हास्यस्निग्धादिकर्मभिः ॥ ४ ॥

भा०टी० - व्यभिचार जुआ षोटे कर्मों में बडी मोह साधुवोंकी मस्करी कर्ना इनकर्म्मों में स्नेह आदिलेके बुरेकर्म बाण है इन्वाणों करिके राम लक्ष्मण तथा वानरोंसे युद्ध इन्द्रजित कर्ता भया ॥ ४ ॥

श्लो० मंद स्मितादिवाक्यैश्च शरैश्चिच्छेद वानरान् ॥ राघवौ च विशेषेण जघानेभिश्शरोत्तमैः ॥ ५ ॥

भा०टी० - मुस्कि आयके बोलना यह बडा षोटा काम है इस्कों बाण बनायके वानरोंकों काटता भया इन्होंबाणों करिके राम लक्ष्मणकोंभी मारताभया ॥ ५ ॥

श्लो० एषाम्प्रीत्या महाशक्त्या चान्यैश्च विविधैरपि ॥ जघान लक्ष्मणन्तोषं राघवं च विशेषतः ॥ ६ ॥

भा०टी० - पेस्तर वर्णन भए बुरेकर्मरूप बाण तिन्वाणोमें प्रीति निर्दया सोई सांग है उसीसांग करिके सन्तोषरूप लक्ष्मणकों मारा तथा और अनेक बाण है तिन्हों करिके विवेक रूप रामजीकों तथा औरयोधोंकों मारता भया ॥ ६ ॥

श्लो० कदास्वकार्यं स्वस्यैव वर्द्धनं न्यूनता कदा ॥ आविर्धानन्तिरोधानन्तस्य तत्कथितम्मुने ॥ ७ ॥

भा०टी० - वीर मेघनाद अपनी युद्धमें कभी अपनी जयकी वृद्धि देखता है तथा कभीजयकी हानि देखता है एही युद्धमे मेघनादको प्रगट होना तथा गुप्त होना है ॥ ७ ॥

श्लो० एवं कृत्य महायुद्धन्तयोः शोकविवर्द्धनम् ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मूर्छितान्कपिवीरांश्चराघवौचापिदुर्मदः॥८॥

भा-टी- - इस प्रकारकी महायुद्ध करिके वानरोंको तथा रामलक्ष्मणकों मूर्छित करिके ॥८॥

श्लो० जगामस्वालयंवीरः पितृहर्षविवर्द्धनः ॥ रामे नघातितांसेनांसर्वांस्वस्यनिरीक्ष्यवै॥९॥

भा-टी- - पिताजो मनरूप रावण तिस्के हर्षकी वृद्धि करनेवाला इन्द्रजित अपने मंदिर कोंगया- दुष्टोंकी मंडली सो वाकी महल-है- अपनी फोजको राम करिकै नष्ट भई देखिकै भागिगया॥९॥

श्लो०रामबाणैरर्दितश्चजगामपितुरन्तिकम्॥तदा भूच्च हयोः सायंसंशयंमुनिसत्तम॥१०॥

भा-टी- - रामजीके बाण करिकै माराजो मेघनाद भागिकै पिताके पासगया- तब राम रावण दूनो शूरवीरोंकी संशयकी हमारा जय होवैगा कि नही ऐसा दोनों वीर विचारते है सोई संशयरूप सायंकाल होगया॥१०॥

श्लो० रामरावणयोरस्तंप्रतापभास्करोगमत्॥ किंभविष्यतियुद्धेस्मिन्चिन्तयेतिविचिन्ततोः॥११॥

भा-टी- - राम रावण ये दोनों अपने अपने चित्तमें चिंतन कर्ते है- कि, युद्धमे क्या होवैगा-जीतैगे कि हारिगे- ऐसाचिंतनरूप रामरावणको प्रताप भयाहै सोई प्रताप सूर्य सामको अस्त होगया ११

श्लो० सन्तोषम्पतितन्दृष्ट्वा शक्त्यानिर्दययाक्षितौ॥ घातितन्दुष्टकार्यस्यप्रेम्णारावणसूनुना॥१२॥

भा-टी- - राम आदिलेके सुग्रीव बिभीषण सुग्रीव सहित सब-वानर रोतेभए- क्योंरोतेभए षोटे कर्मोमे प्रेमरूप ऐसोजो रावणको पुत्र मेघनाद तिस्करिके लक्ष्मण संतोषरूपको मारादेखिकै निर्दया

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रूप शक्ति करिकै दुष्टनें लक्ष्मणकों मारा तब लक्ष्मण मोक्षके प्रेमसें कुछ थोरा व्याकुल होगए सोई श्वाससें हीन मूर्छाकों प्राप्ति होगए है ॥१२॥

श्लो० मोक्षप्रेमाकुलत्वेननिरीक्ष्यस्वासवर्जितम् ॥ रामाद्यारुरुदुस्सर्वेसुग्रीवसविभीषणाः ॥ स्वस्वकार्येष्वधैर्यञ्चतद्देवरोदनंस्मृतम् ॥१३॥

भा·टी· - रामआदि आपने२ काजमें धीरज कों छोडि दिये सोई सबको रोना भयाहै श्लोकयुग्म है ॥१३॥

श्लो० सत्याचलस्वभावश्चरामस्यतेनबोधिनः ॥ सुषेणेनरघुश्रेष्ठोद्रोणयानयनहेतवे ॥१४॥

भा·टी· - द्रोण पर्वत पर संजीवन नाम औषधी लै आनेवास्ते रामजीको स्वभाव कभी सत्यसें चलाय मान नहीं होता· सोई स्वभाव रामजीको कहाकि द्रोणगिरसें संजीवन औषधी मँगावो ॥१४॥

श्लो० सन्तोषजीवनार्थायरावणस्यकुलान्तकम् ॥ कर्तुंतेनप्रतिज्ञातंसुंप्रभातावधिंकृता ॥१५॥

भा·टी· - रामजीनें प्रतिज्ञाकियाकि संतोष रूप लक्ष्मणकों जिवायकै पीछे रावणके कुलको नाश करोंगा· ऐसी रामजीकी प्रतिज्ञा सोई प्रातःकालकी मर्यादा भई है कि रातिमें लक्ष्मण जिआवे तबतो अच्छाहै नहीतो प्रातःकाल सूर्य दीखने बखत मरिजावेगे· रामरावणके सेनाकी चिंता सोई रातिहै ॥१५॥

श्लो० रामेनसच्चिदानंदध्यानंद्रोणाचलस्स्मृतः ॥ संजीवनन्तदानन्दमौषधञ्चकृतम्मुने ॥१६॥

भा·टी· - हे मुनिजी रामजी भगवानको ध्यान कर्ते है सोई द्रोणनाम पर्वतहै तथाध्यानमें आनंद होताहै· सोई संजीवनी नाम औ·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

षधीहै॥१६॥

श्लो० रामेनप्रेषणम्प्रेममोहरूपस्यकथ्यते॥गति-
वेगोहनुमतोविवेकानुग्रहस्तथा॥१७॥

भा-टी- - रामजीके प्रेमके मोहरूप जो हनुमान तिस्के ऊपर रामजी
कोप्रेम बहुतहै सोई औषधी लेनेवास्ते हनुमानकों भेजनाभया
है- हनुमानकेऊपर विवेकरूप रामकी कृपा बहुतहै सोई संजी-
वन औषध लेआनेवास्ते हनुमानकोदोडनाभयाहै॥१७॥

श्लो० रामध्यानमभूत्संथादुष्टार्थोमुनिसत्तमः॥भग
वद्वाक्यशास्त्रस्यनिन्दनंतत्कमंडलुः॥१८॥

भा-टी- - हनुमानजी रामजीको ध्यानकर्तेभए सोई औषध लैने-
वास्ते जानेकीरस्ताहै- तथा षोडेकर्मोकों अर्थ जैसाजाते२ अनेक-
दुःख सहना सोही विघ्न कर्नेवास्ते कालनेमि मुनि भयाहै- ईश्वरकी
वाक्य रूप शास्त्र- तिस्की निंदाकर्ना सोईकालनेमिको कमंडलहै

श्लो० ददौहनुमतेतोयंतत्स्फरवंबुद्धिनाशनम्॥तत्त्यः
क्त्वाहनुमानूचेविज्ञायदम्भिनंमुनिं॥१९॥

भा-टी- - हनुमानकों प्यासाजानिके शास्त्रनिंदनरूप कमंडलुति
स्कमंडलका स्फरव सोई जलहै सज्जनोंकी बुद्धिको नाश करनेवा
ला जल तथा कमंडल हनुमानको मुनिने दिया- और कहाकिज
लपीओ- हनुमान मुनिकों चंडाल जानिके कमंडल त्यागिके दु-
ष्टमुनिसें बोले॥१९॥

श्लो० नानेनमेभवेच्छांतिस्तृषस्साचबलीयसी॥नि
चंतदौषधेदत्तंतदेषवचनंकपेः॥२०॥

भा-टी- - हनुमानको चित्तो औषधमें लगिरहा सोई हनुमानको
बोलनाभया- यहबोलेकि दुष्टमुनि- इसजलसें हमारी प्यासकी शां

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

न्नि नहीं होवैगा- क्योंकि हमारे कों बडी प्यास लगी है ॥२०॥

श्लो० संतोषलक्ष्मणस्यैव वर्द्धनेच्छा तृषास्मृता॥ इ
त्युक्तोदर्शयामास दुष्टार्थः कपये तदा ॥२१॥

भा-टी- -संतोषरूप लक्ष्मणकी वृद्धि होने की इच्छा रामजीके प्रेमके मोहरूप हनुमानके बनीरहतीहै सोई हनुमानकी तृषा भई है ऐसा कपिसें कहा जो मुनि सो हनुमानके वास्ते तलाव देखा ना भया- ॥२१॥

श्लो० तडागंसज्जनानाम्वै दुःखरूपंविचिन्तनम्॥सद-
नादरतोयेनपूरितंसर्वदाशरम् ॥२२॥

भा-टी- -सज्जनजीवोंकों दुःख देनेको चिंतवन सोई तलावहै- साधु लोगोंको अनादर सोई जलहै तिसकरिकै हमेश वह तलाव भरा- रहताहै ॥२२॥

श्लो० सदसद्विचारण म्यानन्तोयस्याभूत्कपेस्तदा॥
छायया सज्जना प्रीत्याग्रस्तस्तत्रकपिस्तदा॥२३॥

भा-टी- -खोटेकर्मको तथा सुंदरकर्मको निर्णय करना सोई हनुमान को जल पीना भयाहै- ऐसा सुंदर कर्म तथा बुरेकर्मको निर्णयक रते जो हनुमान तिस्कों साधु जीवोंमें अप्रीति सोई छायानामरा क्षसीहै सो छाया हनुमानकों खानेवास्ते पकडिलिई ॥२३॥

श्लो० तांहत्वागान्मुनेश्शीघ्रमंतिकंगुरुदक्षिणा॥सं
तोषचिंतयामुष्ट्याहननंसत्कभावना ॥२४॥

भा-टी- -राक्षसीकों मारिकै मुनिके साम्नेगए तब मुनि दक्षिणा- मागा- तब हनुमानके संतोषकी चिंता बनी रहतीहै सोई मूठिहै- उसी मुष्टिकरिकै दुष्टका अर्थरूप मुनिकों मारे तथा साधुजीवों मेंप्रीतिरूप दक्षिणा देतेभए- तब दुष्टोंका अर्थ नष्टहोगया- और

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सज्जन जीव भयसें रहित भये ॥ २४ ॥

श्लो० संतोषपत्तनंकष्टमविज्ञानोवनस्यते:॥ विवेक संगतौहर्षंतद्द्रोणोत्पाटनंकृतम् ॥ २५ ॥

भा-टी- - युद्धमें संतोषरूप लक्ष्मण ना होश भएहै ऐसा कष्टसोई संजीवन औषधीको नहीं पहिचानना भयाहै विवेकरूप रामकी संगतिमें जीवोंको बडा हर्ष होताहै सोई द्रोणपर्वत को मूलसैं उखाडना भयाहै ॥ २५ ॥

श्लो० सत्संगवर्द्धनमहास्फरवमौषधञ्चसत्याचलप्रकृतिजोगदहास्फषेण:॥ तूर्णन्ददौरघुपतेरुरवलुलक्ष्मणायतज्जीवनंचसमभूद्धिमतौवियोग: ॥ २६ ॥

भा-टी- - तब द्रोणपर्वतकों देखिके रामजीकों सत्यसैं अचलस्वभावरूप गदहामाने वैद्य स्फषेणजो हैसो सत्संगकी वृद्धिमें स्फरव सोई संजीवन औषधकों जलदी लक्ष्मणकों देतेभए- तब तुर्त लक्ष्मणजी जिआतेभए- षोटीमतिमें वियोग होना सोई लक्ष्मणको जीवन भया है- बडेवैद्यको शास्त्रमें गदहा लिखाहै कोई शंका मति करना ॥ २६ ॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहाय बुधबिरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे संतोषजीवनविधौचतुर्थो मोक्षोपान: ॥ ४ ॥

श्लोक- वरतन्तुरुवाच लक्ष्मणंजीवितन्दृष्ट्वाहर्षितावनचारिण: ॥ रामोविभीषणश्चैवनद्रिरिस्यापनम्पुन: ॥ १ ॥

भा-टी- - वरतंतु मुनि बोले लक्ष्मणको संजीवित देखिके रामजी, सुग्रीव विभीषण- सब कपि रिक्षकों बडा हर्ष भया- सोई फिर द्रोण

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पर्वतकों द्रोणके स्थानपर टिकाना भयाहै ॥१॥

श्लो० स्वस्वार्थलालसारात्रौ तद्धर्षचिंतया द्वयोः ॥ पुनः प्रतापोवृद्धेरामरावणयोस्तदा ॥२॥

भा·टी· – तब अपने अपने जयकों विचार सब कर्तेहै सोई विचार· की इच्छा रात्रि भईहै तिस रात्रिमें अपने अपने जयकी सरवमें उसी हर्षकी चिंता करिकै राम रावणको प्रताप रूपसूर्य फिरिउदयभया·२

श्लो० एतत्प्रभातंसंवीक्ष्य द्वयोर्लोभन्दिनन्तथा ॥ युद्धायपुनराजग्मुः कपयोराक्षसास्तदा ॥३॥

भा·टी· – ऐसाप्रतापरूप सूर्यउदयरूप प्रभातको देखिकै तथारामरावणकी अपने अपनेकाजमें लोभसोई दिन भयाहै· ऐसीसमयमें युद्ध कर्नेवास्ते वानर राक्षस फिरि रण भूमिमें आतेभए· अपने २ काज कीप्रीति सोई रणभूमिहै ॥३॥

श्लो० चेद्विवेको बलीरामः सन्तोषोलक्ष्मणोऽपिच ॥ तथापिनागपासेनपंचेंद्रियगुणेनवै ॥४॥

भा·टी· – राम लक्ष्मण बडे बलवानहैं· क्यौं विवेक संतोष मोक्षके बडे मित्रहै तौभी पांच षोटी इंद्रियोंकोगुण जोहै सोई नागपासभयाहै तिसनागपास करिकै ॥४॥

श्लो० बबंधराघवौयुद्धे मेघनादो महाबली ॥ किंचित्स्वकर्मचलनंत द्वयोर्बंधनंमुने ॥५॥

भा·टी· – मेघनाद राम लक्ष्मणकों बांधताभया· कुछ थोराविवेकभी अपनेकर्मसें चलायमान होगयेहै और लक्ष्मणभी थोरा चलायमान होगये है क्यौंकि मनरूप रावणकी युद्धसहजनहीहैं बडे२ ज्ञानियोंकों पकडिकै मनरावणने नर्कमें पटकिदियाहै सोई चलायमान रामलक्ष्मणकोनागपासमें बांधनाभयाहै ॥५॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० स्ववीर्यस्मरणेनैवगरुडेनविमोचितौ॥ नागपा
सविमुक्तौहौनिरीक्ष्यरावणात्मजः॥ ६॥

भा-टी- - राम लक्ष्मण अपनेवीर्यको स्मरण कर्ते भए- सोई गरुड भ
याहै सोगरुड नाग पाससें छुडाय दिया- मेघनादनें राम लक्ष्मण
कों नागपाससें छुडादेखिके॥ ६॥

श्लो० प्लाव्ययुद्धाभिराशश्चप्लवनंस्वजयेतथा॥ दुष्टा-
नांसंगतिंदेवींनाम्नोक्तांचनिकुम्भिलाम्॥

भा-टी- - अपनीजय होनेमें मेघनादनें आसाछोडि दिया- सोई मे-
घनादको भागना भयाहै सो युद्धसें भागिकै दुष्टोंकी संगतिरूप-
निकुंभिलादेवीहै तिस्केपासगया-॥ ७॥

श्लो० स्वकर्मप्रेमकुंडंचतत्सुखोऽग्निरितीर्यते॥ तदु
त्साहाश्चसाहित्याहवनेदारुतत्पणम्॥ ८॥

भा-टी- - मेघनादकोजोकर्म बुरेकर्ममें प्रेम करना सोई होमको
कुंड भयाहै उसीबुरेकर्मके प्रेममें सुख मानना सोई अग्नि भईहै-
मेघनादकोउत्साहकी मैं बहुत सुखीहौं सोई होमकी सब सामग्री
है मेघनादकी प्रतिज्ञाकिराम लक्ष्मणकों मारिडालौंगा ऐसापण-
सोई होमको काष्टहै॥ ८॥

श्लो० मरणेचिंतनंहोमंकर्तुंतस्थौचदुर्मतिः॥ शमादि
शिक्षाबाणेनलक्ष्मणेनविनाशितः॥ ९॥

भा-टी- - मेघनादको निश्चय अपने मरणेकी होगईकि मैं युद्धमें-
मरिजाऊंगा सोई होमको कर्ना भयाहै- शम-दम-यम-आदि सुंदर-
कर्म लक्ष्मण मेघनादकों सिखाते भए सोई सिखाना बाण करिके
लक्ष्मणनें मेघनादकी होमको नाश कर्ते भए॥ ९॥

श्लो० किञ्चित्स्वकार्येम्लानत्वंतदेवतद्विनाशनम्॥ पु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नश्चक्रे महायुद्धं लक्ष्मणेन हतो भुवि॥ स्वभावं पौ॰
र्विकं हित्वा स्कस्वभावरतोऽभवत्॥१०॥

भा॰टी॰ - थोरा मेघनाद को अपने कर्म में लक्ष्मण की शिक्षा पायके प्रेम नष्ट होगया॰ तथा स्कंदर कर्मों में थोरा प्रेम भया सोई होमको नाश होनाहै होमके नाश भए पीछे फिरि युद्ध कर्नेको आता भया॰ तब लक्ष्मण मारि डाले तब मेघनाद दयारूप पृथ्वी में पडिगया॰ दया में मिलिगया॰ पेस्तर का स्वभाव षोटे कर्म में प्रेम सो छूटिगया॰ स्कंदर स्वभाव में प्रेम कर्ने लगा एई मेघनाद को मरण भयाहै १०

श्लो॰ तदेव मरणं तस्य पतनं धर्मसंस्थितिः॥ भूमौ
सद्भावनायां च मेघनादस्य संक्षयः॥११॥

भा॰टी॰ - धर्म मे बुद्धि टिकिगई सो मेघनाद को भूमि में पडनाहै स्कंदर कर्म्म मे प्रीति होगई सोई भूमिहै तिस्में पडिके खोटी कर्म में प्रेमरूप जो मेघनाद तिस्को नाश हुआ॰ श्लोक दोय को अर्थ मिले हैं युग्म है॥११॥

श्लो॰ एवं संतोषरूपस्तु लक्ष्मणो राघवानुजः॥ नि॰
हत्य चेन्द्रजितारं स्करवमापस्य कर्मणः॥१२॥

भा॰टी॰ - संतोष लक्ष्मण इसप्रकार सें इन्द्रजित को मारिके अपनाकर्म जो संतोष तिस्को स्करव जो भगवान में प्रेम तिस्को प्राप्ति भए॰

श्लो॰ सिद्धिं वीक्ष्य विवेकाद्या हर्षं चक्रुश्च भूरिशः॥ सा
पुष्पवृष्टिः खाद्भ्रष्टा ह्योरुपरि पातिता॥१३॥

भा॰टी॰ - विवेकरूप रामजी आदि सज्जन अपनें कर्मों की सिद्धि देखिके बहुत हर्ष कर्ते भए॰ सोई रामलक्ष्मण के ऊपर फूल की वर्षा आकाश तें होती भई॥१३॥

श्लो॰ किंचित्किंचित्स्वमरणे कुलानां संक्षये तथा॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त्रासं प्रापद्दशग्रीवो विलापस्तस्य सस्मृतः॥१४॥

भा·टी· - रावणने आपने मरण में तथा कुलकी क्षयमें घोरा घोराडर मानता भया· सोई रावणको विलाप हुआहै ॥१४॥

श्लो॰ हते मेघनादे कुनादे स्फुवादे गते आपिते लक्ष्मणेनैव मृत्युम्॥ स्फुरवं साधवस्सज्जनाः पेदिरे वै महीसर्वदानंदयुक्ता बभूव॥१५॥

भा·टी· - लक्ष्मणनें मेघनादकों मारि डाला· षोटा बोलना· दुष्टजीवोंको नष्ट होगया सबजीवोंमें सुंदर बोलना होताभया· साधुजन भगवानका भजन रूप स्फुरवकों प्राप्ति भए तथा दयारूप पृथ्वी दयाको वृद्धि रूप आनंदकी प्राप्ति होती भई ॥१५॥

श्लो॰ मेघनादं हतन्दृष्ट्वा पुत्रं प्राणसमं तदा॥ जीविताशाम्परित्यज्य स्वकर्मप्रीतिभावनाम्॥१६॥

भा·टी· - रावणनें मेघनादकों मरा देखिके अपने कर्ममें प्रीति सोई रावणके जीनेकी आसा उसकों छोडिदिया जानाकि अबमैं नहीं जीवोंगा· ॥१६॥

श्लो॰ पूर्वोक्तैरस्त्रशस्त्रैश्च सैनिकैश्चापि संयुतः॥ बभूव स्फुमहद्युद्धं रामरावणयोरपि॥१७॥

भा·टी· - पेस्तर वर्णन भईजो सेना तथा अस्त्र शस्त्र तिनकों लेके बडी युद्ध रामरावणकी होतीभई॥१७॥

श्लो॰ असत्यादिशरैर्दुष्टो जघान रामवाहिनीः॥ राघवौ च विशेषेण सुग्रीवं सविभीषणम्॥१८॥

भा·टी· - झूठ बोलना आदिजो अनेक बुरेकर्म है तिन्कों बाण बनायके रामजीकी सेना सुंदर कर्मरूप तिस्कों काटताभया· तथा रामलक्ष्मण सुग्रीव बिभीषण इनचारोंकोतौ बहुत मारता भया ॥१८॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो॰ रामोपिसत्यादिशरैर्दशाननंविभेदसैन्यानपि तस्यचागतान्॥ हताम्रृतास्संस्खलिताश्चपूजिता स्स्वकर्मभ्रष्टाश्शुभबुद्धयोऽभवन् ॥१९॥

भा॰टी॰ - तथा रामजीभी सत्यवचन आदि अनेक सुंदर कर्म्मरूप बाण करिके रावणकों मारतेभए॰ तथा रावणकी सेना दुष्टकर्मोंमें प्रीतिरूप तिस्कों भी मारतेभए॰ सेना कोईतो घायलहुई पृथ्वीमेंपडीहै कोई मरिगई कोई भागिगई रावणकी सेना दुष्टकर्म छोडिकै सुंदर कर्म्ममें बुद्धि लगाती भई सोई सेनाको मरणा॰ भागना॰ पडना भयाहै॥१९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुधविरचितेसम्वर्तवरतन्तुसंवादे रामरावणकल्लोलयुद्धवर्णनेपंचमोमोक्षोपानः॥५॥

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच युद्धेपराजयम्प्राप्यरामेनरावणस्तदा॥ स्वकर्मनाशचिन्तायांरात्रौगत्वाचजानकीम्॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि बोले रावणनें युद्धमें हानिकों पायकै रावणके कर्मके नाशकी चिंता सोई रात्रिभईहै तिस रात्रिमें जानकीप्रति

श्लो॰ उवाचवचनंराजासामदामादिसंयुतं॥ अहंचापिजगद्व्याप्तेस्तस्यांशः प्राणवल्लभे॥२॥

भा॰टी॰ - साम दामविभेद दंडरूप वचन बोलता भया॰ हेप्राणोंकीप्यारी जानकी संसारमें व्याप्तजो भगवान् तिस्को अंशमेभीहौं २

श्लो॰ कृपांकरिष्यसेचेत्वंतदामुक्तोभवाम्यहम्॥ अस्माल्कुतर्कनिचयान्मोचेत्वांभ्रष्टभावनाम्॥३॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - जोतूं भगवानकी भक्ति मेरेकों देगा ऐसी कृपा मेरेऊ पर करैगा तो यह संसारकी अनेक प्रकारकी कुतर्क के समूहसें मैं छूटि जाउंगा- यह सामवचन- जो नही कृपा करैगा तो मैं भ्रष्ट हो ईरहा हूं पण तेरेकों भी भ्रष्टकी प्रीतिमें ॥३॥

श्लो० गमयिष्यामिदास्यामि निर्विघ्नं भजनं प्रभोः॥ इत्याद्यनेकविधिना तेनोक्ता जनकात्मजा ॥४॥

भा-टी- - प्राप्ति करि देवोगा यह दंडवचन जो कृपा करैगा तो भगवानको भजन निर्विघ्न देउंगा तेरे भजनमें विघ्न नहीं होने पावेगा क्यों कि इन्द्रियोंको राजा तो मैं हूं यह दामवचन इन आदि और अनेक प्रकारके वचन जानकीसें रावण कहता भया- परंतु जानकी ४

श्लो० तिरश्चकार तन्दुष्टं ज्ञात्वा पक्वहृदं सती॥ अनेकजन्मभ्रष्टत्वं तत्तिरस्कार मुच्यते॥५॥

भा-टी- - रावणको अनादर करिदिया जानकीनें विचार कियाकि यह मन रूप रावण अनेक जन्मको भ्रष्ट है इसकी हृदय बहुत ज्ञानसें कच्ची है इसकों जो कुछ उपदेश भी करै तो सुनि तो लेवैगा पण मानैगा नही इसवास्ते अनादर करिदिया- मन बहुत जन्मसें बिगडि रहा है सोई रावणको अनादर है ॥५॥

श्लो० आजगामतदा दुष्टस्स्वालयं स्वपराजयं॥ ज्ञात्वा रामाद्ध्रुवं दुष्टस्तत्तस्य गमनालयम्॥६॥

भा-टी- - जानकीसें अनादर पायके युद्धमें हारि जाना- ऐसे अपने घरकों रावण चलागया- रावणनें रामजीसें आपनी हारि निश्चय सें जानि लिआ- सोई रावणको घरको जाना हुआ- ॥६॥

श्लो० गते दशाननेदेवी ब्रह्मभक्तिस्वरूपिणी॥ चक्रे विलापं सुमहद्दुष्टानाम्मोक्षहेतुकम्॥७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - रावण के गए पीछे ब्रह्मकी भक्ति रूप जानकी दुष्टोंकों मोक्ष होने वास्ते चिंतवन करती है सोई विलाप जानकी कर्ती भई है ॥७॥

श्लो० ज्ञानविज्ञानवैराग्यंमुक्तिदानंचराचरे॥आ
चारश्चविचारश्चत्रासौदुष्टस्वभावतः॥८॥

भा-टी- - ज्ञान १ विज्ञान २ वैराग ३ आचार ४ विचार ५ खोटे स्वभावसें डररारखना ६ ॥८॥

श्लो० अनाहर्षालसोनित्यंश्रीमद्भगवदर्च्चने॥कु
कर्मनाशनेयत्नंस्वचित्तनियमन्तथा॥९॥

भा-टी- - भगवान के पूजन में हर्ष त्यागना नहीं ७ तथा आलस्य करना नहीं ८ खोटे कर्मों की नाश होने वास्ते उपाय करना ९ तथा आपने चित्तकों स्थिर रारखना १० तथा और अनेक विघ्नसें चित्तको बनोबस्त रारखना ११ ॥९॥

श्लो० एतेचैकादशामासाः प्रोक्ताजनकनंदिनी॥
स्थित्वाचरावणारामेविललापभृशंसती॥१०॥

भा-टी- - एही ग्यारह मास जानकी रावणकी बगीचामें टिकिके वारंवार विलाप करती भई॥१०॥

श्लो० पूर्वोक्तांरजनीन्दृष्ट्वाव्यतीतांरावणस्तदा॥पु
नर्युद्धंचरामेनकर्तुंप्रायान्महाबली॥११॥

भा-टी- -पेस्तर वर्णन भई जो रात्रि तिस्कों बीती देखिके रावणनें रामसें युद्ध करने कों फिरि आताभया॥११॥

श्लो० योगध्यानौशमदमौजीवानांसद्विशिक्षणम्॥
परोपकारोमोक्षस्यचिंतनंसततंहृदि॥१२॥

भा-टी- -योग ध्यान शम दम जीवोंकों सुंदर कर्म शिखाना-दू-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सरे जीव को उपकार कर्ना रातिदिन मोक्ष होने की चिंतन कर्ना १२

श्लो० दुष्टत्रासस्सदामौनीरामस्यैतेमहागुणाः॥
दुष्टानांकर्मणां भावस्तेषुरागोनिरंतरम्॥१३॥

भा-टी- - दुष्टजीवोंसें भयमानना षोटे कर्म्मोंमें कोई बुलावै तो बोलनानहीं एनवगुण रामजीके युद्धमें नवदिन भएहै तथा षोटे कर्म्मोंमें प्रेम उसी प्रेममें निस्स्नेह कर्ना ॥१३॥

श्लो० अनृतंचञ्चलत्वंचसत्कर्मनाशचिन्तनम्॥सत्कर्मणिमहालस्यं वेदनिंदनमेवच॥१४॥

भा-टी- - झूठबोलना स्वभावकी चंचलता बहुत राखना स्कंदर-कर्मकी नाश कर्नेकी चिन्ता सदा राखना स्कंदर कर्मोंमें सदा आलस्य कर्ना वेदकीनिंदाकर्ना ॥१४॥

श्लो० जीवानांदुःखदायाशुसदोपायविचिंतनम्॥प्रसह्यकरणंचैतेगुणारावणदेहजाः॥१५॥

भा-टी- - जीवोंकों दुःख देनेवास्ते सदा उपाय कर्ना सब जीवोंसें जबरदस्ती करना एनवगुण रावणकी देहसें उत्पत्तिहै सोई युद्धमें नवदिन भएहै ॥१५॥

श्लो० एवमष्टादिनंयुद्धंरावणयोरभूत्तदा॥किंचिच्छेषान्निरीक्ष्यैवस्वसेनांराक्षसाधिपः॥हतपुत्रप्रपौत्रांचसभ्रातृबर्गसंयुताम्॥१६॥

भा-टी - इस प्रकारकोनवदिन रामजीका तथा नवदिन रावण-के एअठारह दिन रामरावणकी युद्ध भई तब रावण अपनीफोजमें देखा भ्राता-पुत्र-पौत्र संगरहनेवाले सब मरिगए अब थोरी फोजरहीहै॥१६॥

श्लो० विद्रुत्यसंगरान्मूढोव्याकुलत्वंचप्लावनम्॥स्व-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भावंस्वगुरुंशुक्रंपृष्टायज्ञंसमारभत् ॥ ७॥

भा-टी- - ऐसी सेना देखिके रावण व्याकुल होगया-सोई रावण-को संग्रामसें भागना है- से संग्रामसें भागिके रावण को स्वभाव - सोई रावणको गुरु शुक्राचार्य है तिस्सें पूंछिके यज्ञ कर्नेको प्रारंभ रावण कर्ता भया ॥ १७॥

श्लो० केनोपायेनविजयो मेभवेदिनिचिन्तनम्॥ शो
कः कुंडंमहामोहो काष्टमग्निर्वितर्कनः॥ ८॥

भा-टी- - मेरीजय रामसें युद्धमें किसप्रकारसें होवे ऐसा रातिदिनरावण चिंतवन कर्ता है सो चिंतवनरूप शोक सोई यज्ञमें होम कर्नेको कुंड भया है- षोटे कर्मोंमें रावणकी बडी मोह है सोई होमकी लकडी भई है तथा रामजीकों मैं जीतौंगा कि रामजी मेरेकौं जीतिलेवेंगे ऐसा रातिदिन रावण तर्क कर्ता है सोई तर्क यज्ञमें अग्नि भई है॥ १८॥

श्लो० पुत्रपौत्रप्रपौत्राणांसेनानामपिघातनम्॥ ए
वंविषादबहवोहोमसाहित्यमंडलाः॥ १९॥

भा-टी- - पुत्र पौत्र भाई प्रपौत्र फोज इन सबका मरण देखिके रावणकी हृदयमें बहुत दुःख भया- सोई दुःख होमकी अनेक प्रकारकी सामग्री भई है ॥ १९॥

श्लो० एवंयज्ञंचसंकर्तुंतस्थौराक्षससत्तमः॥ तदा
गत्याशुकपयोभगवद्ज्ञानमाददुः॥ २०॥

भा-टी- - ऐसी यज्ञ कों कर्नेको रावणने एकांतमें बैठता भया- तब वानरोंनें जलदीजायके रावणकों भगवानको ध्यानरूप ज्ञान देते भए॥ २०॥

श्लो० तदेवयज्ञविघ्नंचकृतम्वानरसत्तमैः॥ भगव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दुज्ञानरूपंवैविघ्नंप्राप्यदशाननः॥ २१॥

भा-टी- - सोई ज्ञान देना वानरों करिके रावणकी यज्ञको नाश-कर्ना भया- शोकरूप यज्ञ रावणकी नाश होगई तब भगवान-को भजनरूप ज्ञान अपनी यज्ञको नाश रावण पायके॥२१॥

श्लो० किंचिद्ज्ञानंचसंप्राप्यस्वकर्मस्मरणंकृतम्॥
रावणेनतदेवास्यविलापःप्रोच्यतेबुधैः॥ २२॥

भा-टी- - थोरा ज्ञानकों प्राप्ति होके फिरि पीछे अपनाजो बुराक-र्म तिनका स्मरण किया- तो पहिले तो अज्ञानसें बुराकर्म अच्छा लागता रहा- अब थोरा ज्ञान प्राप्ति भया तो वह बुराकर्म षोटा मालू-मपड़ा तो मनरूप रावण विलाप किया- यह विलाप शोक को भी- भया तथा परलोक वास्ते भी भया॥२२॥

श्लो० संकृत्वैवंविलापंचरामेनसंगरेहतः॥ सच्चि-दानंदरूपस्यध्यानबाणेनतत्क्षणे॥ २३॥

भा-टी- - ऐसा विलाप करिके युद्ध करनेकों आया तब रामजीनें-परमेश्वरको ध्यानरूप बाण करिके रावणकों मारिडाले तब मन-रूप रावण मरिगया॥२३॥

श्लो० एवंहतश्चरामेनसामात्यपुत्रपौत्रकः॥ससैन्यः
सकुटुंबश्चसदासानुजसंयुतः॥ २४॥

भा-टी- - इस प्रकारसें मंत्री पुत्र पौत्र प्रपौत्र कुटुंब सेना दास-छोटाभाई सहित रावणकों रामजी मारिडाले- ॥२४॥

श्लो० मंदोदर्यादिभिःस्त्रीभिस्त्यक्तंकर्मचपौर्विकम्
विलापश्चैवतासाम्भोकथितोमुनिसत्तम॥ २५॥

भा-टी- - हेमुनिजी मंदोदरी आदि रावणकी स्त्री है सो सबरा-क्षसी योनें पेस्तरको षोटाकर्म त्यागि देती भई सो राक्षसी यों-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कों रावणके मरेपीछे विलाप कर्ना भया ॥२५॥

श्लो·जनिष्यंतिपुनर्दुष्टादास्यंतिव्यसनंमहत्॥जी
वानामेतदर्थंहिलंकाराज्यंविभीषणे॥२६॥

भा·टी· - रामजीने विचार कियाकि ए दुष्ट लोग फिरिउत्पत्ति होवे
गे उत्पत्तिहोके जीवोंको दुःख देवेंगे· इसवास्ते लंकाको राज्यबि
भीषणकों॥२६॥

श्लो॰ ददौपूर्वोक्तभावंचलंकाराज्यंरघूत्तमः॥महा·
नंदयुतोरामस्तदेव सैन्यजीवनम्॥२७॥

भा·टी· -पेस्तर वर्णन भयाजो लंकाकोराज सोरामजी विभीषण
कों देतेभए· और बहुत भगवानकेरूपकों स्मरण करिके बडाआ
नंदकों प्राप्ति भए· सोई रामजीका सैन्याको जिआनाभयाहै॥२७॥

श्लो॰ चराचरस्यैवहर्तारिपोतद्रामेनसत्कर्म्मविना·
शनेशठे॥ प्रापुस्सुखंसर्वचराचरात्मकाजीवाम
नोरावणपातितेक्षितौ॥२८॥

भा·टी· - रामजीने चराचरकोवैरी तथा सुंदर कर्मको नाश कर्नेवा·
ला शठऐसाजो मनरूप रावण तिस्को रामजीनें मारि डाले· तब·
सब चराचरजीव बडेसुखकों प्राप्ति होतेभए॥२८॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेयुद्धकांडेशिवसहायबुधवि
रचितेसम्वर्तवरतंतुसंवादेरावणमरणरामविजय
वर्णनेषष्ठोमोक्षोपानः॥६॥

श्लोक वरतन्तुरुवाच रामचंद्रेणनिहतस्सच्छि
क्षासायकेनवै॥ कुवासनाम्परित्यज्यसंश्रितश्च
सुवासनाम्॥१॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा-टी- - वरतन्तु मुनि बोले सुंदर भगवान को कर्म मनरावण कों रामजी सिखाते भए उस सिखावन रूप बाण करिके रावण मारि जाना भया- रावणनें षोटे कर्मकी प्रीति कों छोडिके सुंदर कर्म्मों की प्रीतिकों सेवन करनेलगा ॥१॥

श्लो० तदेवमरणंप्रोक्तंमनसोरावणस्यवै॥ अन्येषां चैवसर्वेषांराक्षसानामपीदृशम् ॥२॥

भा-टी- - सोई मनरावणको मरण भयाहै तथा औरजो पेस्तर वर्णन भए है गिनतीसें हीन षोटे कर्मरूप राक्षस वोभीसब बुरेकर्म कों छोडिके भगवानमें प्रीति कर्नेलगे- सोई सब राक्षसोंको मरण भयाहै॥ २॥

श्लो० मरणंशुद्धरूपंचबभूवमुनिसत्तम॥ मनसो रावणस्यैवदृष्ट्वामरणमद्भुतम् ॥३॥

भा-टी- - तब बुरेकर्मरूपमलसें छूटिके शुद्धरूपहोतेभए-सोई राक्षसोंको मरण भयाहै- मनरावणका मरण देखिके ॥३॥

श्लो० वेदशास्त्रंपुराणोक्तास्सर्वेधर्म्मास्सनातनाः॥ स्वस्वकर्म्मणिनेसौख्यंप्रापुः सुखमनेकधा॥४॥

भा-टी- - वेद शास्त्र पुराणमें कथित जो सनातन धर्म है सो सब अपने२ कर्ममें अनेक प्रकारको सुख पाते भए॥ ४॥

श्लो० तदेवदुंदुभेःशब्दंपुष्पवर्षणमेवच॥ सत्संग वृद्धिःसंजातासर्वयोनौचराचरे॥ सास्तुतीराम चंद्रस्यकृतादेवैर्मुनीश्वर॥५॥

भा-टी- - सोई दुंदुभीको वाजना तथा फूलोंकी वर्षा होती भई- चराचर योनिके जीवोमें सत्संगकी वृद्धि होती भई- सोई सब देवता आदिजीव रामजीकी स्तुति करते भए॥ ५॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो- प्रीतिश्चराचराणांवैसत्संगेनिर्भयाभवत्॥
सर्वेषामेववैदेहपुत्रीरामसमागमः॥६॥

भा-टी- - सबजीवोंकी प्रीति मलसेंहीन सत्संगमें होती भई सो ईरामजीको तथा जानकीको लंकामें मिलाप होता भया-॥६॥

श्लो० धैर्याविचलनंरामस्सर्वेषाम्वैमुहुर्मुहुः॥ चराचराणाम्प्रददौदुःखितानाञ्चभूरिशः॥७॥

भा-टी- - हेमुनिजी अनेकजन्मसें मनरावणकरिके दुःखीजोचराचरजीव तिन सबजीवोंकों रामजीनें सुखी करिके॥७॥

श्लो- जन्मजन्मान्तराद्विप्रमनोरावणतापिनाम्॥
सुखान्वितानांस्वेनैवकृतानांरघुनन्दनः॥८॥

भा-टी- -धीरजमेंस्थिरकरिकै वारंवार वास देतेभएकिहे जीव धीरजहृदयमें धरिकै ईश्वरको भजनकरो दोनो श्लोककी अर्थमिलाहै सोयुग्महै॥८॥

श्लो० तदेवकपिवीराणामृक्षाणांचतथैवच॥ सलक्ष्मणस्यजानक्याः पुष्पकारोहणंस्मृतम्॥९॥

भा-टी- - सोई जीवोंकोधीरजमें स्थिरता देना वानरोंकों तथा ऋक्षोंकों लक्ष्मणजानकीकों पुष्पक विमानमें बैठना भयाहै॥९॥

श्लो० मृतावशेषिनांचैवराक्षसानांमतिःशुभा॥
सर्वेषांराक्षसीनांचतद्रणस्थलदर्शनम्॥१०॥

भा-टी- - युद्धमें मरेनहीजोराक्षस राक्षसी तिनकीभी सुंदर कर्ममेंबुद्धि लगजातीभई सोईरामजीने पुष्पक विमानमें जानकीकों ऊपरसें युद्धकी भूमि देखाते भए॥१०॥

श्लो० सत्संगवर्द्धनन्दृष्ट्वा दुष्टसंगक्षयन्तथा॥ पुनस्स्वपुर्यागमनमेतद्रामस्यकथ्यते॥११॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा.टी. - रामजीनें राक्षसोंका नाश भएपीछे सत्संगकी वृद्धि देखे तथा दुष्टोंकी क्षय देखते भए ऐसा देखना रामजीको सोई लंकासेफिरि स्फमति रूप आयोध्यापुरीकों चलना भया. ॥११॥

श्लो. सर्वेषांविमलश्चित्तंजीवानांसततंहृदि॥सत्कर्मवर्द्धनंप्रेमतद्रामगमनंपुनः॥१२॥

भा.टी. - नित्य सबजीवोंको चित्त हृदयमें मलहीन रहताहै तथा सुंदरकर्म्ममें सबजीवोंकेप्रेमकी वृद्धि भई एकर्म रामजीको लंकासें भरद्वाज मुनिके आश्रमपर आना भया.॥१२॥

श्लो. स्थितिश्चरामचंद्रस्यभरद्वाजाश्रमे भवत्॥सत्कर्मशत्रुहीनश्चबभूवमुनिसत्तम॥१३॥

भा.टी. - हेमुनिजी सुंदर कर्म जोहै सो वैरीसें हीन होगये सोई भरद्वाजके आश्रमपर रामजीको टिकना भयाहै ॥१३॥

श्लो. तदेववायुपुत्रस्यप्रेषणंभरतंप्रति॥राक्षसोद्वेगरहितान्दृष्ट्वाजनकनंदिनीम्॥१४॥

भा.टी. - सो रामजीको भरद्वाजके आश्रम वास करनेको सुख सो भरतकेपास रामजी हनुमानकों भेजते भए तथा रामजीने परमेश्वरकी भक्तिरूप जानकीकों राक्षसों के दुःखसें रहित देखिकें

श्लो. इतिप्रीतिर्विवेकस्यद्वयोरुक्तिश्चसाभवत्॥निर्मोहवायुसुतयोर्महदानंदमेवच॥१५॥

भा.टी. - रामजीकी प्रीति परमेश्वरमें बहुत होतीहै सोई हनुमानकी तथा भरतजीकी वार्ता होती भई निर्मोहरूप भरतके आश्रमकों देखिकें हनुमानकों बहुत आनंद भया. तथा हनुमानसें रामजीको कुशल सुनिकें भरतकों बहुत आनंद भया ॥१५॥

श्लो. तत्पुष्पकप्रयाणंचनंदिग्रामेमुनीश्वर॥दुःकर्म

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

णांविनाशश्चमोक्षस्यवर्द्धनंतथा ॥१६॥

भा·टी· - हेमुनिजी एई दोनोंको आनंदजोहै सोई भरद्वाजके आश्रमसें रामकोदल सहित पुष्पक विमान नंदिग्राममें आताभया· दुष्टकर्म्मोंकोनाश तथा सत्संगकोवर्द्धनहोना ॥

श्लो० एषोहर्षः प्रजानांवैपूर्वोक्तपुरवासिनां॥ राक्षसानांविनाशाय चक्रेरामोऽतिबुद्धिमान्॥ प्रतिज्ञासा जटाबन्धारामेनजान्हवीतटे ॥१७॥

भा·टी· - पेस्तर वर्णन भएजो पुरवासी तिनकों एई हर्ष भयाहै राक्षसोंका नाश कर्नेवास्ते रामजीनें पेस्तर प्रतिज्ञाकियाहै सोई· प्रतिज्ञा रूप जटा गंगाके तटपर रामजी भ्राता सहित बांधेरहे हैं·

श्लो० शृंगवेरपुरेब्रह्मन्लक्ष्मणेनापितत्तथा॥ ग्रंथवृद्धिभयाच्चैवन्नतत्रलिखितंमया॥१८॥

भा·टी· - शृंगवेर पुरमें एक कथा वारंवार लिषिजावैगा तौ ग्रंथ बडा होजावैगा इस भयसें मैनेजटा बांधनेकी कथा शृंगवेर पुरमें नहीं· लिखा· विचाराकि युद्धकांडके अंतमें तौ जटाउतारनेकी कथा आवैगा· इसवास्ते नही लिखा ॥१८॥

श्लो० रामलक्ष्मणयोर्ब्रह्मन्जटायाबंधनंशुभम्॥ रामस्यदुःखवृद्धिस्साजटाचैवंसहोदरैः॥१९॥

भा·टी· - हेमुनिजी राम लक्ष्मणको जटाबंधन राक्षसोंकी नाश करनेकी सुंदर पणहै तथा रामजीके दुःखकी वृद्धि सो भरत की वाशत्रुघनकी तथा भाईके पक्ष मानिके लक्ष्मणकेभी जटाको बांधनाहै·

श्लो० त्रिभिर्बन्धाचसेदानींपूर्णानष्टाबभूवच॥ प्रतिज्ञारामचंद्रस्यदुःखवृद्धिश्चपौर्विका॥२०॥

भा·टी· - रावणके मरेपीछे रामजीकी प्रतिज्ञा पूर्ण होगई तथादुः

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रवकी वृद्धिभी नष्ट होगई ॥२०॥

श्लो॰ तज्जटाकुन्तनंतत्रभ्रातृणामभवन्मुने॥ मोक्षे च्छासर्वजीवानांवर्ततेहृदयेनिशम्॥तदेवरामचं द्रायदत्तंराज्यंमुनीश्वरैः॥२१॥

भा·टी· - हेमुनिजी सोई रामलक्ष्मण भरत शत्रुघ्नको जटाकोउतार ना भया· जटाउतारिके राजपुत्रोंको रूपधारण कर्त्ते भए· रातिदिन सबजीवोंके मोक्ष होनेकी इच्छा होनें लगी· सोई सुमति रूप अ- योध्याको राज मुनिलोग रामजीकों देते भए॥२१॥

श्लो· सत्कर्मचिन्तनसमाधिवनौषधैश्चरामस्यचक्रुर तिमोदयुतामुनीशाः॥ राज्याभिषेकमवनेः करुणा न्विताया: संरक्षणेसुमतिभूपशिरोमणिंच॥२२॥

भा·टी· - सुंदर कर्मोंको चिंतवन तथा परमेश्वरको ध्यान आदि और सुंदरकर्म सोई वनकी दवाहै तिस दवाकरिके मुनिजनोनें रामजीकों राज देनेवास्ते दयारूप भूमिके रक्षा करने वास्ते सुमति रूप अयो- ध्यापुरीको राजा करनेवास्ते रामजीकों औषधीसें स्नान करवायके राजगादीपर बैठायके राजदेते भए·॥२२॥

श्लो· रामेभूतेसुमतिनृपतौसच्चिदानंदप्रीतिर्जीवे जीवेसमभवदतिप्रेमसंवृद्धिकर्त्री॥ सर्वेस्वस्थंसु खमयमहोसाधवस्तेबभूवुर्ज्ञानेमग्नास्सुचरित सुधापूर्णचित्तारसुचित्ताः॥२३॥

भा·टी· - सुमतिरूप अयोध्याकोराजा रामजी भए·तब परमेश्वरकी प्रीति जीव जीवमें होतीभई तथा भगवानके प्रेमकी वृद्धिकरनेवा- ली प्रीति होतीभई· तीन लोकचवदह भुवन भगवानमें चित्त लगाते भए· साधुजन ज्ञानमे मग्नहोगए भगवानकोचरित सोई अमृत भ·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

याहै तिस्कों पीके भगवान के भजनमें आनंद होरहे हैं ॥२३॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेयुद्धकांडेशिवसहायबुधवि
रचितेसंवर्तवरतन्तुसंवादेविवेकरामराज्याभिषेके
सप्तमोमोक्षोपानः॥७॥ इतियुद्धकाण्डम्

अथोत्तरकांड प्रारंभः

श्लोक वरतन्तुरुवाच स्वभावनिश्चलत्वंचसे
वराज्यासनस्मृतः॥ पुष्टिस्तस्यसमाख्यातास्थि
तिराज्यासनेमुने ॥१॥

भा-टी- - वरतंतु मुनि बोले हे मुनिजी स्कंदकर्म्मोंमें रामजीके-
स्वभावकी वृत्ति निश्चलहै सोई राजोंकों बैठनेवास्ते तषतहै- तिस
निश्चल वृत्तिकी पुष्टई जैसा कभीनिश्चलवृत्तिभ्रष्टनहीहोवै सोत
खतपर बैठनाहै ॥१॥

श्लो॰ राज्यासनस्थंश्रीरामंपूर्वोक्तामुनयस्तथा॥आ
जग्मुर्द्रष्टुकामास्तम्पुरस्कृत्यमहामुनिम्॥२॥

भा-टी- -पेस्तर वर्णन भएजो मुनिजन सोसब राज्यासनपर बैठेजो
रामजी तिनको दर्शन करनेवास्ते आतेभए॥२॥

श्लो॰ जीवस्वभावदीनंवैकुंभजंमुनिसत्तमाः॥ईश्व
रेप्रेमनिर्विघ्नंपूजांचक्रेरघूत्तमः॥३॥

भा-टी- - जीवकोस्वभावगरीबहै सोई अगस्त्य मुनिहै- भगवान-
मेंजीवोंको प्रेम रावणके मरेपीछे निर्विघ्नसें होता भया- सोई मुनि
योंको पूजन रामजी कर्ते भए- ॥३॥

श्लो॰ पूजितामुनयःप्रोचुर्वचनंब्रह्मकीर्तनम्॥ते
प्रापितावयंधर्म्मान्निर्विघ्नंरघुनन्दन ॥४॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा·टी· - हेरामजी अब हम सर्व विघ्नसें हीन ऐसा भगवान को· भजन रूप धर्मको प्राप्ति कर्ते भए· ऐसी ब्रह्मकी कीर्तिरूप वचन राम जीसें पूजित जो मुनि हैं सो सब रामजीसें बोलते भए॥ ४॥

श्लो· मुनीनांवचनंश्रुत्वाकीर्तनम्परमात्मनः॥प्रोवा चकुंभजंरामोजीवानांसद्विशिक्षणम्॥५॥

भा·टी· - भगवानकी कीर्तन रूप वचन मुनियोंकी रामजी स्फुनि के मनरावणके राजमें भ्रष्टहुवेजो जीव तिन जीवोंकों भगवान को भजन सिखावन सोई वचन रामजी अगस्त्य मुनिसें बोलते भए ५

श्लो· विदेहजायाश्चोत्पत्तिंवालिसुग्रीवयोरपि॥वद त्वंश्रोतुमिच्छामिहृदयेचिरकालतः॥ ६॥

भा·टी· - हेमुनिजी जानकीकी उत्पत्ति तथा वालि सुग्रीवकी उत्प त्ति सुनवेकी इच्छा मेरेकों बहुत दिनोसें लगरहीहै सो आपु कृ पाकरके कहो॥ ६॥

श्लो· रामचन्द्रवचःश्रुत्वाकुंभजोवाक्यमब्रवीत्॥ सन्तोषवर्द्धनंजीवेनिर्मोहंकुंभजेरितम्॥ ७॥

भा·टी· - जीवोंकी हृदयमें संतोषकी वृद्धि करना सोई रामकी· वचनहै तिसवचनकों सुनिके जीवोंकी हृदयमें संसारसें मोह छुडाना सोई वचन अगस्त्य मुनि रामजीसें बोलते भए·॥७॥

श्लो· एकदामनरूपश्चरावणोरघुनंदन॥ चक्रेविचा रन्दुष्टात्मामुनयोदंडवर्जिताः॥ ८॥

भा·टी· - अगस्त्यमुनि बोले हेरघुनंदन एकदिन मनरूप रावण ने विचार कियाकि, सबजीवोंकों मैंने दंड दियापण मुनिजन मेरे· दंडसें वचेहै॥ ८॥

श्लो· चिंतकाःपरमेशस्यसद्धर्म्मामुनयोमया॥ आ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सितास्तपसाहीना भक्षिताश्चकृतामया ॥ ९ ॥

भा-टी- - रावणनें विचार कियाकि भगवानके चिंतवन कर्नेवाले सुंदर धर्मरूप मुनियोंकों मैंने त्रास दिया- तथा ईश्वरके भजन-रूप तपस्यासें हीन करिदिया- तथा ईश्वरके चिंतवन कर्नेसें बंद-करिदिया- सोई वन्द कर्ना मुनियोंकों हमसें भक्षण कर्ना भया- ऐसी दुर्गति मुनिजनकी हमनें किया ॥ ९ ॥

श्लो० नद्रव्यदंडितास्तेचेतानद्यदंडयाम्यहम् ॥ ए
वंविचार्यदैत्येश ँ किंचिद्ब्रह्मणिभावनम् ॥ १० ॥

भा-टी- - परंतु मुनि लोगोंसें कोई चीज नहीं दंडलियासें अब को ईचीज मंगवावेंगे- जबरदस्तीसें- किसी जन्मकी पुण्यसें रावणके-चित्तमें उसवखत भगवानमें थोरा प्रेम भी उत्पति भया सोई प्रेम-मुनिलोगोंसेंकोईचीज मगाने कोरावणकोविचार भयाहै ॥ १० ॥

श्लो० राक्षसान्प्रेरयामासमुनीनांदुःखहेतवे ॥ तेग
त्वाब्राह्मणानूचुः ँ किंचित्प्रेमबलंप्रभौ ॥ तदेवप्रे-
षणन्तेषांगमनंतद्विवर्द्धनम् ॥ ११ ॥

भा-टी- - मुनिजनोंकों दुःखदेनेवास्ते राक्षसोंकों रावणनें भेजता भया- राक्षस जायके मुनियोंसें बोलते भए भगवानके चरणमें-थोरा रावणको प्रेम भया- उसी प्रेमको बल राक्षसोंको भेजना भ-याहै- प्रेमकेबलकी वृद्धिजोहै सोई राक्षसोंकों मुनिलोगोंकेपा-स जाना भयाहै ॥ ११ ॥

श्लो० बलसौख्यमभूत्तत्रराक्षसानांवचस्तदा ॥ यु
ष्माकंचोत्तमंद्रव्यंदत्तराक्षससत्तमे ॥ १२ ॥

भा-टी- - प्रेमकेबलको सुख सोई राक्षसोंकी वचन हुईहै मुनि-योंसेंराक्षस बोलेकि तुमारे सबके जो उत्तमचीजहै सोचीजराव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

एनें मंगायाहै जलदीदेवो ॥१२॥

श्लो० श्रुत्वातेषांवचोविप्राज्ञानाप्तंचैवरावणे॥तदे
वचनंप्रोक्तंतद्धर्षश्चवणन्तथा॥१३॥

भा-टी- - रावणकों कछु ज्ञानकी प्राप्ति भई सोई राक्षसोंकी वचन है तथारावणके थोरा ज्ञान प्राप्ति होनेमें हर्ष मानना सोई राक्षसों-का वचनको मुनियोंसें सुनना भया ऐसी राक्षसोंकी वाक्यकों मु-निलोगसुनिकै ॥१३॥

श्लो० विचार्य मुनयस्तेतुकिंदास्यामोऽद्यरावणे॥रा
वणाद्व्यसनंप्राप्तन्तन्मुनीनांविचारणम्॥१४॥

भा-टी- - मुनिजन आपसमेंविचार कर्तेभए कि रावणकों अभीक्या वस्तु देवैं हमारेलोगोकेतो कुछ वस्तु हैनही- मनरावणनें मुनिजनों कोंदुःख देता भया- सोई मुनिजनोंको विचार भयाहै॥१४॥

श्लो० स्वस्वदेहाद्भगवतोभजनात्प्रीतिजंरसम्॥सर्वे
निःकाश्यमुनयस्तद्वरुधिरंस्मृतम्॥१५॥

भा-टी- - ईश्वरको भजन सोई मुनिजनोंकी देह है ऐसी भजनरूप अपनी अपनी देह और भगवानकी प्रीतिसें उत्पन्नजो हर्ष जैसे गद्द शरीरमें होजाना- आदिलेकें प्रेमसमूह सोरक्त भयाहै ऐसेरक्त कोंनिकाशिकै॥१५॥

श्लो० सर्वेषांप्राणिनांविप्रशरीरंवर्द्धनाकरम्॥रुधि
रंचैतदर्थंहिदृष्टान्तोत्रसमीरितः॥१६॥

भा-टी- - सब प्राणियोंकी शरीरकी वृद्धि करनेमें रक्त खानि है- रक्त सूषिगएपीछे शरीर नष्ट होजाताहै- इसवास्ते सुंदरकर्मोंको रक्त-को दृष्टांत वर्णन किया- गयाहै॥१६॥

श्लो० भगवद्भक्तिरूपस्यशरीरस्यविवर्द्धनम्॥भव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त्यनेनरक्तेनकुंभन्तन्निश्चयंमुने॥ आच्छाद्याज्ञा
नवस्त्रेणदूतेभ्यः प्रददुर्घटम्॥१७॥

भा-टी- - भगवानके भजनरूप जो साधुजनोंकी देह है तिस्की वृ-
द्धि इसी गद्गद आदिप्रेम रक्तोंसें होतीहै ऐसी निश्चयसों घडाभया
है तिस घडामें पेस्तर वर्णन भयाजो रक्त सो भरिके राक्षसोंकों अ-
ज्ञानसो वस्त्र है तिसवस्त्र करिके घडाकों ढापिके रावणके दूतोंको
मुनिजन देते भए-॥१७॥

श्लो॰ दूतैः पृष्टाः किमस्मिन्भोरक्तमस्माकमद्भुतम्॥
किंभविष्यत्यनेनैवरावणस्यकुलक्षयः॥१८॥

भा-टी- - दूत पूछते भएकि हे मुनिजनों इस घडेमें क्याचीज है त-
बमुनि बोले हमारासबकाबडा आश्चर्य रक्त है दूत बोले इसरक्तसें
क्या होवैगा- तब मुनि बोले रावणके कुलको नाश होगा-॥१८॥

श्लो॰ महदज्ञानहर्षंचराक्षसाम्प्रश्नमुच्यते॥ भगव-
द्भक्तिजंज्ञानंमुनीनांवचनंचतत्॥रक्तांकुरायान्द्रो
हंचरावणस्यकुलान्तकम्॥१९॥

भा-टी- - राक्षसोंकेहृदयमें बडा अज्ञान तथा उसी अज्ञानमें हर्ष
सोई राक्षसोंको मुनिजनोंसें पूंछना भयाहै- तथा मुनियोंनें विचार
कियाहैकि, एही रक्तसें भगवानकी भक्ति उत्पत्ति होवैगा- ऐसाविः
चार सो मुनिजनोंकों राक्षसोंसें बोलनाभया- तथा रक्तसें उत्पत्ति-
भईजो परमेश्वरकी भक्ति तिस्में द्रोह कर्ना सो रावणके कुलकोना
शभयाहै॥१९॥

श्लो॰ तद्गृहीत्वागतास्तेतुप्रोचुःसर्वेचरावणे॥ग्रास
निश्चयम्लानादिग्रहणादिनिगद्यते॥२०॥

भा-टी- - दूतोंनें घडाकों लेके रावणके सामनें जापके सब मुनियों

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

को चरित्र रावणसें कहते भए- मुनिजनोंकी वाक्यकों सुनिकें दूत डरि गए- सोई घडाको ग्रहण कर्ना भया है- दूतोनें निश्चयसें जानि लेते भ- एकि रावणकी नाश होगा- ऐसा जानना रावणके पास दूतोंको जाना भया है तथा दूतलोग अपनी नाश जानिके उदास होगए सोई रावणसें दूतों को मुनिजनोंके चरित्रको कहना भया है॥२०॥

श्लो॰ श्रुत्वाजनकजीवस्यराज्येदीनस्वभावने॥ दया बुद्धिक्षितौकुंभंरवानयित्वाचरावणाः ॥२१॥

भा-टी- - दूतोंकी वचनकों रावण सुनिके जीवरूप जनक राजा ति सजीव राजाको गरीब स्वभाव सोई जीव जनककी राज है तिस राजमें दयारूप भूमिकों खोदायके ॥२१॥

श्लो॰ दयायांस्थापयित्वातंभूमावूर्द्धमृदाधिया॥ जीवस्यपूरयित्वाचस्वनाशेनिर्भयोभवत् ॥२२॥

भा-टी- - तिस घडाकों दयारूप भूमिमें धरायके ऊपरसें जीवकी- बुद्धि सोई मृत्तिका करिके पूर्ण करायके अपने कुलके नाशकी भ यछोडिके लंकामें रावण आनंद कर्ने लगे- यह श्लोकको अर्थ यह है कि घडाकों रावण जमीनमें गडाय लेता भया ॥२२॥

श्लो॰ जीवस्यजन्ममरणंसुखदुःखाद्यनेकधा ॥ एतद्रूपेव्यतीतेचकालेमहतिचागते ॥२३॥

भा-टी- - जन्म मरण दुःख सुख आदि लेके अनेक कर्म जीवरूप जनकराजाके होते है सोई पल- घडी प्रहर दिन राति पक्ष मास वर्ष युग- प्रलय काल भए- है- ऐसे काल बडे बडे आए तथा गए घडा गाडे पीछे बहुत दिन बीत गए ॥२३॥

श्लो॰ पंचेन्द्रियकृतंकर्म्मतथाद्विगुणसंभवम्॥ पंचसुपंचरागाद्याश्चैत द्वादशवार्षिकम् ॥२४॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा॰टी॰ -पांच ज्ञानइंद्रियों करिकै किये हुए जो पांच षोटाकर्म तथा रजोगुण तमोगुण करिकै किये हुए दो षोटे कर्म तथा पांच इंद्रियोंके पांचकर्म में स्नेह आदि कर्ना जैसा वाक्य मानयुक्त बोलना॰ हातसें षोटा कर्म्म करना॰ इंद्रीसें बुराकर्म कर्ना॰ पगसें बुरी रस्ताकों जाना सुंदरजगहपर मलकरिदेना॰ ए राग आदि पांचकर्म तथा पांचकर्म इन्द्रियोंको जिस्में राग आदि कर्म कर्ना तथा दोऊकर्म गुणको एही बारहकर्म बारह १२ वर्ष भएहै ॥२४॥

श्लो॰ एषुप्रीतिरनावृष्टिरभूज्जनकभूपतेः॥राज्ये॰
पूर्वोक्तभावेतन्दृष्ट्वाऽभूत्सोऽपिव्याकुलः॥२५॥

भा॰टी॰ - इनषोटे कर्म्मोंमें जीवकी प्रीति सोई पेस्तर वर्णन भयाजो जीव रूप राजा जनकको राजतिस्में बारह वर्षवर्षानही होतीभई ऐसी वर्षाहीन अपनेराजकों जीवरूपराजाजनक देखिकै दुःखीहोगया २५

श्लो॰ पूर्वोक्तेब्राह्मणैरुक्तश्चिकीर्षुर्ब्रह्मयाजनम्॥
तद्धर्षलांगलेनैवचकर्षकरुणाम्महीम्॥२६॥

भा॰टी॰ - पेस्तर वर्णन भएजो ब्राह्मण तिन्होकी सुंदर कर्मरूप वचनमानिकै षोटे कर्म्मोंमें जीवकी प्रीतिरूप अनावृष्टि नारा होनेवास्ते भगवानके विनयरूप यज्ञ कर्ने वास्ते उसीयज्ञमें हर्षरूप सुवर्ण है तिस्को हल बनायकै दयारूप भूमिको जीवजनक जोतते भए॰ २६

श्लो॰ जीवस्ययजनेप्रेमलांगलन्तन्निगद्यते॥फालं
चतत्सुखंज्ञेयंतदग्राद्दीनभावनात्॥२७॥

भा॰टी॰ -यज्ञमेंजीवजनकको प्रेमबहुतहै सोई हलभयाहै॰ उसीहलमें सुखमानना सोई फाल भयाहै॰ जीवको सुभाव गरीबहै सोई फालकी अग्रभाग भयाहै॰ तिसअग्रभागसें ॥२७॥

श्लो॰ पूर्वोक्तंनिसृतंकुंभंतस्माज्जाताचबालिका॥ब्र

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ह्मभक्तिः समाख्याता पालिता जनकेन सा ॥ अतः सा जानकी प्रोक्ता तवेयं प्राणवल्लभा ॥२८॥

भा-टी- - पेस्तर वर्णन भया जो घडा सो निकसता भया- तिस घडेमें सें एक लडकी उत्पत्ति भई उस्कों ब्रह्मकी भक्ति सज्जन कहतेहैं जीव रूप जनक राजानें उस लडकीका पालना किए- इस वास्ते ब्रह्मकी भक्तिको जानकी नाम हुआ- सो जानकी यह आपकी प्राण-प्यारी है ॥ २८ ॥

श्लो० एतां कथां रघुपतिर्मुनिवर्य गीतां संश्रुत्य हर्ष मगमत्सस भस्सामित्रः ॥ सत्संगरागजननं च तदेव हर्षं पप्रच्छ वालिशुभकण्ठजनेश्चरित्रम् ॥ २९ ॥

भा-टी- - मुनिसें वर्णन भई सुंदर कथा कों विवेकरूप रामजी सभा मित्र सहित सुनिके सब जीवोंको सत्संगमें स्नेह बहुत उत्पत्ति होता भया- सोई हर्ष भया तिस हर्षकों प्राप्ति होते भए तथा रामजीनें वालि सुग्रीवके जन्मको चरित्र पूंछते भए ॥ २९ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे उत्तरकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे जानकीसंभववर्णने प्रथमो मोक्षोपानः ॥ १ ॥

श्लो० वरतन्तुरुवाच वालिसुग्रीवयोर्जन्म श्रोतुकामं रघूत्तमम् ॥ तयोस्स्नेहं च श्रवणं मुनिर्वाक्यमथाब्रवीत् ॥ सत्कर्मणि विवेकस्य संगो मुनिवचस्स्मृतः ॥ १ ॥

भा-टी- - वरतन्तु मुनि बोले गुरुको वियोग रूप वालि तथा गुरुको उपदेश रूप सुग्रीव इन दोनोके जन्मकी कथाको सुनवेकी इच्छा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

किया है जो विवेक रूप रामजी तिस्सें मुनि बोलते भए वालिसुग्रीव में रामजीको स्नेह है सोई रामजीको श्रवण कर्ना भया पेस्तर वालि सें रामजीका द्रोह था सो महात्मा होगया वालि मरे पीछे तब रामजीको वालिसें स्नेह भया सुंदर कर्म्मों में रामजीको प्रेम है सोई मुनिको वचन भया ॥१॥

श्लो० निर्दयायाश्चमायायास्स्वभावोरघुनंदन॥ सैव
र्क्षराट्समाख्यातोदुरानंदकृतशशठः॥२॥

भा-टी- - मायाको दयासे हीन स्वभाव सोई पेस्तर वर्णन हुए वानर रिक्षोंको उत्पत्ति कर्नेवाला राजा है राजाको राजा नाम है तथा गुरुको दादाको भी राजा नाम है ऐसा जो वानर रिक्षोंका दादा तिस्कों छोटे काममें आनंद मानना ऐसा जो ब्रह्मा सो रचता भया ॥२॥

श्लो० बभ्रामसोदयाभूमौभ्रमणंजीवतापनम्॥
जीवानांतापनोपायेचैकस्मिन्दिवसेचसः॥३॥

भा-टी- - हे रामजी दयारूप भूमिमें रिक्षराज भ्रमण कर्ता भया जीवों कों ताप देना सोई भ्रमण भया जीवोंकों संताप देनेकी उपाय सोई दिन भया है उसी एक दिन ॥३॥

श्लो० स्वेच्छाचाराशुभेकूपेजडभावजलाचृते॥जी
वसंतापनेच्छांचददर्शाशुमहाबली॥४॥

भा-टी- - बडा बलवान मायाको निर्दयी स्वभाव है सो अपनी इच्छा में आवै सोई कर्म करिलेना वेद पुराण और सज्जनकी वाक्यकों नही मानना ऐसा जो अशुभ कर्म सोई कुआ भया उसी रिक्ष को मूर्ख स्वभाव सो जल है तिस जलकरिकै कूप भरा है ऐसा कूआमें अपनी छायाकों रिक्ष देखता भया ॥४॥

श्लो० छायांस्वस्यप्रकुर्वन्तीमृक्षस्यसदृशींक्रियाम्

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कुकर्म्मागारनेत्राभ्यांदृष्टाक्रोधसमाकुलः॥५॥

भा-टी- - कैसी छाया है रिक्षके चित्तमें रातिदिन सबजीवोंको संताप देनेकी इच्छा बनी रहती है तथा जैसा कर्म कुआके ऊपर सेरिक्षकर्ता है तैसे कर्म जलमें छाया करिरहीहै ऐसी छायाकों खोटाकर्मोंको संग सोई रिक्षकी आंखि है तिस आंखि करिकै देखिकै अज्ञानरूप क्रोधसें व्याकुल होगया- यह दोश्लोकको अर्थमिलाहै इसवास्तेयुग्म है॥५॥

श्लो० महामानाभिसंयुक्तोमादृशोऽयंचकश्शठः॥एवंपपातकूपेसोमानान्धम्पतनंप्रभो॥६॥

भा-टी- - हेप्रभो रामजी रिक्षराजनें बडाअभिमान करिकै विचार कियाकि मेरेशरीरके बलवान संसारमें दूसरा कोई नहीं है-यहमेरेसरीरके कौनहै ऐसाविचारि उसीकुआमें रिक्ष पडिगया- अभिमानसें अंधा होरहाहै रिक्षराज सोई उस्का कुआमें पडना भयाहै॥६॥

श्लो० नापश्यत्तत्रतंचापिव्याकुलत्वमदर्शनम्॥पश्यन्स्त्रियंस्वमात्मानंमायाप्रीतिस्वरूपिणीम्॥कूपान्निर्गत्यसस्तूर्णंबभ्रामपूर्ववद्भुवि॥७॥

भा-टी- - कुआमें ठसअपने शत्रुको नही देखा- तबरिक्षराज व्याकुलहोगया- सोई नही देखना भया- तथा आपनी शरीरकों मायामें प्रीतिरूप सोई स्त्री भयाहै तिस्कूं देखिकै जलदी कुआसें निकसिकै पेस्तर सरीरके दयारूप भूमिमें स्त्री होकै भ्रमण कर्ता भया-॥७॥

श्लो० भ्रमणान्तस्यक्रूरत्वमविचारोसतांसदा॥जीवत्रासेसतांचैवकूपात्सस्तद्विनिर्गमः॥८॥

भा-टी- - रिक्षको स्वभाव क्रूरहै सोई रिक्षको भ्रमण कर्ना भया- तथा- मायाकोनिर्दई स्वभावरूप जोरिक्षराजहै तिन्कों ऐसाविचारनहीहै

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कियहजीव षोटाहै इसकों त्रास देवै तथा यहजीव साधुहै इस्कों त्रास नहीं देना चाहिये ऐसा विचार नहीहै सोई कुआसें रिक्षका निकसना भयाहै ॥ ८ ॥

श्लो॰ नानाकुकर्माचरणास्तेतत्केशाश्च नीलिनः ॥
अविवेकशिरस्थाश्च जडभाव जलाद्रिणः ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - षोटेकर्मोको आचरण को रूप कालाहै रिक्षराज अनेकप्रकारको षोटाकर्मोंके आचरणकों कर्तेथे पुरुष रहे तब सोई आचरण नील सरीके कालाके शरिक्षके होते भए· स्त्रीरूपमें रिक्षकीहृदयमें विवेक नहीहै सोई अविवेक रिक्षको शिर भया· उसीशिरमें केशटिकेहै· रिक्षको जडस्वभाव योजलहै तिसजलकरिके केश आलाहोरहेहै ॥ ९ ॥

श्लो॰ केशादरोमंजनश्च बालयाचतयाकृतः ॥ मंजनेपणबुद्धिश्च सः कार्योजानकीपते ॥ १० ॥

अर्थ॰ - रिक्षराज स्त्री होगया सो स्त्री आपने केशोंकों आदर बहुत कर्ती है सो वा लोंको धोना भया· आदररूप बालके धोनेमें प्रतिज्ञा सोई केशको धोना कर्ती है इसप्रकारसें केशधोयके ॥ १० ॥

श्लो॰ शोषयन्तीचतान्बालाकेशान्सज्जनदुःखदान् ॥
सर्वेषांप्राणिनांदुःखंकेशशोषणमुच्यते ॥ ११ ॥

भा॰टी॰ - साधुजनोंकों दुःख देनेवाले जो षोटेकर्म आचरणके शतिन्होकोंधोएपीछेसोस्त्रीसुवाय रहीहै सबजीवोंकों मायाके निर्दयपणसें दुःखहोना· सोई केशको सूखवानाभयाहै ॥ ११ ॥

श्लो॰ कुधर्मस्सुरनाथश्च तान्दृष्ट्वा कामोहितः ॥
एकत्वंतस्यतस्याश्च कामिनीदर्शनंचतत् ॥ १२ ॥

भा॰टी॰ - षोटाधर्म इंद्रपेस्तरबर्णनभयाहै सोरिक्षराज स्त्रीहो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गया तिस्कों देखिकै कामसें मोहित होगया· इंद्रकों तथा इसस्त्रीको एक लक्षण है जैसा किसी जीवको तप आदि सुंदरकर्म करने इंद्र देखैगा तो जानैगा कि मेरा राज लेनेवास्ते यह तप करिरहाहै उस्कों अनेक यत्नसें भ्रष्ट करैगा इसी वास्ते इंद्रको षोटा धर्म कहताहै तैसेई उस स्त्रीको लक्षण है सोई इंद्रसें स्त्रीको देखना भयाहै॥१२॥

श्लो॰ तस्यादुर्भावनंकामस्तेनग्रस्तश्शचीपतिः॥
यावदायातिरंतुताम्प्रीतिरागंचमैथुनम्॥१३॥

भा·टी· - तिस स्त्रीकों दुष्टकर्म्ममें स्नेह है सोई कामदेव भयाहै तिस कामदेवकरिकै इंद्र मोहित होके जबतक उसस्त्रीके संगरमण करनेको आनेलगा· स्त्रीमें इन्द्रकी प्रीतिको मोहबहुतहै सोई मैथुन भयाहै॥१३॥

श्लो॰ तावत्सपातत्तद्वीर्यंसुकार्येर्षाप्रवंचनम्॥तल्केशेपूर्वकथितेतस्माद्बालिंप्रजज्ञिवान्॥१४॥

भा·टी· - तबतक इन्द्रकोवीर्य उसस्त्रीके पेस्तर वर्णन भएकेशोंमें पडिगया· उसवीर्य तथा केशके संयोगसें बालि होताभया· सुंदर कर्मोंमें इंद्रकी इर्षा बनीरही है उसी इर्षामें कपट सोई इंद्रको वीर्य होताभयाहै॥१४॥

श्लो॰ मायानिर्दयभावरूपवनिताकेशेषुजातोवली
दौःकर्म्यांचरणेषुवीर्यपतनादिंद्रस्यकाधर्मिणः॥
सत्कार्येर्ष्यप्रवंचनात्कपिपतिर्बालिर्वियोगोबलीजीवा
नांभवतारणस्यचगुरोर्योवैत्वयाघातितः॥१५॥

भा·टी· - मायाको दयासें हीन जीस्वभाव सोई स्त्री भई है तिस्के षोटाकर्मको आचरणरूप केशमें षोटाकर्मरूप इन्द्रको वीर्य पडनेसें बालि होताभया· कैसा वीर्य है सुंदर कर्ममें ईर्षा करिकै कपट

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रूप सोई वीर्यहै· कैसो वालिहै जीवोंकों संसारसें तारण कर्नेवाले जो गुरु तिस्का वियोगहै ॥ १५॥

श्लो· सतांचैवासतांवापिसततंदुःखदायच ॥ तस्या विचारोजीवानांसद्वितीयोदिनस्मृतः ॥ १६॥

भा·टी· – मायाको निर्दय स्वभावरूप स्त्रीकानित्यराति दिन ऐसा विचार रहताहैकि, स्कंदरजीवोंको तथा दुष्टजीवोंको भी दुःख देना ऐसाविचार सोई दूसरादिन भयाहै ॥ १६॥

श्लो· तद्दिनेपूर्ववत्केशमार्जनंसाकरोत्सती ॥ आत्मप्रकाशः सविताद्दस्वातांकामतापितः ॥ १७॥

भा·टी· – तिसदिनमें पहिले वर्णनहुई स्त्री पहिले सरीके बालोंकों धोयके सुषाय रहीहै तिसस्त्रीकों आत्मप्रकाशरूप सूर्य देखिकेकामदेवसें जलने लगे ॥ १७॥

श्लो· सद्ज्ञानशिक्षणंतस्यैदातुंसूर्यमनोरथः ॥ तत्तस्यादर्शनंप्रोक्तमुपकारश्चमन्मथः ॥ १८॥

भा·टी· – सूर्यको ऐसाविचारहैकि, इसस्त्रीकों हम स्कंदरज्ञान शिखावैंकि तूं जीवोंके ऊपरनिर्दयपण छोडिदे· और दयाकरु ऐसोसूर्यको विचार सोई स्त्रीकों सूर्यको देखना भया· तथाजो सूर्यकी वाक्यकों योस्त्री मानिलेवै· और मानिकै जीवमात्रपर दया करै तबसब जीव मोक्षको चलेजावैंगे और बडा उपकार होवै सोई उपकाररूप काम भया· तिसकरिके सूर्य जलिरहे· वहचिंतवनरूप जलनाहै कार्यसिद्धि जबतक नहीं होता तबतक मनकों तापहोताहै काजभएपर आनंदहोताहै ॥ १८॥

श्लो· एवंकामार्द्दितस्सूर्य्यो मैथुनंकर्तुमागतः ॥ तयासार्द्धंचतद्दर्षो मैथुनंगमनंसुखम् ॥ १९॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भा·टी· - इस प्रकार सें जीवोंको उपकार रूप कामसें दुःखी हो के आत्म प्रकाश रूप सूर्य तिस स्त्रीके संग रममाण होनेके वास्ते आते भए· उपकार में हर्ष मानना सोई रममाण होना है उस हर्षमें सुख मानना सोई स्त्रीके पास आत्मप्रकाश रूप सूर्य को आना भया है॥१९॥

श्लो० यावत्कर्तुंसमुद्युक्तोहर्षमैथुनमद्भुतम्॥ तावत्पपातन्नीर्यंभगवत्प्रेमनिर्मलम्॥ग्रीवायांस्मृतिरूपायां संस्थाभगवतस्तदा॥२०॥

भा·टी· - सूर्य जबतक हर्ष रूप क्रीडा तिस स्त्रीके संग करनेकों तयार भए तबतक भगवानके प्रेमरूप मलसें हीन ऐसा जो-सूर्यको वीर्य है सो उस स्त्रीके ग्रीवामें पडिगया· तब स्त्रीभी कभी कभी विचारती है कि मैं भगवानकी दासी हो ऐसी स्फुरति सोई स्त्रीकी ग्रीवा भई है· ग्रीवा नाम गला॥२०॥

श्लो० ग्रहणंवीर्यपतनंतस्माज्जातोमहाबली॥ गुरूपदेशस्सुग्रीवस्सखायंतेरघूत्तम ॥२१॥

भा·टी· - हे रघुनंदन सूर्यकी शिक्षाकोंसो स्त्री ग्रहण कर्ती भई सोई ग्रहण सूर्यके वीर्यको पडना भया है· उसी वीर्यसें गुरुको उपदेशरूप यह आपको मित्र तथा नर्क बाधासरीके अनेक शूरवीरोंको नाश करनेकों बडा बलवान ऐसा सुग्रीव जन्मता भया·

श्लो० कपीशयोर्जन्मकथानकंत्विदंप्रोक्ताचरामायणतामुनीश्वराः॥ ध्यानेसुखंतद्गमनंप्रकीर्तितंबभूवरामोऽपिसदाबलीदः॥२२॥

भा·टी· - वालि सुग्रीवके जन्मकी कथा रामजीसें मुनिजनोनें वर्णन करिके भगवानके ध्यानके सुखमें मस्त होगए सोई मुनिजनों

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

को रामजी के पाससें अपने अपने आश्रमकों जाना भया- तथा रामजीभी गुरुको वियोगरूप वालिको तथा गुरुको उपदेशरूप स्त्री वकीजन्म कथा सुनिके भगवानके रूपमें मस्त होगए- सोई श्रवण कर्ना भयाहै॥ २२॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेउत्तरकांडे शिवसहायबुध-विरचिते सम्वर्तवरतन्तुसंवादेवालिस्त्रीवजन्मक-थनेद्वितीयोमोक्षोपानः॥२॥

श्लोक- वरतन्तुरुवाच कुधर्म्माश्चकुकर्म्माणि विधिनानिर्मितानिच॥ नाशमाप्तानिसर्वाणिसुम तेराघवेनृपे॥१॥

भा-टी- - सुमतिरूप अयोध्याकोराजा विवेकरूप रामजी भए तब ब्रह्मा करिके रचे जेतने षोटेकर्म तथा षोटेधर्म सोसब नाशकों प्राप्तिभए॥१॥

श्लो॰ सर्वेजीवाःप्रकुर्वन्तिसत्संगादीननेकशः॥ प्राप्तास्तेसच्चिदानंदतेजोरूपमयंवपुः॥२॥

भा-टी- - विवेक रूप रामजीके राजमें सबजीवोंनें सत्संग आदि गिनती हीन सुंदर कर्म्म कर्ते भए- उसी सुंदर कर्म के प्रभावसें तेज रूपजो ब्रह्मकीशरीर तिसकों प्राप्ति होते भए॥२॥

श्लो- नशरीरंभगवतस्तेजश्चापिनज्ञायते॥ अनेकजन्मनोभ्यासाद्दुर्गमन्तत्तथापिच॥३॥

भा-टी- - नभगवानके शरीरहै तथातेज भीजीवों करिकेनहीमालूमहो ता- बडा अद्भुत तेजभीहै- अनेकजन्मतक ईश्वरके तेजकों मालूमक रनेवास्ते सत्संग आदिलेके अनेक सुंदर कर्म करे तोभी बडे कठिनसे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ईश्वरको तेज मालूम परैगा ॥३॥

श्लो० मुमुक्षवोबभूवुस्तेसर्वेजीवाश्चराचरे॥ तद्विघ्न कारकानष्टाश्चैतद्राज्यंरघूत्तमः॥चक्रेप्रेमसदातेषा मीश्वरेतत्प्रजासुखम्॥४॥

भा-टी- - तीन लोकचवदह भुवनमें सब जीवोंकी मुक्ति होनेकी इच्छा होतीभई तथा मोक्षके विघ्न करनेवाले दुष्टजीव नष्टहोगए-एहीराज विवेकरूप रामजी कर्तेभए-सबजीवोंका प्रेम ईश्वरमें बहुत होताभया सो प्रजाको सुख भयाहै॥४॥

श्लो० कामादिशत्रवोनष्टास्तेष एमासामुनीश्वर॥जी वानान्निर्भयन्तेभ्यस्तत्तेषांगमनंस्मृतम्॥५॥

भा-टी- - काम क्रोध लोभ-मोह-मद-मत्सर एछ जीवोंके वैरीहैं सो-रामजीके राजमें एछवो नष्ट होगये-सोई छमास भया-तथा इन छ-वों वैरियोंसें जीवनिर्भय होगया-सोई छवो मांसको बीतना भयाहै-विवेकरूप रामजीको राज कर्ते इस प्रकारके छ महीनाबीतिगया ५

श्लो० पूर्वोक्ताःकपयश्चापिभगवत्प्रेमनिर्भराः॥बभू वुः कृतवान्रामस्तत्तेषांचविसर्जनम्॥६॥

भा-टी- - पहिले वर्णन भएजो कपि रिक्षहैं सोभी भगवानके प्रे-ममें मस्त होरहेहैं- सोई रामजीनें कपि और सब रुक्ष उनकोंवि दाकर्तेभए॥६॥

श्लो० अनेकेतारिताजीवारामेणभुवनत्रये॥तए वयज्ञारामेणकृताश्चसमतौमुने॥७॥

भा-टी- - हेमुनिजी तीनलोकचवदाभुवनमें विवेकरूपरामजी-गिनतीहीन जीवोंको संसारसें उद्धार करिके मोक्ष कर्तेभए सोई रक्ष पतिरूप अयोध्यामें अनेकयज्ञकर्तेभए॥७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्लो० जीवेजीवेददौभक्तिंचेश्वरस्यारघूत्तमः॥ स्वयं चापिविरक्तोभूद्देषस्तत्त्यागउच्यते॥ ८॥

भा·टी· - विवेकरूपरामजीनें जीवोंको उद्धार होने वास्ते दयाकरिकै सबजीवोंको परमेश्वरकी भक्तिको दान कर्ते भए दानकर्ना यह हैकि सबजीवोंमें भक्तिको टिकाते भए तथा आपु भगवानके चरणोमेंर मितभए सोई जानकीको त्याग रामजी कर्ते भए॥ ८॥

श्लो० द्वौपुत्रौरामचन्द्रस्यजानक्यांचबभूवतुः॥ ज्ञान वैराग्यनामानौजीवोत्तारणकारकौ॥ ९॥

भा·टी· - विवेक रूपरामजीके ईश्वरकी भक्तिरूप जानकीमें दोपुत्र होतेभए· कैसे पुत्रहै एकज्ञान· दूसरावैराग्य कैसे है जीवोंकोंसं सारसें उद्धारकर्ने वालेहै॥ ९॥

श्लो· स्वपदंगन्तुकामस्यभगवद्रूपदर्शनम्॥ विवेक राघवस्यैवचिंतनोमुनिसत्तमः॥ दुर्वासागमनंतस्य रामोत्साहश्चतत्पदे॥ १०॥

भा·टी· -परमेश्वरको दर्शनरूपजो विवेकको स्थान है तिस्कों प्राप्ति होनेको रामजी चिंतवन कर्ते हैंकि मनरूप रावण आदि राक्षस नष्ट· होगए अब आपने स्थान हमजावे ऐसो रामजीको विचार सोई दु र्वासामुनिभएहै॥ १०॥

श्लो०आज्ञप्तोमुनिनातेनतद्रूपस्यावलोकने॥ गंतुंत· लक्ष्मणस्यैवमुनिवाक्यम्परस्परम्॥ ११॥

भा·टी· - रामजीको चिंतवनरूप दुर्वासामुनिरामजीको भगवानके दर्शनरूप जोस्थान तिसपरजानेकी आज्ञा दियाकि रामजी राक्षसोंका नाशहोगया· अबतुम भगवानको दर्शनरूप जो तुमारास्थान तिस्कों जावो· ऐसी मुनिकी वाक्य सोई लक्ष्मणकी तथा दुर्वासामुनिकी सं·

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वादभयाहै ॥ ११ ॥

श्लो० स्वस्वकर्मणिहर्षेणबभूवुर्लक्ष्मणादयः ॥ भ्रा
तरोरामचंद्रस्यवियोगस्सोयमुच्यते ॥ सर्वेषांलक्ष्म-
णादीनांभ्रातॄणांराघवस्यच ॥ १२ ॥

भा-टी- -विवेकरूप रामके तीनौ भाई लक्ष्मण संतोष- संतोषकी वृ
द्धिदेखिके हर्ष मानतेभए- निर्मोहरूप भरत निर्मोहकी वृद्धिदेखिके
हर्षितभए- सहन रूप शत्रुघ्न- सबजीवोंमें क्षमाकी वृद्धि देखिकै खु
शीभए- रामजीके भाइयोंको ऐसा हर्ष सो रामजीसें तीनों भाइयोंको
वियोग होताभया- ॥ १२ ॥

श्लो० जानक्याप्रार्थिताभूमिर्दयारामेचनिश्चला ॥ स्थि
तिर्दत्तोचजानक्याविवरस्सैवकथ्यते ॥ १३ ॥

भा-टी- - दयारूप पृथ्वीकी प्रार्थना जानकीनें किया- तब पृथ्वी रामजी
में अचलवास जानकीको देतीभई सोई रस्ताभई है ॥ १३ ॥

श्लो० दयायांसर्वदाप्रीतिर्जानक्यास्साचप्रार्थना ॥ द-
यादत्तेनमार्गेणवासश्चक्रेचजानकी ॥ विवेकेनिश्चलत्वं
चतस्यास्तद्भवनंस्मृतम् ॥ १४ ॥

भा-टी- - सदा दयारूप पृथ्वीमें जानकीकी प्रीति है सोई पृथ्वीकी-
प्रार्थना जानकीनें किया- दया पृथ्वीकरिकै दीनजो रस्ता सो अचलवा
स रामजीमें जानकीको उसी रस्ता करिकै विवेकमें जानकी अचलवास-
किया सोई रामजीके पाससें जानकीको जाना भया- ॥ १४ ॥

श्लो० सर्वेषांलक्ष्मणादीनाम्भ्रातॄणांरघुनंदनः ॥ वि
योगंहर्षरूपंचजानक्याश्चतथैवच ॥ दृष्ट्वाप्रवर्द्धनंतेषां
तद्धर्षोदर्शनंस्मृतः ॥ १५ ॥

भा-टी- -रामजीनें सब लक्ष्मण आदि लेकै अपने भाइयोंको हर्षरूप वि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

योग देखिके तथा जानकीकों देखिके अपने सत्संग वाले सब जीवों कों सबके कर्ममें हर्षकी वृद्धि सोई रामजीने भायियोंको वियोग देख नाभयाहै ॥१५॥

श्लो० स्वपदं भगवद्रूपदर्शनं स्वात्मसंस्थितम् ॥ तत्प्रेम प्रापणं तस्य कथ्यते तं समुत्सुकः ॥१६॥

भा० टी० - रामजीने अपनी हृदयमें विराजमान जो भगवानको दर्शन रूप स्थान तिस्कों जानेके वास्ते आनंद मानते भए सोई रामजीको पर पदको जाना भया ॥१६॥

श्लो० कौसल्याद्याश्च सम्मग्ना भगवच्चिंतने सदा ॥ तत्रा सांगमनम्प्रोक्तं वैकुंठे भगवत्प्रिये ॥१७॥

भा० टी० - कौसल्या आदिलेके रामजीकी सब माता जो है सो सब भगवानके चिंतवनमें रातिदिन मग्न होरही है सो ही तिन्होको भी भगवान को प्यारा जो वैकुंठ तिस्मे जाना भयाहै ॥१७॥

श्लो० कुमतेर्निर्भयां चक्रे स्कमतिं स्वाम्पुरीम्प्रभुः ॥ तदेव रामचंद्रस्य पुरीत्यागोभिधीयते ॥१८॥

भा० टी० - छोटी मति की त्रासतें स्कमति रूप अयोध्या कूं रामजी निर्भय कर्ते भए सोई रामजीका अयोध्या कों त्याग नाभया ॥१८॥

श्लो० सर्वान्मोक्षस्य साहित्यान्विवेको रघुनंदनः ॥ चकारस्ववशे नित्यं प्रजाणां ग्रहणं त्विदम् ॥१९॥

भा० टी० - मोक्षकी संपूर्ण सामग्री ज्ञान ध्यान आदिलेके गिनतीसें हीन तिस्कों नित्य रामजी अपने वश्य कर्ते भए. सो प्रजाकों संग लेना भया. १९

श्लो० तास्समादाय राजेंद्रो जगाम शरयूतटम् ॥ तत्प्रेम गमनं प्रोक्तं तज्जलेनिममज्जह ॥२०॥

भा० टी० - पहिले चर्गन भई प्रजाकों रामजी संग लेके भगवानमें निश्चल

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मेमरूप सरयू के तटपर जाते भए· सुवासनारूप शरयूमें रामजी को प्रेम सोई रामको सरयूतटपरयाना भया· अभिमानसें हीनक र्मरूप सरयूका जलतिस्में प्रजासहित रामजी गोता लगाते भए २०

श्लो० निर्मानभगवद्ध्यानंराममज्जनमुच्यते ॥ मज्जि त्वासर्वजीवेषुचिदंशेषुतदाप्रभुः ॥ वासंचक्रेतदेवंवै गमनंसत्पदेभवत् ॥ २१ ॥

भा·टी· विवेक रूपरामजी अभिमानसें हीन होके ईश्वरकोध्यान कर्ते भए सोई रामजीको सरयूके जलमें स्नान कर्ना भया· ऐसाध्या· नरूप स्नान करिके ईश्वरको अंशजो जीव अनेक प्रकार करिके अने· क शरीरमें दुःखपायरह्या तिस सबजीवोंको मोक्षरूप देनेवास्ते सब जीवोंमें विवेकरूपरामजीटिकते भए· सोई प्रजासहित रामजीको परमपदको जाना भयाहै ॥ २१ ॥

श्लो० एवंरघूत्तमदशाननयोश्चरित्रंवेदांतसारगदितं चविश्रुत्यजीवः ॥ सम्यग्विचार्यगुरुणाचविशिक्ष्यनि त्यंमोक्षंप्रयातिरघुनंदनभावबद्धः ॥ २२ ॥

भा·टी· - इस प्रकारको विवेक रूपरामजीको तथा मनरूपरा वणको चरित्र वेदांतकोसारजो ज्ञानहै तिस्कों आदि लेके अनेक प्रकारके जो सुंदर धर्मरूपजो शास्त्रहै तिन्हों करिके कथितहु आहै ऐसे चरित्रकों जीव सुनिके तथा मनमें विचार करिके त था· गुरुके मुखसे ऐसे बहुत प्रकार सें शिखिके विवेकरूपजोरा मजीहै तिस्को भावजो सत्संग तिस्में बंधनरूप प्रेम लगायके जी वमोक्षकों प्राप्ति होवेगा· ॥ २२ ॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेउत्तरकांडे संवर्तवरत· न्तुसंवादेशिवसहायबुधविरचिते रामचंद्रस्वप

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दप्राप्तिवर्णनेतृतीयोमोक्षोपानः॥ ३॥

समाप्तश्चायमुत्तरकाण्डः

श्रीमद्वेदांतरामायणस्समाप्ति मगमदयम्

बाणा १ ब्धि ४ रंध्र ९ शशि १ वत्सरवैक्रमीये चाषाढशुक्लरविवासरशम्भुतिथ्याम्॥ श्रीमन्महेशकृपयादयया चनस्यग्रंथस्समाप्तिमयमेवमगात्सुपूर्णः ॥१॥

श्रीमच्छंकरार्पणमस्तु-

अथप्रश्नः पप्रच्छुस्सज्जनामाम्वेजीवश्चैकश्चिदंशवान्॥ स श्वराचरवर्त्तीचत्वयोक्तोभूरिशः कथम्॥१॥ अर्थ- सज्जनलोगहमसेंपूंछेकिभगवान्कोअंशजीव१हैं. तुमनेइसग्रंथमें बहुतजीव वर्णनकियाहै इस्काकारण क्याहै॥१॥ उत्तर- जलद्रव्यन्यायाज्जीवाश्चानेकशः॥ अर्थ- जैसा पानीको एकरंगहै पणजिस चीजमें मिलावोगे उसीचीजसरीके पानीको स्वरूप होजावैगा. दूधमे दूध. छाछमें छाछ. कालरमें काला. पीलेमें पीला. सक्करमेंमीठा. कटूचीजमेंकटू इसप्रकारगुनतीसेंहीन चीजोंमें मिलके वैसाहीहोजाताहै. तैसेईजीव१है पणजिसयोनिमें जन्मैगा उसीप्रकारको होजावैगा. यहदृष्टांत महासांख्यआदिशास्त्रोंकाहै. कपोलकल्पित नहीहै.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri